अनाथ

संदीप बालकृष्ण

द्वारा अनुवादित

एस.एल. भैरप्पा

Table of Contents

शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
अंतर्वस्तु
पाठक के लिए एक संदेश
गाय का गीत: अनुवादक का परिचय
खंड 1
खंड 2
खंड 3
खंड 4
खंड 5
खंड 6
खंड 7
खंड 8
खंड 9
खंड 10
खंड 11
खंड 12
खंड 13
खंड 14

खंड 15
खंड 16
खंड 17

अनाथ

एस.एल. भैराप्पा (जन्म 1931) कन्नड़ के एक प्रख्यात उपन्यासकार हैं, जिनकी रचनाओं में चौबीस उपन्यास, छह आलोचनात्मक विवेचन और एक आत्मकथा शामिल हैं। छह विश्वविद्यालयों से मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त, वे पांच दशकों से अधिक समय से बेस्टसेलर लेखक हैं, जिसकी शुरुआत 52 वर्ष पहले प्रकाशित 'वंश वृक्ष' से हुई थी। उन्हें 2015 में साहित्य अकादमी फैलोशिप और 2016 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। उन्हें 2010 में सरस्वती सम्मान भी प्राप्त हुआ था, और उनके अधिकांश उपन्यासों का संस्कृत और अंग्रेजी सहित लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में 'वंशवृक्ष', 'गृहभंग', 'दातु', 'पर्व', 'साक्षी', 'सारथ', 'तन्तु', 'आवरण' और 'उत्तरकांड' शामिल हैं।

वह मैसूर में रहता है।

संदीप बालकृष्ण ने सत्रह वर्षों से अधिक समय तक सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग में कार्य किया। वे इतिहास की बहुचर्चित पुस्तक 'टीपू सुल्तान: द टायरेन्ट ऑफ मैसूर' के लेखक हैं। उनकी अन्य पुस्तकों में 'मदुरै सल्तनत: ए कॉन्साइज़ हिस्ट्री' और '70 इयर्स ऑफ सेकुलरिज्म: अनपॉपुलर एसेज ऑन द अनऑफिशियल पॉलिटिकल रिलीजन ऑफ इंडिया' शामिल हैं। उन्होंने एस.एल. भैराप्पा के बहुचर्चित कन्नड़ उपन्यास 'आवरणा' का अंग्रेजी अनुवाद 'आवरणा: द वेल' के रूप में किया है, जिसका वर्तमान में दसवां पुनर्मुद्रण चल रहा है। वे विभिन्न अंग्रेजी और कन्नड़

समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में स्तंभकार हैं, प्रेक्षा जर्नल में सहभागी संपादक हैं और 'द धर्म डिस्पैच' के संस्थापक और मुख्य संपादक हैं।

संदीप भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद में फेलो हैं और बेंगलुरु में रहते हैं।

orphaned

S. L. BHYRAPPA

TRANSLATED BY
SANDEEP BALAKRISHNA

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2019
7/16, Ansari Road, Daryaganj
नई दिल्ली 110002

कॉपीराइट © एस.एल. भैराप्पा 2019
अनुवाद का कॉपीराइट © संदीप बालकृष्ण 2019

यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त की गई हैं, और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, घटना या स्थान से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुन: प्रस्तुत, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।

ISBN: 978-93-5333-786-5

पहली छाप 2019

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है।

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है।

अंतर्वस्तु

पाठक के लिए एक संदेश
गाय का गीत: अनुवादक का परिचय
खंड 1
खंड 2
खंड 3
खंड 4
खंड 5
खंड 6
खंड 7
खंड 8
खंड 9
खंड 10
खंड 11
खंड 12
खंड 13
खंड 14
खंड 15
खंड 16
खंड 17

पाठक के लिए एक संदेश

इस उपन्यास में वर्णित गाँव विश्व में कहाँ स्थित है, यह प्रश्न पाठक के मन में स्वाभाविक रूप से उठ सकता है। मैंने जानबूझकर इसके तालुक और ज़िले के नाम, साथ ही अन्य भौगोलिक विवरणों का उल्लेख नहीं किया है, क्योंकि मैं इसे एक विशिष्ट स्थान नहीं बनाना चाहता था। इस उपन्यास में वर्णित कलेनहल्ली गाँव किसी भी पाठक का पैतृक गाँव हो सकता है। पाठक कलेनहल्ली के निकट स्थित अरुणाद्री पहाड़ी को अपने गाँव के बगल की पहाड़ी के रूप में देख सकते हैं।

यदि गाँव की बोली को विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के अनुसार बदल दिया जाए, तो इस उपन्यास की घटनाएँ कोलार के दक्षिण में स्थित किसी भी गाँव से लेकर उत्तर में स्थित किसी भी गाँव तक, उदाहरण के लिए बीदर और कालबुर्गी जिलों में घटित हो सकती हैं। या हम गाय के चिरस्थायी लोकगीत की शुरुआत में आने वाले वाक्यांश, 'इस पृथ्वी के केंद्र में जहाँ कर्नाटक का प्रसिद्ध देश स्थित है' पर विचार कर सकते हैं। इसमें, यदि हम 'कर्नाटक' को 'भारत' से बदल दें और उपन्यास को पढ़ें, तो इस कृति की घटनाएँ हिंदुस्तान के किसी भी गाँव में घटित हो सकती हैं। ऐसे में, कल्पनाशील पाठक के लिए उपन्यास में उल्लिखित कुछ अन्य गाँवों और कस्बों के नाम बदलना कठिन नहीं होगा।

यह उपन्यास सर्वप्रथम कन्नड़ दैनिक 'कन्नड़ प्रभा' में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ था। मैं इसके संपादकीय स्टाफ, विशेषकर के.एस. नारायणस्वामी को धन्यवाद देना चाहता हूँ।

इस उपन्यास में तैयव्वा के चरित्र को जन्मजात मूक के रूप में चित्रित किया गया है। मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसी ही एक महिला को वास्तविक जीवन में जानती हूँ। यह चरित्र चिकित्सा विज्ञान के लिए नमूना बनने के उद्देश्य से गढ़ा गया नहीं है। पाठक स्वयं ही उसे मूक के रूप में चित्रित करने के पीछे के साहित्यिक उद्देश्य को समझ जाएँगे। इतना ही पर्याप्त है।

मैं अपने मित्र एम.एस.के. प्रभु का भी आभारी हूं जिन्होंने पांडुलिपि पढ़ी और कुछ स्थानों पर सुधार करने में सहायता की, और प्रकाशक एम. गोविंदा राव का भी।*

---

*एस.एल. भैराप्पा, 1968.

गाय का गीत: अनुवादक का परिचय

हमारे वर्तमान युग को तीव्र तकनीकी परिवर्तन और मशीनों पर अत्यधिक—और लगभग अपरिहार्य—निर्भरता तथा भारी मात्रा में सूचनाओं के अंबार के युग के रूप में सटीक रूप से वर्णित किया जा सकता है। यह घटना मानव इतिहास में अभूतपूर्व है। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस घटना—जिसे प्रौद्योगिकी का युग कहा जा सकता है—ने भारत सहित पृथ्वी के किसी भी कोने और राष्ट्र को नहीं बख्शा है।

इसके बावजूद, भारत की प्राचीन सभ्यता और सांस्कृतिक मूल्यों के केंद्रीय और पवित्र स्तंभों में से एक के रूप में गाय की भूमिका, स्थान और सम्मान आज भी कायम है। यही कारण है कि भारत के संविधान में गाय (सामान्यतः मवेशी) के संरक्षण, पालन-पोषण और संवर्धन को शामिल किया गया है। हिंदू धर्म में गाय के प्रति यह सम्मान उन लोगों के बीच गौहत्या को लेकर सीधे टकराव पैदा करता है जो इसे केवल भोजन के रूप में देखते हैं, और इसी कारण से इस मुद्दे पर अंतहीन और तीखे विवाद और संघर्ष भी हुए हैं।

डॉ. एस.एल. भैराप्पा के उपन्यास 'ऑर्फ़न्ड' में इन मुद्दों के साथ-साथ कई अन्य मूलभूत प्रश्नों और समस्याओं का भी समाधान किया गया है। उपन्यास की पृष्ठभूमि प्रसिद्ध कन्नड़ लोकगीत 'गोविना हाडु' से ली गई है। इस गीत को आधार बनाकर उपन्यास अप्रत्यक्ष रूप से भारत की संस्कृति की जड़ों का अन्वेषण करता है। यह गीत प्राचीन नहीं है और लगभग पंद्रहवीं शताब्दी में नादुगन्नद या मध्य कन्नड़ काल में लोकप्रिय हुआ था। सरल भाषा में रचित यह गीत आज भी कन्नड़ भाषा की एक अमर सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत है। कुछ दशक पहले तक कर्नाटक के प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के बच्चों के लिए इसे याद करना अनिवार्य था। यह गीत फिल्मों में भी रूपांतरित हो चुका है और इस पर अनेक विद्वतापूर्ण ग्रंथ और टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं।

गौगीत का सार सरल है। पुण्यकोटी नाम की एक गाय, कलिंग गौड़ा या कलिंग गोल्ला नामक एक ग्वाले के बड़े झुंड का हिस्सा है। पुण्यकोटी सत्य, अहिंसा, करुणा और धर्म के चिरस्थायी मूल्यों का पालन करती है। एक दिन जब वह अरुणाद्री पहाड़ी पर चर रही थी, तो एक भूखा बाघ उसे खाने के लिए आ गया। उसने बाघ से विनती

की कि उसका बच्चा भूखा है और वह उसे आखिरी बार दूध पिलाकर वापस लौट जाएगी। बहुत समझाने के बाद, बाघ उसकी सत्यनिष्ठा से प्रभावित हो गया और उसे जाने दिया। गौशाला लौटकर अपने बच्चे को दूध पिलाने के बाद, उसने बाघ को बताया कि उसे वापस बाघ के पास जाना है। जब बच्चा उसे रोकने की कोशिश करता है, तो वह उसे बताती है कि वचन तोड़ना गलत है और उसे सत्य की खोज का महत्व समझाती है। जब वह उसे अंतिम विदाई दे रही होती है, तब गीत में यह यादगार पंक्ति आती है, "तबलियु नीनादे मगने" (शाब्दिक अर्थ: 'मेरे बच्चे, तुम अनाथ हो गए हो')। यही पंक्ति डॉ. एस.एल. भैराप्पा के उपन्यास का शीर्षक है।

पुण्यकोटी बाघ की गुफा में लौटती है और उससे कहती है: 'लो, मेरी मांसपेशियां, मांस और मेरे हृदय का गर्म रक्त ले लो। इन सबको खा जाओ और इस धरती पर सुखी और सुखमय जीवन व्यतीत करो।' बाघ, उसकी सत्यनिष्ठा पर अचंभित होने के साथ-साथ पश्चाताप से भर जाता है और पुण्यकोटी से कहता है कि उसके जैसी श्रेष्ठ प्राणी को खाने से उसे बड़ा पाप लगेगा। वह पश्चाताप में कहता है कि वह उसकी बड़ी बहन के समान है। वह उसे अंतिम विदाई देता है और अरुणाद्री पर्वत की चोटी से छलांग लगाकर अपनी जान दे देता है।

हालाँकि उपन्यास को समझने के लिए यह पृष्ठभूमि अनिवार्य नहीं है, फिर भी यह उस देहाती, कच्चे भौतिक परिवेश को एक सांस्कृतिक संदर्भ प्रदान करती है जिसमें कथानक घटित होता है। इसके अतिरिक्त, लेखक ने उपन्यास में गाय के गीत की कई पंक्तियों का शब्दशः उपयोग किया है। पाठक की सुविधा के लिए इनका अनुवाद किया गया है। पुण्यकोटी की उपरोक्त कहानी गैर-कन्नड़ भाषी, और विशेष रूप से अंग्रेजी भाषी पाठकों को इन पंक्तियों को कहानी से जोड़ने में मदद करेगी।

संदीप बालकृष्ण
2019

खंड 1

1

इस पृथ्वी के केंद्र में
जहां कर्नाटक का प्रसिद्ध राज्य स्थित है
कलिंग नाम का एक चरवाहा रहता है।
मैं उसके तौर-तरीकों का वर्णन कैसे करूँ?

ओचय्या के मठ या आश्रम में सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले लड़कों द्वारा इस गीत के पाठ करने के तरीके और कलेनहल्ली गांव के हमारे कलिंग गौड़ा द्वारा इसके पाठ करने के तरीके में बहुत बड़ा अंतर है। स्कूल में पढ़ने वाले लड़कों के लिए, इन पंक्तियों से शुरू होने वाला यह गीत गाय की कहानी सुनाता है और उनकी पाठ्यपुस्तक में केवल एक कविता है। लेकिन कलिंग गौड़ा के लिए, यह उनके पूर्वजों के जीवनकाल में घटी एक सच्ची घटना है।

पुण्यकोटी नाम की गाय अपने बच्चे के बारे में सोचते हुए खुशी से चल रही थी तभी—

आज मुझे मेरा खाना मिल गया
उस क्रूर बाघ ने कहा
पहले आया, घेर लिया और अवरुद्ध कर दिया
गाय।

और बाघ को,

हे बाघों के राजा, एक प्रार्थना
मेरा बच्चा घर पर है
मैं उसे दूध पिलाने में बस एक पल का समय लूंगी
और फिर वापस आकर यहां खड़े हो जाओ।

गाय ने कहा।

क्या तुम्हें मरना ही होगा माँ?
क्या तुम मुझे अनाथ बनाना ही चाहते हो?

यहीं रुकिए
बच्चे ने मां से कहा।
सत्य ही हमारे माता-पिता हैं।
सच्चाई हमारे रिश्तेदारों और दोस्तों में निहित है।
ईश्वर प्रसन्न नहीं होंगे।
यदि हम सत्य के वचन से भटक जाते हैं।

इस प्रकार गाय ने अपने बच्चे को धर्म का उपदेश दिया और वहाँ से वह विशाल पर्वतमाला के बीच से होते हुए उस पर्वत की ढलान तक गई जहाँ अर्बुता बाघ रहता था, और बोली—

मेरा मांस ले लो, मेरा मांस ले लो
मेरे दिल का गर्म खून पी लो
अच्छा खाओ और तृप्त रहो।
इस धरती पर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करो।

बाघ उसकी सत्य के प्रति दृढ़ता से प्रसन्न है।

तुम मेरी बड़ी बहन हो
तुम्हें खाने से मुझे क्या फायदा होगा?
मैं आपके चरणों में गिर जाऊंगा
और मेरे जीवन से विदा ले लो।

और बाघ,

उसने तीनों देवताओं के सामने हाथ जोड़े।
आठों दिशाओं में देखा
आसमान की ओर उछल पड़ा
और उसने अपना जीवन त्याग दिया।

जब पुण्यकोटी नाम की गाय अपने बाड़े में लौटी और बोली, 'शिव ने बाघ को मोक्ष प्रदान किया और मेरी जान बख्श दी,' तो बाड़े का स्वामी कलिंग उसके चरणों में गिर

पड़ा। तब गाय,

मेरे वंश की गायें
आपके वंश के चरवाहे
संक्रांति उत्सव में अवश्य
सुंदर कृष्ण की पूजा करो।

उसने कहा-

मैं और मेरी आने वाली पीढ़ियाँ हर साल ऐसा करेंगी
संक्रांति त्योहार के दौरान बनाएं
एक दूध-पोंगल मिठाई
और उन्होंने वहीं पर एक उत्सव मनाया।

2

इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि कलेनहल्ली के कलिंग गौड़ा, कलिंग गोल्ला (यानी ग्वाला) के उसी कुल से संबंधित हैं, जिसके पास प्राचीन गौशाला थी, जिसमें पुण्यकोटी नामक गौड़ा रहता था। वास्तव में, इस गाँव का नाम 'कलेनहल्ली' उसी कलिंग गोल्ला के नाम पर पड़ा, जो गाँव के गौड़ा मुखिया थे। इस तथ्य की पुष्टि ब्रिटिश शासकों ने भी की है, जिन्होंने जिले के भौगोलिक इतिहास का शोध और लेखन किया था। हमारे कलिंग गौड़ा आज भी कलेनहल्ली गाँव के गौड़ा मुखिया हैं। उनके वंश में दूसरी पीढ़ी के सबसे बड़े बेटे को 'कलिंग गौड़ा' नाम देने की परंपरा है। उनके घर में मौजूद वंशावली से इसकी पुष्टि होती है। हमारे कलिंग गौड़ा के दादा का नाम भी कलिंग गौड़ा था। हमारे कलिंग गौड़ा ने अपने एक वर्षीय पोते का नाम भी कलिंग रखा है। यह बच्चा बड़ा होकर गौड़ा कहलाएगा और गौशाला का कार्यभार संभालेगा।

एक और अकाट्य प्रमाण है जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि हमारे कलिंग गौड़ा वास्तव में कलिंग गोल्ला वंश के वंशज हैं, और पुण्यकोटी की कहानी वास्तव में कलेनाहल्ली गांव में घटी थी।

आम बोलचाल में अरुणाद्री पहाड़ी
भूमि में मौजूद है,

आकाश को थामे हुए, यह
दृष्टि को विस्मित कर देता है।

पुण्यकोटी की कहानी जिस गांव कलेनाहल्ली में घटी, वह अरुणाद्री पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। अगर हमें यह संदेह हो कि अरुणाद्री किसी साधारण पहाड़ी का नाम था, तो हमें पता चलता है कि इसकी एक और भी बड़ी, विशिष्ट विशेषता है—

इस रचना में, अरुणाद्री पहाड़ी
सात अन्य पहाड़ियों से घिरा हुआ
बारह योजनाओं की सीमा
वहाँ एक घना जंगल था।

अरुणाद्री पर्वत बारह योजनों या छियानवे किलोमीटर के क्षेत्र में फैले सात अन्य पहाड़ियों से घिरा हुआ है। एक साफ आसमान वाली दोपहर में अरुणाद्री की चोटी पर चढ़ने पर, सभी सात पहाड़ियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इस तथ्य की पुष्टि के लिए अधिक प्रमाण की आवश्यकता नहीं है कि अतीत में यह पर्वत श्रृंखला घने जंगलों से ढकी हुई थी। जब हमारे कलिंग गौड़ा के समकालीन अभी बच्चे ही थे, तब यहाँ एक दुर्गम जंगल हुआ करता था।

गुलाब-चेस्टनट, आम, काला बेर
टीक, चेन्नांगी, शमी, पादरी
इमली और बेल
उस जंगल में झुककर, छूकर और जश्न मनाकर उन्होंने यह सब किया।

जंगल ने चंचल भाव से आलिंगन किया
बरगद और पीपल, अंजीर और संतरा,
जाली, तिदिगिलु, अगिले, चंदन,
लकड़ी का सेब, एलोवेरा, बांस और रेशम-कपास।

कलिंग गौड़ा ने स्वयं जंगल में इन सभी वृक्षों को देखा था। हालांकि, जब वे बीस वर्ष के थे, यानी तीस वर्ष पहले, जंगलों की कटाई शुरू हो गई थी और यह प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी। सागौन के वृक्ष बड़े शहरों में घर बनाने में इस्तेमाल किए गए। आम, काला

बेर, शमी और पाडरी के वृक्ष शहरवासियों के घरों में जलाऊ लकड़ी के रूप में इस्तेमाल होने लगे। चंदन के वृक्ष चंदन के तेल कारखानों में तेल और साबुन बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए और विदेशों तक पहुँच गए। तो जब प्रमुख नर वृक्ष लुप्त हो गए, तो उनके मादा समकक्ष जैसे गुलाब-चेस्टनट, बेल और रेशम-कपास कैसे जीवित रहते? न तो पीपल का वृक्ष और न ही उसकी पत्नी, नीम का वृक्ष, जीवित रह पाए। हालांकि, कुछ बरगद के वृक्ष अभी भी इधर-उधर बिखरे हुए बचे हैं।

हमारे कलिंग गौड़ा अब पचास वर्ष के हो चुके हैं। फिर भी, वे सुबह तड़के उठते हैं, नदी में स्नान करते हैं, माथे पर तिलक लगाते हैं और अपने बालों को करीने से बांधते हैं। वे धारीदार लंबी निकर पहनते हैं और फिर धोती कमर पर लपेटते हैं। वे गले में लॉकेट की माला और उंगलियों में अंगूठी पहनते हैं। त्योहारों और विशेष अवसरों पर, वे केसरिया कमीज पहनते हैं, सिर पर नीलमणि की पगड़ी लपेटते हैं और भव्यता से चंद्रमा के रंग का शानदार कंधा वस्त्र ओढ़ते हैं।

कलेनाहल्ली गांव के प्रवेश द्वार पर स्थित मकान कलिंग गौड़ा का है। उनके मकान के पीछे उनका गौशाला है। दरअसल, हम कह सकते हैं कि उनका पूरा मकान ही गौशाला है। उनका परिवार सड़क की ओर वाले हिस्से में रहता है। पूरा पिछवाड़ा उनके मवेशियों से भरा रहता है। खाना पकाने के समय ही उनका परिवार —जिसमें उनकी पत्नी, बेटा, बहू और एक साल का पोता शामिल हैं—सड़क की ओर वाले हिस्से में आते हैं। बाकी समय वे गौशाला में रहते हैं। क्या सौ मवेशियों से भरी गौशाला की देखभाल करना कोई आसान काम है?

खलिहान के पीछे आज भी वह प्राचीन आम का पेड़ खड़ा है। इस पेड़ के नीचे बैठकर, गोल्ला गौड़ा अपनी बांसुरी बजाते हैं और अपने पशुओं को पुकारते हैं। उनके खलिहान के तीन भाग हैं। एक में हल और बैल रहते हैं, जो उनकी गाड़ी खींचते हैं। दूसरे में बछड़े रहते हैं। तीसरे में केवल गायें रहती हैं। कलिंग गौड़ा अपने खलिहान की हर एक गाय का नाम जानते हैं। और हर गाय अपना नाम जानती है। जैसे ही हमारे गौड़ा किसी गाय का नाम पुकारते हैं, वह तुरंत अपना सिर उठाकर उनकी ओर देखती है। अगर वह हाथ हिलाकर उसे पास आने का इशारा करते हैं, तो गाय उनके पास जाती है, उनके शरीर को सूंघती है और स्नेह से उनके शरीर के खुले हिस्सों को चाटती है। जब वह उन्हें केवल मवेशियों के चरने के लिए आरक्षित घास के मैदान में ले जाते हैं, तो वह अपनी सभी गायों के नाम अनगिनत बार पुकारते हैं। वह

चिल्लाते हैं, 'होय पारोती, खेत की ओर मत जाओ। होय लक्ष्मी, इधर आओ, इधर आओ।' 'गंगा! आओ!' 'कभुय!' 'गौरी! तुम क्यों नाच रही हो? तुम्हें कुछ हुआ है क्या?' उसकी सभी गायों के नाम देवियों के नाम पर रखे गए हैं—गंगा, गौरी, तुंगभद्रा, पार्वती, सरस्वती, धर्मदेवी, रंगनायकी, सीता, कामधेनु, इत्यादि। उसकी जीभ, जो प्रतिदिन कम से कम दस बार इन सभी गायों के नाम लेती है, इस प्रकार अनगिनत बार इन देवियों का आह्वान करती है! उसे दृढ़ विश्वास है कि वह इस प्रकार प्रतिदिन पुण्य अर्जित करता रहता है, और उसे कोई संदेह नहीं है कि वह मोक्ष—पुण्य का अंत या मुक्ति—प्राप्त करेगा और कभी नरक में नहीं जाएगा।

पुण्यकोटी, जो अपने वादे को न तोड़ने के लिए गौशाला से बाघ की गुफा में लौट आई थी, भगवान शिव की कृपा से बच गई और जीवित लौट आई। उसकी संतानें आज भी कलिंग गौड़ा की गौशाला की शोभा बढ़ाती हैं। वे लंबी हैं लेकिन सुगठित शरीर वाली, शुद्ध सफेद रंग की हैं, और हालांकि उनके सींग लंबे हैं, फिर भी थोड़े मुड़े हुए हैं ताकि सिर टकराने पर भी किसी को कोई खतरा न हो। चलते समय उनके खुर जमीन पर स्पष्ट निशान छोड़ते हैं। उनकी पूंछ किसी शुभ विवाहित महिला के लंबे, घने बालों जैसी दिखती है। पीछे से देखने पर भी, उनके पैरों के बीच के भरे हुए थन उनके शरीर के हिसाब से भारी लगते हैं। उनकी छाती लंबी है, और उनकी लंबी गर्दन के नीचे त्वचा की कोमल परतें लटकती हैं। पुण्यकोटी की संतानें हमेशा से इन शारीरिक विशेषताओं के साथ पैदा होती थीं। सामने से आने पर वे न तो सींग मारती थीं और न ही पीछे से आने पर लात मारती थीं। उनकी संतानों में से मादा कभी भी किसी बच्चे को अपना दूध पिलाने से नहीं रोकती थी जो अपना मुंह उसके थन से लगाता था। नर का स्वभाव भी कुछ ऐसा ही था—काम के मामले में वह हमेशा आगे रहता था। वह कभी किसी को सींगों से नहीं मारता था, आक्रामक नहीं था और चेहरे पर प्रसन्नता का भाव लिए जुगाली करता था।

जब कलिंग गौड़ा क्रोधित होते थे, तो वे दूसरी गायों को डांटते थे। वे उन्हें खूब धमकाते हुए कहते थे, 'क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?' या 'बस रुको, तुम्हें मार पड़ेगी!' लेकिन वे पुण्यकोटी की किसी भी गाय को डांटने के बारे में कभी सोचते तक नहीं थे। आखिर, क्या उनके पूर्वज ही शेर के द्वार तक नहीं गए थे, और शेर के वचन का पालन करते हुए उसके द्वार तक गए थे? आज भी, जब संक्रांति के दिन दूध-पोंगल का त्योहार मनाया जाता है, तो वे सबसे पहले पुण्यकोटी की गायों की पूजा करते हैं।

अपनी जाति के अनुसार, कलिंग गौड़ा एक गोष्ठी हैं। उनके स्वयं के शब्दों में, वे अकेले गोष्ठी नहीं हैं। हर पुरुष वास्तव में गोष्ठी है, और हर स्त्री गोष्ठी है। जो स्त्री गाय की पूजा करती है, वह गोष्ठी है; जो पुरुष गाय का पालन-पोषण करता है, वह गोष्ठी है। महान ऋषियों और मुनियों ने गायों का पालन-पोषण किया। उनकी पत्नियाँ गायों की पूजा करती थीं। तो क्या वे गोष्ठी नहीं थे? गंगादिकारा, दासगौड़ा, नोनाबा, बनजिगा और हारुवा जैसी सैकड़ों उप-जातियाँ हो सकती हैं, लेकिन वे सभी एक ही गोष्ठी परिवार के अंतर्गत आती थीं। चाहे वे तिलक लगाते हों या विभूति लगाते हों, क्या कभी कोई ऐसा गोष्ठी हुआ है जिसने गाय की पूजा न की हो?

कलिंग गौड़ा निरक्षर नहीं हैं। वे पुण्यकोटी की छंदबद्ध कथा सुना सकते हैं और उसका अर्थ समझा सकते हैं। वे जैमिनी महाभारत के कुछ महत्वपूर्ण अध्यायों का भी वर्णन कर सकते हैं। यद्यपि उन्होंने औपचारिक रूप से गडुगिन भारत का अध्ययन नहीं किया है, फिर भी यदि कोई उसका पाठ करे तो वे उसका अर्थ समझ सकते हैं। कलेनहल्ली से दो मील दूर एक अग्रहारा में एक ब्राह्मण जोइस—ज्योतिषी—रहते हैं। वे आसपास के गांवों के पुरोहित हैं। दूर-दराज के कस्बों और गांवों के लोग दावा करते हैं कि नरसिम्हा जोइस, जो कलिंग गौड़ा से पांच वर्ष छोटे हैं, न केवल संस्कृत के ज्ञाता हैं, बल्कि वेदों और पुराणों के भी ज्ञाता हैं। जब नरसिम्हा जोइस कलेनहल्ली आते हैं या जब कलिंग गौड़ा अग्रहारा जाते हैं, तो वे जोइस को यह चुनौती देते हैं: 'नरसप्पा, आपने वेदों का अध्ययन किया है, आप ही बताइए, क्या हमारे ऋषि और संत गोल्ला नहीं हैं?'

'जी हाँ,' जोइस उनसे सहमत होते हैं। इतना ही नहीं, वे एक मंत्र का उल्लेख करते हैं: 'माता रुद्रानां दुहिता वसूनां, स्व सादित्या नामं अमृतस्य नाभिहि [वह रुद्र की माता हैं, वह वसु की पुत्री हैं, वह अमृत का भंडार हैं, और क्योंकि तैंतीस करोड़ देवता उनमें निवास करते हैं, इसलिए जिस भी देवता की पूजा की जाए, वह गाय की पूजा के समान है। जो भी ईश्वर की पूजा करते हैं, वे गोण्ड हैं।'

कलिंग गौड़ा ने कभी दूध के लिए गायें नहीं पालीं। क्या कोई अपनी माँ की देखभाल सिर्फ इसलिए करता है क्योंकि वह दूध देती है? इस संबंध में उनका अपना तर्क है: हम अपनी माँ के कारण जन्म लेते हैं और उनके दूध के प्रति प्रेम विकसित करते हैं। लेकिन क्या हम सिर्फ दूध के लालच में माँ पा सकते हैं? और अगर हम इस

तरह से किसी स्त्री को पा भी लें, तो क्या वह हमारी माँ बनेगी? गाय भी वैसी ही है; वह माँ से भी श्रेष्ठ है। वास्तव में, गोमाता (गाय माता), भूमाता (धरती माता) और वह जैविक माँ जिसने हमें जन्म दिया—वास्तव में, इन तीनों को कौन पा सकता है, कौन दे सकता है?

जब कोई उनसे कहता है कि गाय केवल मनुष्यों के लिए दूध देने के लिए होती है, तो वे इसे स्वीकार नहीं करते। हमारी माताएँ, जिन्होंने हमें जन्म दिया, बछड़ों को दूध क्यों नहीं पिलातीं? इसी प्रकार, गाय का दूध उसके बछड़े के लिए ही बनता है। यद्यपि, गोमाता का पुण्य, यानी पुण्य, एक मनुष्य माता से कहीं अधिक होता है। उनके स्तन कहीं अधिक बड़े होते हैं। यही कारण है कि अपने बछड़े को दूध पिलाने के बाद भी उनके स्तनों में मनुष्यों के लिए दूध बचा रहता है। कलिंग गौड़ा के लिए इसका अर्थ यह था कि गाय द्वारा अपने बछड़े को दूध पिलाने के बाद जो दूध बचता है, वही हमारा है। जब भी कलिंग गौड़ा और उनका परिवार अपने गौशाला में गाय का दूध दुहना चाहते थे, तो वे बछड़े को गाय से अलग नहीं करते थे और न ही उसे बांधते थे। बछड़ा एक तरफ के दोनों थनों से दूध पीता था, और गौड़ा की पत्नी या बहू दूसरी तरफ के दोनों थनों से दूध निकालकर एक बड़े बर्तन में भरती थीं।

गौशाला के अंदर गायों को बांधने के लिए एक अलग, बड़ा और छत वाला ढांचा था। हर गाय के लिए अलग बाड़ा और चारागाह था। हालांकि, बछड़ों को बैठक कक्ष में ही एक साथ रखा जाता था। रात में, गौड़ा, उनकी पत्नी, बेटा और बहू नन्हे-मुन्ने बछड़ों को अपने पास कंबल के बिस्तर पर सुलाते थे। कभी-कभी जब बछड़े कंबल पर पेशाब कर देते थे, तो उनमें से कोई भी नाराज़ नहीं होता था। 'क्या हमारे बच्चे पेशाब नहीं करते? बछड़ों के साथ भी ऐसा ही है। बछड़ों का पेशाब इंसानी बच्चों के पेशाब से बेहतर है। आखिर यह पवित्र पंचगव्य में से एक है'—गाय के दूध, दही, घी, गाय के मूत्र और गोबर का पंचगव्य। यह उनका दृढ़ विश्वास था।

गौड़ा को रात में तब तक नींद नहीं आती थी जब तक कि कोई गाय या बछड़ा दिन में कम से कम एक बार उसकी पीठ चाट न ले। कभी-कभी जब वह रात में करवट बदलते समय नींद से जाग जाता था, तो वह अपने बगल में बैठे बछड़े को सहलाता, उससे बातें करता और फिर धीरे-धीरे खर्राटे लेते हुए सो जाता था।

सुबह वह बड़े मग से अपने हाथ-पैर धोता, पूर्व दिशा के देवता से प्रार्थना करता और बछड़ों को दूध पिलाने के लिए छोड़ देता। जैसे ही वह उन्हें छोड़ता, हर बछड़ा

बिना चूके सीधे अपनी माँ के पास जाता और दूध पीने लगता। कलिंग गौड़ा कहते, 'मनुष्यों के विपरीत, ये अपने बच्चों को नहीं भूलते।'

4

एक सुबह, गौड़ा की पत्नी लक्कम्मा गौशाला में गायों का दूध दुह रही थीं। पास ही बैठी उनकी बहू तैयव्वा ने अपने एक साल के रोते हुए बच्चे को दूध पिलाने के लिए अपनी ब्लाउज खोली हुई थी। बच्चा माँ का दूध पीने के बावजूद रोना बंद नहीं कर रहा था। जब लक्कम्मा ने कहा, 'ठीक से दूध पिलाओ', तो तैयव्वा ने उन्हें हैरानी से देखा, क्योंकि उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। तैयव्वा बोल नहीं सकती थी। वह जन्म से ही गूंगी थी।

कलिंग गौड़ा द्वारा कई वर्षों पहले किए गए वादे को पूरा करने के लिए तायव्वा का विवाह परिवार में हुआ था। कलिंग गौड़ा की छोटी बहन की पुत्री तायव्वा मात्र तीन वर्ष की थी जब गौड़ा का पुत्र कृष्ण आठ वर्ष का था। भाई-बहन के इस रिश्ते को हर तरह से उपयुक्त माना जाता था। एक अवसर पर गौड़ा ने अपनी बहन और बहनोई को वचन दिया था कि वे उनकी पुत्री का विवाह अपने पुत्र से करवा देंगे। उस उम्र में यह नन्ही बच्ची अभी बोलना भी शुरू नहीं कर पाई थी। बेशक, गौड़ा जानते थे कि तीन वर्ष के बच्चों में बोलने की क्षमता का विकास न होना आम बात है। इसके अलावा, उनके पास इस बारे में सोचने का कोई विशेष कारण भी नहीं था। फिर भी, आठ वर्ष की होने पर भी वह बोल नहीं पाई। भगवान से की गई विशेष मन्नतें, साधुओं के मंत्र, मलयाली पुजारियों द्वारा कराए गए तांत्रिक अनुष्ठान, कुछ भी काम नहीं आया। उसकी जीभ खामोश ही रही। यह सभी को स्पष्ट था कि तायव्वा जन्म से ही गूंगी थी।

गौड़ा ने अपनी बहन द्यावक्का से किए वादे पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। लेकिन जब द्यावक्का ने अपनी बेटी की शादी की बात शुरू की, तो गौड़ा ने पूछा, 'बहन, यह लड़की गूंगी है। मुझे बताओ, मैं इसकी शादी अपने घर में कैसे करवाऊं?'

'मेरे प्यारे भाई, जब हमने उसकी शादी के बारे में बात की थी, तब किसे पता था कि वह गूंगी होगी? आपने अपने बेटे से उसकी शादी तय की थी। रिश्ता तय हो गया था। अब, क्या आप सिर्फ इसलिए अपना वादा तोड़ देंगे क्योंकि वह गूंगी है?'

कलिंग गौड़ा अपना वचन कैसे तोड़ सकते थे?

सत्य ही हमारे माता-पिता हैं।
सच्चाई हमारे रिश्तेदारों और दोस्तों में निहित है।
ईश्वर प्रसन्न नहीं होंगे।
यदि हम सत्य के वचन से भटक जाते हैं।

क्या पुण्यकोटी, वह गाय जिसने अपना वादा निभाकर बाघ के पास लौटकर उसे अपना वचन पूरा किया था, उसके पूर्वजों के गौड़ा की ही नहीं थी? यही गौड़ा अब उसका था, और पुण्यकोटी के वंश की गायों से आबाद था। गौड़ा मन ही मन सोचने लगा, 'अगर मैं अपना वचन तोड़ दूं, तो मैं उनका सामना कैसे कर पाऊंगा? और गायों का क्या होगा? सूर्य और चंद्रमा देवता उनकी आंखों में बसते हैं। ऐसी कौन सी चीज है जो उन्हें दिखाई नहीं देती?'

उसकी बहन द्यावक्का ने उसे दुविधा में डाल दिया था। लेकिन वह क्या कर सकता था? 'ठीक है, मेरी प्यारी बहन। मैं तुम्हारी बेटी को अपने घर शादी के लिए लाऊंगा। चलो जोई परिवार से बात करके शादी तय कर लेते हैं', उसने उससे कहा।

लेकिन फिर, पत्नी लक्कम्मा को शादी के लिए राजी करने का दायित्व भी गौड़ा के कंधों पर आ गया। ऐसा नहीं था कि लक्कम्मा को यह पता नहीं था कि वादा नहीं तोड़ना चाहिए। माता-पिता द्वारा अपने-अपने बच्चों की कम उम्र में ही भाई-बहन की शादी तय करने की प्रथा भी आम थी। हालांकि, इस मामले में किसी की गलती नहीं थी, फिर भी लक्कम्मा ने गौड़ा से पूछा, 'एक मूक पत्नी हमारे बेटे को क्या सुख देगी?'

गौड़ा ने उत्तर दिया, “अगर वह गूंगी है तो क्या समस्या है? वह सुंदर है। वह सारे काम अच्छे से करती है। बस बात इतनी है कि वह बोल नहीं सकती। मुझे बताओ, क्या गौमादा गूंगी है?”

‘वह मूक कैसे हो सकती है? क्या वह सभी देवताओं की माता नहीं है?’

‘बिल्कुल सही। लेकिन क्या वह बोल सकती है?’

'नहीं।'

इसका मतलब यह नहीं है कि जो बोल नहीं सकते वे सब गूंगे होते हैं। यह लड़की भी वैसी ही है। हमारे गौशाला की गायें बोलती हैं। जब मैं उन्हें बुलाता हूँ तो वे मेरे पास आती हैं। वे मेरा शरीर चाटती हैं। जब मैं आँखों से इशारा करता हूँ, तो वे तुरंत समझ

जाती हैं। वे निश्चित रूप से बिना बोले भी बोलना जानती हैं। और उन्हें बोलने की ज़रूरत ही क्यों है? क्या वे इंसान हैं जिन्हें बोलने की ज़रूरत होती है? भगवान क्यों बोलें?

लक्कम्मा को समझ नहीं आ रहा था कि इसका क्या जवाब दे, तभी गौड़ा ने पूछा, 'बताओ, तुम्हारी सास कौन है?'

‘आपकी मां के देहांत को कई साल हो गए हैं।’

‘वो माँ नहीं। मेरी माँ से मेरा मतलब है गौमाँ। उसे अपनी सास समझो। क्या वो तुम्हें सताती है? क्या वो मुझसे तुम्हारी शिकायत करती है?’

'नहीं।'

‘इसी तरह, अगर आपको गाय जैसी बहू मिल जाए, तो वह हमारे बेटे के सामने आपके खिलाफ कठोर और अनुचित शिकायतें नहीं कर पाएगी। आप खुश रहेंगे। सब खुश रहेंगे। बस मान जाइए।’

लक्कम्मा ने विवाह के लिए सहमति दे दी। इस प्रकार, तेरह वर्षीय कृष्ण गौड़ा का विवाह उनकी बुआ की आठ वर्षीय मूक पुत्री तैयव्वा से हो गया। विवाह समारोह प्राचीन गोल्ला परंपरा के अनुसार रात्रि में संपन्न हुआ। कृष्ण गौड़ा ने एक शब्द भी नहीं कहा कि उन्हें यह मूक कन्या नहीं चाहिए। वे इतने बड़े नहीं थे कि ऐसी बात कह सकें। इसके अलावा, विवाह के मामले पूरी तरह से माता-पिता के हाथ में होते थे। बच्चों को इसमें कोई दखल नहीं होता था।

तैयव्वा काम और जीवन दोनों में होशियार थी। हालाँकि वह बोल नहीं सकती थी, फिर भी दूसरों की बातें पूरी तरह समझ जाती थी। शादी के छह साल बाद वह अपने ससुराल आई। तीन साल बाद वह गर्भवती हुई और उसने अपने पहले बच्चे, एक बेटे को जन्म दिया। लक्कम्मा ने सोचा, "क्या हुआ अगर वह बोल नहीं सकती, इससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती है?"

जब लक्कम्मा ने बारी-बारी से पहले बाएँ स्तन से और फिर दाएँ स्तन से दूध पिलाया, तब भी बच्चा रोना बंद नहीं कर रहा था। अपने नन्हे हाथ से, बच्चा उस स्तन को ऐसे धकेल रहा था मानो कह रहा हो—‘मुझे यह नहीं चाहिए।’ इसी बीच, एक गाय का दूध दुहने के बाद, लक्कम्मा ने दूसरी गाय के थन पर अरंडी का तेल लगाया और उसे ‘सोर’ की आवाज़ के साथ खींचने लगी। उसका पोता रोता रहा। एक मिनट के लिए,

उसने दूध दुहना बंद कर दिया, अपनी बहू की ओर मुड़ी और पूछा: 'तुमने थन क्यों ढीला कर दिया है? क्या तुम अपना स्तन ठीक से नहीं पिला सकती?'

बहू के इशारे पर बात समझ में आ गई। तैयव्वा उसे बता रही थी कि पिछले एक हफ्ते से उसका दूध कम हो गया है और आज सुबह तो उसके स्तन में बिल्कुल भी दूध नहीं था। सास ने कहा, 'दूध कहीं अटक गया होगा। उंगली से दबाकर देखो।'

जब तयव्वा ने बात मान ली, तो दूध नहीं निकला। 'क्या एक साल में ही दूध आना बंद हो गया? तुम्हारी माँ के साथ भी यही हुआ था। तुम कैसी स्त्री हो जो अपने बच्चे को कम से कम तीन साल तक दूध नहीं पिला सकती?' लक्कम्मा की फटकार सुनकर बहू ने बेबसी से अपनी नज़रें नीचे कर लीं। उसकी सास जिस गाय का दूध दुह रही थी, वह बोर बोर की आवाज़ कर रही थी और उसका दूध बड़ी बाल्टी में भर रहा था, जिसका ऊपरी हिस्सा सफेद झाग से फूल रहा था।

हालांकि शिशु चम्मच से दूध पीने का आदी था, फिर भी वह अपनी माँ का दूध पीने के आनंद को छोड़ना नहीं चाहता था; वह लगातार रोने लगा—उसे शांत करना नामुमकिन था। यहाँ तक कि जब उसकी दादी ने उसे गोद में लिया और उसके मुँह में थोड़ा सा गुड़ डाला, तब भी वह शांत नहीं हुआ। गाय दुहने का काम वहीं रुक गया। जब तयाव्वा ने अपने बच्चे को अपनी सास की गोद में देखा, तो उसने दूध दुहने का काम अपने हाथ में ले लिया।

कलिंग गौड़ा भोर होते ही खेतों की ओर चल पड़े। जून और जुलाई के बरसाती आषाढ़ महीने बीत चुके थे और श्रावण महीने शुरू हो चुके थे। खेत मजदूर बसंत ऋतु में कटाई के लिए रागी के पौधे लगा रहे थे। जब गौड़ा घर लौटे, तो पूर्व दिशा में सूर्य देव, स्वामी, चार वयस्क पुरुषों की ऊँचाई तक उदय हो चुके थे। शिशु अभी भी रो रहा था। जब उन्होंने पूछा, 'बच्चा इस तरह क्यों रो रहा है?' तो उनकी पत्नी ने कहा, 'तैयव्वा के स्तन से दूध आना बंद हो गया है। भला कैसी अच्छी स्त्री, जिसका दूध एक साल में ही सूख जाए? उसकी माँ के साथ भी यही हुआ था।'

गौड़ा को पता था कि लक्काव्वा ने अपने बच्चे को पूरे तीन साल तक दूध पिलाया था। लेकिन जब उसने अपनी बहू की माँ—यानी अपनी छोटी बहन—के बारे में कहा, 'ये कैसी औरत है?' तो गौड़ा को ये बात बर्दाश्त नहीं हुई। सच है, इस मामले में लक्काव्वा श्रेष्ठ महिला थी। लेकिन सभी औरतें एक जैसी नहीं होतीं। इसीलिए उसे अपनी छोटी बहन और उसकी बेटी के बारे में इस तरह अपमानजनक बातें नहीं

कहनी चाहिए थीं। गौड़ा ने उसे डांटते हुए कहा, 'अब चुप रहो? क्या सभी गायें एक जैसी होती हैं? क्या सभी गायें बराबर दूध देती हैं?'

लक्काव्वा के पास कोई जवाब नहीं था। उसने शिशु को गौड़ा को सौंप दिया और रसोई की ओर चली गई। उसकी बहू पहले से ही जलकुंभी के शोरबे में मिलाने के लिए मसाले पीस रही थी। गौड़ा के लिए शिशु को शांत करना एक बड़ी समस्या थी। जब वह अंदर गया और अपनी पत्नी से पूछा कि क्या करें, तो उसने वही बात दोहराई जो उसने पहले कही थी—'यह पूरी तरह से माँ के दूध का आदी हो गया है। जब तक इसे माँ का दूध नहीं मिलेगा, यह चुप नहीं होगा।'

गौड़ा शिशु को लेकर बछड़ों के बाड़े में गया। उसने शिशु को बछड़ों के साथ खेलने के लिए छोड़ दिया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। फिर वह बैलों के बाड़े में गया और शिशु को एक बैल की पीठ पर बिठा दिया। शिशु फिर भी रोना बंद नहीं कर रहा था। अंत में, उसे एक विचार आया। क्या गोमाता उस माँ से महान नहीं है जिसने हमें जन्म दिया है? क्या उसका थन हमारी माताओं के स्तनों से बड़ा नहीं है? हाँ, उसने सोचा, और गौशाला की ओर चल पड़ा। सभी गायों का दूध दुहा जा चुका था। इसके अलावा, अगर शिशु अपना मुँह सीधे थन पर लगाएगा, तो सभी गायें उसे स्वीकार नहीं करेंगी।

लेकिन गौड़ा को पुण्यकोटी नस्ल पर अटूट विश्वास था। चाहे किसी भी समय दुहा जाए, वह बिना किसी छल-कपट के अपना सारा दूध दे देती थी। यद्यपि उनके थनों में दूध होता था, फिर भी दूसरी गायें चालाकी से दूध रोक लेती थीं, पर पुण्यकोटी नस्ल की कोई भी गाय ऐसा नहीं करती थी। इसके अलावा, उसने कभी किसी को सींग नहीं मारे थे और न ही लात मारी थी। अब गौड़ा के गौशाला में पुण्यकोटी नस्ल की तीन दूध देने वाली गायें थीं। एक ने अभी-अभी अपना पहला बछड़ा दिया था। श्रावण माह में उसके बछड़े के जन्म की एक सालगिरह थी। यह बछड़ा उसके पोते की उम्र का था। अपनी माँ का दूध पीकर वह गौशाला की बाहरी दीवार के पास खुशी से उछल-कूद कर रहा था। गौड़ा ने उसे पकड़ा और उसकी माँ के पास ले आया। बछड़े ने अपना मुँह फिर से अपनी माँ के थन पर लगाया। एक पल के लिए गाय ने अपने पिछले पैर कड़े किए और पेशाब किया: यानी, उसने अपने थन ढीले कर दिए। गौड़ा ने बच्चे को एक तरफ झुकाकर पकड़ा और उसका मुंह दूसरी तरफ के निप्पल से लगाया। एक मिनट तक बच्चा दूध पीने में हिचकिचाया। गौड़ा ने दूसरे हाथ से बच्चे के मुंह में लगे

निप्पल के सिरे को धीरे से दबाया। जैसे ही गर्म, स्वादिष्ट दूध उसके मुंह में गया, बच्चे का संकोच दूर हो गया और वह खुशी से दूध पीने लगा। पुण्यकोटी बिना हिले-डुले, एक जगह स्थिर खड़ा रहा।

तब तक गौड़ा की पत्नी गौशाला में आ चुकी थी और उसने यह सब देख लिया था। उसे आश्चर्य नहीं हुआ। गोल्लाती होने के नाते, शिशुओं का गाय के थन से सीधे दूध पीना उसके लिए आम बात थी। लेकिन उसे यह बात परेशान कर रही थी कि यह विचार, जो उसके पति के मन में आया था, उसके मन में क्यों नहीं आया। जब बच्चे ने दूध पी लिया, तो गौड़ा ने उसे गोद में उठाया, उसका सिर एक बार गाय के अगले पैर से छुआया और उससे कहा: 'माँ, आज से तुम इसकी माँ हो। जब भी यह रोए, तुम्हें इसे अपना थन देना है और इसका पालन-पोषण करना है।'

जैसे ही उसने बच्चे को गोद में उठाया और पीछे मुड़ा, उसकी नज़र पास आई अपनी पत्नी पर पड़ी। वह झट से बोल पड़ा, “तुम्हें तो थोड़ा रोने वाले बच्चे को चुप कराना भी नहीं आता। कैसी औरत हो तुम? तैयव्वा का दूध सूख जाने पर इतना हंगामा क्यों? क्या तुम्हें पता नहीं कि हमारे घर में कितनी गायें हैं?”

उनकी पत्नी को अपमानित महसूस हुआ। उन्होंने सिर झुकाया और वहां से चली गईं।

उस दिन से वह बच्चा पुण्यकोटी का दूध पीने लगा।

एक बछड़े को जन्म देने के बाद, पुण्यकोटी गाय ढाई साल तक दूध देती थी। अगले डेढ़ साल तक, वह शिशु गाय का दूध बड़े चाव से पीता था। कई बार तो उसे किसी वयस्क की ज़रूरत भी नहीं पड़ती थी। दो साल का वह बछड़ा बिना किसी सहारे के अकेले ही सारी गायों के बीच घूमता था, अपनी माँ गाय को पहचान लेता था और उसके थन पर मुँह लगा देता था। गाय कभी उसे सींग नहीं मारती थी या लात नहीं मारती थी। बच्चा गाय के पेट के नीचे झुककर तब तक दूध पीता था जब तक कि गाय संतुष्ट न हो जाए, और फिर गालों पर दूध के झाग के निशान लिए घर लौट आता था। जब तक गाय का दूध पूरी तरह से बंद हो जाता था, तब तक बच्चे की दूध पीने की इच्छा पूरी हो चुकी होती थी।

खंड 2

1

अरुणाद्री पर्वत की चोटी और उसकी तलहटी में भी हरी-भरी घास उग रही थी। यह मौसम की आखिरी बारिश का समय था, जब तलहटी में घास बेतहाशा बढ़ रही थी और गायें जी भर कर इस भरपूर घास का आनंद ले रही थीं। वे इतना दूध दे रही थीं कि एक बड़ा घड़ा भर जाए। आषाढ़ माह की बारिश शुरू होने से लेकर कार्तिक माह (अक्टूबर और नवंबर) बीतने और मार्गशीर्ष माह (दिसंबर) तक, पूरा क्षेत्र हरियाली से ढका रहता था। हालांकि पहले जैसे घने जंगल अब नहीं रहे, फिर भी बारिश का मौसम बीतने के बाद कक्के और बिक्के के पेड़ फूलों से लदे होते थे और अपने बीज बिखेरते थे। नवजात और करीने से बढ़ रहे पलाश के पौधे पर लाल फूल खिले होते थे।

जब अरुणाद्री पर्वत की गुफाओं में घना जंगल हुआ करता था, तब वहाँ बाघ रहते थे, लेकिन अब वहाँ लकड़बग्घे और चीते नहीं दिखते। हालांकि, ग्रीष्म ऋतु और शरद ऋतु में कुछ लकड़बग्घे पर्वत पर आ जाते थे। कभी-कभी वे आसपास के गांवों से आने वाले मवेशियों, बकरियों और भेड़ों पर हमला कर देते थे, जो पर्वत की तलहटी में चरते थे। लेकिन वे कभी भी मनुष्यों पर हमला नहीं करते थे। और अगर दो-तीन चरवाहे आसपास होते, तो वे आस-पास कहीं भी दिखने की हिम्मत नहीं करते थे।

कलिंग गौड़ा के पास डेढ़ सौ एकड़ का अपना चारागाह था, जो उन्हें विरासत में मिला था। वे अपने चारागाह में घास की देखभाल और संरक्षण करते थे, लेकिन कार्तिक माह तक अपनी गायों को पहाड़ियों की तलहटी में चराने ले जाते थे। आसपास के गांवों के लोग भी ऐसा ही करते थे। हाल ही में, उनका बेटा कृष्ण गौड़ा भी पहाड़ियों की तलहटी में जाया करता था। पचास वर्ष से अधिक आयु के कलिंग गौड़ा को पहाड़ियों के ऊबड़-खाबड़ और पथरीले इलाके में चलना-फिरना मुश्किल लगता था। इसके अलावा, यह खेती-बाड़ी के कामों की देखरेख का मौसम था। पिता खेत और जलभूमि दोनों में काम की देखरेख करते थे, जबकि बेटा मवेशियों की देखभाल की जिम्मेदारी संभालता था। हालांकि उन्होंने खेती के लिए मजदूर रखे हुए थे, फिर भी वे हमेशा मवेशियों की देखभाल स्वयं करते थे।

अपने पिता की तरह कृष्ण गौड़ा भी लंबा और हट्टा-कट्टा था। पिता की तरह बड़ी मूंछों को छोड़कर, उसका पहनावा और आभूषण बिल्कुल पिता जैसा ही था। उसके माथे पर हमेशा तिलक लगा रहता था, गले में लॉकेट और उंगलियों में अंगूठियां रहती थीं। लेकिन, वह अपने पिता से कहीं बेहतर बांसुरी बजाता था। वह सीटी भी इस तरह बजाता था जैसे बांसुरी की धुन बज रही हो। उसके पास पान की थैली होती थी, जिसमें जायफल, लौंग, इलायची, पान के कोमल पत्ते और चूना होता था। वह इस थैली को लपेटकर अपनी कमर में बांध लेता था। वह एक निवाला पान चबाता था जिससे उसके होंठ लाल हो जाते थे। जब वह बांसुरी बजाने के लिए अपने होंठ जोड़ता था, तो चरती हुई गायें आकर उसके पास खड़ी हो जाती थीं। जब वह उन्हें पहाड़ियों पर चराने ले जाता था, तो वह अपने हाथ में एक लंबी बांस की छड़ी रखता था। उसने छड़ी के एक सिरे पर नुकीला कांटा लगा रखा था, जिससे वह एक भाले जैसी बन गई थी।

एक दिन, वह गायों को चराने के लिए पहाड़ी के पश्चिमी ढलान पर ले गए। यहाँ की कोमल घास कमर तक ऊँची उग गई थी क्योंकि दूसरे गाँवों के ग्वाले अभी तक अपने पशुओं को इस तरफ नहीं लाए थे। कृष्ण गौड़ा की गायों के लिए यह एक बड़ा भोज था। कृष्ण एक चट्टान से टिककर थोड़ी देर झपकी लेने लगे। फिर वे गायों को नदी के किनारे ले गए और उन्हें पानी पिलाया। इसके बाद, उन्होंने गायों को नदी के किनारे छोड़ दिया और टहलने लगे। गायें फिर से चरने लगीं और पलाश के पेड़ों के समूह की ओर आगे बढ़ गईं। दूसरे गाँवों के लोगों की गायें भी यहाँ चर रही थीं। कृष्ण भी वहाँ पहुँचे और उन्होंने लगभग पाँच-छह लोगों को देखा। उन्होंने फिर से पान चबाया और उनके कहने पर बांसुरी बजाई। अब तक दिन ढल चुका था और पश्चिम में सूर्य अस्त हो रहा था। दूसरे ग्वाले अपने पशुओं को वापस अपने गाँवों की ओर ले जाने लगे। कृष्ण ने भी अपने झुंड को अपने गाँव की ओर मोड़ दिया। वे धीरे-धीरे वापस लौटने लगे और रास्ते में चरते हुए आगे बढ़ने लगे।

फिर एक ढलान पर, कृष्ण नीचे उतरे, एक नाला पार किया और फिर गायों को पहले ढलान पर चढ़ने दिया, जबकि वे उनके पीछे खड़े होकर उन्हें प्रोत्साहित कर रहे थे—'हुय्यी! बस करो, जल्दी करो!' अचानक, उन्हें पीछे से एक गाय की डर से चीख सुनाई दी। इससे पहले कि वे अपने सभी पशुओं की गिनती कर पाते, फिर से वही दर्द भरी चीख 'अंबा!' सुनाई दी। कृष्ण ने सोचा कि चाहे वह कोई भी गाय हो या किसी की

भी; सियार ने उनमें से किसी एक पर हमला कर दिया होगा। हाथ में लाठी कसकर, वे जल्दी से ढलान पर चढ़ गए और देखा कि उनकी पुण्यकोटी गायों में से एक पास ही एक बड़े पत्थर के किनारे डर से कांप रही थी। विपरीत दिशा से दौड़ता हुआ आया सियार उस पर हमला करने ही वाला था। कृष्ण ने सियार को देखा। वह असाधारण रूप से बड़ा था। एक पल के लिए उनका हृदय कांप उठा। लेकिन अगर उन्होंने देर की, तो माता का जीवन समाप्त हो जाएगा। जब तक उसने लाठी के नुकीले सिरे को घुमाया और आगे बढ़ा, तब तक लकड़बग्घा गाय पर कूद चुका था और अपने पंजे के एक जोरदार वार से उसके चेहरे पर जोरदार प्रहार कर दिया था।

'तू कमीना!' कृष्ण चिल्लाए और बिजली की तेज़ी से उछलकर भाला उसकी पीठ पर साधा। लेकिन निशाना चूक गया। बिना किसी चोट के, वह दहाड़ते हुए कृष्ण पर कूद पड़ा। अब, कृष्ण ने भाला उसकी छाती पर साधा और ज़ोर से वार किया। भाला उसके दिल में जा लगा। लेकिन उसका एक अगला पंजा उनके चेहरे में और दूसरा उनकी छाती में धंस गया। दोनों जगहों से तुरंत खून बहने लगा, लेकिन वह डरा नहीं। उसने भाला निकाला और फिर से उसकी छाती में वार किया। भाला जहां धंसा था, वहां से खून बहने लगा। जब कृष्ण ने भाला निकालकर उसे एक बार फिर से मारने की कोशिश की, तो लकड़बग्घा उन पर कूद पड़ा और आखिरी, जानलेवा वार कर दिया।

2

जब उन्होंने गाय के चेहरे से खून टपकता देखा, तो दूसरी गायें भी डर गईं। वे जल्दी से भागती हुई अपने घर—गांव के आरंभ में स्थित गौशाला—तक पहुंचीं। कलिंग गौड़ा चकित रह गए—रोज उन्हें गायें इत्मीनान से, शरीर को अगल-बगल हिलाते हुए आती हुई दिखती थीं, लेकिन आज वे घबराकर भाग रही थीं। लेकिन जब उन्होंने खून से लथपथ चेहरे वाली गाय को ध्यान से देखा, तो उन्हें चार पंजों के गहरे घाव साफ दिखाई दिए। और जैसे ही उन्होंने सोचा, 'यह तो निश्चित रूप से लकड़बग्घे का काम है', उन्हें तुरंत याद आया कि उनका बेटा अभी तक घर नहीं लौटा है। कृष्ण इस घायल गाय को कैसे छोड़ सकते थे? क्या वे वहीं पर उसके घावों पर गुलाब के पत्तों का रस नहीं लगा सकते थे? बेशक, अगर उन्होंने यह देखा होता, तो वे इसे इस हालत में तो बिल्कुल नहीं छोड़ते। या फिर, क्या उन्होंने गायों को चरने के लिए छोड़ दिया और यूं

ही चले गए? गौड़ा एक पल के लिए अपने बेटे पर क्रोधित हुए। लेकिन अचानक उसे डर और शक हुआ, कहीं लकड़बग्घा उस पर हमला न कर दे? वह गौशाला के पीछे गया और वहाँ जाँच की। कृष्णा वहाँ नहीं था। वह घर के अंदर गया और अपनी बहू से पूछा। नहीं। वह अभी तक घर नहीं आया था। गौड़ा का दिल तेज़ी से धड़कने लगा।

तुरंत ही वह गाँव के अंदर गया। खेतों और दलदली इलाकों से लौटे लगभग पंद्रह-बीस आदमी वहाँ जमा थे। शाम हो चुकी थी। सबने मिलकर तेल में डूबे सूखे नारियल के पत्तों से बनी मशालें जलाईं। लाठियों, भालों और दरांती से लैस होकर वे पहाड़ी की ओर दौड़ पड़े।

गाँव की सीमा पर बने बांध को पार करने के बाद, वे तीन-चार लोगों के छोटे-छोटे समूहों में बँट गए और अलग-अलग दिशाओं में चल दिए। चलते-चलते हर कोई ज़ोर-ज़ोर से 'कृष्णा! लेई, कृष्णा!' चिल्ला रहा था, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। कलिंग गौड़ा का मन चिंता से भर गया। उनकी बाईं भौंह फड़क उठी और उनके बाएं कंधे के साथ तीन बार उछली। उन्होंने दूसरों से कहा, 'आस-पास देखो! तेज़ चलो!' वे भी एक समूह में शामिल हो गए और उनके साथ चलने लगे। जब तक वे पत्थरों पर चढ़े-उतरे, छोटी धाराओं को पार किया, पेड़ों की दरारों में खोजबीन की और आगे बढ़े, तब तक रात का अंधेरा छा चुका था। गौड़ा ने उन्हें विशेष रूप से उन जगहों पर खोजने का निर्देश दिया था जहाँ चराई के निशान हों, क्योंकि गायें दिन में पहले इन्हीं जगहों पर गई होंगी। गौड़ा का दल पहाड़ी के दाहिने किनारे पर आगे बढ़ रहा था कि तभी उन्हें पीछे से एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी, जो उन्हें पुकार रही थी: 'कलिंग अंकल!!! सब इधर आओ, वो यहाँ हैं!' रात के सन्नाटे में वो आवाज़ कुछ अस्पष्ट सुनाई दी। गौड़ा ने 'वो यहाँ हैं' ये शब्द सुनकर उम्मीद की किरण जगी। 'वो घायल होंगे। लगता है वो लेटे हुए हैं, शायद उठ नहीं पा रहे। थोड़ी दवा और खाना दे दो, ठीक हो जाओगे', गौड़ा ने मन ही मन सोचा और अपने साथियों के साथ उस दल की ओर मुड़ गए जिसने आवाज़ दी थी। मशालों की रोशनी से उन्हें पता चला कि दूसरे दल भी उसी दिशा में बढ़ रहे थे।

जब कलिंग पास गए और मशालों की रोशनी में यह दृश्य देखा, तो उनकी आँखों में अंधेरा छा गया। कृष्ण मृत पड़े थे। उनके चेहरे और हृदय से रिसता खून जम गया था और काला पड़ रहा था। लकड़बग्घे ने अपने दाँतों से उनका दाहिना गाल नोंच डाला था और उसे चबा रहा था। दोनों जांघों का मांस भी उसके मुँह से फट गया था।

उनके सारे कपड़े खून से लथपथ थे और हवा के संपर्क में आने से भूरे पड़ रहे थे। उनकी दाहिनी आँख का सफेद गड्ढा फट गया था और खून टपक रहा था। गौड़ा मानो अपने पुत्र के शव पर गिर पड़े। उनके साथ आए लोग यह दृश्य देखते रहे, उनका दुख उमड़ रहा था। कलिंग गौड़ा गाँव के मुखिया गौड़ा थे। कृष्ण उनके इकलौते पुत्र थे। पूरे गाँव में कोई भी उनके जैसा बांसुरी नहीं बजा सकता था। फसल उत्सव कारुहब्बा के दौरान जिस गति से वे बैलों के साथ दौड़ लगाते थे, उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। और अब गांव के मुखिया गौड़ा का इकलौता बेटा लकड़बग्घे के हमले का शिकार होकर मर चुका था। गौड़ा को भला कौन शांत कर सकता था? दो आदमी एक नदी के पास दौड़े, एक कपड़ा पानी में भिगोया और धीरे-धीरे उससे गौड़ा के सिर पर थपथपाया।

कुछ देर बाद गौड़ा को होश तो आ गया, लेकिन उसने अपने बेटे के शव को और भी कसकर गले लगा लिया, “मेरे बेटे, तुम कहाँ चले गए?” वह रोते हुए बोला, उसकी चीखों से पहाड़ियों की खामोशी टूट गई। पुरुषों में सबसे बड़े, कोटिगेमाने चिन्नय्या ने गौड़ा का सिर अपनी गोद में लिया और उसे दिलासा देते हुए कहा, “कलिंग अन्ना, अब रोने का कोई फायदा नहीं है। वह लकड़बग्घा कहीं आस-पास ही होगा। हमें उसे मारना होगा। उठो। हममें से कुछ लोग शव लेकर घर लौटेंगे। बाकी लोग उस लकड़बग्घे को ढूंढकर मार डालेंगे।”

‘मेरा बेटा तो पहले ही जा चुका है। लकड़बग्घे को मारने का क्या फायदा?’ गौड़ा ने सिसकते हुए कहा।

“हाँ, तुम्हारा बेटा चला गया। लेकिन अगर वह लकड़बग्घा ज़िंदा रहा, तो कौन जाने कितनी गायों को मार डालेगा! अगर वह मारा गया, तो कम से कम हमें कुछ पुण्य तो मिलेगा। उसने कृष्ण को मारा है, हमें उसे ऐसे ही नहीं जाने देना चाहिए।”

अब कलिंग गौड़ा क्रोधित हो उठा। वह हिरनी! वह अचानक उठ बैठा। 'लाश की रखवाली करना। चाहे वह कहीं भी हो, मैं उसे ढूंढ निकालूंगा और सुनिश्चित करूंगा कि उसका खून बहे', उसने खड़े होते हुए कहा।

इसी बीच उनमें से एक ने कहा: 'हमें कृष्ण का भाला कहीं नहीं मिला।'

कोत्तिगेमाने चिन्नय्या ने तुरंत सोचा और कहा: ‘कृष्ण की मृत्यु यूँ ही नहीं हुई। उन्होंने उसे अपने भाले से भेद दिया है। भाला अभी भी उसके शरीर में फंसा होगा। वह कहीं आस-पास ही पड़ा होगा। चलो, उसे ढूंढते हैं।’

उनके विरोध के बावजूद, कलिंग गौड़ा लकड़बग्घे की तलाश में निकले दल में शामिल हो गए। चार लोग शव की रखवाली के लिए पीछे रह गए। चिन्नय्या का अनुमान सही निकला। वहाँ से लगभग सौ मीटर दूर, लकड़बग्घा फूलों वाले कंटीले पौधों के झुंड के नीचे गिर गया था। उसकी छाती और पेट पर दो-दो छेद थे, जिनसे अभी भी खून बह रहा था। भाला अभी भी उसकी छाती में फंसा हुआ था। हिलने-डुलने पर दर्द होने के कारण, लकड़बग्घे ने अपने चारों पैर एक तरफ कर लिए थे और वह कुंडली मारकर लेटा हुआ था। जब उसने मशाल लिए इतने सारे लोगों को देखा, तो वह न केवल घबरा गया, बल्कि इस जानलेवा खतरे का सामना करने से उसका क्रोध और भी बढ़ गया। वह तुरंत खड़ा हो गया और भाले के दर्द की परवाह न करते हुए, इतनी ज़ोर से दहाड़ा कि उसकी आवाज़ पूरी पहाड़ियों में गूंज उठी।

'तेरी माँ को धिक्कार है!' कलिंग गौड़ा ने अपने बगल वाले व्यक्ति से भाला छीनकर उस पर झपट्टा मारा। उसी क्षण लकड़बग्घा भी उन पर टूट पड़ा। बाकी लोग चिल्लाए, 'कलिंग अन्ना! कलिंग अन्ना!' और इससे पहले कि वे लकड़बग्घे पर अपने भाले चला पाते, गौड़ा का भाला न केवल उसकी छाती में धंस गया, बल्कि कृष्ण का भाला भी निकल गया और उस जगह से भी खून बहने लगा। लकड़बग्घा कलिंग गौड़ा को छू भी नहीं पाया। वह उनसे लगभग पाँच फीट दूर गिर गया था, और इससे पहले कि वह फिर से दहाड़ पाता, गौड़ा ने अपना भाला उठाया और उसे फिर से उसके चेहरे पर घोंप दिया। हालाँकि उसकी जान अभी नहीं गई थी, लेकिन लकड़बग्घे का खेल यहीं समाप्त हो गया।

गौड़ा का दुःख कुछ कम हुआ था जब उसने अपने हाथों से लकड़बग्घे का जो हाल देखा, वो भी देखकर। उसने बाकी लोगों से कहा, 'इसे भी गाँव ले चलो।' भाले के कुछ ही वारों से लकड़बग्घे की बची-खुची जान भी निकल गई। फिर उन्होंने उसके पैरों को कट्टाले (अगेव) के पौधे से तोड़ी गई लताओं से बाँध दिया और चार डंडों के सहारे खड़ा कर दिया। दो आदमियों ने उसे अपने कंधों पर उठाया और फिर कृष्ण के शव के पास रख दिया।

अब, जब गौड़ा ने अपने बेटे का शव देखा, तो क्रोध से भरा उसका मन दुःख से व्याकुल हो गया। वह फूट-फूटकर रोने लगा और अपनी छाती पीटने लगा।

उस रात कलेनाहल्ली में कोई नहीं सोया। कुछ ग्रामीण गौड़ा के रिश्तेदारों को खबर देने और उन्हें अंतिम संस्कार के लिए गांव लाने के लिए चले गए। गौड़ा, लक्काव्वा और तयव्वा शव के चारों ओर बैठकर लगातार रोते रहे। तीन साल का बच्चा, जो इस त्रासदी को पूरी तरह समझ नहीं पाया था, कुछ देर रोया और फिर अपनी मां की गोद में लेटकर सो गया।

जब तक स्वामी, सूर्य देव, आकाश में पाँच-छह फीट ऊपर चढ़ पाए, दूर-दराज के शहरों से रिश्तेदार आ चुके थे। शरीर को उस हालत में, मांस और मांसपेशियों के फटे होने के कारण, अधिक देर तक नहीं छोड़ा जा सकता था, क्योंकि वह सड़ने और बदबू करने लगता। उन्होंने उसे बाँस की बनी अर्थी पर रखा। सुबह आठ बजे से पहले ही उन्होंने उसे गौड़ा के विशाल घास के मैदान के बीचोंबीच दफना दिया और लौट आए। घर पहुँचकर कलिंग गौड़ा एक कोने में सो गए। लक्कव्वा और तयव्वा दूसरे कोने में लेट गए। वहाँ मौजूद कई लोगों के आग्रह के बावजूद, उन्होंने अपने मुँह में पानी की एक बूँद भी नहीं डाली। पड़ोसियों ने बच्चे को अपने घर ले लिया था। कलिंग गौड़ा गाँव के मुखिया थे, वे बुजुर्ग जिन्होंने जैमिनी महाभारत पढ़ी थी, वे गौड़ा जो उनके सभी सुख-दुखों में उनके साथ थे, जिन्होंने हमेशा उन्हें ज्ञानवर्धक सलाह दी थी —अगर वे इस हालत में सो रहे थे, तो कौन उन्हें सांत्वना और मन को शांति देने वाले शब्द कह सकता था?

इससे पहले, चिन्नय्या ने गौड़ा के पास जाकर कहा था, 'यह ईश्वर की इच्छा थी, कलिंग अन्ना, कृपया रोना मत।' गौड़ा क्रोधित होकर बोले, 'यह कैसा नीच ईश्वर है? इच्छा! उस कमीने का पेशाब! क्या वह गंदगी से भरा हुआ था जो मेरे बेटे की मृत्यु की इच्छा कर रहा था?' ईश्वर की बातें व्यर्थ थीं। कर्म और पिछले जन्म की बातें भी काम नहीं आईं। उनमें से किसी में भी इतनी समझ नहीं थी कि इस मामले में कलिंग गौड़ा से बात कर सके।

सूर्यास्त से दो घंटे पहले, अग्रहारा से नरसिम्हा जोइस कलेनहल्ली पहुँचे। दोपहर बीत चुकी थी जब वे दूसरे गाँव से लौटे थे, जहाँ उन्होंने ब्राह्मणों को दान दिया था। घर में कदम रखते ही उनकी पत्नी ने उन्हें कलिंग गौड़ा के बेटे की लकड़बग्घे के हमले में हुई मौत की खबर दी। जोइस ने जल्दी से स्नान तो कर लिया, लेकिन कुछ खा नहीं पाए। उनके और कलिंग गौड़ा के परिवार के बीच पीढ़ियों से आपसी विश्वास और स्नेह का बंधन था। यह बंधन इस पीढ़ी में भी कायम रहा। उन्होंने गंगोदक (पवित्र जल) का

एक गिलास पिया और दो मील की दूरी दौड़ते हुए गौड़ा के घर पहुँचे। गौड़ा अभी भी लेटे हुए थे, लेकिन जोइस को देखकर उठ बैठे। गौड़ा के घर में जमा भीड़ में से किसी ने जोइस को लकड़ी का तख्ता दिया, जिस पर उन्होंने कहा, 'कोई बात नहीं भाई', और ज़मीन पर बैठ गए। गौड़ा कुछ नहीं बोले। गौड़ा की पत्नी जोइस के पास आई, अपनी आपबीती सुनाई और जोर-जोर से रोने लगी। बहू तैयव्वा के पास रोने के लिए शब्द नहीं थे। लगातार रोने के कारण उसका चेहरा मांस का ढेर बन गया था।

'क्या खबर है?' जोइस ने कोटिगेमाने चिन्नय्या से पूछा। चिन्नय्या ने कल से लेकर अब तक की सारी घटनाएँ बड़े सजीव और सजीव ढंग से बताईं; इतना ही नहीं, उन्होंने सुबह से उन्हें शांत करने और दिलासा देने के लिए किए गए अपने सभी प्रयासों का भी वर्णन किया। सिर झुकाए जोइस लगभग आधे मिनट तक किसी बात पर गहराई से सोचते रहे। फिर उन्होंने पूछा, 'घायल गाय की हालत अब कैसी है?'

'स्वामी जी, अब इसे कौन देखेगा?' चिन्नय्या ने कहा।

'चलो, इसे देखते हैं', उसने कहा और गौशाला की ओर चल पड़ा। चिन्नय्या उसके पीछे-पीछे गया। उस दिन किसी ने भी गायों को चराने के लिए बाहर नहीं निकाला था। नौकरों ने घास की खाई में उनके सामने कुछ भूसा बिछा दिया था और कुएँ से पानी भरकर उनके पानी के कुंड में डाल दिया था। लकड़बग्घे के पंजे से घायल हुई गाय वहाँ सदमे और उदासी के भाव से खड़ी थी। जहाँ-जहाँ पंजे के नाखून लगे थे और खून निकला था, वहाँ सूजन आ गई थी। कल से उसने न तो भूसे को छुआ था और न ही पानी की एक बूँद को। 'अगर उसका बछड़ा उसके पास आता है, तो वह लात मारने लगती है... बुड, बुड बुड। उसने आज तक किसी को लात नहीं मारी थी', गौड़ा के नौकर ने कहा। जब जोइस पास गया, तो उसने एक डरावनी आवाज निकाली मानो उसे सींगों से मार डालेगी। लेकिन जैसे ही वह थोड़ा दूर खड़ा हुआ, उसने अपना उदास चेहरा नीचे कर लिया।

'यह डर से कांप रहा है, अय्या', चिन्नय्या ने इसके व्यवहार को समझा।

जोइस अंदर गया और गौड़ा से कहा: 'गौड़ाया, पिछवाड़े में आओ और गाय की आँखों में देखो। उसके चेहरे पर नाखूनों के निशान गहरे धंसे हुए हैं। आकर जाँच करो कि क्या वह धब्बा जहरीला हो गया है। केवल तुम ही उसकी जाँच कर सकते हो। किसी और को यह करने का ज्ञान नहीं है।'

‘मुझे इससे क्या फर्क पड़ता है कि इसका क्या होता है?’ कलिंग गौड़ा ने कहा और अपनी आँखें पोंछ लीं।

‘गौदय्या, क्या तुम ये कह सकते हो? तुम्हारे सिवा गायों से संबंधित बीमारियों के बारे में और कौन इतना जानता है? तुम्हारा बेटा तो चला गया। अब क्या तुम गोमाता को दवा न देकर, उसका इलाज न करके, अपने हाथों से मार डालोगे? क्या इस घर को भी इस पाप का खामियाजा भुगतना पड़ेगा?’ उसने पूछा। लक्कव्वा की ओर मुड़कर उसने कहा, ‘गौदम्मा, उठो, गौशाला जाओ और खुद देख लो। तुम इस घर की मुखिया हो। क्या तुम सुबह से कम से कम गाय को देख भी नहीं सकती थीं?’

तब तक कलिंगा गौड़ा उठ खड़ा हुआ था। जोइस उसके पीछे-पीछे गया। गौड़ा की पत्नी भी उनके साथ आ खड़ी हुई। यह गाय, जिसने कभी किसी को लात नहीं मारी थी, चाहे कोई पीछे से आए, न ही सामने से आने वालों को सींगों से मारा था, अब गौड़ा को सींगों से मारने के लिए अपना सिर हिला रही थी। लेकिन तभी गौड़ा ने उसकी लगाम पकड़ी और उसके चेहरे को ध्यान से देखा। उसने जोइस से कहा, 'यह ज़हरीली हो गई है। खेत जाकर कुछ जड़ी-बूटियाँ लानी होंगी।'

किसी को भेजो।

‘किसी को नहीं पता। मुझे खुद जाकर लाना होगा। मैं अभी जाता हूँ। तुम घर पर ही रहो’, कलिंगा गौड़ा ने कहा और झटपट खलिहान के पिछले दरवाजे से बाहर निकल गए। जोइस अंदर गया और गौड़ा की पत्नी को दिलासा देने लगा।

जब उन्होंने अपने कलिंग अन्ना को गाँव से अकेले बाहर जाते देखा, तो कुछ लोग उनके पीछे-पीछे खेत में चले गए। लेकिन जब उन्होंने जड़ी-बूटियाँ तोड़ना शुरू किया, तो उन्होंने उन्हें दूर ही रखा। एक पुरानी मान्यता थी कि दूसरों के सामने औषधीय जड़ी-बूटियाँ तोड़ना मना है। उन्होंने जड़ी-बूटियों को अपनी धोती की तहों में रखा, घर आए, उसमें थोड़ा लहसुन, लौंग और अन्य औषधियाँ मिलाईं, और मिश्रण को बारीक पेस्ट में पीसकर गाय के चेहरे के घावों पर लगाया। जब उन्हें पता चला कि गाय ने कल से घास नहीं खाई और पानी नहीं पिया है, तो उन्होंने अपने हाथों से थोड़ी घास लाकर उसे खिलाने की कोशिश की। लेकिन गाय ने मुँह खोलने से इनकार कर दिया। उन्होंने अंदर मौजूद अपनी पत्नी को पुकारा, 'गाय डर के मारे ऐसी हो गई है। कुछ झाड़ू जलाओ, हम इसका डर दूर कर देंगे।'

वह अंदर गई और पीली घास की डंडियों से बनी झाड़ू लेकर लौटी और उसे गाय के चेहरे के सामने तीन बार गोलाकार गति में घुमाया। फिर उसने झाड़ू के अगले सिरे में आग लगाई और उसे गाय के सामने रख दिया। झाड़ू जलने लगी और चट-चट-चट-चट की आवाज़ करने लगी, क्योंकि लौ से पूरा बाड़ा जगमगा उठा, जिससे न केवल घायल गाय बल्कि पूरा झुंड डर गया। गौड़ा ने कहा, 'अब डर दूर हो जाएगा।'

उस सुबह भी गायों का दूध नहीं दुहा गया था। नौकरों ने बछड़ों को दूध पीने के लिए छोड़ दिया था। लक्काव्वा ने नौकरों को निर्देश दिया कि उन्हें दूध पीना जारी रखने दें।

घर लौट आए गौड़ा ने जोइस से कहा: 'नरसप्पा, अभी अपने गांव मत जाओ। अगर चाहो तो यहीं अपने लिए कुछ चावल उबाल लो।'

'गौडय्या, चावल की किसे ज़रूरत है? मैं यहीं रुकूँगा। किसी को भेजकर मेरे घरवालों को बता देना कि मैं कल सुबह लौट आऊँगा। इतना काफी होगा।'

एक नौकर जलती हुई मशाल लेकर अपने घर की ओर चल पड़ा।

4

कलिंग गौड़ा को पानी पीने की इच्छा हुई। उन्होंने पानी मंगवाया, घड़े का तीन-चौथाई पानी जल्दी-जल्दी घूंटों में पी गए और अपनी मूंछें बांहों से सुखा लीं। उन्होंने सुबह से पान नहीं खाया था। उन्होंने पान की थैली मंगवाई, फिर दो पान के टुकड़े मुंह में डाले, पान के पत्ते पर अंगूठे से थोड़ा सा चूना फैलाया और उसे भी मुंह में डाल लिया। फिर उन्होंने हथेली पर थोड़ा सा तंबाकू गिराया, उसे पीसकर पाउडर बना लिया, मुंह भर लिया और जोइस से पूछा, 'मेरे बच्चे ने ऐसा कौन सा गुनाह किया था कि इतनी कम उम्र में उसकी इतनी भयानक मौत हो गई?'

जोइस ने उत्तर दिया: 'गौडय्या, आप तो बहुत कुछ जानते हैं। आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? आपके पुत्र की मृत्यु सम्मानपूर्वक हुई। आपको "भयानक मृत्यु" नहीं कहनी चाहिए।'

क्या लकड़बग्घे के काटने से मरना सम्मानजनक है?

'वह सिर्फ लकड़बग्घे के काटने से नहीं मरा। उसने गोमाता को बचाने और उसकी रक्षा करने के लिए लड़ाई लड़ी। शास्त्रों में लिखा है:

ब्रह्म वह है जो
सबसे महत्वपूर्ण बात शास्त्रम धर्म को समझना है।

गाय की रक्षा के लिए ब्राह्मण और वैश्य को भी हथियार उठाना पड़ता है। आपका पुत्र जाति से ग्वाला है; वह गोमाता को बचाने गया था। और उसने उसे बचा भी लिया। अगर वह आगे न बढ़ता, तो क्या गाय बच पाती? उसने एक पुरुष की तरह भाले से लकड़बग्घे को मार डाला। अगर आप वहां जाकर उसे न भी मारते, तो भी वह मर ही जाता। हालांकि उसकी मृत्यु दुर्भाग्यपूर्ण रही, लेकिन उसे पुण्य का अंत अवश्य मिलेगा। इसे अपना सौभाग्य समझिए। गाय बच गई।

'अगर बच गया तो क्या फायदा! क्या मेरा बेटा लौटेगा?' गौड़ा ने उठते हुए उत्तर दिया, बरामदे में गए, तंबाकू का रस नाली में थूका और अंदर आ गए। उन्होंने अपनी पत्नी और बहू को पुकारा, 'लेई! इधर आओ, नरसप्पा हमें शास्त्रों के बारे में बता रहे हैं, आओ और सुनो।' लक्कव्वा और तयव्वा दोनों दीवार से टेक लगाकर बैठ गईं।

नरसिम्हा जोइस ने कहा: 'तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए; तुम्हें यह नहीं कहना चाहिए कि अगर गाय बच गई तो क्या फायदा? शास्त्रों में लिखा है, यद्गृहे दुखी गावः स याति नरके नरः। जिस व्यक्ति के घर में गाय दुखी होती है, वह नरक में जाता है। अगर वह गाय मर जाती, तो क्या उसका बछड़ा दुखी नहीं होता? तब तुम्हारी पिछली सात पीढ़ियाँ और अगली सात पीढ़ियाँ रौरव नरक में जातीं। वास्तव में, तुम्हारा पुत्र निश्चित रूप से नरक में जाता यदि वह कायर की तरह चुपचाप अपनी जान के डर से देखता रहता, जबकि उसने हिरनी को गाय पर हमला करते देखा था। परन्तु तुम्हारे पुत्र ने महान साहस दिखाया और उसने तुम्हारे पूर्वजों को बचाया; उसने तुम्हें भी बचाया।'

ये आखिरी शब्द सुनते ही लक्कव्वा ने अपनी आँखें पोंछीं और सीधी बैठ गई। तैयव्वा भी उसके शब्दों को और ध्यान से सुनने लगी। जोइस ने कहा: "क्या तुम नहीं जानते? पुराने समय में च्यवन नाम के एक महान ऋषि थे। जब वे नदी किनारे गहरी ध्यान मुद्रा में बैठे थे, तभी एक भयंकर बाढ़ आई और वे नदी में डूब गए। लेकिन इससे उनकी ध्यान मुद्रा में कोई खलल नहीं पड़ा और वे नदी में उसी अवस्था में रहे। एक दिन जब तीन मछुआरे मछली पकड़ने के लिए जाल फेंक रहे थे, तो वे उनके जाल में फंस गए। मछुआरों ने सोचा कि यह एक बहुत बड़ी मछली है, लेकिन जब उन्होंने उसे किनारे पर खींचा, तो उन्हें ऋषि मिले। मछुआरे डर गए। लेकिन ऋषि ने

स्वयं उनसे कहा: “तुमने मुझे मछली समझकर पकड़ा है। इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। मुझे किसी को बेच दो।”

“पर इतना महान ऋषि कौन खरीदेगा?” यह खबर राजा तक पहुँची। वह आया, ऋषि के सामने प्रणाम किया और उनसे महल में आने की विनती की। ऋषि ने कहा, “मैं आऊँगा। लेकिन पहले इन मछुआरों को मेरी कीमत दे दो।” जब राजा ने पूछा, “पर हम आपकी कीमत कैसे तय करें?” तो ऋषि ने उत्तर दिया, “आप इस देश के शासक हैं, आप सोच-समझकर निर्णय लें।” बेचारा राजा समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे। उसने कहा कि वह अपना सारा खजाना दे देगा। इस पर जब ऋषि ने पूछा, “बस यही मेरी कीमत है?” तो राजा को कुछ समझ नहीं आया। जब राजा ने कहा कि वह अपना पूरा राज्य दे देगा, तो ऋषि ने फिर पूछा, “बस यही मेरी कीमत है?” अब राजा को और क्या करना चाहिए?’ जोइस ने लक्कव्वा के चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

जब उसने कहा, 'मुझे क्या पता होगा? आप ही बताइए', तो नरसिम्हा जोइस ने कलिंग गौड़ा के चेहरे की ओर देखा।

उन्होंने कहा, 'मुझे मिल गया।'

'तो यह कहो।'

‘क्या ऋषि ने यह नहीं कहा था, “एक गोमाता दो?” है ना?’

‘देखा? आपको जवाब मिल गया। ऋषि ने सचमुच यही कहा था। “एक गाय पूरे ब्रह्मांड के बराबर है। और मैं उस ब्रह्मांड में केवल एक प्राणी हूँ। अगर आप मुझ जैसे करोड़ों ऋषियों को भी शामिल कर लें, तो भी वह एक गाय के मूल्य के बराबर नहीं होगा,” ऋषि ने कहा।’

गौडय्या ने अपनी पत्नी और बहू से कहा: 'सुना तुमने? अब इसे अच्छी तरह से अपने दिमाग में बिठा लो।'

जोइस ने कहा: 'आपने जनक महाराजा का नाम तो सुना ही होगा, है ना?'

'सीताम्मा के पिता, ठीक है?'

जी हाँ, वही। वे राजर्षि के नाम से जाने जाते थे। यद्यपि वे अपने राज्य पर राज करने वाले एक महान सम्राट थे और अपने शक्तिशाली सिंहासन पर विराजमान थे, फिर भी वे एक ऋषि के समान थे। उन्होंने कोई पाप नहीं किया था। जब वे अत्यंत वृद्ध हो गए, तो उन्होंने अपनी योगिक शक्तियों का प्रयोग करके अपना शरीर त्याग दिया।

इसका अर्थ है कि उन्होंने इस शरीर को छोड़कर एक उच्चतर लोक में प्रवेश किया। परन्तु उनकी आत्मा को नरक के द्वार पर ले जाया गया। जब जनक ने पूछा, "मैंने कोई पाप नहीं किया है। आप मुझे यहाँ क्यों लाए हैं?"

इस पर उन्होंने कहा:

एकदातु चरन्तिम गाम वरयामासा वै भवन |
तेन पापा विपाकेन निराद्वार दर्शनम् ||

'इसका क्या मतलब है?' गौड़ा ने पूछा।

नरसिम्हा जोइस ने आगे कहा: "अतीत में किसी समय आपने चर रही एक गाय को रोका था। इसी पाप के कारण आपको नरक का द्वार दिखाया गया था," उन्होंने कहा। अन्यथा, जनक महाराज सीधे स्वर्ग चले जाते।

'सुना तुमने? तुम लोग कभी-कभी गायों की ठीक से देखभाल करने में बहुत आलसी हो जाते हो', गौड़ा ने अपनी पत्नी और बहू से कहा।

जोइस उस रात सोए नहीं। उन्होंने सबसे पहले उन्हें बताया कि गाय के शरीर में तैंतीस करोड़ देवता निवास करते हैं और गाय को अर्पित की जाने वाली गोपूजा की महानता समझाते हुए श्लोक सुनाए और उनके अर्थ बताए। भोर होते-होते उन्होंने कहा: 'गौदम्मा, तुम्हें यह जानना चाहिए। तुम्हें रोना नहीं चाहिए। तुम्हारे पुत्र ने गाय की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। उसने गाय को बचाने के लिए लकड़बग्घे को मार डाला। तुम्हारी अगली पीढ़ी यहाँ है, यह बालक—तुम्हारे पुत्र के सद्गुणों से इसकी रक्षा होगी। अब तुम्हें रोना नहीं चाहिए। उस घायल गाय की देखभाल करो। अपनी बहू को सांत्वना दो। गौदम्मा, अब तुम्हें उठकर सब कुछ संभालना होगा।'

जोइस ने कल से कुछ नहीं खाया था। 'गौदय्या, तुम सब साफ-सफाई कर लो और कुछ खा लो। तुम्हें कड़ी मेहनत करनी होगी, गाय के घावों को भरना होगा और उसे बचाना होगा। मुझे नहीं पता कि वह कल रात ठीक से सोई या नहीं। जाओ, जाकर देख लो। देखो कि उसे किसी और दवा, आहार, या किसी और चीज की जरूरत तो नहीं है', उसने कहा और अपने गांव के लिए निकल गया।

गौड़ा उठा और गौशाला की ओर चला गया। उसकी पत्नी भी उसके पीछे-पीछे गई।

गाय के घाव की सूजन कम हो गई थी। लेकिन उसने घास और पानी को छुआ तक नहीं था। वह उसी स्थिति में खड़ी थी, उसका शरीर किसी कबूतर के बिल में सिकुड़ा हुआ सा था, और वह अब भी बुरी तरह डरी हुई थी। उसने अपनी उंगलियों से उसका चेहरा सहलाया, उसके शरीर को धीरे से रगड़ा और दिलासा भरे शब्द कहे। फिर वह अपनी पत्नी की ओर मुड़ा, 'मैं खेत जाकर कुछ जड़ी-बूटियाँ ले आता हूँ। इसने कुछ नहीं खाया है। तुम दो किलो चावल पानी में भिगो दो, उसमें दो नारियल डाल दो, अच्छी तरह मिला लो और तैयार रखो। इसने दो दिन से उपवास किया है। अगर घर में यही हाल रहा तो यह अच्छा संकेत नहीं है।'

गौदम्मा चावल और नारियल लेने चली गई। गौड़ा घायल गाय के बछड़े को दूसरी गाय का थन दूध पिलाने के लिए ले गया और दूध पिलाने के बाद जड़ी-बूटियाँ लेने के लिए खेत की ओर चल पड़ा।

5

ग्यारहवें दिन, पूरे घर को गोबर मिले पानी से साफ किया गया। रिश्तेदारों को पवित्र पंचगव्य दिया गया और गायों का दान किया गया—इस प्रकार कृष्ण के अंतिम संस्कार संपन्न हुए। 10,000 से अधिक लोगों को रागी मुड्डे (बाजरे से बनी एक बड़ी, ठोस गेंद) और अन्य कई स्वादिष्ट व्यंजनों का भोज कराया गया। भोज के बाद, अन्य स्थानों से अंतिम संस्कार में शामिल होने आए लोग वापस चले गए।

अब कलिंग गौड़ा के घर में सभी लोग चिंता से घिरे हुए थे। गाय पर लकड़बग्घे के हमले से लगा घाव पूरी तरह भर चुका था। लेकिन वह अभी भी उदासी से बाहर नहीं निकली थी। वह घास और पानी को छूती भी नहीं थी। उसकी आँखों में पहले जैसी चमक नहीं थी, बल्कि वे किसी बेजान जानवर की तरह दिखती थीं। इस डर से कि कहीं वह भूख से मर न जाए, घरवाले दो किलो चावल पानी में भिगोते, उसमें थोड़ा नारियल मिलाते, अच्छी तरह से चलाते और दिन में दो बार उसे खिलाते। उसे इस जबरदस्ती खिलाए गए चावल के मिश्रण और पानी के अलावा कुछ भी नहीं दिया जाता था। गौड़ा ने उसे हर तरह की दवा दी, जिसका उन्हें ज्ञान था। तीस मील के दायरे में आसपास के गाँवों में कोई भी ऐसा नहीं था जो पशुओं की चिकित्सा के बारे में उनसे ज्यादा जानता हो। गाय का विभिन्न मंत्रों और तंत्रों से भी उपचार किया गया और पूरे गौशाला को कद्दू से पवित्र किया गया। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

गाय दिन-ब-दिन दुबली होती गई और आखिरकार उठना भी बंद कर दिया। उसे चावल का आटा खिलाया जाता था और लेटे-लेटे ही पानी पिलाया जाता था। उसी स्थिति में वह गोबर करती और पेशाब करती थी। लेकिन लंबे समय तक लेटे रहने से उसकी छाती और पेट के किनारों की चमड़ी फट गई। गौड़ा को ऐसे घावों के इलाज की दवा पता थी। लेकिन गाय उन्हीं घावों पर लेटती रही, इसलिए दवा लगाने के बाद भी वे ठीक नहीं हुए।

परिवार चिंता से व्याकुल था। 'माँ, मेरे बच्चे ने तुम्हारे लिए अपनी जान दे दी। कम से कम तुम तो जीवित हो। अगर तुम नहीं रहीं, तो ऐसा लगेगा मानो मेरे बच्चे की मृत्यु व्यर्थ हो गई।' गौदम्मा ने ये शब्द गाय से कई बार कहे थे।

'बताओ माँ, तुम्हें क्या हुआ है? अगर तुम ऐसे ही चुपचाप सोती रहोगी, तो हमें कैसे पता चलेगा? मैंने तुम्हें हर वो दवा दी है जो मेरे दिमाग को आती है। अब तुम मुझे अपने शब्दों में बताओ कि तुम्हारे मन में क्या है', गौड़ा ने भी यही सवाल कई बार पूछा था।

तयाव्वा को बोलना नहीं आता था। उसने अपने पति की मृत्यु का दुख अपने भीतर ही दबा रखा था। रोने के अलावा उसे अपना दुख व्यक्त करने का कोई तरीका नहीं सूझता था। हालांकि उसके माता-पिता ने उसे अपने साथ रहने के लिए कहा, पर वह जाने को तैयार नहीं हुई। वह प्यार से गाय के शरीर को सहलाती, उसकी गर्दन को गले लगाती और उसे दिलासा देने की कोशिश करती। उसे बोलना नहीं आता था और गाय भी अब बोल नहीं पा रही थी।

बीस दिन इसी तरह बीत गए। अंत में, गाय ने चावल के आटे का मिश्रण पीना बंद कर दिया। अगर उसे जबरदस्ती खिलाया जाता, तो वह उल्टी कर देती। घर के सभी लोगों ने उम्मीद छोड़ दी। रात भर वे जागते रहे और बारी-बारी से उसकी देखभाल करते रहे। मरने से पहले, वह हिली-डुली भी नहीं; उसने अपने हाथ-पैर भी नहीं पटके। मानो कोई शरीर पहले से ही मृत हो, लेकिन बस अपना अधूरा काम पूरा कर रहा हो, उसने आखिरी सांस ली और फिर वापस नहीं ली। हालांकि सभी जानते थे कि मृत्यु निश्चित है, फिर भी जब वह सचमुच मर गई तो वे सब जोर-जोर से रोने लगे। बाईस दिन पहले बेटे को खोने का दुख इस नए दुख के सामने फीका पड़ गया था। गौदम्मा ने उसके मृत शरीर को गले लगाते हुए सिसकते हुए कहा, 'तो आखिरकार तुम मर ही गए, है ना?'

ऐसा नहीं था कि कलिंग गौड़ा के घर में पहले कभी कोई गाय न मरी हो। लेकिन आमतौर पर, उनकी गायें बीमारी या अस्वस्थता के कारण समय से पहले नहीं मरती थीं। दरअसल, आस-पास के गांवों में भी, वह जाकर किसी भी बीमार गाय का इलाज करते थे और उन्हें ठीक कर देते थे। चाहे गाय उनकी हो या किसी और की—यहां तक कि उनके दुश्मन की भी—कोई फर्क नहीं पड़ता था। जैसे ही गौड़ा को पता चलता कि कोई गाय बीमार है और वह तुरंत उसका इलाज करने नहीं जाते, मरने के बाद उन्हें जिस तरह की मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा, उस ख्याल से ही उन्हें पसीना आ जाता था। कई बार, बेहतरीन दवाइयों और इलाज के बावजूद, उनके गौड़ा में गायें मर जाती थीं। लेकिन अपने पूरे जीवन में, उनकी एक भी गाय बाघ या लकड़बग्घे के हमले से नहीं मरी थी। अब यह गाय—खासकर पुण्यकोटी की गाय—लकड़बग्घे के हमले से मर गई थी। लकड़बग्घे के पंजों से हुए घाव में जहर तो भर गया था। इसके बावजूद, गाय ने अवसाद के कारण अपनी जान गंवाई। मंत्र, तंत्र, अनुष्ठान, औषधि, किसी से भी लाभ नहीं हुआ। गाय क्यों मर गई? क्या यह झूठ था कि मेरे बेटे ने उसकी रक्षा करते हुए अपनी जान दे दी? क्या उसने कायरता में आकर अपनी जान कुर्बान कर दी? वह एक मर्द था, ओह, वह एक मर्द था! उसके मन में कायरता का कोई नामोनिशान नहीं था— गौड़ा ने मन ही मन सोचा।

अब मरी हुई गाय को दफनाना था। आम रिवाज था कि मरी हुई गाय को खेत में दफनाया जाता था और उसके ऊपर एक पौधा लगाया जाता था। लेकिन गौड़ा ने गाय के शव को अपनी बैलगाड़ी पर लादा और उसे अपने चरागाह में ले गया। उसने अपने बेटे की कब्र के बगल वाली ज़मीन खुदवाई और गाय के शव को वहाँ रख दिया। उसने उसे नई साड़ी और ब्लाउज से ढका, उसके पास एक पौंड चावल, नमक और कुछ नारियल रखे, उस पर एक कटोरा पानी डाला और कब्र को मिट्टी से ढक दिया।

फिर उन्होंने कब्र को हाथ से छुआ, उसे अपने माथे से लगाया, हथेलियों को जोड़कर नमस्ते किया और कहा: 'माँ, आपका पुत्र आपके बगल में सो रहा है। उसने आपको बचाने के लिए अपना प्राण त्याग दिए। और आप उसके शोक में मर गईं। पुत्र को खोकर आपने जीने की इच्छा खो दी। आप हर तरह से धन्य स्त्री हैं। मेरे पुत्र के चले जाने के बावजूद, मैं अभी भी जीवित हूँ, आपके विपरीत जिसने अपना प्राण त्याग दिए। मुझे पता है कि आप सुख-दुख में उसकी देखभाल करेंगी, इसीलिए मैंने आपको उसके बगल में दफनाया है। अब से, वह आपकी जिम्मेदारी है।'

गौड़ा के लिए एक और चिंता इंतजार कर रही थी।

उनके गौशाला की देखभाल करने वाला नौकर उनके पास आया और बोला: 'अय्या, कपिला का वह नर बछड़ा किसी कारण से दुबला हो गया है। वह ठीक से घास नहीं खा रहा है और न ही पानी पी रहा है।'

गौड़ा अंदर गया और उसे देखा। वह चार दांत वाला एक नर बछड़ा था। वह इतना दुबला-पतला हो गया था कि मुरझाया हुआ सा लग रहा था। उसकी आंखें बेजान थीं। जब गौड़ा ने पूछा, 'यह ऐसा क्यों हो गया है?' तो नौकर ने कहा, 'हालांकि इसके चार दांत हैं, फिर भी यह अपनी मां से जुड़ा हुआ था। मुझे लगता है कि मां के चले जाने के बाद यह ऐसा हो गया है। मुझे ठीक से पता नहीं है।'

बछड़ा तीन साल का था। उसकी माँ ने महज दो महीने पहले ही एक और बछड़े को जन्म दिया था। अपने बेटे के अंतिम संस्कार के दिन गौड़ा ने गाय और नए बछड़े को नरसिम्हा जोइस को दान में दे दिया था। माँ ने एक और बछड़े को जन्म दिया था, लेकिन यह अभी भी उससे जुड़ा हुआ था। हालाँकि रात में इसे गौशाला के बैल वाले हिस्से में बाँध दिया जाता था, फिर भी सुबह होते ही यह अपनी माँ के पास चला जाता था। माँ और बेटा कुछ देर तक एक-दूसरे को सूंघते और एक-दूसरे के शरीर को चाटते। अब माँ वहाँ नहीं थी। गौड़ा तुरंत समझ गया कि बछड़े के मुरझाने का कारण क्या था। लेकिन अब क्या किया जा सकता था? उसकी माँ को पहले ही दान में दे दिया गया था और वह फिर कभी इस गौशाला में वापस नहीं आ सकती थी। गौड़ा ने अगले मानसून तक, जब बुवाई शुरू होगी, इस बछड़े को जुताई में लगाने की योजना बनाई थी। लेकिन दूध पीने वाले शिशु बछड़े की तरह, यह भी अपनी माँ के बिछड़ने के कारण मुरझा रहा था।

कलिंग गौड़ा ने पूरा दिन चिंतन में बिताया। रात में भी यही विचार उनके मन में घूमता रहा। क्या होगा अगर वे अपनी माता को खोए बिना मर जाएं? तब क्या होगा? इसलिए भोर होते ही वे उठे, बछड़े की रस्सी खोली और उसे अपने साथ लेकर नरसिम्हा जोइस के गांव अग्रहारा की ओर चल पड़े। रंगनहल्ला के पास रास्ते में उन्होंने उसे एक लक्की वृक्ष से बांध दिया, लक्की वृक्षों के समूह के पास से गुजरे, सुबह की स्नानागार क्रिया पूरी की, हाथ-पैर धोए और वहां बहते झरने में अपना चेहरा

साफ किया। हालांकि स्वामी, सूर्य देव, अभी पूर्व दिशा में दिखाई नहीं दे रहे थे, उन्होंने अपने सारथी अरुणा से प्रार्थना की और बछड़े को लेकर अग्रहारा की ओर चल पड़े।

जब तक वह वहाँ पहुँचा, जोइस की पत्नी सुब्बम्मा उस गाय का दुहरण कर रही थीं जो उनके घर भेंट के रूप में आई थी। उनका पाँच वर्षीय पुत्र अपनी माँ के पीछे दूध का इंतज़ार कर रहा था। जोइस तालाब के किनारे फूल और तुलसी तोड़ने गए थे। वे गाय को घर के सामने वाले आँगन में बाँधते थे। जैसे ही गाय ने अपने बछड़े को देखा, वह ज़ोर से एक बार रंभाई। उसी समय, बछड़ा अपनी माँ को पहचानकर दौड़ा और अपना मुँह उसके चेहरे से लगा दिया। गाय के कुछ कदम आगे बढ़ने पर सुब्बम्मा दूध का कटोरा हाथ में लिए खड़ी हो गईं। 'माँ और बच्चे के इस नाजायज़ बंधन को भला कैसे भुलाया जा सकता है!' गौडय्या ने कहा और जोइस की पत्नी को सब कुछ बताया।

जब जॉइस घर लौटे और उन्हें घटना के बारे में पता चला, तो उन्होंने कहा: 'कुछ माताएं और बच्चे एक-दूसरे से बहुत गहराई से जुड़े होते हैं। हमें उन्हें अलग नहीं करना चाहिए। बस एक काम करो।'

'बता।'

‘आपने मुझे यह गाय दान में दी है। दान में दी गई वस्तु को यूं ही वापस नहीं लिया जा सकता। मुझे इसके विक्रय मूल्य के रूप में एक चांदी का रुपया दीजिए और इसे वापस ले लीजिए।’

‘अय्या, एक रुपया हो या एक लाख रुपये, दान में दी गई गाय वापस नहीं लेनी है। बल्कि, मेरी बात मानो। मैं यह नर बछड़ा दान में देता हूँ। तुम इसे रख लो। माँ और पुत्र को साथ रहना चाहिए। इससे क्या फर्क पड़ता है कि वे कहाँ हैं?’

जोइस ने इस बारे में एक मिनट सोचा। फिर उसने कहा: 'यह एक संभावना हो सकती थी। लेकिन इसके लिए शास्त्रों का संदर्भ लेना चाहिए, जिनमें लिखा है:

Yuvaanaamindriyopetam shatena sahayoothapam |
गवेन्द्रं ब्राह्मणेन्द्राय भूरि श्रृंगमालांकृतम् ||

यह एक नर बछड़ा है—इसका अर्थ है कि यह एक योथापति है, सैकड़ों-सैकड़ों गायों के समूह का मुखिया है, क्योंकि यह उन्हें अपना बीज देने में सक्षम है। इसका अर्थ है कि यह एक साधारण गाय नहीं, बल्कि गायों का स्वामी है। और केवल एक ब्रह्मेंद्र—

ब्राह्मणों का स्वामी कहलाने योग्य व्यक्ति—ही इसे दान के रूप में ग्रहण कर सकता है। इसका अर्थ है कि केवल वही ब्राह्मण जो एक नए गोत्र—अपने नाम पर एक वंश—का जनक बनने की क्षमता रखता है, इस नर बछड़े को ग्रहण कर सकता है। एक वृषभ या सांड गायों के आधे झुंड के बराबर होता है। एक वृषभ दान सौ गोदानों के बराबर होता है। केवल वही व्यक्ति जो सौ गायों को ग्रहण करने की क्षमता रखता है, सांड को ग्रहण कर सकता है। मुझ जैसे साधारण ब्राह्मण के लिए, जिसके लिए एक गोदान को ग्रहण करना भी कठिन है, मैं उस नर बछड़े को कैसे ग्रहण कर सकता हूँ?

एक क्षण के लिए, कलिंग गौड़ा निःसंकोच हो गए।

फिर अचानक उन्होंने कहा: 'नरसप्पा, याद है जब आपने वह गोदाना स्वीकार किया था? उसके साथ एक नर बछड़ा भी आया था। आपने उसे कैसे स्वीकार किया था?'

जब भी हम गोदाना की बात करते हैं, तो हमेशा यही माना जाता है कि गाय दूध देने वाली गाय है। बिना बछड़े वाली गाय दूध कैसे दे सकती है? इसलिए, चाहे बछड़ा नर हो या मादा, वह हमेशा अपनी माँ के साथ ही आता है, कभी भी अलग से दान नहीं किया जाता। जब तक बछड़ा अपनी माँ का दूध पीना छोड़ देता है, तब तक गाय खुद दूध देना बंद कर चुकी होती है। दूध न देने वाली गाय को दान में नहीं देना चाहिए। इसका मतलब है कि ऐसे बछड़े को भी दान में देना मना है। अब आप मुझसे कह रहे हैं कि आप एक ऐसे बछड़े को दान में देना चाहते हैं जिसने अपनी माँ का दूध पीना छोड़ दिया हो, यानी एक बैल को।

गौड़ा को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसने अपना सिर ढकने वाला कपड़ा उतारा, ज़मीन पर रख दिया और चुपचाप वहीं बैठा रहा। क्या इसका कोई हल नहीं था? इसी बीच, नर बछड़ा और उसकी माँ ने एक-दूसरे के शरीर को तीन-तीन बार चाटा।

गौड़ा ने पूछा: 'क्या वह अपने बेटे को याद कर रही थी?'

मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कर रही थी। लेकिन एक दिन जब वह चर रही थी, उसने रस्सी को झटक दिया और आपके गांव की तरफ भाग गई। मुझे जाकर उसे वापस लाना पड़ा। मुझे लगा कि वह इसलिए भाग गई क्योंकि उसे अपने जन्मस्थान वाले घर की याद आ रही थी।

'शायद। ऐसा हो सकता है। हो सकता है कि उसे अपने बछड़े की भी याद आ रही हो। अब मुझे बताइए, माँ और बेटे को मिलाने के लिए क्या किया जाना चाहिए?'

जोइस ने एक मिनट सोचा। फिर वह उठा, अंदर गया, एक चांदी का रुपया लेकर लौटा, उसे गौड़ा के सामने रखा और बोला: 'उठो, बछड़े को उसकी रस्सी से पकड़ो और मुझे बेच दो। यह रुपया ले लो।'

गौड़ा मान गया। उसने रुपया लिया और उसे अपनी धोती की तह में कमर के पास रख लिया। वह खड़ा हुआ, बछड़े की रस्सी पकड़ी और घर की छत के किनारे जाकर खड़ा हो गया। सुबह का सूरज अब तीन वयस्क पुरुषों की ऊँचाई तक चढ़ चुका था। उसने रस्सी उठाई, उसे सूरज की ओर किया, जोइस के हाथों में दिया और कहा: 'मैंने इसे तुम्हें बेच दिया है। आकाश में विराजमान स्वामी और यहाँ खड़ी उसकी माता गोमाता, जो इसे देख रही हैं, साक्षी हैं।'

खंड 3

1

तीन साल बीत गए। गौडय्या के घर का केंद्र अब उनका पोता था। छह साल का हो चुका, उसका नाम भी कलिंगा है। गौड़ा परिवार में पीढ़ियों से पहले पोते का नाम दादा के नाम पर रखने की परंपरा चली आ रही थी। यही कारण है कि कलिंगा गौड़ा, जो उस समय जीवित थे जब पुण्यकोटी बाघ की गुफा से जीवित लौटे थे, आज भी इस वंश में कायम है। यदि दादा कलिंगा गौड़ा हैं, तो पोते का नाम भी कलिंगा गौड़ा ही होगा। लेकिन जब तक दादा और पिता जीवित थे, पोते के नाम के साथ 'गौड़ा' उपाधि नहीं जोड़ी जाती थी।

लेकिन इस घर की महिलाएं अपने पोते को ‘कलिंग’ कहकर नहीं पुकार सकती थीं। गौदम्मा के मामले में यह उनके पति का नाम था, और तैयव्वा के मामले में यह उनके ससुर का नाम था। गांव के लोग उन्हें ‘पुत्ता’ या ‘छोटा’ कलिंग कहकर पुकारते थे। इस घर के लिए उनका नाम केवल ‘पुत्ता’ ही था।

छह साल की उम्र में पुट्टा अपने दादाजी के साथ चरागाह जाता है। वह नौकरों के साथ खेतों और फार्म का दौरा करता है। पुण्यकोटी नस्ल की वह गाय, जिसका दूध वह पहले पिया करता था, ने फिर से बच्चे को जन्म दिया है और अब दूध पिला रही है। अब भी, चरागाह में, वह कभी-कभी उसके थन पर अपना मुंह लगाकर दूध पीता है। चाहे वह किसी भी समय उसके थन पर अपना मुंह लगाए, गाय जरा भी नहीं हिलती। अपनी दादी के साथ लगातार बातें करने के अलावा, वह मक्खन को सीधे मिट्टी के बर्तन से उठाकर खा लेता था जिसमें वह जम रहा होता था। कभी-कभी, वह अपनी माँ पर कूद पड़ता और पूछता, 'आप बोल क्यों नहीं सकतीं?' सांकेतिक भाषा में माँ के जवाब को न समझ पाने पर, वह अपनी दादी से जवाब पूछता। अगर दादी जवाब देतीं, 'भगवान ने तुम्हारी माँ की ज़बान छीन ली है, पुट्टा', तो वह अपनी माँ की गोद में चढ़ जाता, जबरदस्ती उनका मुंह खोलता, अपनी उंगली अंदर डालता, अंदर देखता और अपनी दादी से कहता, 'आप झूठ बोल रही हैं।' अव्वा की जीभ यहीं है!' दोनों महिलाएं एक-दूसरे को देखकर हंसने लगतीं।

पोते के जन्म से ही कलिंग गौड़ा उसे अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए उत्सुक थे। गौड़ा स्वयं जैमिनी महाभारत पढ़ने लायक शिक्षित थे। अपने पुत्र कृष्ण को शिक्षित करने के लिए गौड़ा ने एक पूर्णकालिक शिक्षक नियुक्त किया था, जो केवल इसी उद्देश्य से नियुक्त किया गया था। परन्तु कृष्ण ने कुछ भी नहीं सीखा, यद्यपि उन्हें बांसुरी बजाना स्वयं ही आ गया था। उनके द्वारा किए गए यक्षगान नृत्यों की संख्या किसी को भी आश्चर्यचकित कर सकती थी। वे पान चबाते हुए समय-समय पर यक्षगान करते थे और लोक कविता पर आधारित समूह लाठी नृत्य 'कोलाटा' में गाँव में सर्वोपरि थे। शेष समय वे अपनी गायों को चराते हुए बांसुरी बजाते थे। उन्हें किसी और चीज़ में कोई रुचि नहीं थी। यदि उन्होंने कम से कम एक बार जैमिनी महाभारत पढ़ लिया होता, तो गौड़ा की इच्छा पूरी हो जाती और वे संतुष्ट हो जाते। परन्तु ऐसा न होने पर भी उन्हें कोई विशेष निराशा नहीं हुई। वह स्वयं कभी-कभी कहते थे, 'एक गोल्ला को कृष्ण द्वारा अर्जित ज्ञान से अधिक ज्ञान की क्या आवश्यकता है?'

वह पुट्टा को कन्नड़ वर्णमाला (अ, आ, ए, ई) लिखना और नकल करना सिखा सकते थे, लेकिन वोक्कालिगा होने के नाते, जिन्हें ज्ञान देने का अधिकार नहीं था, उन्होंने ऐसा नहीं किया। अब, लगभग चार साल पहले, अग्रहारा में एक नया सरकारी प्राथमिक विद्यालय खुला था। सरकार द्वारा नियुक्त ओचय्या ने न केवल कार्यभार

संभाला था, बल्कि बच्चों के बैठने के लिए लकड़ी के तख्ते भी लगवाए थे। हालांकि वे बच्चों को पीटते थे, लेकिन इतनी बुरी तरह नहीं पीटते थे कि मस्से पड़ जाएं। और इसलिए, यह सोचकर कि उनके प्यारे पोते को पिटाई से ज्यादा तकलीफ नहीं होगी, गौड़ा ने पुट्टा को वहीं दाखिला दिलाने का फैसला किया। जब उन्होंने नरसिम्हा जोइस से पूछा, तो उन्होंने भी यही राय दी। जोइस का आठ वर्षीय बेटा वेंकटरमण भी उसी विद्यालय में पढ़ता था।

सुबह, एक नौकर को पुट्टा को स्कूल ले जाना और वापस लाना होता था—बस इतना ही काफी था। वह दोपहर का भोजन जोई परिवार के घर पर करता था। शाम को, एक नौकर पुट्टा को वापस घर ले आता था। गौड़ा ने इस तरह व्यवस्था तय की थी। जोई परिवार ने पंचांग (पंचांग) से परामर्श किया और एक शुभ तिथि निर्धारित की, जिसके बाद गौडय्या ने पुट्टा को नई कमीज और शॉर्ट्स पहनाए, उसे स्कूल ले गए, ओचय्या के सामने प्रणाम कराया, उन्हें गुरु दक्षिणा के रूप में दस नारियल और पांच किलो मक्खन दिया, स्वयं हाथ जोड़कर आदरपूर्वक नमस्ते किया और पुट्टा का स्कूल में दाखिला करवा दिया। पूरे स्कूल के लिए केवल एक ही व्यक्ति था, वही ओचय्या। यह जानने की उत्सुकता में कि वह क्या पाठ पढ़ाएंगे, गौडय्या स्कूल के बाहर पत्थर की बेंच पर थोड़ी देर बैठे और अपनी तंबाकू की थैली खोली। उनके साथ आए जोई परिवार दान लेने के लिए पास के एक गाँव में चले गए।

बाहर बैठे गौडय्या को ओचय्या द्वारा पुट्टा को कन्नड़ अक्षर ಅ ಆ(a, ā) की नकल करने का निर्देश देते हुए सुनाई दिया। एक क्षण के लिए उन्हें तृप्ति का अनुभव हुआ। फिर ओचय्या कहने लगे: 'कक्षा दो के विद्यार्थियों, अपनी पुस्तकें खोलो। कल जो कविता सीखी थी, उसे सुनाओ; तुम्हारा पाठ स्पष्ट होना चाहिए। तुम्हें मेरे साथ सुनाना होगा।'

जब गौड़ा को लगा कि यह जैमिनी की कविता होगी, तभी शिक्षक ने एक अलग कविता सुनाई:

जब मैंने उसे बाहर निकाला तो मैं गोबर बन गया, जब मैंने उसे थपथपाया तो
मैं गोबर का उपला बन गया
जलने पर मैं माथे के लिए पवित्र राख बन गया
बिना थपथपाए लगाने पर, मैं खाद बन गया।
हे मनुष्य, तुमने किसी का क्या भला किया है?

गौडय्या के कान तुरंत खड़े हो गए। यह सचमुच गाय का गीत था। सरकारी स्कूल के हिसाब से बुरा नहीं है। वे अच्छा पढ़ाते हैं, उसने सोचा, और अंदर ओचय्या के पाठ करते समय उसने दो उंगलियां चटकाकर एक ध्वनि उत्पन्न की।

निकालने पर मैं दूध बन गया, और जमने पर दही बन गया।
जमने पर मक्खन बन गया।
गर्म करने पर मैं महीन घी बन गया।
हे मनुष्य, तुमने किसी का क्या भला किया है?

तब तक पाठ रुक चुका था। शिक्षक कह रहे थे: 'आप सभी इसका अर्थ लिख लीजिए। कल मैं आपको अगला भाग पढ़ाऊंगा। एक भी गलती नहीं होनी चाहिए।'

गौडय्या उठी, स्कूल के अंदर गई और शिक्षक से पूछा: 'अय्या, वह गाना बहुत अच्छा है। कृपया मुझे उसका कुछ हिस्सा सिखा दीजिए।'

हालांकि वह कुछ देर के लिए अचंभित रह गया, लेकिन शिक्षक ने दूसरी कक्षा की एक किताब निकाली, उसके हाथों में रखी और कहा, 'अगर तुम्हें पढ़ना आता है, तो तुम इसे खुद पढ़ सकते हो। वरना, मैं तुम्हें पढ़ा दूँगा।'

गौडय्या ने बाद की कविताएँ स्वयं पढ़ीं। उनमें ऐसा कुछ भी नहीं था जो उसे समझ में न आया हो। जैमिनी की कविताओं जितनी कठिन तो नहीं थीं। फिर भी, कितनी खूबसूरती से लिखी गई हैं! पढ़ते हुए उसने मन ही मन सोचा। जब उसने आखिरी कविता पढ़ी, तो उसकी आँखें नम हो गईं।

मैं रास्ते के किनारे और सड़कों पर धूल और घास की तलाश करता हूँ और
इन्हें खाओ, घर लौट आओ और अमृत पिलाओ।
और इसे पीकर तुम मुझे धोखा दे रहे हो। मुझे बताओ।
हे मनुष्य, तुमने किसी का क्या भला किया है?

पढ़ने के बाद, ओचय्या ने कहा: "अगर आपको यह इतना पसंद आया, तो मैं इसे एक कागज पर लिखकर आपके बेटे के माध्यम से भेज दूंगा।" गौडय्या कृतज्ञता से भर उठे। उन्होंने उनके बारे में जानकारी जुटाई। ओचय्या को न केवल संपूर्ण जैमिनी ग्रंथ कंठस्थ था, बल्कि वे गडुगिन महाभारत का वाक्पट्य वर्णन भी कर सकते थे। वे संस्कृत भी जानते थे और ज्योतिष एवं अनुष्ठानों में भी पारंगत थे। उन्होंने हाथ

जोड़कर अपने पोते से कहा, “हे पुत्र, दोपहर में नरसप्पा के पुत्र के साथ जाओ और उनके घर भोजन करो। शाम को दयाव आकर तुम्हें ले जाएंगे,” और अपने गाँव के लिए रवाना हो गए।

वापसी की पूरी यात्रा के दौरान, एक सवाल उनके मन को परेशान करता रहा।

मैं रास्ते के किनारे और सड़कों पर धूल और घास की तलाश करता हूँ और
इन्हें खाओ, घर लौट आओ और अमृत पिलाओ।
और इसे पीकर तुम मुझे धोखा दे रहे हो। मुझे बताओ।
हे मनुष्य, तुमने किसी का क्या भला किया है?

वह गोमाता का दूध पीता है और अपनी ही माँ को धोखा देता है... उसने किसी का भला क्या भला किया? खेत, फार्म, घर, संपत्ति... उसे सब कुछ चाहिए। बकरी, मुर्गी, भेड़, बकरी का बच्चा... उसे सब चाहिए। वह कुत्ते को सिर्फ इसलिए पालता है क्योंकि वह उसके घर की रखवाली करता है। वह गोमाता को सिर्फ उसका दूध पीने के लिए रखता है। उसने किसी का भला क्या भला किया? छी! मनुष्य का जन्म सबसे बुरा जन्म है। गाय का जन्म धन्य है। कौन जाने गाय का जन्म पाने के लिए कितने पुण्य कर्म करने पड़ते हैं! हे भगवान, क्या आप मुझे अगली बार गोमाता का जन्म देंगे? गौड़ा ने मन ही मन भगवान से प्रार्थना की। लेकिन क्या मैंने कोई पाप नहीं किया? तो, अगर मैं सिर्फ गाय का जन्म मांग लूँ, तो क्या मुझे वह ऐसे ही मिल जाएगा? गाय का जन्म पाना सचमुच भगवान बनना है। लेकिन फिर, क्या गाय भगवान से बड़ी नहीं है? मैं सचमुच एक मूर्ख हूँ। मुझे अगले जन्म में गाय का जन्म लेने का पुण्य कहाँ से मिलेगा?

दोपहर ग्यारह बजे स्कूल की छुट्टी होने के बाद, जोइस के बेटे वेंकटरमण पुट्टा को अपने घर ले गए। ग्यारह बजे से दो बजे तक उनका खाली समय होता था। जोइस की पत्नी सुब्बम्मा ने पुट्टा को सिले हुए पत्तों की थाली में खाना परोसा। खाना खाने के बाद, वह पत्ता फेंककर फर्श साफ करता था। उस दिन से, वह हर दोपहर अपने घर में ही खाना खाने लगा। सुब्बम्मा बड़े प्यार से उसकी सेवा करती थीं। उनका बेटा वेंकटरमण, जो पुट्टा कलिंग से तीन साल बड़ा था, तीसरी कक्षा में पढ़ता था। स्कूल की पढ़ाई के अलावा, उसने अपने पिता से संस्कृत भी सीखी थी। शाम को, जोइस अपने

बेटे को वैदिक मंत्र सिखाते थे। एक साल पहले उपनयन संस्कार से पहले ही, वह संस्कृत व्याकरण, अमरकोश और नीतिशतक सीख रहा था। अब वह वैदिक अध्ययन में भी लगा हुआ है। 'अगर तुम सरकारी स्कूल नहीं जाओगे, तो भविष्य में रोजी-रोटी कमाना मुश्किल होगा,' इसी सोच के साथ जोइस ने अपने बेटे को सरकारी स्कूल भेजा था।

पुट्टा एक बुद्धिमान लड़का था। स्कूल में ओचय्या द्वारा पढ़ाई जाने वाली शिक्षाओं के अलावा, वेंकटरमण उसे दोपहर में अन्य विषय भी पढ़ाया करते थे। इस प्रकार, पंद्रह दिनों के भीतर ही पुट्टा कन्नड़ के बावन अक्षर लिखने के साथ-साथ वृक्ष, घर और पुत्र जैसे सरल शब्द भी पढ़ और लिख सकता था।

2

एक दोपहर अपना दोपहर का भोजन समाप्त करने के बाद, कलिंग गौड़ा हाथ धो रहे थे और छाछ पी रहे थे, तभी होबली के शेखदार - क्षेत्रीय प्रशासनिक प्रमुख - का एक नौकर उनके पास आया और गौड़ा के हस्ताक्षर लेने के बाद उन्हें एक हुकुम, एक सरकारी आदेश, सौंप दिया।

'यह क्या है बेटा?' गौड़ा ने पूछा। नौकर ने कहा, 'कुछ नहीं दादाजी। आपके पास वह 150 एकड़ का आरक्षित चरागाह है? ऊपर से एक हुकुम आया है, जिसमें लिखा है कि इसे खेती के लिए साफ करना होगा। अगर आप इसे खुद साफ नहीं करेंगे, तो सरकार इसे आपसे छीनकर किसी और को दे देगी।'

'सरकार मुझसे क्यों नाराज है, लड़के?'

'यह सिर्फ आपके साथ ही नहीं है दादाजी। कोटिगे चिन्नय्या के पास पचास एकड़ चारागाह है, है ना? उनके पास भी इसी तरह का हुकुम है। और दूसरे गांवों में भी चारागाह मालिकों के लिए हुकुम तैयार किए जा रहे हैं। देश में जनसंख्या बढ़ गई है। लोगों के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है। इसलिए सरकार ने फैसला किया कि चारागाहों को केवल मवेशियों के लिए रखने के बजाय, यदि उस भूमि पर खेती की जाए, तो लोगों को कम से कम कुछ खाने को तो मिलेगा, और इसीलिए यह हुकुम पारित किया गया है।'

'मेरी किस पत्नी का कौन सा बेटा सरकार चला रहा है?' गौड़ा क्रोध से दहाड़ा।

“आपको सरकार के बारे में इस तरह बात नहीं करनी चाहिए। अगर आप दूसरों के सामने ऐसी बातें कहेंगे, तो वे आपको जेल में डाल देंगे,” नौकर ने सलाह दी। उसने पानी मांगा, हथेलियों में भरकर पिया और कोटिगेमाने चिन्नय्या के घर हुकुम देने के लिए चल दिया।

उनके जाने के बाद, गौड़ा ने उसे एक बार पढ़ने की कोशिश की। लेकिन शेखदार की सुलेख की हूबहू प्रतिलिपि को पढ़ना उनके लिए मुश्किल था। और वह गाँव में इकलौते पढ़े-लिखे व्यक्ति थे। तो अगर वह इसे नहीं समझ पाए, तो और कौन समझ सकता था? तभी चिन्नय्या दौड़ते हुए आए, उनके हाथ में वह हुकुम था जो उन्हें दिया गया था। उन्हें भी वही कागज़, उसी सुलेख में मिला था। दोनों ने तय किया कि इसे केवल नरसप्पा जोइस ही पढ़ सकते हैं और वे अग्रहारा की ओर दौड़ पड़े।

जोइस, जिन्होंने अधिसूचना समेत पूरी बात पढ़ी, ने भी यही सारांश बताया: लोगों के पास अभी पर्याप्त भोजन नहीं है। कृषि भूमि बढ़ानी होगी। माननीय सरकार ने इच्छुक किसानों को सरकारी चरागाह भूमि पर खेती करने का निर्णय लिया है, जिसका खर्च सरकार स्वयं वहन करेगी। जिन जमींदारों के पास चरागाह भूमि थी, उन्हें स्वेच्छा से खेती करने का विकल्प दिया गया था; अन्यथा सरकार जबरन उस भूमि को अपने कब्जे में ले लेगी और फिर उसे उन आवेदकों को बिक्री या नीलामी के माध्यम से वितरित कर देगी जो उस पर खेती करने के लिए सहमत हुए थे। संबंधित चरागाह मालिकों को तालुक अमलदार साहब के समक्ष उपस्थित होकर वचन देना था।

तब तक जोइस के घर पहुँच चुके स्कूल मास्टर ने भी इसे पढ़ा और वही सारांश दोहराया।

“देखो, नेक आत्माएं पशुओं के लिए चारागाह छोड़कर पुण्य कमाती हैं। ये बदमाश तो मौजूदा चारागाहों को चुरा रहे हैं। अगर मौजूदा जमीन को मेहनत से ठीक से जोता जाए, तो क्या वो कहेगी कि उसमें अच्छी फसल नहीं होगी?” गौडय्या ने पूछा।

गुरु ने कहा: ‘तुम तालुक अमलदार के पास जाओ और उनसे अपील करो। वे एक अच्छे आदमी हैं। वे तुम्हारे पक्ष में कुछ ऐसा करेंगे जिससे तुम मुसीबत में न पड़ो।’

लेकिन चिन्नय्या और गौडय्या अकेले तालुक नहीं जा सकते थे। इसलिए जब उन्होंने उनसे कहा, 'कृपया हमारे साथ आइए,' तो शिक्षक ने उत्तर दिया, 'मैं एक

मामूली सरकारी कर्मचारी हूँ। मुझे नहीं आना चाहिए। अगर जोइस साथ आ जाए तो ठीक रहेगा।' इसके अलावा, स्कूल का समय भी काफी हो चुका था, इसलिए शिक्षक वहाँ से चले गए।

चिन्नय्या पूरी तरह अनपढ़ था। उसे सरकार, कानूनों और बाकी सब चीजों के बारे में कुछ भी नहीं पता था। गौडय्या और जोइस ने इन विषयों पर काफी देर तक चर्चा की। 'सरकार को यह कुटिल मानसिकता क्यों आ गई? यह तो तय था कि जिसने भी यह हुकुम जारी किया है, उसका कुछ भला नहीं होगा', चर्चा का यही सिलसिला चलता रहा। ऐसे मामलों में देरी नहीं करनी चाहिए। दोनों ने कल तालुक जाने का फैसला किया। चिन्नय्या ने सिर हिलाया। लेकिन तालुक जाने और साहब के सामने खड़े होने के ख्याल से उसके पैर थोड़े कांप रहे थे।

3

अगले दिन कौवे की कांव-कांव के समय तक वे दोनों अग्रहारा पहुँच गए। उन्हें वहाँ से तालुक जाना था। तीनों बिना कहीं रुके बीस किलोमीटर की दूरी तय करके शहर पहुँच गए और सूर्योदय से पहले ही वहाँ पहुँच गए। जोइस के पास कुछ भी नहीं था। उसके शरीर पर वही धोती थी जो उसने पहन रखी थी और कंधों पर शॉल था। एक दूसरी पवित्र धोती में उसके पास एक कसा हुआ नारियल और मुट्ठी भर अक्षत या पवित्र चावल थे। गौडय्या एक कलश में छह किलो मक्खन लेकर आया था। चिन्नय्या एक मिट्टी के बर्तन में पाँच किलो मक्खन लेकर आया था जिसका मुँह रस्सी से बंधा हुआ था।

जोइस ने पहले भी उस कस्बे को देखा था। उसे यह भी पता था कि तालुक कार्यालय कहाँ स्थित है। जब वे तीनों वहाँ पहुँचे, तो कार्यालय के सभी दरवाजे और खिड़कियाँ बंद थीं। केवल खजाने की सुरक्षा के लिए तैनात दो पुलिसकर्मी बंदूकें लिए वहाँ खड़े थे। जब जोइस ने साहसपूर्वक उनके पास जाकर पूछा, तो उनमें से एक ने बताया कि आज रविवार है और सरकारी कार्यालयों में रविवार को छुट्टी रहती है। जोइस जानता था कि सरकारी कार्यालय रविवार को बंद रहते हैं। लेकिन जब उन्होंने इस यात्रा का निर्णय लिया था, तब उन्हें यह बात याद नहीं थी। लेकिन कल उसने जो पंचांग देखा था, उसके अनुसार उनके प्रस्थान का समय निश्चित रूप से शुभ था। लेकिन अब यह हो गया। गौडय्या ने निराशा से कहा, "सरकार ने रविवार को छुट्टी

क्यों रखी है? क्या सोमवार पूरे देश के लिए छुट्टी का दिन नहीं है? गाँवों में सोमवार को कोई हल नहीं चलाता और न ही जुताई करता है। शास्त्रों में लिखा है कि सोमवार को किसी को भी बसवन्ना या बैल को थकाना नहीं चाहिए।"

उन दोनों पुलिसकर्मियों में से, जिसने पवित्र राख लगाई हुई थी और कुमकुम लगाया हुआ था, ने कहा: 'गौडय्या, तुम सच कह रहे हो। लेकिन सरकार तो यूरोपियों की है। उसने अपनी जाति की सुविधा के अनुसार रविवार को छुट्टी घोषित कर दी है। तुम्हारे गाँव का सोमवार सरकार में नहीं चलता।'

जोइस ने पुलिसकर्मियों से पूछा: 'क्या आप कृपया मुझे बता सकते हैं कि अमलदार का घर कहाँ है?'

उन्होंने तालुक कार्यालय के विशाल परिसर के बगल में सात-आठ विशाल पेड़ों के बीच स्थित ईंटों के बंगले की ओर इशारा किया। जोई दंपति उन दोनों को साथ लेकर परिसर पार करके बंगले के सामने बगीचे के द्वार तक पहुँचे। वहाँ खड़े एक गृहस्वामी ने उनसे पूछा: 'आप लोग क्या चाहते हैं? यहाँ क्यों आए हैं?'

जोइस ने यह प्रश्न पूछने वाले व्यक्ति की ओर देखा। उनके माथे पर पवित्र राख लगी हुई थी, साथ ही उन्होंने अपनी भौहों के ठीक बीच में कुमकुम भी लगाया हुआ था। उनके कंधे पर बंधा पवित्र धागा उनकी पतली कमीज के नीचे से दिखाई दे रहा था और उनके कानों में लाल मोती जड़े झुमके थे। उन्होंने सोने की तरह चमकती हुई चार स्पैन की रेशमी धोती पहनी हुई थी और पचास वर्ष से अधिक आयु होने के बावजूद उनका शरीर सुगठित था। जोइस ने अनुमान लगाया कि वे अमलदार साहब हैं और तुरंत बोले: 'मैं आपके शासन के अधीन अग्रहारा का एक वैदिक पुरोहित, एक पुजारी हूँ। मैं आपको राजसी आशीर्वाद देने आया हूँ।'

'ये दोनों कौन हैं?'

'हमारे गांव के किसान यहां आपको प्रणाम करने और सम्मान देने आए हैं।'

जोइस के शब्दों में छिपे संकेत को समझते हुए, गौडय्या और चिन्नय्या दोनों ने अपने बर्तन घास पर रख दिए, ज़मीन को छुआ और प्रणाम किया। अंदर जाते हुए अमलदार ने तीनों से कहा, 'अंदर आइए।' गौडय्या और चिन्नय्या बाहरी द्वार से अंदर चले गए। वे भीतरी द्वार से अंदर नहीं गए। भीतरी द्वार के पास बने विशाल बैठक कक्ष में, अमलदार चार कुर्सियों में से एक पर बैठ गए और जोइस को दूसरी कुर्सी की ओर इशारा किया। लेकिन जोइस नहीं बैठे। उन्होंने अपनी पवित्र धोती से नारियल और

अक्षत निकाला और उसे अपने दाहिने हाथ में लेकर मधुर स्वर में राजसी आशीर्वाद का मंत्र पढ़ा और अक्षत को अपने सिर पर छिड़का। इसके बाद, अमलदार स्वयं उठे और दोनों हाथों से नारियल ग्रहण करके नमस्ते किया।

उन्होंने पूछा, 'क्या आपने अपना संध्यावंदनम, सूर्य को दी जाने वाली अपनी दैनिक आहुति पूरी कर ली है?' इस पर जोइस ने कहा, 'संक्षेप में। मैं सुबह जल्दी उठा, स्नान किया और अपने गाँव से निकल गया।'

अमलदार साहब ने कहा, 'चलिए पहले दोपहर का भोजन कर लेते हैं,' और फिर बाकी दोनों की ओर मुड़कर बोले, 'कृपया बैठिए। भोजन कीजिए।' यह सुनकर गौडय्या और चिन्नय्या को असीम खुशी हुई। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि वे अमलदार साहब के घर में भोजन करेंगे। साहब साहब उठे और अंदर चले गए। उनका रसोइया एक बड़ा सा हिंडालियम का बर्तन लेकर बाहर आया और उनके द्वारा लाया गया मक्खन ले लिया।

4

दोपहर का भोजन समाप्त होने के बाद, अमलदार भीतरी आंगन में एक लकड़ी की कुर्सी पर बैठ गए। जोइस एक बांस की कुर्सी पर बैठे। साहिब के सामने, कलिंग गौड़ा और चिन्नय्या दीवार के पास ज़मीन पर, विनम्रतापूर्वक, सिकुड़ी हुई मुद्रा में बैठे थे। अमलदार ने कहा: 'गौड़य्या, दोपहर के भोजन के दौरान मैंने जोइस से भी यही बात कही थी। यह कानून ऊपर से आया है। सरकार ने खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिए क्या किया जा सकता है, यह पता लगाने के लिए यूरोपीय रेड पीपल की एक समिति गठित की। उन्होंने कहा: "सभी चरागाहों को खेती के लिए दिया जाना चाहिए। अन्यथा, सभी निजी चरागाहों को खेतों और आर्द्रभूमि में परिवर्तित कर दिया जाए। इस संबंध में एक हुकुम जारी करें और इसे चरागाह मालिकों को दे दें।" यह समिति द्वारा अनुमोदित निर्णय था। तदनुसार, दीवान साहिब ने राजस्व आयुक्त के माध्यम से यह आदेश पारित किया है। मेरे हाथ में कुछ नहीं है।'

जोइस ने निवेदन किया: 'हम आपकी बात समझ गए हैं। हम दीवान साहिब के दर्शन करने के लिए इतने बड़े नहीं हैं। इसीलिए पुरोहित होने के नाते मैं आपको सूचित कर रहा हूँ। आप इसे अपने उच्च अधिकारियों को लिख दें।'

तस्माद्गवं प्रचारं तु मुक्त्वा स्वर्गान्न हेयते |
यश्चिनत्ति द्रुमं पुण्यं गो प्रचारं छिनत्यापि ||

इसका अर्थ यह है कि जो कोई भी पशुओं के लिए निर्धारित चरागाहों को छोड़ देता है, उसे स्वर्ग जाने से वंचित नहीं किया जाएगा। जो लोग पशुओं के लिए निर्धारित भूमि में अवरोध उत्पन्न करते हैं, या जो ऐसी भूमि का स्वार्थवश उपयोग करते हैं, या जो वृक्षों को काटते हैं, ऐसे व्यक्ति की इक्कीस पीढ़ियाँ रौरव नरक में गिरेंगी। शास्त्रों में यही कहा गया है।

गोकुलस्य त्रिशार्तस्य जालन्ते वसुधाधिपा |
उत्पन्नादयतिओ विघ्नं तमहु ब्रह्मघातकम् ||

महाभारत में कहा गया है, "जो लोग गाय के घास और पानी को नुकसान पहुंचाते हैं, उन्हें घोर पापी कहा जाता है।"

अमलदार जोइस की बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे। वे एक धर्मनिष्ठ सनातनी थे, एक पवित्र हिंदू जो प्रतिदिन संध्यावंदनम और पूजा करते थे, और शास्त्रों और पुराणों के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। जोइस ने आगे कहा:

धनुः शतं परिहारो ग्राममस्य स्यात् समन्तः |
शम्यापतास्त्रयो वापि त्रिगुणो नगरस्य तु ||
तत्रापरिहृतं धान्यं विहिमस्युः पशवो यदि |
न तत्र प्रणयेदंडं नृपतिः पशुरक्षिणाम् ||

ऐसा कहा जाता है कि गाँव के चारों ओर लगभग आधा किलोमीटर भूमि पशुओं के लिए आवंटित की जानी चाहिए। यदि वह नगर है, तो इससे तीन गुना अधिक भूमि आवंटित की जानी चाहिए। और इस क्षेत्र में, यदि कोई खेत बनाता है, जोतता है और फसल उगाता है, और यदि कोई गाय उसकी फसल खा जाती है, तो राजा को उस गाय के स्वामी को दंडित नहीं करना चाहिए—शास्त्रों में भी यही कहा गया है। हमें गोमाता को धोखा नहीं देना चाहिए और अपने उद्देश्यों के लिए धरती माता का उपयोग नहीं करना चाहिए। यद्यपि गोमाता अपने शरीर पर उगने वाली घास को

खाती है, वह दूध में परिवर्तित होकर अंततः अप्रत्यक्ष रूप से हम तक पहुँचती है। माँ का दूध उसके बच्चे के सिवा और किसे पहुँचता है?

अमलदार ने सहमति जताते हुए सिर हिलाया और कहा: 'आपकी बात सही है। आपकी बातें सुनकर मुझे इस विषय से संबंधित सभी शास्त्रों का गहन अध्ययन करने में रुचि बढ़ रही है। आपने स्वयं देखा होगा जब हम हाथ-पैर धोने के लिए पिछवाड़े गए थे—मेरे घर में हर समय लगभग चार-पाँच गायें रहती हैं। कम से कम दो गायें हमेशा दूध देती रहती हैं। दरअसल, मेरी पत्नी सुबह जल्दी स्नान करने के बाद गाय की पूजा किए बिना मेरे पोते को एक बूंद भी दूध नहीं देती। लेकिन क्या करें? सरकार चलाने वाले लोग अलग हैं। उन्हें सलाह और सुझाव देने वाले विशेषज्ञ भी अलग हैं। वे सब इंग्लैंड से हैं। या फिर वे वहाँ जाकर वापस आ चुके हैं। क्या दीवान मेरी, एक साधारण तालुक अमलदार की बात सुनेंगे? इस स्थिति में मैं क्या कर सकता हूँ?'

जब कलिंग गौड़ा ने अमलदार के शिष्टाचार और धर्म के प्रति निष्ठा को देखा, तो अमलदार को अपना स्वामी समझने के कारण उनके मन में उत्पन्न भय गायब हो गया। उन्होंने बीच में ही टोकते हुए उनसे एकवचन में कहा, 'महोदया, कृपया मेरी बात ध्यान से सुनें।'

जोइस ने तुरंत जवाब दिया: 'गौडय्या! आप महामहिम को एकवचन में कैसे संबोधित कर सकते हैं? आपने जरा भी शिष्टाचार नहीं सीखा है!'

लेकिन अमलदार ने खुद कहा: 'कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। वह सच्ची सद्भावना से बोल रहा है। बताओ, क्या बात है गौडय्या?'

गौडय्या ने कहा: 'यह मेरी गलती थी, मेरे दोस्त। मैं तुमसे एकवचन में बात नहीं करूँगा। अगर तुम चाहो तो मेरे गाँव आकर पूछताछ कर सकते हो। मेरे पास कुल मिलाकर डेढ़ सौ एकड़ चारागाह है। इस चिन्नय्या के पास पचास एकड़ है। नाममात्र के लिए ये ज़मीनें मेरे और उसके नाम पर हैं। लेकिन अब तक गाँव का कोई भी व्यक्ति अपनी गायों को वहाँ चराने के लिए ला सकता है। पहाड़ी के पास चारा खत्म हो जाने पर, हमारे गाँव की दूसरी गायें हमारे चारागाह में आकर चरती हैं। हमने अब तक एक भी गाय को नहीं भगाया है। हमने उसके मालिक को भी नहीं डांटा है। आखिर वह हमारी गोमाता है—इससे क्या फर्क पड़ता है कि वह किसकी है?'

ये शब्द सुनकर अमलदार ने प्रशंसा में सिर हिलाया। गौडय्या ने आगे कहा: 'मेरा नाम कलिंग गौड़ा है। आप पुण्यकोटी गौड़ा गीत तो जानते ही होंगे। मैं उसी कलिंग के

वंशज हूँ। मेरे पूर्वजों में से एक के समय पुण्यकोटी गौड़ा बाघ के पास गई और ज़िंदा वापस लौट आई। मेरा गाँव अरुणाद्री पर्वत की तलहटी में है। आज भी मेरी गौशाला में पुण्यकोटी नस्ल की गौड़ियाँ हैं। मेरे बेटे ने एक गौड़ा की जान बचाने के लिए अपनी जान दे दी।'

जोइस ने बीच में ही टोकते हुए कहा: 'जी हां, जी हां, गौडय्या जो कह रहे हैं वो बिलकुल सच है! ये वही वंश है जो कलिंग गौड़ा का है। कलेनाहल्ली एक पवित्र स्थान है। महाराज, कृपया एक बार अवश्य यहाँ आएं और गौडय्या की गौशाला देखें, जहाँ पुण्यकोटी गायें रहती हैं, और जो काशी या रामेश्वरम से कम पवित्र नहीं है।'

अब अमलदार की दिलचस्पी और बढ़ गई। 'जब मैं तालुक के कर निर्धारण के अगले दौर के लिए आपके क्षेत्रीय मुख्यालय आऊंगा, तो मैं अवश्य ही यहाँ आऊंगा। चूंकि यह एक पवित्र स्थान है, इसलिए मेरी पत्नी भी मेरे साथ आएंगी। पुण्यकोटी नस्ल की गाय की पूजा करने से जीवन पूर्ण हो जाता है। हम आपको पहले से सूचित कर देंगे। आपको विधिवत विधिपूर्वक पूजा करनी होगी। हम पूजा के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध करा देंगे।'

यह सच था कि अमलदार की गौड़य्या के गौशाला के प्रति श्रद्धा जागृत हो गई थी। लेकिन वह चरागाह की रक्षा करने में असमर्थ था। और न ही उसकी श्रद्धा केवल गौड़य्या के चरागाह तक सीमित थी; बल्कि यह सभी चरागाह मालिकों तक फैली हुई थी। वह वास्तव में चरागाहों को बचाना चाहता था, लेकिन उसके पास आवश्यक अधिकार नहीं था। उसने बहुत सोचा और फिर कहा: 'देखो, मेरे साहब, कानून के अनुसार मैं कुछ नहीं कर सकता। लेकिन मैं तुम्हें एक ऐसी योजना बताता हूँ जिससे तुम्हारे चरागाह को कोई नुकसान नहीं होगा। मैंने अपने चरागाह को कृषि भूमि में परिवर्तित कर दिया है। लेकिन उसमें बहुत सी खराब भूमि है—अर्थात् वह अधिकतर खेती योग्य नहीं है। लेकिन जहाँ संभव हो सका, मैंने कुछ खेती की है। छह महीने के भीतर मुझे इसी विषय पर एक आवेदन पत्र लिखो। इस आवेदन पत्र पर ग्राम लेखाकार (शानुभोग) के हस्ताक्षर करवा लो। अपने चरागाह के लेखा अभिलेख में अपने शानुभोग को यह रिपोर्ट लिखने को कहो कि वहाँ कुछ फलियों और मिर्चों के अलावा कुछ खास नहीं उगता।' इतना काफी होगा। इसके बाद, मैं प्रति एकड़ पच्चीस पैसे का कर निर्धारित करने का आदेश जारी करूँगा। इसका मतलब है कि गौड़ा को सरकार को हर साल साढ़े सैंतीस रुपये का अतिरिक्त कर देना होगा, और

चिन्नय्या को साढ़े बारह रुपये का अतिरिक्त कर देना होगा। आपका चारागाह सुरक्षित रहेगा। मैं इससे आगे कुछ नहीं कर सकता। मेरे अधिकार क्षेत्र में आने वाले किसी भी चारागाह के मालिक को, जो इसी तरह की अपील मेरे सामने लाता है, मैं यही समाधान पेश करूँगा।

जोइस ने कहा: 'हमारे गौडय्या और चिन्नय्या धर्म और कर्म के ज्ञाता हैं। मुझे नहीं पता कि अन्य चरवाहे भी वही करेंगे जो वे कर रहे हैं। वर्तमान परिस्थिति में, महामहिम ने जो सुझाव दिया है वह सही है। गौडय्या, कृपया उनके कहे अनुसार चलें।'

महामहिम का सुझाव गौडय्या और चिन्नय्या दोनों को अच्छा लगा। गौडय्या के लिए सालाना साढ़े सैंतीस रुपये का अतिरिक्त कर देना कोई बड़ा बोझ नहीं था, और चिन्नय्या के लिए साढ़े बारह रुपये की रकम भी कोई परेशानी वाली बात नहीं थी।

गौडय्या और चिन्नय्या ने अमलदार को नमस्कार किया और उनसे अपनी पत्नी सहित उनके गाँव आने का अनुरोध किया। जोइस को अमलदार ने नारियल, कुछ फल और पच्चीस पैसे का एक चाँदी का सिक्का एक थाली में करीने से सजाकर भेंट किया। जोइस ने इसे स्वीकार किया और अमलदार को आशीर्वाद देने के लिए आशीर्वाद मंत्र का जाप किया और अपने साथियों के साथ अपने गाँव के लिए रवाना हो गए।

खंड 4

1

जब अमलदार अपने परिवार के साथ तालुक कर संग्रह के लिए अगली बार आए, तो उन्होंने न केवल कलिंग गौड़ा के गौशाला में सभी गायों की पूजा की, बल्कि उस बाघिन की गुफा में भी गए, जहाँ पुण्यकोटी अपना वचन निभाने के लिए लौटी थी। ठीक उसी गुफा के सामने बाघिन ने उससे कहा था: 'तुम मेरी बड़ी बहन हो; तुम्हें मारकर मुझे क्या लाभ होगा', और फिर उसने प्राण त्याग दिए थे। अमलदार ने चारों

ओर देखा और सुझाव दिया कि वहाँ एक मंडप या मंदिर बनाया जाए और साल में एक बार केवल कलेनहल्ली गाँव के लोग ही वहाँ गोपूजा करें। और यह दर्शाने के लिए कि वह पहले व्यक्ति हैं, उन्होंने पच्चीस रुपये का दान भी दिया। गोपूजा के लिए उनकी पत्नी लगभग चालीस किलो चावल, पच्चीस नारियल, गुड़ के टुकड़े और केले लाई थीं। उन्होंने इस मिश्रण को पानी में भिगोकर गौशाला की प्रत्येक गाय को खिलाया। अमलदार का परिवार अपने रसोइए के साथ गाँव के बसवन्ना मंदिर में ठहरा हुआ था। कलिंग गौड़ा ने उनके लिए एक शानदार दावत तैयार करवाई और उनके जाने से पहले उन्हें मक्खन से भरा एक बर्तन दिया।

कलेनाहल्ली के चारागाह सुरक्षित रहे। लेकिन आसपास के गांवों के लोग अपने चारागाहों पर खेती करते रहे। कुछ ने चना बोया तो कुछ ने रागी। कुछ निजी चारागाह मालिकों ने सरकार के आदेश से बहुत पहले ही अपने चारागाह के कुछ हिस्सों पर खेती शुरू कर दी थी। लेकिन वे सरकारी रिकॉर्ड में इसे चारागाह के रूप में दर्ज करवाते थे। इससे उन्हें केवल कर की बचत होती थी। आदेश के बाद, सरकारी चारागाहों को रिकॉर्ड के अनुसार कई लोगों के खेतों में बदल दिया गया। हालांकि कुछ ही लोग लगन से खेती करते और फसल काटते थे, लेकिन सभी लोग अपने भूमि अधिकार की रक्षा के लिए अपने खेतों में थोड़ा सा चना छिड़ककर ही जुताई करते थे।

कलिंग गौड़ा और चिन्नय्या के चरागाहों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा। आसपास के गांवों के चरागाह नष्ट हो गए और खेत बन गए। उन गांवों के मवेशियों के पास चरने की कोई जगह नहीं बची थी। खेतों के किनारों पर टहलने मात्र से उनका पेट नहीं भरता था। इसलिए सभी लोग अपने मवेशियों को अरुणाद्री की तलहटी में ले गए। लेकिन तलहटी का घास का मैदान कब तक एक साथ इतनी बड़ी संख्या में गायों के चरने का भार सहन कर पाएगा? ठीक एक महीने में, वह जड़ से बंजर हो गया। अब ग्रामीणों ने अपने मवेशियों को कलेनाहल्ली के चरागाहों की ओर मोड़ दिया।

शुरुआत में कलिंग गौड़ा ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्हें कभी भी दूसरों की गायों के अपने चरागाह में चरने पर कोई आपत्ति नहीं थी। उनका रवैया होता था, 'अगर गोमाता भूमाता के चरने पर आपत्ति क्यों करे?' वैसे भी, जिनके अपने चरागाह हैं, वे अपनी गायों को दूसरों के चरागाह में चरने के लिए क्यों भेजेंगे? लेकिन जब चिन्नय्या को पता चला और उसने उन्हें सच्चाई बताई, तो गौड़ा क्रोधित हो गए। 'चोर कमीने, उनके खेतों में फसल उगनी चाहिए, उनकी गायें दूध भी दें। इन कमीनों की

संतान का नाश हो! अरे! चलो, कल जाकर इन कमीनों को रोकते हैं!' अगले दिन, वे अपने कुछ नौकरों और चिन्नय्या को अपने साथ चरने के समय अपने चरागाह में ले गए।

जब वह वहाँ पहुँचा, तो उसने देखा कि उसका चारागाह मवेशियों से भरा पड़ा है। वे किसी एक गाँव या मोहल्ले के नहीं थे। मवेशियों के साथ आए लोग बीड़ी पी रहे थे और बेतरतीब ढंग से सीटी बजा रहे थे। 'तुम्हें किसने पाला है? अरे! क्या तुम इन गायों को लेकर वापस जाओगे या नहीं?' वह दहाड़ा। आदमी एक पल के लिए स्तब्ध रह गए। लेकिन उनमें से जो जवाब दे सकते थे, उन्होंने कहा, 'अगर यह आपकी ज़मीन है, तो बाड़ लगाइए, दादाजी।'

'अरे बेवकूफ, चरागाह के चारों ओर बाड़ कौन लगाता है? क्या तुम अपने बाप के ज़माने से मवेशी पाल रहे हो?' गौड़ा ने पूछा। उनमें से एक ने जवाब दिया, 'अरे गौड़ा, बोलने से पहले ज़बान संभालो। सरकार ने खुद एक कानून पारित किया है जिसमें सभी चरागाहों को खेती के लिए कहा गया है। अब चरागाह जैसी कोई चीज़ नहीं बची है। अगर यह तुम्हारा खेत है, तो बाड़ लगाओ।'

गौदय्या क्रोधित हो गए। उन्होंने अपने हाथ में पकड़ी लाठी घुमाई और उस व्यक्ति की ओर फेंक दी जिसने यह कहा था। लेकिन वह व्यक्ति झुक गया और वार से बच गया। चिन्नय्या का पुत्र यांगता गायों को भगाने लगा। लेकिन कलिंग गौड़ा ने उससे कहा, 'हे, क्योंकि ये पापी कमीने पाप करते हैं, तो क्या तुम गोमाता को भी मारोगे? चाहे वह उसकी हो या तुम्हारी, सब गोमाता ही हैं। वह लाठी उठाओ और उस कमीने की खोपड़ी पर ठीक से प्रहार करो।'

यांगता ने जिस बल से लाठी लेकर आगे बढ़कर हमला किया, उससे चरवाहे भाग निकले। फिर गौड़ा और उसके साथियों ने मवेशियों को भगा दिया।

लेकिन अगले दिन भी चोरी-छिपे चराई की गतिविधि नहीं रुकी। आसपास के गांवों के लोग अपनी गायों को गुपचुप तरीके से उसके चरागाह में भेजते रहे।

2

इस साल कलिंगा गौड़ा के मवेशियों के लिए कच्चे चारे की उपलब्धता एक गंभीर समस्या बन गई थी। गौड़ा हमेशा दो साल का चारा जमा करके रखते थे, ताकि अगर उनके मवेशियों को बाहर पर्याप्त चारा न मिले, तो घर में भूसा हमेशा मौजूद रहे।

लेकिन खुले मैदान में आराम से घूमने और हरी-भरी घास चरने का आनंद गौशाला में भूसा चबाने में नहीं मिलता था। गाय का शरीर तो स्वस्थ और तंदुरुस्त हो जाता था, लेकिन खुले में चरने के बिना वह पर्याप्त दूध भी नहीं दे पाती थी। इस साल तो गौड़ा भूसे के भंडार से किसी तरह काम चला लेंगे, लेकिन अगले साल उनके मवेशियों का क्या होगा अगर उनके चरागाह की घास भी दूसरों की गायों के पास चली जाए, जैसा कि अभी हो रहा है? इसके अलावा, कलेनाहल्ली में जिनके पास अपने चरागाह नहीं हैं, लेकिन तीन-चार गायें हैं, उन्हें भी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।

एक दिन कलिंग गौड़ा और चिन्नय्या इस मुद्दे पर चर्चा कर रहे थे। चिन्नय्या ने कहा: 'अगले साल अगर वे अपने मवेशियों को हमारे गाँव के चरागाहों में चुपके से लाने की कोशिश करेंगे, तो हम उनमें से कुछ को मार डालेंगे। उसके बाद वे डर जाएंगे और कोई भी कमीना इस तरफ नहीं आएगा।'

'अरे, मूर्ख! क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? अगर तुमने हत्या की, तो सरकार हमें फांसी पर चढ़ा देगी।'

तो फिर वह सरकार इन चोर बदमाशों को सबक क्यों नहीं सिखाती?

सरकार का जिक्र सुनते ही कलिंग गौड़ा को अमलदार की याद आ गई। साथ ही, उन्हें उम्मीद थी कि अगर अमलदार से मुलाकात हो तो वे किसी तरह उनकी मदद कर सकते हैं। अमलदार को कलेनाहल्ली आए डेढ़ साल बीत चुके थे। कलिंग गौड़ा को पता नहीं था कि वे अभी भी उसी तालुक में हैं या उनका तबादला हो गया है। अगले दिन, वे अग्रहारा गए और स्कूल मास्टर से इस बारे में पूछताछ की।

"वह अभी भी यहीं हैं। दरअसल, तबादला आदेश आ चुका था। लेकिन अब उनकी सेवानिवृत्ति का समय नजदीक आ गया है। "मैं सेवानिवृत्त हो जाऊंगा। स्वामी जी, आप मुझे कहीं और क्यों स्थानांतरित करना चाहते हैं? मैं अगले डेढ़ साल यहीं रहूंगा", उन्होंने अपने वरिष्ठों से अनुरोध किया। इसीलिए उन्हें यहीं रखा गया है। वह अगले छह महीने यहीं रहेंगे", स्कूल मास्टर ने कहा।

खैर, मुझे बड़े आदमी से बात करनी ही होगी। मैं कितना मूर्ख हूँ! कलिंग गौड़ा ने सोचा, अगर हमारा जोइस मेरे साथ हो तो अच्छा होगा, और एक दिन वह जोइस और चिन्नय्या के साथ तालुक के लिए निकल पड़ा। सम्मान के प्रतीक के रूप में, दोनों मक्खन ले जा रहे थे। पहले की तरह, जोइस अपने ऊपरी वस्त्र, अंगवस्त्रम के अंत में लिपटा हुआ नारियल और अक्षत ले जा रहा था।

वह दिन भी रविवार था। जोइस ने जानबूझकर वही दिन चुना था क्योंकि उस दिन वह सीधे अपने घर में उस बड़े आदमी से बात कर सकेगा। जब वे ग्यारह बजे पहुँचे, तो अमलदार सचमुच घर में ही थे।

“स्वागत है, स्वागत है। उस दिन के बाद तो मैं भी आपके गाँव नहीं आ सका। उसके बाद से मैं आपके बारे में कुछ और जान भी नहीं पाया। उस मंडप के निर्माण का काम कितना आगे बढ़ा है?” उन्होंने उनका स्वागत करते हुए पूछा।

उन तीनों के दोपहर का भोजन करने के बाद, उसने फिर से मंडप का विषय उठाया: 'सच कहूँ तो, एक मंदिर का निर्माण होना ही चाहिए। नहीं तो, कम से कम एक मंडप तो होना ही चाहिए। प्रगति कैसी है?'

गौड़ा ने कहा: ‘हमारे गांव के सभी लोगों ने मिलकर पैसे जमा किए हैं। किसी न किसी तरह पैसे का इंतजाम हो जाएगा। हमने चंद्रनहल्ली से शिवलिंगाचारी को बुलाया था। वह आए और जगह व सब कुछ देख लिया। उन्होंने कहा, “सिर्फ मंदिर बनाना काफी नहीं है। उसके सामने मवेशियों के पीने के लिए एक पानी की टंकी खोदनी होगी।”’

“यह बहुत अच्छा सुझाव है। जी हाँ, जी हाँ, आगे बढ़िए। खर्चे बढ़ जाएँ तो कोई बात नहीं। ज़रूरत पड़ने पर मैं और पैसे जुटाने का रास्ता निकाल लूँगा। अगर यह काम मेरे रिटायर होने से पहले पूरा हो गया, तो मैं इस शहर के व्यापारियों और सरकारी कर्मचारियों से चंदा इकट्ठा करूँगा।”

‘अय्या, हमारे गाँव के लोग अपने ही गाँव में मंदिर बनवाने के लिए पैसे देंगे। मैं कलिंगा गोल्ला के वंशज हूँ, है ना? पुण्यकोटी गाय तो मेरे ही गौशाला की है, है ना? चाहे दस हजार रुपये ही क्यों न हों, मैं अपनी जेब से दे दूँगा। पैसे की कोई चिंता नहीं है। मेरे गाँव के हर घर से एक पुरुष और एक स्त्री खुद जाकर निर्माण कार्य करेंगे।’

तो फिर काम शुरू क्यों नहीं हुआ?

“फिलहाल, शिवलिंगाचारी नागेनहल्ली में ईश्वर मंदिर के निर्माण में व्यस्त हैं। छह महीने बाद वे हमारे गाँव आएंगे। असली समस्या मंदिर निर्माण के लिए आवश्यक पत्थर की है। लगता है, हमारी पहाड़ी पर मिलने वाला पत्थर मंदिर निर्माण के लिए उपयुक्त नहीं है। शिवलिंगाचारी ने मंदिर के भीतरी परिसर में इसका उपयोग करने से साफ मना कर दिया है। हमें पत्थर बेट्टीकेरे पहाड़ी से लाना होगा। यह हमारे गाँव से

बारह मील दूर है। अय्या, आप चाहे जिस भी कस्बे में हों, क्या हम आपके बिना मंदिर की प्रतिष्ठा करेंगे?"

अमलदार अत्यंत प्रसन्न हुए और बोले: 'बहुत बढ़िया। पानी की टंकी इतनी गहरी खोदो कि वह मजबूत हो। भविष्य में तुम उस स्थान पर हर साल पशु मेला लगा सकते हो। याद रखना, पुण्यकोटी गाय तुम्हारे पूर्वज से हर साल संक्रांति के त्योहार पर दूध-पोंगल मिठाई बनाने के लिए कहती थी। उस दिन पशु मेले के साथ-साथ एक भव्य उत्सव भी आयोजित करो। यदि पानी, छाया और भोजन की पर्याप्त व्यवस्था हो, तो दूर-दूर के गांवों से भी लोग अपने पशुओं को मेले में लाएंगे।'

इस नए विचार से गौड़ा का मन अपार प्रसन्नता से भर गया। उनकी कल्पना में पशु मेले का दृश्य पहले से ही स्पष्ट हो चुका था।

'जिस स्थान पर कभी बाघ की गुफा हुआ करती थी, वहां पर्याप्त छाया है। अगर हम इसके चारों ओर बरगद के पेड़ लगा दें, तो यह और भी फैल जाएगी। हम इसके नीचे एक भव्य पशु मेला आयोजित कर सकते हैं', चिन्नय्या ने आगे कहा।

अमलदार ने उनसे इस समय आने का कारण पूछा। कलिंग गौड़ा द्वारा मामला समझाने के बाद उन्होंने कहा: 'मुझे पहले से ही आभास था कि ऐसा ही होगा। यदि सभी ग्रामीण अपनी भूमि पर खेती करें और फसल उगाएँ, तो किसी के भी खेत में चोरी नहीं होगी। लेकिन, यदि हर कोई अपनी भूमि की उपेक्षा करता है, तो बाकी लोग उस व्यक्ति की भूमि पर नज़र रखेंगे जो खेती करता है और फसल उगाता है। यहाँ भी यही हुआ है। आपके आस-पास के गाँवों के लोगों ने अपने चरागाहों पर खेती कर ली है। अब मवेशियों के लिए घास नहीं बची है। इन लोगों को चरागाह नहीं चाहिए, बल्कि मवेशी चाहिए।'

'क्या इन कमीनों के पास जरा भी अक्ल नहीं है, स्वामी?' गौड़ा ने पूछा।

'आपको यह सवाल सरकार से पूछना चाहिए। लोगों को अधिक भोजन चाहिए, और इसके लिए अधिक भूमि पर खेती करनी होगी। और इसके लिए अधिक पशुओं की आवश्यकता होगी। पशुओं के गोबर की अधिक मात्रा की आवश्यकता होगी। लेकिन पशुओं के चरने के लिए आवश्यक घास के मैदानों को नष्ट करना होगा। वास्तव में, सरकार में बैठे प्रतिष्ठित लोग स्वयं ऐसे आदेश पारित करते हैं। कोई क्या कर सकता है?'

'मेरे प्रिय महोदय, केवल आप ही रास्ता दिखा सकते हैं।'

अमलदार ने पांच मिनट तक मन ही मन सोचा, फिर पूछा: 'क्या आपके गांव में गौशाला नहीं है?'

'हां, यह है। मेरे पास सबसे बड़ा गौशाला है। चिन्नय्या के पास भी एक है। कुछ और छोटे गौशालाएं भी हैं। बाकी लोग अपने मवेशियों को अपने घरों के अंदर बने बाड़ों में बांधकर रखते हैं।'

'मैंने यह नहीं पूछा था। मैंने पूछा था कि क्या आवारा मवेशियों को बांधने के लिए कोई शेड है, जो खेतों में चरते हैं।'

जोइस ने कहा: 'महामहिम जिस बारे में पूछ रहे हैं, वह मेरे गांव में मौजूद है। यह वही है जो रंगे गौड़ा ने नीलामी में मिली जमीन के साथ किया है। कलेनाहल्ली में उस तरह का गौशाला नहीं है।'

गौड़ा और चिन्नय्या समझ गए। अमलदार ने सुझाव दिया: 'मुझे एक आवेदन दीजिए जिसमें आप अपने गाँव के लिए गौशाला की आवश्यकता बताएँ। इस पर ग्राम पुलिस पटेल के हस्ताक्षर होने चाहिए। मैं इसे स्वीकृत कर दूँगा। अपने गाँव में नीलामी करवाइए। अपने गाँव के किसी व्यक्ति को इसे दस रुपये में खरीदने दीजिए। वैसे भी, सरकारी रिकॉर्ड में आपकी चारागाह भूमि कृषि भूमि के रूप में पंजीकृत है। इसलिए, यदि किसी अन्य गाँव के मवेशी आपके चारागाह या आपके गाँव की सीमा के भीतर किसी अन्य भूमि में भटक जाते हैं, तो उन्हें बंद कर दीजिए। मालिक को मवेशी वापस लेने के लिए प्रति मवेशी प्रति दिन आठ आना जुर्माना देना होगा। यदि आठ दिनों के बाद भी कोई मवेशी वापस लेने नहीं आता है, तो पंचायत बुलाकर मवेशियों की नीलामी की घोषणा कीजिए। गौशाला में रखने का खर्च काटकर शेष राशि सरकारी खजाने में जमा कर दीजिए। ऐसा चार-पाँच मवेशियों के लिए कीजिए। इसके बाद, कोई भी आपके गाँव की ओर एक भी गाय भेजने की हिम्मत नहीं करेगा।'

जोइस ने कहा कि यही सबसे अच्छा समाधान है। गौड़ा और चिन्नय्या अपने गांव के लिए सरकारी गौशाला का अनुरोध करते हुए एक आवेदन देने और आवेदन पर अपने गांव वालों के हस्ताक्षर प्राप्त करने के बाद वापस आने पर सहमत हुए।

3

कट्टेमाने शिंगरी गौड़ा को नीलामी में बारह रुपये में गौशाला का ठेका मिला। कानून के अनुसार, ढोल बजाने वाले आसपास के गांवों में यह घोषणा लेकर घूमे:

'कलेनाहल्ली में एक नई गौशाला बन गई है। अगर कोई भी कलेनाहल्ली की किसी भी ज़मीन पर अपने मवेशी छोड़ता है, तो उसे पकड़कर गौशाला में बंद कर दिया जाएगा। प्रतिदिन आठ आना का जुर्माना है। आठ दिन बाद मवेशियों की नीलामी कर दी जाएगी।'

फिर भी, अगली मानसून के बाद, दूसरे गाँवों के मवेशी कलेनाहल्ली के चारागाहों में चरना बंद नहीं हुए। इसलिए, एक दिन कलेनाहल्ली के ग्रामीण इकट्ठा हुए और अपने चरागाहों में भटक गए मवेशियों को पकड़ लिया। गाँव के लोग अपने गाँव की सीमा से बाहर पहाड़ियों तक भी गए और वहाँ मिले मवेशियों को पकड़ लिया। कुल मिलाकर, उन्होंने 300 मवेशियों को बाड़े में बंद कर दिया। मालिक उसी शाम पहुँचे और लड़ाई शुरू करने की धमकी दी। लेकिन चिन्नय्या का बेटा यांगता तुरंत होबली भागा और अपने साथ दो पुलिसकर्मियों को ले आया। जो लोग लड़ाई के मूड में आए थे, वे अब डर गए थे। अंत में, मालिकों ने गौशाला को प्रति मवेशी आठ आना की दर से डेढ़ सौ रुपये दिए और अपने मवेशी वापस ले लिए। दूर से आए पुलिसकर्मी बस सौ रुपये जेब में रखकर चले गए। ठेकेदार शिंगरी गौड़ा को पचास रुपये मिले, जो कोई मामूली मुनाफा नहीं था। उसने सरकार को केवल बारह रुपये दिए।

उस दिन से ऐसा प्रतीत हुआ कि शिंगरी गौड़ा को एक नया पेशा मिल गया था। हर सुबह वह गाँव के सभी खेतों का चक्कर लगाता। वह पहाड़ियों की भी छानबीन करता। अगर उसे एक भी गाय मिल जाती, तो आठ आने की कमाई हो जाती। अब किसी भी गाय का शिंगरी गौड़ा की पैनी नज़र से बचना नामुमकिन था। जो लोग उससे पूछते, वह कहता कि पूरी अरुणाद्री पहाड़ी कलेनाहल्ली की है और अमलदार ने खुद इस संबंध में आदेश जारी किया है। इस तरह वह प्रतिदिन दो-तीन रुपये से थोड़ा ही अधिक कमाता था।

लगभग दो महीनों में, आसपास के गांवों से मवेशी पूरी तरह से इस तरफ आना बंद कर दिए। उसी समय शिंगरी गौड़ा की आमदनी भी रुक गई। लेकिन बिना आमदनी के उन्हें ठेकेदार कैसे कहा जा सकता था? एक दिन, उन्होंने कलेनाहल्ली के दो बैलों को पकड़ा और उन्हें अपने गौशाला में बांध दिया। बैल कलिंग गौड़ा के चरागाह में चर रहे थे। जब मालिक ने उनसे सवाल किया, तो उन्होंने उन्हें छुड़ाने के लिए एक रुपया मांगा। मालिक ने कलिंग गौड़ा से संपर्क किया।

जब कलिंगा गौड़ा ने ठेकेदार से कहा, 'आपको हमारे गांव के मवेशियों को नहीं बांधना चाहिए', तो उसने जवाब दिया, 'अगर आप ऐसा कहेंगे तो मैं कैसे कमाऊंगा?'

कलिंग गौड़ा क्रोधित हो गए। 'क्या तुम बिल्कुल कंगाल हो गए हो? क्या तुम कंगाल हो गए हो? क्या अब तुमने मवेशी बांधकर अपना गुजारा शुरू कर दिया है? मैं गांव वालों से पैसे इकट्ठा करके तुम्हें तुम्हारे बारह रुपये दिलवा दूंगा। मवेशियों को तभी बांधना जब हममें से कोई उन्हें तुम्हारे पास लाए। वरना नहीं! इस धरती के सपूत ने खेतों में मेहनत करने की बजाय मवेशी बांधकर पैसे कमाना शुरू कर दिया है!'

शिंग्री गौड़ा ने इस फटकार पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। लेकिन मन ही मन उन्होंने सोचा, अब से मैं कहीं और से आने वाले किसी भी मवेशी को नहीं पकड़ूंगा। यह बूढ़ा आदमी सिर्फ इसलिए गुर्रा रहा है क्योंकि मैंने अपनी सुरक्षा के लिए कुछ इंतजाम कर लिए हैं।

एक दिन, शिंग्री गौड़ा दूसरे गाँव से एक गर्भवती गाय पकड़कर अपने शेड में बंद कर दिया। एक दिन बीत जाने के बाद भी कोई उस पर दावा करने नहीं आया। जब कलिंगा गौड़ा को पता चला कि वह गर्भवती गाय है, तो वह स्वयं वहाँ गया और जाँच करने पर पाया कि बछड़ा किसी भी समय जन्म दे सकता है। वह आज या कल जन्म दे देगा। ठेकेदार ने कल से उसे न तो घास दी थी और न ही पानी। जब कलिंगा गौड़ा ने गाय को देखा, तो उसकी आँखों में आँसू भर आए और वह शिंग्री गौड़ा पर क्रोधित हो उठा। वह गुस्से में अपने घर तक गया और चिल्लाया, 'क्या तुम सचमुच बच्चों के पिता हो? क्या तुम्हारे बच्चे इस तरह का पाप करके जीवित रह पाएँगे? धिक्कार है तुम! तुम रोज़ आठ आना कमाते हो, है ना? क्या तुम्हें गाय को घास खिलाने की भी समझ नहीं है?' सरकार का एक कानून है जिसके अनुसार तुम्हें इसे घास खिलानी होगी।' इस फटकार के जवाब में, शिंगरी गौड़ा गौशाला की चाबियाँ लेकर गौड़ा के सामने फेंकते हुए बोला, 'दादाजी, मुझे न तो इस अनुबंध की ज़रूरत है और न ही इस झंझट की। मैंने अजनबियों के मवेशियों को घास खिलाने का अनुबंध नहीं लिया था। आप यह गौशाला ले जाइए।'

'तेरी घिनौनी जिंदगी खुद तू गवाह होगा, कमीने!' गौड़ा ने कहा। उसने चाबियां लीं, गौशाला खुलवाई और अपने घर से चारा और जूठा मंगवाया ताकि उस गाय को खिला सके जो किसी भी समय बच्चा दे सकती थी। गाय ने पहले दो बाल्टी जूठा खाया और फिर घास चबाने लगी। गौड़ा उसकी गर्दन, पेट, उदर और पीठ सहलाने और

रगड़ने लगा, और गुस्से से बड़बड़ाने लगा, ‘क्या मवेशी पालने वाले उन हरामखोरों में इतनी अक्ल नहीं होती कि अगर वो खो जाए तो उसे ढूंढ लें? ऐसे कमीने मवेशी क्यों पालते हैं?’

तब तक गाय एक तरफ हट गई और अपने पिछले पैरों को उठाकर पटकने लगी। वह गुस्से में आगे बढ़ी और गौड़ा को सींगों से मारने लगी, जो तब तक उसे सहला रहा था। ‘अहा! इसे देखो! क्या तुमने ज्यादा खा लिया?’ उसने उसकी नाक की गांठ पकड़ते हुए कहा और फिर उसे रस्सी से बांधकर शेड के एक तरफ रख दिया। देखते ही देखते उसने गाय में प्रसव पीड़ा के लक्षण देखे। ‘रुको, माँ, बस रुको। यहीं अपने बच्चे को जन्म दो। चिंता मत करो, मैं तुम्हारी पूरी देखभाल करूँगा’, उसने गाय से कहा। गाय ने सहमति में दो बार सिर हिलाया।

कलिंग गौड़ा घर गए। लक्कम्मा रागी के गोले बना रही थीं। उन्होंने लक्कम्मा को खबर दी और फिर दो नींबू, एक कच्चा धागा, हल्दी, एक गीला कपड़ा और पानी की बाल्टी लेकर गौशाला लौट आए। जहां गाय बंधी थी, उसके बाईं ओर खड़ी गाय जलते हुए कोयले के गोले जैसी आँखों से गौड़ा को घूर रही थी और अपना सिर ऐसे हिला रही थी मानो किसी को सींग मार रही हो। गौड़ा थोड़ी दूरी पर बैठकर इंतज़ार करते रहे। एक घंटे बाद भी गाय ने कुछ नहीं कहा।

तब तक लक्कम्मा वहाँ पहुँच गई। गौड़ा ने कहा, ‘मैं बहुत देर से इंतज़ार कर रहा हूँ। अभी तक उसने बच्चे को जन्म नहीं दिया है। वो मुझे ऐसे घूर रही है जैसे मुझे सींगों से मार डालेगी।’ यह सुनकर लक्कम्मा गाय के पास गई और जाँच-पड़ताल करने लगी। बछड़े के जन्म का समय लगभग हो चुका था। उसने अपने पति की ओर मुड़कर कहा, ‘क्या तुम्हारे दिमाग में कुछ भी नहीं चल रहा? क्या गाय किसी पुरुष की मौजूदगी में बच्चे को जन्म देगी? क्या उसे शर्म नहीं आएगी? तुम बाहर जाओ।’

यह सच है। मुझे तो यह बात सूझी ही नहीं, उसने सोचा और अपनी मूर्खता पर कोसते हुए गौशाला से बाहर निकला और सामने वाले बरगद के पेड़ की छाँव में बैठ गया। थोड़ी देर बाद चिन्नय्या आ गया। जब उसने पूछा, 'यह क्या है गौड़य्या? तुम यहाँ क्यों बैठे हो?', तो गौड़ा ने गौशाला के ठेकेदार शिंगरी गौड़ा के व्यवहार के बारे में बताया। चिन्नय्या ने सहमति जताते हुए कहा, 'मुझे भी पता है। वह कमीना सोचता है कि यह गौशाला सिर्फ पैसे कमाने के लिए है। बताइए, वह पापी आठ आने लेता है! क्या वह मवेशियों को भूखा रख सकता है?'

चिन्नय्या और कलिंग गौड़ा ने कुछ देर विचार करने के बाद एक उपाय निकाला: शिंग्री गौड़ा को इस अनुबंध से हटा दिया जाए। इसके बदले, चिन्नय्या के पुत्र यांगता को अनुबंध सौंप दिया जाए और जब्त किए गए पशुओं को चारा और पानी उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने तय किया कि इन पशुओं के लिए पानी भरने और आपूर्ति करने के लिए दस रुपये प्रति वर्ष के वेतन पर एक कर्मचारी नियुक्त किया जाए। चारे की लागत और सरकार को दिए जाने वाले बारह रुपये काटने के बाद जो भी राशि बचेगी, उसे पहाड़ी के पास स्थित मंदिर के निर्माण में लगाया जाएगा।

कुछ देर बाद गौड़ा की पत्नी शेड से बाहर निकली और बोली: 'गाय ने बछड़ा दिया है। यह बहुत ही सुंदर बछड़ा है। मुझे गाय को धोने के लिए थोड़ा और पानी चाहिए।'

चिन्नय्या दो बाल्टी पानी लेकर लौटी। अभी-अभी ब्याही गाय किसी को भी अपने पास नहीं आने दे रही थी। फिर भी, गौड़ा ने उसकी नाक की गांठ पकड़ी हुई थी। लक्कम्मा और चिन्नय्या ने गाय के शरीर को अच्छी तरह धोया। लक्कम्मा ने बछड़े को भी धोया। इसके बाद, उन्होंने गाय के माथे और सींगों पर हल्दी और कुमकुम लगाया और फिर बुरी नज़र से बचाने के लिए उसके चेहरे के सामने नारियल से गोलाकार घुमाव किया। फिर उन्होंने नारियल को ज़मीन पर फोड़ दिया। उन्होंने झोपड़ी के बाहर खड़ी एक गाड़ी से थोड़ी सी कालिख भी ली और गाय के पूरे चेहरे पर मल दी ताकि बुरी नज़र उसे नुकसान न पहुंचाए। लेकिन वे दूध पिलाने वाली माँ और उसके बच्चे को इस झोपड़ी में अकेला कैसे छोड़ सकते थे? लक्कम्मा ने बछड़े को उठाया। कलिंग गौड़ा ने माँ की नाक की गांठ पकड़ी और उसे अपने घर ले गए। नवजात माँ लगातार अपने बच्चे के शरीर को चाट रही थी और लक्कम्मा के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही थी, जो उसे अपनी बाहों में लिए आगे-आगे चल रही थी। शेड में रुकी चिन्नय्या ने एक बड़ा डस्टपैन लिया और प्रसव के बाद फैली गंदगी को साफ किया।

अपने गौशाला पहुँचकर लक्कम्मा ने गाय के पूरे शरीर पर हल्दी मल दी ताकि उसे ज़हर न लगे। गौड़ा खेत में गई, कुछ पत्ते और जड़ी-बूटियाँ तोड़ीं और उनका पेस्ट गाय की योनि पर लगाया। नई माँ को ठंडा रखना ज़रूरी था। अपनी सास के निर्देशानुसार, मूक तैयव्वा ने दो किलो चावल में दो कच्चे नारियल मिलाकर भिगोए और गाय को खिलाया।

फिर गाय का मालिक वहाँ पहुँचा। पच्चीस वर्षीय मालिक को देखकर गौड़ा क्रोध से आग बबूला हो गया: 'तू किस तरह का वोक्कालिगा है, कमीना... दो दिन तक एक गर्भवती गाय को भूलकर शांति से बैठा रहा? तू दूध पीता है, लेकिन गाय की देखभाल नहीं कर सकता?'

'हमें सच में पता ही नहीं था कि यह यहाँ आ गया है, दादाजी। हम तो स्वारेनहल्ली और सुरागिहल्ली की दिशा में लगातार इसकी तलाश करते रहे।'

'आपके गांव कोनसा हे?'

'Dyavalapura.'

द्यावलपुरा लगभग तीन मील दूर था। गौड़ा नहीं चाहता था कि नई माँ इतनी लंबी दूरी पैदल चले, इसलिए उसने कहा: 'गाय और उसके बछड़े को दो दिन और यहीं रहने दो। परसों वापस आकर उन्हें ले जाना। अब, कुछ खा लो।' गौड़ा ने उसे खाना खिलाया और वापस भेज दिया।

जब गौड़ा तीसरे दिन अपनी गाय और बछड़े को लेने लौटा, तो उसने गाय पर कुमकुम लगाया और प्रार्थना की। जब मालिक ने पाँच दिनों का जुर्माना यानी ढाई रुपये निकालकर प्रसव के खर्च के बारे में पूछा, तो गौड़ा क्रोधित हो गया और बोला, 'क्या, तुम्हें लगता है कि सिर्फ तुम्हारे पास ही पैसा है? वह तो इस घर की बेटी की तरह प्रसव के लिए आई थी, और अब बेटे को जन्म देकर लौट रही है। क्या मैं इसके लिए पैसे लूँ?'

गाय का मालिक चुप हो गया। कलिंग गौड़ा ने कहा: 'देखो। तुम्हें गाय की रस्सी पकड़ने की ज़रूरत नहीं है। बस बछड़े को चलने मत दो। उसे उठाओ, गले लगाओ, अपनी बाहों में थामे चलो। वह अपने आप तुम्हारे पीछे आ जाएगी।'

खंड 5

1

पुट्टा कलिंगा ने अग्रहारा के प्राथमिक विद्यालय में चार वर्ष पूरे कर लिए थे, तब जोई परिवार ने सुझाव दिया कि उसे अंग्रेजी पढ़ने के लिए तालुक भेजा जाए। गौड़ा को अपने इकलौते पोते को वहाँ भेजने का विचार पसंद नहीं आया। अंग्रेजी सीखकर उसे क्या लाभ होगा? अग्रहारा विद्यालय में शिक्षा पूरी करने के तुरंत बाद ही उसका पोता नलचरित्र की कविताएँ पढ़ सकता है। अब केवल जैमिनी ही बाकी है। बड़े गौड़ा ने सोचा कि अगर उसे किसी की देखरेख में यह भी पढ़ाया जाए, तो उसकी शिक्षा लगभग पूरी हो जाएगी। हालांकि, जोई परिवार ने जोर देकर कहा, 'समय के साथ चलने के लिए थोड़ी-बहुत अंग्रेजी सीखने में क्या हर्ज है?'

जोई परिवार का पुत्र वेंकटारमण तालुक विद्यालय में तीसरे वर्ष में अंग्रेजी पढ़ रहा था। उसका जनेऊ संस्कार हो चुका था और उसने अपने पिता से वैदिक शिक्षा भी अच्छी तरह प्राप्त कर ली थी। भोजन के लिए वह भिक्षा लेता था और नरसिम्हा मंदिर परिसर में स्थित मंडप में रहता था। दरवाजे और ताले लगे इस मंडप में चार-छह अन्य ब्राह्मण विद्यार्थी भी रहते थे। वेंकटारमण सुबह-शाम मंदिर में चलने वाली कक्षाओं में संस्कृत भी पढ़ता था। उसके सिर के आगे के बाल मुंडे हुए थे और पीछे के लंबे बाल घनी चोटी में बंधे थे; उसके माथे पर गोपीचंदन का चिन्ह था—एक पवित्र, पीले रंग का गेरू का चिन्ह; उसके बाएं हाथ में एक सफेद थैली और दाएं हाथ में सूप का कटोरा था। जब वह इस प्रकार भिक्षा के लिए निकलता था, तो वह वातु जैसा दिखता था—प्राचीन ऋषियों के आश्रमों में अध्ययन करने वाला विद्यार्थी।

जोई परिवार ने गौड़ा से कहा: 'गौड़ाया, अपने बच्चे का दाखिला वहाँ करवा दीजिए। उन्होंने वोक्कालिगा समुदाय के लिए एक छात्रावास बनाया है। अगर आप पचास किलो रागी, पाँच किलो दाल, दस किलो चावल और पच्चीस रुपये प्रति वर्ष देंगे, तो लगता है कि वे बहुत ही बढ़िया भोजन परोसते हैं। मेरा बेटा वेंकटरमण आपके पोते की देखरेख करेगा और उसका पूरा ध्यान रखेगा। और यहाँ की तरह ही, वह उसे पढ़ाएगा और उसकी पढ़ाई में मदद करेगा। आप बिल्कुल भी चिंता न करें।'

और इस प्रकार, गौड़ा ने अपने पोते का दाखिला माध्यमिक विद्यालय में करा दिया। यह तालुक कोई मामूली जगह नहीं थी। यहाँ अमलदार का कार्यालय था। पिछले अमलदार सेवानिवृत्त होकर अपने पैतृक स्थान श्रीरंगपट्टना लौट गए थे। गौड़ा ने स्वयं रागी, सेम और चावल बैलगाड़ी पर लादकर छात्रावास अधिकारियों को सौंप दिए और अपने पोते के लिए व्यवस्था की।

अब गौड़ा की बस एक ही चिंता थी। उन्हें उस गुफा के सामने एक मंदिर बनवाना था और एक बड़ा कल्याणी (पानी का टैंक) खुदवाना था जहाँ पुण्यकोटी बाघ से मिलने गई थी। लेकिन इसी बीच चंद्रनहल्ली से शिवलिंगाचारी नंजनगुड की ओर मंदिर बनवाने चले गए थे। उन्होंने आश्वासन दिया था, 'आप चिंता क्यों कर रहे हैं? बस मेरी कही बात मानकर पत्थर मंगवा लीजिए। बाकी काम मैं कर लूँगा।' इसके बावजूद गौड़ा को विश्वास नहीं था कि शिवलिंगाचारी के प्रत्यक्ष उपस्थित हुए बिना काम पूरा हो पाएगा।

पुत्ता कलिंग अंग्रेजी अच्छी तरह सीख रहे थे। वेंकटरमण उन्हें उन्नत पाठ पढ़ा रहे थे, इसलिए अलग से शिक्षक नियुक्त करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। गौड़ा न केवल अपने पोते की प्रशंसा करते थे, बल्कि उन पर गर्व भी करते थे। वास्तव में, अंग्रेजी कोई मामूली बात नहीं थी। ऐसा लगता था कि अमलदार बनने के लिए अंग्रेजी जानना आवश्यक था। भविष्य में हमारे पुत्ता स्वयं अमलदार बन सकते हैं। या, वे इससे भी ऊंचे पद पर पहुंच सकते हैं। तब वे एक हुकुम जारी करेंगे जिसमें सभी को चरागाहों की खेती करने से मना किया जाएगा और यह आदेश दिया जाएगा कि लोग केवल उसी भूमि पर खेती करें जो गोमाता के भर जाने के बाद बची हो, गौड़ा कभी-कभी सपने में देखते थे। वास्तव में, ऐसे सपने का एक कारण था। जब घास के मैदानों में खेती शुरू हुई, तो घास की कीमत तेजी से बढ़ गई। जब वे छोटे थे, तब उनके आसपास कोई घास नहीं बेचता था। लेकिन बाद में, जब घास बिकने लगी, तो एक पूरी गठरी केवल दो रुपये में मिलती थी। अब, रागी घास की कीमत दस या बारह रुपये तक पहुंच गई है। घास की कीमत बढ़ने के कारण, शहरों और कस्बों में दूध, दही और मक्खन की कीमतें भी बढ़ गई हैं। 'ये कमीने इसी के लायक हैं। दरअसल, इन्होंने ही चरागाहों की खेती का आदेश देने वाला कानून बनाया था। उम्मीद है इन्हें खाने के लिए मक्खन न मिले', वह बड़बड़ाता था।

अंग्रेजी में दाखिला लेने के महज दो साल बाद ही पुट्टा अपने दादाजी से पहले अंग्रेजी के कुछ शब्द बोलने लगा था। दादाजी सोचते, "क्या यह अमलदारों की भाषा नहीं है?" इस समय तक वेंकटरमण ने अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी कर ली थी और अब वह मैसूर में था। उसके पिता ने उसे मैसूर संस्कृत पाठशाला में दाखिला दिलाया था—जो उन्नत वैदिक शिक्षा, ज्योतिष और वैदिक अनुष्ठानों की पारंपरिक शिक्षा देने

वाला विद्यालय था। साथ ही, वह उच्च विद्यालय में भी पढ़ता था। संस्कृत सीखने के कारण महाराजा के छात्रावास में उसे नि:शुल्क भोजन दिया जाता था।

पुट्टा अब तालुक से अच्छी तरह वाकिफ हो चुका है। वह वहां पैदल ही आता-जाता है। वह अपनी दादी द्वारा पिघलाए गए घी से भरे बर्तन का मुंह बांधकर उसे वहां तक ले जाता है। भोजन करने से पहले वह अपनी थाली में दो चम्मच घी डालता है। गांव पहुंचने पर वह मवेशियों को चराने के लिए बाहर ले जाता है।

वह अपने दादा-दादी से बातें करता है। वह नौकरों के साथ घुलमिल जाता है। लेकिन वह न तो अपनी माँ से बात करता है और न ही उसके पास जाता है। तैयव्वा इसी बात से मन ही मन दुखी थी। जब वह घर आता, तो वह बड़े प्यार और उम्मीद से उसके पास जाकर खड़ी हो जाती! लेकिन वह कभी उससे बात नहीं करता था। कभी-कभी उसकी आँखों में आँसू आ जाते थे। एक दिन जब लक्कम्मा ने अपनी बहू को रोते देखा, तो उसने सीधे उससे पूछा कि क्या बात है। उसने अपने दुख को हाथ के इशारों से बताया। लक्कम्मा समझ गई और उसने अपने पति को बताया। हालाँकि गौड़ा ने इसे 'बचकाना व्यवहार' कहा, लेकिन अगली बार जब उसका पोता घर आया, तो उसने सीधे उससे पूछा: 'मेरे बेटे, जब तुम घर आते हो तो अपनी माँ से बात क्यों नहीं करते?'

‘दादाजी, उससे बात कैसे करें?’

‘कैसे? ठीक उसी तरह... आप हमसे कैसे बात करते हैं?’

‘तुम बोलो, और मैं भी बोलूँगी। वो तो गूंगी है, है ना? एक गूंगे से कोई कैसे बात कर सकता है?’

उस पल, बड़े गौड़ा पुट्टा के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं सोच पाए। एक गूंगे से कैसे बात की जाए, यह सवाल उन्हें भी परेशान कर रहा था। उस दिन वे मवेशियों को चराने के लिए बाहर ले गए। सवाल अब भी उन्हें सता रहा था। उन्होंने पूरी दोपहर इसी बारे में सोचते हुए बिताई। इसी बीच, कुछ मवेशी चरागाह से भटककर खेतों की ओर दौड़ पड़े। उन्होंने एक बार जोर से कहा, 'अरे! होश में कहाँ गए?' वे अपनी जगह लौट आए। थोड़ी देर बाद, दो गायें उनके पास आईं और उनके सिर के ऊपर अपनी गर्दन हिलाईं। अगर वे हर दिन उनकी गर्दन के नीचे की कोमल, ढीली त्वचा को न सहलातीं, तो उन्हें चैन नहीं मिलता। 'अरे! मैं तो बिल्कुल भूल ही गया था। तुम खुद ही आ गईं', उन्होंने दोनों से कहा। जवाब में, उन्होंने उनका चेहरा सूंघा और उनकी पीठ

चाटी। वे उनसे बात करते हुए भी उनकी गर्दन सहलाते रहे। अचानक उन्हें कोले बसवा की राम और सीता याद आ गईं।* वे दोनों कितनी अच्छी तरह से बात करते हैं! अगर आप पूछते, 'भगवान राम, क्या आप माता सीता से विवाह करेंगे?' तो बसव बैल, यानी बैल, सिर हिलाकर 'हाँ' कह देता। भला किसने कहा कि जानवर बोल नहीं सकते? उसने मन ही मन सोचा।

उसी क्षण, कलिंग गौड़ा को उस प्रश्न का उत्तर मिल गया जो सुबह से उन्हें परेशान कर रहा था। उनकी बहू तैयव्वा भले ही गूंगी हो, लेकिन जिस दिन से वे उसे घर लाए हैं, तब से हर कोई उससे बात कर रहा है। वह भी सबसे बात करती है। 'क्या बोलने के लिए सिर्फ जीभ ही काफी है? क्या हमारा पुट्टा यह सरल बात नहीं समझ सकता? क्या वह अंग्रेजी स्कूल जाने के बाद भी यह सरल पाठ नहीं सीख सकता?' उन्होंने मन ही मन बुदबुदाया। जहाँ तक उनकी बात थी, वे गायों से भी बात करते थे और गायें उनसे बात करती थीं। उनकी बहू तैयव्वा भी उनसे बात करती थी। उन्हें कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि वह गूंगी है। उन्हें यह बात अपने पोते को सिखानी ही थी।

जब वह उस शाम घर लौटा, तो उसने अपने पोते को बुलाया, उसे अपने पास बिठाया और पूछा: 'अरे बेटा, तुम कहते हो कि तुम्हारी माँ गूंगी है, लेकिन क्या मैं उससे बात नहीं करता?'

'आप उससे बात तो करते हैं, लेकिन क्या वह जवाब देती है?'

'वह मुझे जरूर जवाब देती है। उसका दिमाग तुम्हारी दादी से भी तेज है। तुम्हें पता है, मैं व्यावहारिक मामलों और लेन-देन में हमेशा उसकी सलाह सुनता हूँ?'

पुट्टा कलिंगा ने कोई जवाब नहीं दिया। दादाजी ने आगे कहा: 'तुम्हें उसे गूंगी नहीं कहना चाहिए। जब तुम्हारे पिता जीवित थे, उन्होंने उसे कभी गूंगी नहीं कहा। वे हमेशा उससे बातें करते थे। वह भी उनसे बातें करती थी। अपने पति के लिए वह गूंगी नहीं थी। हम दोनों के लिए वह गूंगी नहीं है। लेकिन तुम्हारे लिए वह अपनी ही कोख से गूंगी बन गई?'

पोते को समझ नहीं आया कि क्या कहे। कुछ देर तक वह उदास रहा। दादाजी ने कहा, "अरे नासमझ! तुम अभी छोटे हो। ये सब बातें कैसे समझ सकते हो? जिस माँ ने तुम्हें जन्म दिया है, वो एक ही है, गोमाता भी एक ही है। गोमाता भी बोल नहीं सकती। इसे अच्छी तरह समझ लो। यह मत सोचो कि तुम्हारी माँ गूंगी है।"

उस क्षण गौड़ा को अपने बोले हुए शब्दों का पूरा अर्थ समझ नहीं आया। ऐसा उनके साथ कई बार हुआ था। वे बस आवेग में आकर बोल देते थे और फिर बाद में उनके अर्थ पर विचार करते, और जब अर्थ समझ नहीं आता तो चिंता करने लगते थे। उनके पोते को भी कुछ समझ नहीं आया और वह बस आँखें झपकाता बैठा रहा।

2

दो साल में पुट्टा ने माध्यमिक विद्यालय की पाँच रुपये की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। वेंकटरमण की तरह, वह भी मैसूर के उच्च विद्यालय में दाखिला लेना चाहता था। लेकिन उसके दादाजी ने कहा कि यह शिक्षा पर्याप्त है। कोई और रास्ता न देखकर, पुट्टा कलिंग अग्रहारा गया और जोई परिवार को अपनी इच्छा बताई। जब जोई परिवार कलेनहल्ली आया और गौड़ा को यह बात बताई, तो उसने कहा: 'अय्या, क्या मैं दिन-ब-दिन जवान होता जा रहा हूँ? क्या मैं पहले ही तिरसठ वर्ष का नहीं हो गया हूँ? मैं नौकरों की मदद से और कितने दिन काम कर सकता हूँ? क्या यह ठीक नहीं होगा अगर वह अमलदार न बने? उसे गौशाला की देखभाल करने दो।'

पुट्टा की आँखों में आँसू थे। जोई ने अपनी सिफ़ारिश दोहराई। उन्होंने शास्त्रों से उद्धृत करते हुए कहा, 'यदि विद्या का वरदान प्राप्त बालकों को शिक्षा से वंचित रखा जाए, तो विद्या की देवी सरस्वती क्रोधित हो जाएँगी।' उनका अपना पुत्र वेंकटरमण मैसूर में है। यह उसका हाई स्कूल का अंतिम वर्ष है। वह स्वयं पुट्टा की देखभाल करेगा। वोक्कालिगा छात्रावास में पुट्टा को सभी सुविधाएँ मिलेंगी। आधे दिन तक इसी तरह की बातें करने के बाद, गौड़ा अंततः मान गए।

पुट्टा मैसूर के लिए रवाना हो गया। जाने से पहले उसने अपनी माँ से भी कहा, 'माँ, मैं आपसे विदा लेता हूँ।' अपने बेटे को इस तरह बोलते सुनकर तैयव्वा बहुत प्रसन्न हुई। मैसूर में बसने के बाद पुट्टा नवरात्रि की छुट्टियों में भी घर नहीं आया। भला, जब पूरा देश दशहरा जुलूस देखने के लिए मैसूर में इकट्ठा होता था, तो वह भला कैसे घर आ सकता था? गौड़ा ने मन ही मन सोचा, 'वह अभी बच्चा है। पढ़ाई कर रहा है।'

जब वह गर्मी की छुट्टियों में गाँव आया, तो उसके चेहरे का भाव बदल गया था। जब वह तालुक गया था, तो उसके चेहरे पर एक अलग ही रौनक थी। अब उसके चेहरे पर श्रेष्ठता का भाव था, एक ऐसा घमंड जो उसे सर्वज्ञानी दर्शाता था। जब उसके दादाजी ने पूछा, 'अरे, तुम्हें स्कूल में क्या पढ़ाते हैं? तुम जैमिनी कब पढ़ोगे?' तो पुत्ते ने

उत्तर दिया, 'वहाँ जैमिनी नहीं पढ़ाते। आग कैसे लगती है, हवा में कौन-कौन सी गैसें होती हैं, जानवरों की उत्पत्ति कैसे हुई, अलग-अलग देशों के लोग कैसे रहते और व्यवहार करते हैं... ये सब तो वे सब पढ़ाते हैं।'

अरे, ये सब जानने का क्या फायदा? जैमिनी पढ़े बिना आनंद ही क्या? लगता है जोई का पुत्र वेंकटरमण संस्कृत सीखता है। लगता है वो रामायण और महाभारत का मूल संस्कृत में अध्ययन करता है। लगता है वो जैमिनी के हर श्लोक का अर्थ समझाता है। तुम ये सब कब सीखोगे?

'वह एक जॉइस का बेटा है, उसे इन सब चीजों की जरूरत है। मुझे इन सब चीजों की क्या जरूरत है? छोड़ो इसे। मैं विज्ञान की पढ़ाई कर रहा हूँ।'

विज्ञान क्या है?

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था? आग कैसे लगती है...'

'अगर आप पत्थर से रगड़ेंगे तो ऐसा होगा। क्या इसे स्कूल में सीखने की ज़रूरत है?' गौड़ा ने यहीं पर बात खत्म कर दी।

पुट्टा चौदह साल का हो चुका था। उसकी शादी होनी ही थी। जब उसके पिता कृष्ण मात्र दस वर्ष के थे और हाथ में भाला लिए अकेले ही मवेशियों को चराने के लिए पहाड़ियों की तलहटी तक जाया करते थे। उन दिनों, लकड़बग्घे कभी-कभी पहाड़ी की गुफाओं में आ जाते थे। कृष्ण की मृत्यु के बाद, लकड़बग्घे उस क्षेत्र में कभी नहीं आए। लेकिन पुट्टा के मैसूर से लौटने के बाद, उसने कभी भी अपनी मर्जी से मवेशियों को चराने के लिए नहीं ले गया। एक दिन जब दादाजी ने उससे पूछा, तो पोते ने कहा, 'मुझे वहाँ ऊब महसूस होती है। आप ही बताइए, शाम तक वहाँ अकेले कौन रह सकता है? वहाँ कोई साथी भी नहीं होता।'

'अहा! तुम्हारे साथ कोई क्यों रहेगा? क्या गायें तुम्हारे साथ नहीं रहेंगी?'

'अगर मेरे आस-पास गायें हैं, तो क्या इसका मतलब है कि मेरे पास कोई साथी है? क्या गायें इंसान हैं?'

दादाजी को तुरंत कोई जवाब नहीं सूझा। अगर कोई किसी ऐसे सत्य पर सवाल उठाए जो अनुभव में गहराई से निहित हो और जिसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता न हो, तो ऐसे सवाल का जवाब तुरंत कैसे दिया जा सकता है? और गौड़ा के मामले में तो यह और भी मुश्किल था। उन्होंने अपने पोते को एक अलग तरीके से जवाब दिया: 'अगर तुम्हें ऊब महसूस हो, तो बांसुरी बजाओ।'

मुझे न तो इसे खेलना आता है और न ही इसमें मेरी कोई रुचि है।

दादाजी को यह सुनकर बहुत दुख हुआ। उन्होंने कहा, "तुम भ्रष्ट हो गए हो। ग्वाले के घर में पैदा होकर तुम कहते हो कि तुम्हें बांसुरी बजाना नहीं आता? और तुम कहते हो कि तुम्हें इसमें कोई रुचि नहीं है? इसका क्या मतलब है? एक ग्वाले को गाय की सेवा अपनी माँ की तरह करनी चाहिए। और अगर वह इतनी मधुरता से बांसुरी बजाए कि गाय आनंद से स्वयं को भूल जाए, तो उसे मुक्ति प्राप्त हो जाती है। भगवान कृष्ण ने कहा है कि जो ग्वाला सब कुछ भूलकर, यहाँ तक कि एक पल के लिए स्वयं को भी भूलकर बांसुरी बजाता है, उसे मुक्ति प्राप्त हो जाती है।"

ये शब्द सुनकर हाई स्कूल में पढ़ रहे पोते को हंसी आ गई। उसने कहा, "कभी-कभी जब मैं मैसूर में वेंकटरमण से मिलने जाता हूँ, तो वे मंत्रों का जाप करते रहते हैं। अगर मैं उनसे पूछता हूँ कि ये क्या है, तो वे कहते हैं कि ये वेद हैं। उनका कहना है कि अगर कोई इसका अर्थ समझ ले, पूरी तरह से इस पर ध्यान केंद्रित करे और एक बार भी इसका पूरा जाप करे, तो उसे मुक्ति मिल जाती है और वह भगवान के चरणों में पहुँच जाता है। वेंकटरमण यही कहते हैं। और आप कहते हैं कि सिर्फ बांसुरी बजाने से ही भगवान के चरणों में पहुँच जाते हैं। तो इनमें से कौन सा सच है? दोनों ही झूठ हैं।"

"ऐसा मत कहो, मूर्ख कमीने। वेंकटरमण जो कहते हैं, वही उनकी जाति के लिए सत्य है। हमारी जाति के लिए बांसुरी ही सत्य है। क्या तुम्हें पता है तुम्हारे पिता कितनी अच्छी बांसुरी बजाते थे? कोमल पान चबाने से उनके होंठ लाल हो जाते थे, जब वे वहाँ खड़े होकर बांसुरी बजाते थे, तो वे एक ही समय में कृष्ण गौड़ा और भगवान कृष्ण दोनों लगते थे! अगर वे बांसुरी बजाते, तो सबसे शरारती बछड़ा भी अपनी पूंछ पैरों के बीच दबाकर सो जाता। क्योंकि वे इतनी अच्छी बांसुरी बजा सकते थे, इसलिए उन्होंने गाय का जीवन बचाने के लिए आक्रमण किया और अपना प्राण त्याग दिए। जो बांसुरी बजाना नहीं जानता... क्या उसमें प्राण त्यागने का साहस है? इसीलिए तुम्हारे पिता इतना साहस जुटा सके। उनकी भक्ति के कारण भगवान ने उन्हें अपने चरणों में बुलाया।"

अपने पिता के बारे में यह सुनकर पुट्टा कलिंगा को दुख और स्नेह दोनों का मिला-जुला एहसास हुआ। लेकिन उनके पिता की मृत्यु तो लकड़बग्घे के हमले में हुई थी। क्या दादाजी इसी को ईश्वर के चरणों में जाना कहते हैं? ऐसा लगता है कि उनके पिता

जैसा साहस केवल बांसुरी बजाने वाले में ही हो सकता है। आखिर इन दोनों बातों का आपस में क्या संबंध है?

जब उसने यह सवाल पूछा, तो दादाजी ने कहा, 'क्या तुम्हारे पिता ने गाय को बचाने के लिए अपनी जान नहीं दे दी थी? अगर तुम बांसुरी नहीं बजाओगे तो गाय की जान बचाने का ख्याल तुम्हारे मन में कैसे आएगा? तुम सिर्फ अपनी जान बचाने के बारे में सोचोगे, है ना?'

'दादाजी, मुझे आपकी एक भी बात समझ नहीं आ रही है।'

दादाजी खुद भी अपने बोले हुए शब्दों पर विचार कर रहे थे। उन्हें खुद भी अपने कहे का पूरा अर्थ समझ नहीं आ रहा था। फिर भी, उन्हें लग रहा था कि उन्होंने कुछ बहुत ही गहरा अर्थ कह दिया है। अगर वे जोई से पूछते, तो वे उसे विस्तार से समझा देते। ऐसा कई बार हो चुका था। बूढ़ा गौड़ा कुछ भी बोल देता। उसे खुद भी उसका अर्थ समझ नहीं आता। जोई उसका अर्थ बता देते और कहते कि उनके शब्द वाकई बहुत ऊंचे दर्जे के हैं, जिस पर गौड़ा हंसते और कहते, 'मैं तो एक चरवाहा और सीधा-सादा इंसान हूं। ये शब्द मेरे मन में आए और मैंने बोल दिए। इनमें कीचड़ के सिवा और क्या है—इतना कीचड़ कि तीन पैराग्राफ में फैल जाए!'

खैर, उस दिन पुत्ता कलिंगा मवेशियों को चराने ले गया। लेकिन शाम तक उसे बहुत ऊब महसूस हुई। उसने बांसुरी बजाने की कितनी भी कोशिश की, उसका मन नहीं लग रहा था। यहाँ तक कि जब गायें उसके पास आईं, तब भी उन मूक जानवरों से उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं था।

हाई स्कूल का पहला साल पूरा हो चुका था। छुट्टियों के बाद, उसे वैकल्पिक विषय चुनने थे: मानविकी या विज्ञान? उसका झुकाव विज्ञान की ओर था। वेंकटरमण हमेशा कहते थे, 'संस्कृत सीखो, मैं तुम्हें सिखा दूंगा।' लेकिन तब तक जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान उसके प्रिय विषय बन चुके थे। उसे संस्कृत सीखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

3

पुट्टा कलिंगा ने हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। चूंकि वह जानता था कि उसके दादा कॉलेज में आगे की पढ़ाई करने की उसकी इच्छा को नहीं मानेंगे, इसलिए उसने

पहले ही जोई परिवार से संपर्क किया। पहले की तरह, कुछ चर्चा हुई, लेकिन अंत में गौड़ा मान गए।

हाई स्कूल की परीक्षाओं के बाद, वेंकटरमण ने संस्कृत पाठशाला में पूर्णकालिक अध्ययन जारी रखा। वे सुबह लगभग साढ़े चार बजे ब्रह्म मुहूर्त में उठते थे, स्नान और संध्यावंदन करते थे। इसके बाद वेद और उपनिषद की कक्षाएं होती थीं, और फिर पाठशाला के पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाई होती थी। उन्हें अनाध्यायन काल के अलावा कोई खाली समय नहीं मिलता था: वर्ष के कुछ निश्चित दिन, जिनमें वैदिक शिक्षा की प्राचीन प्रणाली के अनुसार कोई पाठ नहीं पढ़ाया जाता था। लेकिन ये दिन रविवार को नहीं पड़ते थे, क्योंकि कलिंग में रविवार को छुट्टी होती थी। इस प्रकार, वे दोनों शायद ही कभी एक-दूसरे से मिलते थे। और जब मिलते भी थे, तो उनके पास अपने-अपने गांवों में बारिश और फसल कटाई के अलावा चर्चा करने के लिए कोई सामान्य विषय नहीं होता था। एक को जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान के बारे में कुछ भी समझ नहीं आता था, जबकि दूसरे को पुराणों और उपनिषदों के रहस्यों में कोई रुचि नहीं थी। आज भी वेंकटरमण अपनी कमर में मुंजा घास का धागा बांधते हैं। वह अंदर लंगोट पहनता है और उसके ऊपर लुंगी ओढ़ लेता है। उसने आज तक कभी निकर नहीं पहनी। अगर वह अपने बालों को पूरी तरह पीछे की ओर कंघी करके बांधे, तो गांठ छिले हुए नारियल जितनी बड़ी होती है। बाहर जाने के अलावा, वह अपने कमरे में हो या कक्षा में, अपने ऊपरी शरीर को ढकने के लिए केवल तौलिए जैसा कपड़ा ही पहनता है। उसे कमीज की ज़रूरत बहुत कम ही पड़ती है।

कलिंगा सिटी क्रिश्चियन कॉलेज में पढ़ रहे थे। पढ़ाई के अलावा, वे कॉलेज के खेलों में भी हिस्सा लेते थे। इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करते-करते वे कॉलेज में एक उत्कृष्ट खिलाड़ी के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। वे न केवल वॉलीबॉल और कबड्डी में, बल्कि दौड़ और कूद प्रतियोगिताओं में भी शीर्ष स्थान पर थे।

जब वे जूनियर बीएससी की पढ़ाई कर रहे थे, तब उन्हें मैसूर के सभी कॉलेजों द्वारा आयोजित अंतर-महाविद्यालयीय खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए भेजा गया था। वहाँ भी उन्होंने कबड्डी और दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया, साथ ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ वॉलीबॉल खिलाड़ी भी घोषित किया गया। उस वर्ष के एमजीएस टूर्नामेंट के लिए उन्हें बैंगलोर भी भेजा गया था। उन्होंने पूरे विश्वविद्यालय की दौड़ में प्रथम पुरस्कार जीता और कबड्डी एवं वॉलीबॉल में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किए गए।

इस प्रकार, कालिंगा का नाम न केवल कॉलेजों के खेल जगत में प्रसिद्ध हुआ, बल्कि वे कॉलेज के प्रधानाचार्य के चहेते भी बन गए। प्रधानाचार्य एक पादरी थे जो अमेरिका से आए थे। यदि अन्य छात्र उनसे मिलना चाहते थे, तो उन्हें पहले अनुमति के लिए एक पत्र भेजना पड़ता था। लेकिन कालिंगा सीधे उनके कार्यालय के दरवाजे से अंदर चले जाते और उनसे बात करते थे।

जब वह सीनियर बीएससी में थे, तब वह अपने कॉलेज की वॉलीबॉल टीम के कप्तान थे। जब बैंगलोर के एक कॉलेज के खिलाफ मैच तय होना था, तो प्रधानाचार्य को एक पत्र पर हस्ताक्षर करने थे जो बैंगलोर को तुरंत भेजना था। लेकिन प्रधानाचार्य अभी तक कॉलेज नहीं आए थे, इसलिए कलिंगा साइकिल पर सवार होकर उनके बंगले पर चले गए। वे दोपहर का भोजन करने ही वाले थे। पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद उन्होंने पूछा, 'बेटा, क्या तुमने दोपहर का भोजन कर लिया?'

'अभी नहीं पिताजी', उसने सच्चाई से उत्तर दिया।

पिता ने उसे दोपहर का भोजन करने के लिए कहा। जब कालिंगा ने शर्म के मारे मना कर दिया, तो प्रधानाचार्य ने ज़ोर दिया। कालिंगा ने हाँ कह दी।

नौकर ने प्रधानाचार्य के पास ही उनके लिए एक मेज लगाई और चीनी मिट्टी की थालियों में खाना परोसा। प्रधानाचार्य ने चम्मच, चाकू और कांटे से खाना शुरू किया। कलिंगा को चम्मच चलाना तो आता था, लेकिन चाकू-कांटे का इस्तेमाल करने का अभ्यास नहीं था। प्रधानाचार्य ने कहा, 'अगर कांटा नहीं चाहिए तो अपने देश के रिवाज के अनुसार उंगलियों से खा लो।' उन्होंने उंगलियों से खाना शुरू कर दिया। यह मांसाहारी भोजन था। कलिंगा पूरी तरह शाकाहारी नहीं थे। मरम्मा त्योहार जैसे मौकों पर वे घर पर बकरी और भेड़ का मांस पकाते थे। लेकिन यह खाना पकाने का काम घर के बाहर बने बाथरूम में होता था। इसके लिए बाथरूम में एक हैंगर पर एक बड़ा मिट्टी का बर्तन रखा जाता था। उस बर्तन में बाथरूम के चूल्हे पर मांस पकाया जाता था और वहीं खाया जाता था। घर के अंदर रसोई में ऐसा करना मना था।

दोपहर के भोजन के बाद, प्रधानाचार्य अपनी कार से कॉलेज के लिए रवाना हो गए। कलिंगा साइकिल से निकला, पत्र को पोस्टबॉक्स में डाला और फिर अपनी कक्षाओं में गया। उसे अपने घर में खाए जाने वाले मांस और उस दिन खाए गए मांस में कुछ अंतर महसूस हुआ। जब वे घर पर मांस पकाते थे, तो वे जीरा, काली मिर्च, धनिया, दालचीनी, मिर्च और अन्य स्थानीय मसालों का मिश्रण पीसते थे। इससे एक

तीव्र सुगंध निकलती थी, और जब तक कोई इसे खा न ले, तब तक केवल इसकी सुगंध से यह नहीं बता सकता था कि यह मिश्रण जिस सांभर या शोरबे में मिलाया जाता था, वह मटन सांभर था या कुलथी सांभर। कुलथी सांभर भी उसकी दादी सर्दियों के महीनों में मसालों को पीसकर उस गाढ़ेपन तक लाती थीं जो उसके दादाजी को बहुत पसंद था। लेकिन प्रधानाचार्य के घर में मांस में ज्यादा मसाला नहीं डाला जाता था। न ही ऐसा लग रहा था कि मांस पूरी तरह से पका हुआ है। किसी कारण से, उसे एक तरह की घृणा महसूस हुई। आधे घंटे बाद, उसे अचानक एक विचार आया: प्रधानाचार्य एक ईसाई थे, और वे लोग रेड लोग थे। वे गाय का मांस खाते हैं। शायद उसने आज भी मुझे वही खिलाया होगा! यह सोचकर ही उसका पेट मचल गया होगा।

पीरियड खत्म होने की घंटी बजते ही वह अगली क्लास में नहीं बैठा। क्लास से बाहर आकर वह साइकिल पर सवार हुआ और प्रिंसिपल के बंगले पर पहुँच गया। वहाँ गहरी नींद में सो रहा नौकर, उसके द्वारा बजाई गई बिजली की घंटी की आवाज़ सुनकर जागा और दरवाज़ा खोला। कलिंगा अंदर गया और सीधे उससे पूछा, 'आज आपने मुझे जो मांस परोसा, वह क्या था?' नौकर को कुछ भी पता नहीं था, इसलिए उसने जवाब दिया, 'बीफ़।'

'बीफ? गाय का मांस? तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?'

अब भी बात समझ न पाने के कारण, बटलर ने कहा: 'तुम्हें बताने के लिए इसमें क्या है? तुम्हें बताने के लिए क्या है?'

कलिंगा ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। बटलर ने पूछा, 'क्यों? क्या हुआ?' लेकिन कलिंगा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बाहर आया और अपनी साइकिल पर चढ़ गया। दो फर्लांग की दूरी तय करते-करते उसे मतली होने लगी और चलती साइकिल पर उसका संतुलन लगभग बिगड़ गया। वह तुरंत साइकिल से उतरा, रास्ते के किनारे एक पेड़ से साइकिल को टिकाया और ज़मीन पर बैठ गया। उसे अपने पेट में मरोड़ महसूस होने लगी और उल्टी जैसा महसूस हुआ। उसने अपनी उंगलियों को दो बार गले तक डाला और उल्टी कर दी। न केवल दिन में खाया हुआ गाय का मांस बाहर निकला, बल्कि होटल में खाए गए मसाला डोसे में मिलाई गई करी के आलू और प्याज के टुकड़े भी निकल आए। दस मिनट में उसके पेट की बेचैनी शांत हो गई। लेकिन घिनौनी हालत में गरारे करना ज़रूरी हो गया। उसका पूरा शरीर पसीने

से भीग रहा था। उसने सोचा कि नहाना ही बेहतर होगा। वह वापस अपनी साइकिल पर चढ़ा और हॉस्टल चला गया।

स्नान करने के बाद उन्हें बेहतर महसूस हुआ। लेकिन चिंता अभी भी उनके मन में बनी हुई थी। वे कलिंगगोल्ला वंश से थे। उनके लिए गाय भगवान के समान है। और देखिए, मैंने आज गाय का मांस खा लिया। ये ईसाई, विशेषकर यूरोप के पादरी, गाय का मांस खाते हैं। खाने से पहले मुझे यह बात क्यों नहीं सूझी? मैंने कौन सा पाप किया है!

चाहे वो बिस्तर पर कितना भी करवटें बदलता, एक ही विचार उसके मन को सताता रहता था—पाप। जब उसका मन पूरी तरह से इस बात से भर जाता कि यह एक पाप है, तो उसे प्रायश्चित याद आता। आज उसने जो किया था, उसके प्रायश्चित के बारे में सोचते हुए भी उसे वेंकटरमण याद आ गया। उसने वेदों और शास्त्रों का अध्ययन किया था, वो जोई परिवार का पुत्र था; वही सही व्यक्ति है। वो उठा, कमीज़ पहनी, साइकिल पर चढ़ा और संस्कृत पाठशाला पहुँच गया।

उस दिन वेंकटरमण की कोई कक्षा नहीं थी। वे अपने कमरे में चटाई पर बैठे, छपी हुई किताब से मंत्रों को अपनी सफेद कागज़ की पुस्तिका में लिख रहे थे और स्याही में अपनी लोहे की कलम डुबो रहे थे। जब उन्होंने कलिंग को देखा, तो कहा, 'आओ, कलिंग, तीन महीने हो गए जब तुम आए थे। तुम उदास क्यों लग रहे हो? क्या तुम अस्वस्थ हो?'

कलिंग ने सुबह से लेकर अब तक की सारी घटनाएँ सुनाईं: 'आपको प्रायश्चित की प्रक्रिया में मेरी मदद करनी होगी। मुझे बताइए कि मुझे क्या करना चाहिए।'

वेंकटरमण ने एक क्षण सोचा और कहा: 'तुमने उसके घर में भोजन क्यों किया? क्या हमारे शास्त्र झूठे हैं जब वे यह आदेश देते हैं कि जाति की अवधारणा न रखने वालों के घरों में भोजन नहीं करना चाहिए?'

मुझे पता नहीं था। अगर पता होता, तो क्या मैं वहाँ खाना खाता? अब जो हो गया सो हो गया। मुझे बताओ कि इसका प्रायश्चित क्या है।

"यह ऐसा पाप नहीं है जो आपने जानबूझकर किया हो। यह आपकी जानकारी के बिना हुआ है। इसलिए, यह कोई बड़ा पाप नहीं है। कल सुबह पंचगव्य ग्रहण करें। तब तक अपने मुंह में पानी की एक बूंद भी न जाने दें।"

‘उस स्थिति में तो आपको ही इसे देना होगा। मुझे नहीं पता कि यह कहाँ से मिलेगा या इसकी प्रक्रिया कैसे करनी है।’

एक मिनट सोचने के बाद वेंकटरमण ने कहा: ‘हमें गाय का दूध, घी, दही, मूत्र और गोबर लाना होगा—ये पाँचों चीजें पंचगव्य बनाती हैं—ये सब महल के गौशाला में हैं। मैं तुम्हारे लिए ले आता हूँ। कल सुबह हम दोनों पहली बस से पश्चिमवाहिनी चलते हैं। नदी में स्नान करने के बाद पंचगव्य ग्रहण करना।’

अगले दिन वे दोनों श्रीरंगपट्टना के पास पश्चिमवाहिनी गए। स्नान करने के बाद वेंकटरमण ने संध्यावंदनम किया। इसके बाद उन्होंने कलिंग को पंचगव्य दिया। कलिंग ने वेंकटरमण को दक्षिणा के रूप में एक चांदी का सिक्का दिया, नदी में एक चौथाई चांदी का सिक्का विसर्जित किया, नदी और वेंकटरमण दोनों के समक्ष प्रणाम किया और यह जानकर शांति महसूस की कि उनके पाप का प्रायश्चित हो गया है।

4

जोइस कहते हैं कि कलिंग गौड़ा अब अड़सठ वर्ष के हैं। बड़े गौड़ा का दावा है कि वे वास्तव में सत्तर वर्ष के हैं। अब उनकी एकमात्र चिंता पुण्यकोटी मंदिर का निर्माण पूरा करना है। यद्यपि अनुबंधित गौशाला से अब उतनी कमाई नहीं हो रही है, फिर भी यांगता के पास उस सौदे से दो सौ रुपये बचे हैं। गाँव के सभी लोगों ने दान देने का वादा किया है। उनके पास वे पच्चीस रुपये भी हैं जो अमलदार ने उन्हें पहले दिए थे। हालाँकि, यह राशि मंदिर के निर्माण और कल्याणी (पानी की टंकी) की खुदाई के लिए पर्याप्त नहीं है। 'यह गाय मेरे खानदान की है। मंदिर इसकी पवित्रता का प्रतीक है। मुझे ही सारा खर्च उठाना होगा।' यही विचार उनके मन में व्याप्त है। 'मंदिर के भीतरी भाग के लिए पत्थर बेट्टीकेरे के पत्थर पर्वत से आएंगे। हमारे गाँव के लोग उन्हें बैलगाड़ियों पर लादकर लाएंगे। निर्माण कार्य में प्रत्येक परिवार से दो लोग योगदान देंगे। मुझे ही सारा आर्थिक खर्च उठाना होगा,' उन्होंने निश्चय किया।

इसी बीच, जोई परिवार दान लेने के लिए एक गाँव गया था और चिलचिलाती धूप में चलकर दान की गठरी लेकर घर लौटा। उसने अपनी पत्नी से पानी माँगा। सुब्बम्मा हैरान रह गई। उसने बाहर यात्रा करने के बाद कभी भी इस हालत में पानी नहीं पिया था, जब तक कि वह पहले खुद को शुद्ध न कर ले। उसने पूछा, 'क्या आप इस हालत में बिना खुद को शुद्ध किए पानी पिएंगे?'

“क्या मुझे इतना भी नहीं पता? मुझे जल्दी पानी दो। मुझे लग रहा है जैसे मैं मर रहा हूँ,” उसने कहा। उसने उसे गंगा के पानी से लबालब भरा एक बड़ा तांबे का प्याला दिया। उसने उसे उठाया और जल्दी से अपने मुँह से लगाया। जैसे ही उसने उसे गटकने की कोशिश की, तीन-चौथाई पानी अंदर गया, बाकी छलक गया। उसे सीने में दर्द हुआ; उसने अपना हाथ सीने पर रखा और ‘राम राम’ कहते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। सुब्बम्मा उसके पास दौड़ी और बोली, “यह क्या है?” जब उसने सिर हिलाया, तो न तो कोई प्रतिक्रिया हुई और न ही कोई जवाब।

जोइस किसी भी बीमारी से पीड़ित नहीं थे। वे बलवान और स्वस्थ थे।

यह खबर सबसे पहले एल्डर गौड़ा को मिली।

इतनी अधिक उम्र में भी गौड़ा चिलचिलाती धूप में अपने मवेशियों को पहाड़ियों के पास स्थित चरागाह में ले जाया करते थे। जोई परिवार दान प्राप्त करने के लिए विभिन्न गांवों की यात्रा करता था। यह न केवल उनके पूर्वजों का पारंपरिक कर्तव्य था, बल्कि उनकी आजीविका का स्रोत भी था। लेकिन चिलचिलाती धूप में चरती गायों के साथ चलना गौड़ा की आजीविका का स्रोत नहीं था, बल्कि उनके जीवन का धर्म था। उनके घर में कई नौकर थे। हालांकि वे उनमें से किसी एक को गायों को चराने ले जाने के लिए साथ भेज सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। गौड़ा ने अपने जीवन के धर्म का एक दिन के लिए भी त्याग नहीं किया।

गोमूत्रणाचारेत् स्नानं वृत्तिं कुर्याश्च गोरासैः |
गोभिर्वरसेच्च भुक्तासु भुन्जीताथा गोवरति ||

गाय के मूत्र से स्नान करना, गाय द्वारा दिए गए दूध, दही और अन्य पोषक तत्वों से ही जीविका चलाना, हमेशा गाय के पीछे चलना और गाय के खाने के बाद ही भोजन करना। यह वह जीवनशैली थी जो उस व्यक्ति के लिए निर्धारित थी जिसने जीवन भर गाय की सेवा करने का पवित्र व्रत लिया था। गौड़ा ने यह सब बचपन में ही सीख लिया था। वास्तव में, यह जोइस ही थे जिन्होंने उन्हें यह मंत्र सिखाया और इसका अर्थ समझाया। गौड़ा अपने वंश से मिली इस पवित्र प्रतिज्ञा का पूरी निष्ठा से पालन कर रहे थे।

जोई परिवार का निधन हो चुका था। गौड़ा परिवार से मिलने गए और सबसे आगे खड़े होकर मैसूर से लौटे उनकी पत्नी और पुत्र को सांत्वना दी। “आत्मा क्या है? जैसे

कोई पुराना वस्त्र उतारकर नया पहनता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नए शरीर की खोज करती है—यही मृत्यु है। बुद्धिमान लोगों को इस पर शोक नहीं करना चाहिए।" उन्होंने मृत्यु के दर्शन को समझाते हुए माता-पिता को सांत्वना दी। वेंकटरमण ने वेद, वेदांत और तर्कशास्त्र—भारतीय तर्कशास्त्र के पारंपरिक संप्रदायों —का अध्ययन किया था। पिता की मृत्यु के इस शोक में उन्हें इनमें से कुछ भी याद नहीं आ रहा था। लेकिन जब बड़े गौड़ा ने इन विषयों पर बात की, तो उन्हें इन शब्दों की सच्चाई का एहसास हुआ।

"पुत्र, तुमने इतना अध्ययन और ज्ञान प्राप्त किया है। क्या तुम यह सब नहीं जानते? उन्हें न तो कोई पीड़ा हुई और न ही कोई कष्ट। उनका प्राण आराम से आया। तुम्हारे पिता ने पुण्य अर्जित किया है। अब अंतिम संस्कार करो ताकि वे वैतरणी नदी पार कर सकें। तुम ऐसे नहीं बैठ सकते।" उन्होंने न केवल वेंकटरमण को इस प्रकार सांत्वना दी, बल्कि सुब्बम्मा को भी शांत किया और उन दोनों को कर्तव्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने उन्हें आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई, साथ ही धन, अनाज और राशन भी दिया और यह सुनिश्चित किया कि अंतिम संस्कार परंपरा के अनुसार संपन्न हो। वेंकटरमण ने अपने सिर के सारे बाल मुंडवा लिए थे और तेरहवें दिन एक गाय दान में दी और अपने पिता को स्वर्ग विदा किया।

वेंकटरमण ने संस्कृत पाठशाला में दस वर्ष की पढ़ाई पूरी कर ली थी। दो वर्ष और, और उनकी औपचारिक शिक्षा पूर्ण हो जाती। यदि वे चाहते, तो उनके पास दो विकल्प थे: या तो उसी पाठशाला में कनिष्ठ शिक्षक के रूप में शामिल होना या किसी उच्च विद्यालय में संस्कृत पंडित के रूप में वेतन कमाना। उनकी अंतिम दो वर्ष की शिक्षा पूरी करने में कोई बाधा नहीं थी। उन्हें पाठशाला में आवास, महाराजा के छात्रावास में दान में भोजन और बारह रुपये की मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी। महल में किसी विशेष पूजा या अवसर पर उन्हें आमंत्रित किया जाता था क्योंकि वे एक पारंपरिक ब्रह्मचारी थे। ऐसे अवसरों पर उन्हें धोती, प्याला और दो रुपये दक्षिणा के रूप में दिए जाते थे। यदि वे उस धन से हर महीने सात या आठ रुपये अपनी माता को भेजते, तो अगले दो वर्षों तक उनका जीवन सुखमय हो जाता। अग्रहारा में उनके घर और पाँच या छह गायों के अलावा उनकी कोई संपत्ति नहीं थी। जब तक उनकी शक्ति और क्षमता अनुमति देती, वे आसपास के गांवों में पूजा-पाठ और अनुष्ठान करके अपना जीवन यापन करते थे। इसके अलावा, उनके पास कुछ भी नहीं था।

जोई परिवार की मृत्यु के दिन से ही पुट्टा कलिंग गाँव में ही रहे। एक दिन, मृत्यु के बाद की रस्में पूरी होने पर, वे अग्रहारा आए। जब वेंकटरमण ने उनकी भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की, तो कलिंग ने कहा: 'देखो, तुम जानते हो कि आजकल का समय कैसा है। शास्त्रों, रीति-रिवाजों और रिश्तों जैसी चीजों में लोगों का विश्वास कम होता जा रहा है। तुम्हारे पिता का समय अलग था। अगर कोई तुम्हें दान देता है, तो बदले में तुम्हें क्या मिलता है? दो किलो अनाज, एक किलो चावल, एक रुपया दक्षिणा। इसके लिए तुम्हें धूप में तीन-चार मील चलना पड़ता है। ये कैसी किस्मत है? बाकी के दो साल पढ़ाई करो। अगर तुम हाई स्कूल में पंडित बन जाओगे, तो तुम्हारा जीवन सुखमय होगा।'

वेंकटारमणा को यह सलाह स्वीकार्य लगी। उन्होंने अपनी माँ के लिए व्यवस्था की —अब उन्हें गाँव में अकेले रहना होगा—और मैसूर जाने का फैसला किया।

लेकिन अगले दिन, बड़े गौड़ा अग्रहारा आए और वेंकटरमण से पूछा: 'पुत्र, मैंने सुना है कि तुम मैसूर जा रहे हो। क्या यह सच है?'

'दादाजी, मैं और क्या करूँ?'

"अगर आप चले गए, तो हमारे गाँव में पूजा-पाठ, रीति-रिवाज निभाने और रिश्ते बनाने के लिए और कौन बचेगा? जोई वंश प्राचीन काल से चला आ रहा है। अपनी जन्मभूमि पर अपने पैतृक कार्यों को करने के बजाय, आप जगह-जगह क्यों भटकना चाहते हैं?"

'यह सही है। लेकिन मैं इससे अपना गुजारा कैसे करूँ? समय बदल गया है।'

मैंने इस बारे में भी सोचा है। मेरे पास एक योजना है जिससे यह सुनिश्चित होगा कि आपको हमेशा पर्याप्त मात्रा में सामान बिना किसी परेशानी के मिलता रहेगा।

'मुझे बताओ।'

'मैं शब्दों में नहीं कहूंगा। मेरे साथ आओ,' उन्होंने कहा और उसे घर के पिछवाड़े ले गए। बड़े गौड़ा ने वहां बंधी एक गाय की पूंछ पकड़ी और कहा: 'मैं कुछ करूंगा। मुझ पर भरोसा रखो। गांव मत छोड़ो। शादी कर लो। मैं सुनिश्चित करूंगा कि तुम्हारे परिवार को गांवों से मिलने वाले दान पर ही निर्भर न रहना पड़े।'

वेंकटारमणा की माता, जो वहीं खड़ी होकर उनकी बातचीत सुन रही थीं, ने कहा: 'बेटा, उसकी बात सुनो। वह कोई ऐसा बुजुर्ग नहीं है जिसने कभी अपना वचन तोड़ा हो।'

'बेटा, अपनी माँ की बात मानो,' गौड़ा ने कहा।

वेंकटरमण ने आगे की पढ़ाई नहीं की। एक दिन वे मैसूर गए और अपने गुरुओं को स्थिति समझाई। उन्होंने उनसे अनुमति और आशीर्वाद लिया, अपना सामान पैक किया और घर लौट आए। किसी को नहीं पता था कि गौड़ा आगे क्या करेंगे। न तो किसी ने पूछा और न ही उन्होंने इस बारे में कुछ कहा। लेकिन एक दिन गौड़ा अपनी गाड़ी में सौ किलो धान और पचास किलो रागी लेकर आए और उन्हें देते हुए बोले: 'यह अगली फसल तक काफी होगा। उसके बाद मैं कुछ करूंगा।'

आस-पास के सभी लोग जानते थे कि वेंकटरमण अपने पिता से भी अधिक विद्वान थे। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि कुंडली देखकर भविष्य बताने में उनका ज्ञान पूर्ण था। इस प्रकार, वे ज्योतिष का अभ्यास करके और पूजा-पाठ करके प्रतिदिन तीन-चार रुपये कमा लेते थे।

5

एक दिन चंद्रनहल्ली से शिवलिंगाचारी कलनहल्ली पहुंचे और कलिंग गौड़ा से कहा: 'मेरा सारा काम पूरा हो गया है। बस आपका काम बाकी है। चलिए मंदिर का निर्माण जल्दी पूरा करते हैं। क्या आपकी सारी तैयारियां पूरी हो गई हैं?'

वास्तव में, मंदिर के निर्माण के लिए आवश्यक सब कुछ तैयार था। श्रम के लिए आवश्यक लोग, पत्थर ढोने के लिए गाड़ियाँ और धन: ये सब तैयार थे। लेकिन विशेषज्ञ पत्थर कारीगरों को नियुक्त करने का काम अभी बाकी था।

'पत्थर का काम मुझ पर छोड़ दो। मैं उन्हें बुला लाऊंगा। हमें गर्भगृह, यानी पवित्रतम स्थान के लिए जगह का चुनाव करना है। किसी विद्वान ज्योतिषी से पूछ लो जो उस सटीक जगह का पता लगा सके और मंदिर के कुल क्षेत्रफल का निर्धारण कर सके। बाकी का काम मैं संभाल लूंगा,' शिवलिंगाचारी ने कहा।

बड़े कलिंग ने वेंकटरमण को बुलाया। चिन्नय्या और गाँव के चार अन्य प्रमुख लोगों के साथ, वे सभी पहाड़ियों को पार करके उस स्थान पर पहुँचे जहाँ पुण्यकोटी बाघ को स्वयं को अर्पित करने गई थी। समूह में ऐसा कोई नहीं था जिसने इस स्थान को पहले न देखा हो। शिवलिंगाचारी ने वेंकटरमण से पूछा: 'आदरणीय शास्त्री, कृपया पहले गर्भगृह का स्थान निर्धारित करें। उसके बाद मैं आपको मंदिर की संरचना और लेआउट की सामान्य योजना बताऊँगा।'

अब शास्त्री बन चुके वेंकटारमण ने कहा: “अगर यह कोई और जगह होती, तो हमें पहले यह जांचना पड़ता कि वह स्थान शुभ है या नहीं। लेकिन चूंकि बाघ ने पुण्यकोटी की सत्यनिष्ठा के प्रति सम्मान में स्वेच्छा से प्राण त्याग दिए, इसलिए यह स्थान पवित्र हो गया है। अतः इस स्थान की पवित्रता की जांच करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस गुफा के पीछे वाली गुफा को यथावत रहने दें। सामने की ओर आप अपना लेआउट इस प्रकार बनाएं कि उसका मुख पूर्व दिशा की ओर हो।”

‘बिल्कुल, बिल्कुल’, कलिंग गौड़ा ने कहा, और वहाँ मौजूद ग्रामीणों ने भी एक स्वर में उनका समर्थन किया। शिवलिंगाचारी ने भी सहमति जताई। वेंकटरमण ने कहा: ‘अब हमें कल्याणी के लिए सबसे उपयुक्त स्थान का निरीक्षण करना होगा। मंदिर के पूर्व की ओर देखिए। वह स्थान देखिए, नीचे, वह ढलान? मुझे लगता है कि वह उपयुक्त रहेगा। उस दरार में हजारों मवेशियों के लिए पर्याप्त जगह है। मैं वहाँ खुदाई करने के लिए सटीक स्थान का अनुमान लगाऊंगा और आपको बताऊंगा।’

‘ठीक है। अब मुझे बताइए कि मंदिर की मुख्य मूर्ति कैसी दिखनी चाहिए’, शिवलिंगाचारी ने कहा।

“जब बाघ ने प्राण त्यागे, तो भगवान विष्णु प्रसन्न हुए, भगवान शिव भी प्रसन्न हुए। ब्रह्मा देव भी प्रसन्न हुए और सभी देवताओं ने तुरंत फूलों की वर्षा की। वे दयालु बने रहे,” कविता स्वयं कहती है। इसलिए, ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रिमूर्ति एक पंक्ति में खड़ी हो जाएं। उनके आगे पुण्यकोटी खड़ी हो जाएं। और उनके ठीक आगे बाघ मृत पड़ा रहे। ठीक है?’

‘बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया’, बुजुर्ग कलिंग वेंकटरमण के सुझाव से प्रभावित हुए।

बड़े कलिंग द्वारा दिए गए आयामों के आधार पर, शिवलिंगाचारी ने मंदिर की सामान्य योजना और रूपरेखा का वर्णन किया। सभी सहमत हो गए। शिवलिंगाचारी ने कहा कि वे ठीक आठ दिनों में काम शुरू करेंगे, यानी भूमि पूजा और आयुध पूजा उसी दिन संपन्न होनी थी। बेट्टीकेरे से पत्थरों को लाने का काम कल से शुरू हो सकता था। वेंकटरमण उन्हें दोपहर के भोजन के लिए अपने घर ले गए। उनकी जाति के अनुसार उन्हें कलिंग गौड़ा के घर में भोजन करने की अनुमति नहीं थी। आम तौर पर, विश्वकर्मा जाति के रूढ़िवादी लोग ब्राह्मणों के घरों में भी भोजन नहीं करते हैं। लेकिन शिवलिंगाचारी एक अपवाद थे और ब्राह्मणों के घरों में भोजन करते थे। मंदिर स्थल और अग्रहारा के बीच की दूरी डेढ़ मील थी।

पुट्टा कलिंगा पिछले आठ दिनों से शहर में नहीं थे। वे मैसूर गए हुए थे। उन्होंने अपने दादाजी को बीएससी पास करने के बाद अपने भविष्य के बारे में कुछ नहीं बताया था। उनके दादाजी ने पहले ही तय कर लिया था कि उन्हें अपने खानदानी परंपरा को आगे बढ़ाना है। इसके अलावा, उनकी शादी का काम भी बाकी था।

शिवलिंगाचारी द्वारा मंदिर का काम पूरा करके चले जाने के बाद, अगली शाम पुट्टा कलिंगा मैसूर से गाँव लौट आया। घर में कदम रखते ही उसने अपने दादाजी को बताया कि उसे अमेरिका में पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति मिली है। यात्रा समेत सारा खर्च वे उठाएंगे। उसे वहाँ जाकर दो साल तक कृषि विज्ञान की पढ़ाई करनी होगी। दादाजी को पोते की बात पसंद नहीं आई: 'तुम्हें और कितनी पढ़ाई करनी है? छोड़ो इसे। मैं अब सत्तर साल का हो गया हूँ। मैं और कितने दिन काम कर सकता हूँ? बस घर पर रहो और पशुशाला की देखभाल करो।'

बस दो साल और। आपको अपनी जेब से एक पैसा भी नहीं देना पड़ेगा। वे सब कुछ मुहैया कराते हैं। मेरे कॉलेज के प्रिंसिपल ने सिफारिश की और छात्रवृत्ति दिलाने में मेरी मदद की। यह छात्रवृत्ति पाना सबसे अच्छे छात्रों के लिए भी आसान नहीं होता। लेकिन मुझे मिल गई! अगर मैं वहां पढ़ाई करके वापस लौटूं, तो हम अपनी धरती से सोना निकाल सकते हैं।

लेकिन दादाजी सहमत नहीं हुए। पुत्त कलिंग जानते थे कि वे इतनी आसानी से सहमत नहीं होंगे। उन्होंने सोचा कि अगर वेंकटारमणा बोलें तो वे मान जाएंगे, और वे अग्रहारा की ओर दौड़ पड़े।

कलिंग के अमेरिका जाने की खबर सुनकर वेंकटरमण प्रसन्न हुए। लेकिन उन्हें एक शंका भी थी: 'देखो, यह लाल लोगों का देश है। लगता है वे सिर्फ गाय का मांस खाते हैं। इसके अलावा, लगता है हमारा भोजन वहाँ उपलब्ध नहीं है। तुम वहाँ दो साल कैसे गुज़ारोगे? तुमने एक बार अनजाने में गाय का मांस खा लिया था। लेकिन वह अज्ञानता के कारण हुआ था। उस पाप का प्रायश्चित हो गया। लेकिन अब तुम्हें पूरी जागरूकता के साथ इसे खाना होगा क्योंकि कोई दूसरा विकल्प नहीं है। तुम इस पाप को अपने ऊपर क्यों थोपना चाहते हो? क्या तुम घर पर नहीं रह सकते? क्या भगवान ने तुम्हें इससे कम कुछ दिया है?'

ऐसा प्रतीत हुआ कि पुत्त कलिंग ने वेंकटरमण के प्रश्नों का पहले से ही अनुमान लगा लिया था। उन्होंने वही उत्तर दिया जो उन्होंने पहले से तैयार किया था: 'यह सब

असत्य है। उस देश के लोग गाय का मांस खा सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि वहाँ जाने वाले हर व्यक्ति को इसे खाना ही पड़े। वहाँ जाने वाले सभी ब्राह्मण, क्या वे इसे खाते हैं? वहाँ रोटी और दूध प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। मांसाहारियों के लिए भेड़ और बकरी का मांस अलग से उपलब्ध है। मैं तो गाय का मांस बिल्कुल नहीं खाऊँगा। अगर आप चाहें तो मैं आपकी कसम खा सकता हूँ। क्या मैंने गलती से एक बार पंचगव्य खाकर आपके हाथों से पंचगव्य नहीं लिया था?'

वेंकटरमण को अपने मित्र की बातों पर पूरा भरोसा था। तब पुत्त कलिंग ने अपनी समस्या समझाई: 'आपको किसी तरह मेरे दादाजी को मनाना होगा। अगर मैं वहाँ पढ़ाई करके लौट आऊँ, तो हम अपनी ज़मीन पर सोना उगा सकते हैं। इसके अलावा, अगर हम विज्ञान सीखें और पशुपालन करें, तो हमें अपनी गायों से दस गुना ज़्यादा दूध मिलेगा। आपने महल में गायें देखी हैं ना? अमेरिका में हमें गायों को वैसी ही बनाने का विज्ञान सिखाया जाता है। मैं वह सीखकर लौट आऊँगा। मेरे दादाजी से कहिए कि वे दो साल तक चुप रहें।'

वेंकटारमणा ने इस पर विचार किया। कलिंग की बात भी सही थी। वैज्ञानिक तरीके से खेती करने पर भूमि से अधिक उपज प्राप्त की जा सकती थी। इसके अलावा, विज्ञान का अध्ययन करने और उसके अनुसार पशुपालन करने से गायों का दूध उत्पादन बढ़ेगा और पशुओं का बेहतर पालन-पोषण हो सकेगा। साथ ही, बड़े गौड़ा को अपनी जेब से कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा। भला जो प्रस्ताव अपने आप आया हो, उसे भला कौन ठुकराएगा? इतने वर्षों से बड़े गौड़ा अकेले ही खेतों और पशुशाला की देखभाल करते आ रहे थे। वे किसी तरह दो और वर्षों तक यह काम कर लेंगे।

वेंकटारमणा ने कलिंग को आश्वासन दिया: 'मैं तुम्हारे दादाजी से अपनी पूरी कोशिश करूंगा।' यह सुनकर कलिंग ने कहा, 'आप उन्हें जरूर मना लेंगे', और अपने गांव के लिए रवाना हो गए।

वेंकटारमण ने अगली शाम कलेनहल्ली जाने का फैसला किया था। लेकिन सुबह, बड़े गौड़ा स्वयं अग्रहारा आए और अपने पोते के बारे में बात शुरू की। गौड़ा ने वेंकटारमण की बात सुनी कि उसे विदेश भेजना अच्छा है क्योंकि इससे न केवल ज़मीन की पैदावार बढ़ेगी बल्कि पशुओं के लिए भी अच्छा होगा। उन्होंने कहा: "पुत्र, तुम्हारी बात तो ठीक है। लेकिन क्या लाल देश में जाने से, पलाशा नदी के किनारे की

ज़मीन पर, धरती माता से ज़्यादा फसल मिलेगी? हम उस पर एक बांध बना सकते हैं। बरसात के मौसम में, पहाड़ियों का सारा पानी वहाँ इकट्ठा हो जाएगा। अगर हम पानी बर्बाद न करें और मेहनत से खेती करें, तो धान की दो फसलें भी काट सकते हैं। हमारे बाग में मध्य के पेड़ हैं। गौशाला से रोज़ दो गाड़ी भर गोबर निकलता है। धरती माता उपजाऊ है। अगर हम गंगा माता का पानी इकट्ठा करें, अगर हम पसीना बहाएँ, अपने बैलों को बाँधें और ज़मीन जोतें, तो क्या धरती माता हमें अच्छी फसल देने से मना कर देंगी?" और क्या सिर्फ इसी के लिए उसे लाल देश जाना पड़ेगा?

गौड़ा के प्रश्न का उत्तर देते समय वेंकटरमण को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। लेकिन जब उन्होंने पूछा, 'आप जो कह रहे हैं वह सही है। लेकिन अगर वह वहां पढ़ने चला जाए तो क्या नुकसान है?'

गौड़ा ने कहा, "बेटे, तुम्हें लेन-देन के मामलों की समझ नहीं है। वह तुम्हारे पास आया है और तुम उसका मामला मुझे सौंप रहे हो। अगर उसे सचमुच खेती में रुचि होती, तो वह घर पर ही बहुत कुछ कर सकता था। क्या उसने पर्याप्त पढ़ाई नहीं कर ली है? वह मूर्ख धूप में बाहर जाने लायक नहीं है। इसीलिए तो वह आगे पढ़ने के लिए तैयार है। उसे कॉलेज भेजना ही पहली गलती थी। मैंने अपने बेटे कृष्णा को ज़रा भी शिक्षा नहीं दिलवाई थी। क्या वह खेती नहीं कर रहा था?"

वेंकटारमणा लगातार सिर हिला रहा था। अंत में, स्वयं बड़े गौड़ा ने कहा: 'उस कंजूस के बेटे ने शहर का जीवन देख लिया है। अब अगर मैं मना भी कर दूं, तो भी वह नहीं मानेगा। क्या किया जा सकता है? मैं उसे जाने के लिए कहूंगा और उसे आशीर्वाद दूंगा।'

यह कहकर वह चुप हो गया। दस मिनट बाद उसने कहा: 'अगर वह यह काम सीखना चाहता है, तो क्या उसे पहले यहाँ सीखकर वहाँ नहीं जाना चाहिए? अगर मवेशी किसी बीमारी की चपेट में आ जाते हैं, तो क्या उसे पता है कि किस तरह की दवा से उसका इलाज होगा? क्या उसने यह मुझसे सीखा है? गाय के मूत्र से भी दवा बनाई जा सकती है। क्या उसने इससे बनने वाली विभिन्न प्रकार की दवाइयों के बारे में सीखा है?'

वेंकटारमणा अब गंभीर चिंतन में लीन थे। बड़े गौड़ा की बातें उन्हें सत्य प्रतीत हुईं। जो व्यक्ति घर पर आसानी से उपलब्ध ज्ञान ही नहीं सीख पाया, वह परलोक से ज्ञान लाकर क्या हासिल करेगा? हानि घटाने के बाद लाभ क्या बचेगा?

बड़े गौड़ा ने फिर कुछ नहीं कहा। उन्होंने सुब्बम्मा से कुछ औपचारिक बातें कीं और अपने गाँव लौट गए। वेंकटरमण ने कलिंग से मिलने और उनसे बात करने का सोचा। लेकिन दोपहर में कोई उनके घर कुंडली दिखाने आया। उसके बाद और भी कई गाँव वाले उनके घर आए। अगली सुबह उन्हें एक दूसरे गाँव में गृह प्रवेश समारोह में शामिल होना था। इसलिए, जब वे दो दिन बाद कलेनाहल्ली पहुँचे, तब तक कलिंग मैसूर के लिए निकल चुके थे। उनके दादाजी ने उन्हें विदेश में पढ़ाई करने की अनुमति दे दी थी। यह भी तय था कि वे दो महीने में रवाना हो जाएँगे। अब उनसे बात करने का कोई फायदा नहीं था। वेंकटरमण ने सोचा कि कलिंग अपनी यात्रा नहीं रोकेंगे, और उन्होंने बात वहीं खत्म कर दी।

क्योंकि वह एक अनजान देश की यात्रा कर रहा था, इसलिए लक्कम्मा उसकी सुरक्षा को लेकर चिंतित थी। हालांकि वह बोल नहीं सकती थी, फिर भी मूक तैयव्वा वेंकटारमण के सामने खड़ी हुई। 'कुछ नहीं होगा। जहाज पर डरने की कोई बात नहीं है। जहाज एक बड़े शहर की तरह होता है। समुद्र का पानी उसके अंदर नहीं जाएगा। डरो मत', उसने उसे दिलासा दिया और अपने गाँव लौट गया।

---

*यह एक प्राचीन लोक परंपरा है जिसमें एक बैल और एक गाय को गाँव या कस्बे के प्रत्येक घर के सामने जुलूस के रूप में ले जाया जाता है। यह जुलूस आमतौर पर पति-पत्नी की एक जोड़ी द्वारा निकाला जाता है, जो इस पेशे को अपना पेशा बनाते हैं। जानवरों को चटख रंगों से सजाया जाता है और उनके सींगों को खूबसूरती से रंगा जाता है। जानवरों को विशेष आदेशों का पालन करने और हिंदू महाकाव्यों, आमतौर पर रामायण, जैसा कि इस उपन्यास में वर्णित है, के एक दृश्य का अभिनय करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। बैल को भगवान राम और गाय को उनकी पत्नी सीता के रूप में दर्शाया जाता है।

खंड 6

1

हालांकि उन्होंने आठ दिनों में लौटने का वादा किया था, लेकिन तीन महीने बीत जाने के बाद भी शिवलिंगाचारी का कोई पता नहीं चला। बड़े कलिंग ने एक बैलगाड़ी का

इंतजाम किया, उसे चंद्रनहल्ली ले गए और उनके साथ वापस आ गए। शिवलिंगाचारी के साथ दस पत्थर तराशने वाले भी गए।

अब कलेनाहल्ली का पूरा इलाका काम में डूबा हुआ था। मंदिर के लिए आवश्यक सभी पत्थर अरुणाद्री पहाड़ियों से बारह मील दूर स्थित बेट्टीकेरे पहाड़ी से लाने थे। अरुणाद्री पहाड़ियों के पत्थर नरम थे और उनका उपयोग केवल कल्याणी की सीढ़ियों के लिए ही किया जा सकता था। गाँव की साठ कृषि बस्तियों में से चालीस घरों के पास अपनी बैलगाड़ियाँ थीं। हालाँकि, पत्थरों से भरी बैलगाड़ियों के लिए प्रतिदिन एक से अधिक चक्कर लगाना संभव नहीं था। सबसे पहले, बेट्टीकेरे पहाड़ी पर पत्थर का काम करने वालों के साथ काम करने के लिए पुरुष श्रमिकों की आवश्यकता थी। केवल अनुभवी लोग ही पत्थर के ब्लॉक और खंभों को बैलगाड़ी पर लाद सकते थे और फिर उन्हें मंदिर निर्माण स्थल पर उतार सकते थे। उनके लिए भोजन की व्यवस्था भी करनी थी।

बड़े गौड़ा ने अपने भंडार से सारा रागी निकाल लिया। ग्रामीणों ने अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देकर कमी पूरी की। उन्होंने सभी घरों में रागी बाँटा। प्रत्येक घर की महिलाओं ने रागी को पीसकर उसके गोले बनाए, सेम का शोरबा पकाया और मक्खन व छाछ के साथ इस भोजन को टोकरी में भरकर मंदिर निर्माण स्थल पर ले गईं। अकुशल, कच्चे मजदूरों और पत्थरों के लिए कोई नकद भुगतान नहीं किया गया। शिवलिंगाचारी को कुल तीन हजार रुपये का भुगतान तय किया गया था। मंदिर के डिजाइन और निर्माण के अलावा, गर्भगृह के भीतर मुख्य मूर्ति, मंदिर के सामने नंदी या बसवन्ना, मुख्य प्रवेश द्वार पर बड़ा दरवाजा, स्तंभ और बीम बनाने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की थी। दस पत्थर कारीगरों के लिए कुल चार हजार रुपये का भुगतान तय किया गया था। उनका काम न केवल बेट्टीकेरे पहाड़ी पर पत्थरों को मनचाहा आकार देना था, बल्कि मंदिर निर्माण स्थल पर शिवलिंगाचारी के निर्देशों के अनुसार काम करना भी था। इसके अतिरिक्त, कल्याणी स्थल पर पत्थरों को तोड़ना और उसकी सीढ़ियाँ बनाना और व्यवस्थित करना भी उनका कर्तव्य था। गारे के काम के लिए एक हजार रुपये के वेतन पर एक अन्य व्यक्ति को नियुक्त किया गया था। उसका काम गारा तैयार करना और मंदिर के साथ-साथ कल्याणी के लिए भी आवश्यक चूना पत्थर लाना था। गारा तैयार करने के लिए आवश्यक चिकनी रेत पहाड़ियों के नीचे बहने वाली धारा में उपलब्ध थी।

शिवलिंगाचारी के लिए भोजन की व्यवस्था करनी पड़ी। इसे वेंकटरमण के घर में पकाया गया और फिर घटनास्थल पर भेजा गया।

लेकिन कुल लागत केवल इन्हीं खर्चों तक सीमित नहीं थी। शिवलिंगाचारी और उनके पत्थर के कारीगरों को बीड़ी और माचिस की डिब्बियों की भी ज़रूरत थी। शिवलिंगाचारी ने खुद हिसाब लगाया कि मंदिर के पूरा होने के बाद, मंदिर के द्वार को तराशने और मंदिर को सुशोभित करने वाली बड़ी घंटियों को गढ़ने के साथ-साथ मूर्ति की स्थापना के अनुष्ठान के लिए कम से कम पंद्रह हज़ार रुपये की आवश्यकता होगी। पैसों की बात करें तो गौड़ा ने अपने गाँव वालों से चंदा लेने से साफ इनकार कर दिया। पशुशाला के ठेके से बचे हुए दो सौ रुपये और अमलदार द्वारा तेरह-चौदह साल पहले दिए गए पच्चीस रुपये के अलावा, उन्होंने किसी से कोई पैसा नहीं लिया। उन्होंने अपने बैठक कक्ष के बीच में स्थित बड़े बॉयलर में दबाकर रखे सिक्कों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

पुत्त कलिंग को अमेरिका गए छह महीने बीत चुके थे। वे पत्र लिखकर अपनी सुरक्षा और कुशलता की सूचना देते थे, लेकिन मंदिर के काम के बारे में कभी नहीं पूछते थे। दादाजी भी इसके बारे में कुछ लिखने को नहीं कहते थे। हालांकि बड़े कलिंग को पढ़ना-लिखना आता था, फिर भी वे अपने पत्र वेंकटरमण से लिखवाते थे। साथ ही, पता अंग्रेजी में लिखना होता था। इसके अलावा, बड़े गौड़ा को कन्नड़ में भी पता लिखने का तरीका नहीं पता था। ये सारी बातें जैमिनी ग्रंथों में नहीं मिलतीं।

काम शुरू होने के बाद गौड़ा का घर अभूतपूर्व उत्साह से भर गया था। हालांकि पूरे रास्ते पैदल चलना और फिर पहाड़ी की चोटी पर चढ़ना थका देने वाला था, फिर भी गौड़ा सहारे के लिए बांस की छड़ी का इस्तेमाल करते थे या मंदिर के काम में लगी गाड़ी में बैठते थे। वे हर समय मंदिर निर्माण स्थल पर मौजूद रहते थे और सब कुछ देखते रहते थे। वे शिवलिंगाचारी से मंदिर निर्माण के विज्ञान, शिल्प शास्त्र के बारे में प्रश्न पूछते थे। वे पत्थर का काम करने वाले कारीगरों को पान के पत्ते और तंबाकू देते थे। जब वे आराम कर रहे होते थे, तो वे जैमिनी से महाभारत में कृष्ण के भक्त सुधनवा के युद्ध का वर्णन करने वाले श्लोक सुनाते थे। जब गांव की महिलाएं मजदूरों के लिए रागी के गोले लाती थीं, तो वे चिल्लाते थे, 'गर्मी है, अपने सिर को अपनी साड़ी के किनारे से ढक लो।'

गौड़ा की पत्नी उनसे पाँच साल छोटी थीं। लेकिन उनमें गौड़ा जैसी सेहत और तंदुरुस्ती नहीं थी। वह हर दो-तीन दिन में एक बार उस जगह जाती थीं। ऐसे पवित्र कार्य वाले स्थानों पर खाली हाथ जाना उचित नहीं होता, इसलिए वह अपनी साड़ी की तहों में पान के पत्ते और सुपारी लपेटकर कामगारों के लिए लाती थीं। अगर वह उपलब्ध न होता, तो वह रास्ते में बहने वाली नदी की रेत अपनी साड़ी की तहों में भर लेती थीं। दिन भर की उनकी सेवा तब पूरी होती थी जब वह इसे उस कड़ाहे में डाल देती थीं जिसमें ओखली तैयार की जाती थी।

तैयव्वा की खुशी शब्दों में बयान नहीं की जा सकती थी। हालांकि उसकी सास मना करती है, फिर भी वह हर दिन रागी के गोले, शोरबा और छाछ से भरी टोकरी लेकर उस जगह जाती है और घर लौट आती है। सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल करते हुए, वह अपने साथ आई गांव की दूसरी महिलाओं से खूब बातें करती है। अगर कोई ऐसा व्यक्ति जो पहाड़ी की चोटी पर नहीं गया हो, उससे पूछता है, 'काम कितना आगे बढ़ा है?' तो वह हाथ के इशारों से काम की मौजूदा स्थिति बताती है। एक दिन, जब वह खाने की टोकरी ले जा रही थी, तो उसके बगल में खड़ी यांगता की पत्नी कल्लाव्वा ने उसे एक जगह दिखाते हुए कहा, 'अरे तैयव्वा, देखो, क्या यहीं कृष्ण अन्ना की मृत्यु नहीं हुई थी? क्या तुम नीचे वह जगह देख सकती हो? क्या उसी नाले में लकड़बग्घा सो रहा था?'

तयव्वा की आँखों में आँसू थे। वह धूप में खड़ी रही और अपनी साड़ी के किनारे से अपने आँसू पोंछती रही। कल्लाव्वा ने कहा, 'तुम क्यों रो रही हो? अब अठारह साल हो गए हैं। कृष्ण अन्ना धन्य हैं। उन्हें पुण्य मृत्यु मिली। मेरे पति घर पर कह रहे थे कि मंदिर बनाने के लिए, चाहे पैसा हो या न हो, काफी नहीं है। चाहे तुम गाओ-नाचो और चिल्लाओ कि तुम मंदिर बनाओगी, यह भी काफी नहीं है। अगर तुम्हारे पास मंदिर बनाने के लिए आवश्यक पुण्य नहीं है, तो चाहे कुछ भी कर लो, तुम उसे नहीं बना सकती। वह यही कह रहे थे। कृष्ण अन्ना का पुण्य है, इसीलिए दादाजी मंदिर बनवा रहे हैं। है ना?'

तैयव्वा ने खुद को सांत्वना दी। उसे अपने पति पर गर्व महसूस हुआ। उसने सिर हिलाया।

एक दिन चिन्नय्या ने बड़े गौड़ा से पूछा: 'आप इस मंदिर के निर्माण में इतना पैसा खर्च कर रहे हैं, क्या यहां प्रतिदिन पूजा नहीं होनी चाहिए? आप इसके बारे में क्या कर

रहे हैं?'

गौड़ा मन ही मन मुस्कुराया और बोला: 'अरे, क्या तुम कह रहे हो कि मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं?'

तो बताओ क्या बात है?

मैं इसे खुलेआम नहीं कहूंगा। बस इंतजार कीजिए, आप खुद ही देख लेंगे।

2

वेंकटारमणा द्वारा बताए गए स्थान पर खुदाई करने पर प्रचुर मात्रा में पानी मिला। एक सौ बीस फुट चौड़े और एक सौ बीस फुट लंबे वर्गाकार तालाब के चारों ओर नीचे से ऊपर तक पत्थर की सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। किनारे पर चारों दिशाओं में पचास कुंड खुदे हुए थे, जिनमें पशुओं के लिए पानी भरा जाता था। पशुओं के लिए सीधे कल्याणी में उतरना खतरनाक था। ऐसा करने से पानी भी दूषित हो जाता। पत्थर से बने उस स्थान पर पानी लबालब भरा हुआ था, एकदम साफ और स्वाद में नारियल के समान।

मंदिर का ढांचा अब पूरा हो चुका था। गर्भगृह के लिए शिवलिंगाचारी द्वारा तराशी गई मूर्ति सभी को प्रसन्न कर रही थी। शिवलिंगाचारी ने गौड़ा के घर में पुण्यकोटी गायों के आकार और विशेषताओं का बारीकी से अध्ययन करने के बाद मूर्ति की रचना की थी—मूर्ति में इस वंश की गायों की विशिष्ट विशेषताएं प्रतिबिंबित थीं। मंदिर के सामने स्थित बसव (बैल) का चेहरा भी ऐसा प्रतीत होता था मानो वह पुण्यकोटी की कोख से जन्मा हो। पंचधातु (जस्ता, तांबा, पीतल, सीसा और लोहा) से बना मंदिर का गुंबद शानदार ढंग से चमक रहा था और मंदिर के शिखर पर चढ़ने के लिए तैयार था। शिवलिंगाचारी ने विशाल घंटी को विशेष रूप से मैसूर में बनवाया था। यह वास्तव में बहुत बड़ी थी, दो बलवान पुरुषों के लिए भी उठाना मुश्किल था, और जब यह पहाड़ी की चोटी से इतनी ऊंचाई से बजती थी, तो शांति के समय इसकी मधुर ध्वनि आसपास के सभी दस गांवों तक पहुंचती थी। उसने उसे मंदिर के बाहरी परिसर की छत तक पहुंचाया और लोहे के एक छड़ पर लटका दिया।

मूर्ति की प्रतिष्ठा से संबंधित सभी अनुष्ठानों की पूरी जिम्मेदारी वेंकटरमण पर आ पड़ी। यद्यपि वे आगम शास्त्र—मंदिर पूजा के सिद्धांत और व्यावहारिक प्रक्रिया—से परिचित थे, उन्होंने इसका व्यवस्थित अध्ययन नहीं किया था। इसलिए वे मैसूर गए और अपने गुरु को आमंत्रित किया। साथ ही, बड़े गौड़ा के निर्देशानुसार, वे रास्ते में

श्रीरंगपट्टना गए और सेवानिवृत्त अमलदार के बारे में जानकारी ली। उन्हें पता चला कि अमलदार का निधन तीन वर्ष पहले हो गया था।

अभिषेक की तिथि संक्रांति पर्व के लिए निर्धारित की गई थी। साथ ही, वार्षिक पशु मेले का शुभारंभ भी उसी दिन करने का निर्णय लिया गया। ढोल बजाने वाले इस घोषणा को न केवल आसपास के गांवों में बल्कि तालुक तक लेकर गए। वेंकटरमण ने अमलदार से मुलाकात कर मेले के लिए लाइसेंस भी प्राप्त कर लिया था। अभिषेक के दिन आने वाले आगंतुकों के लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था करनी थी। उन्होंने कम से कम दस हजार लोगों की भीड़ का अनुमान लगाया और उसी के अनुसार गणना की।

संक्रांति से दस दिन पहले, सूर्योदय से पहले एक सुबह, बड़े गौड़ा चिन्नय्या के साथ एक बैलगाड़ी में सवार होकर अग्रहारा पहुँचे। उन्होंने बैलगाड़ी को वेंकटरमण के घर के सामने रोका, अंदर गए और बोले: 'पुत्र, मुझे थोड़ी देर के लिए रजिस्ट्रार के कार्यालय जाना है। तुम भी आ जाओ।'

‘अब क्या काम है दादाजी?’

मैं तुम्हें वहीं बताऊँगी, आओ। मैंने बाद में जाने का सोचा था। लेकिन कल रात मुझे लगा कि मुझे आज ही जाना चाहिए। मेरे साथ चिन्नय्या भी है। हम रागी के गोले और शोरबा लाए हैं। तुम कुछ रोटी वगैरह पैक कर लो। इस बीच, मैं गाँव के लेखाकार शानुभोग को बुला लाती हूँ।

वेंकटरमण ने आधे घंटे में स्नान कर लिया। उनकी माता ने रागी थालीपीठ और नारियल की चटनी बनाकर उनके लिए पैक कर दी। तब तक, बड़े गौड़ा शानुभोग के साथ लौट आए थे। जब सब लोग गाड़ी पर चढ़ गए, तो वेंकटरमण ने एक बार फिर पूछा, 'हम सब अब क्यों जा रहे हैं? क्या कारण है?' शानुभोग ने अपनी इच्छा से उत्तर दिया: 'आदरणीय गौड़ा स्वयं नहीं बताएंगे। मैं बताता हूँ। सुनो। मेरा मतलब है, इसमें छिपाने वाली क्या बात है? बड़े गौड़ा ने मंदिर बनवाया है। आगे से, वहाँ हर समय बिना किसी चूक के पूजा-अर्चना की जानी चाहिए। उनकी इच्छा है कि आप इसे आगे बढ़ाएँ। अपनी भूमि में से, वे आपके नाम पर पाँच एकड़ कृषि भूमि, दो एकड़ आर्द्रभूमि और पचास पेड़ों का नारियल का बाग लिखेंगे। आप और आपकी आने वाली पीढ़ियाँ इस सारी भूमि का आनंद लेंगी। आपकी आने वाली पीढ़ी में कोई भी इसे नहीं बेचेगा। पूजा और भूमि दोनों के अधिकार आपके वंश के पहले पुत्र को

मिलेंगे।' अगर वह पूजा नहीं करता है, तो यह दूसरे बेटे को सौंप दी जाती है। मूलतः, मंदिर में पूजा निर्बाध रूप से चलती रहनी चाहिए।'

वेंकटारमणा न केवल आश्चर्यचकित हुए, बल्कि शर्मिंदा भी महसूस करते हुए उन्होंने पूछा: 'दादाजी, मैं भगवान की पूजा तो कर दूंगा, लेकिन जमीन क्यों?'

'ये ज़मीनें भोजन और आजीविका के लिए हैं। क्या पेट भरे बिना हमेशा के लिए उपवास करना संभव है? क्या मैंने तुमसे मैसूर न जाकर यहीं रुकने के लिए नहीं कहा था? मैंने उस समय इस बारे में सोचा था। मैंने ज़ोर से नहीं कहा था क्योंकि पहले भगवान का काम करना था,' उन्होंने कहा। फिर युवा बैलगाड़ी चालक की ओर मुड़कर उन्होंने पुकारा, 'अरे होन्ना, क्या तुम सुन रहे हो?' जब बैलगाड़ी चालक ने पीछे मुड़कर कहा, 'क्या बात है दादाजी?' गौड़ा ने आगे कहा, 'अग्रहारा की दिशा में सारी ज़मीनें अब जोई परिवार की होंगी। गन्ने के खेत, अग्रहारा झील के पास सावंतरी की आर्द्रभूमि, मैंग्रोव—मैं ये सारी ज़मीनें उसके नाम लिखवा दूँगा। तुम इन पर बटाईदारी के आधार पर खेती करो। तुमने इतने सालों तक मेरे घर में काम किया है। मैं तुम्हारे लिए एक घर बनवाऊँगा। मैं तुम्हें एक बैलगाड़ी खरीदकर दूँगा। मैं तुम्हें दो बैल और दो गायें दिलवाऊँगा।' आने वाले शुभ समय में, मैं एक अच्छे परिवार से बेटी ढूंढकर तुम्हारी शादी करवा दूंगा। अपनी ज़मीन पर सुख-सुविधाओं से खेती करो। तुम आधा हिस्सा खुद रखो और आधा हिस्सा धर्म के मार्ग पर चलते हुए उसे दे दो। समझ गए?

ये शब्द सुनकर होन्ना स्तब्ध रह गया। वह कलेनहल्ली से दस मील दूर केंचेनहल्ली का रहने वाला था। उसके माता-पिता का निधन तब हो गया था जब वह छह साल का था। वह इधर-उधर भटकता रहा और दस साल की उम्र में कलेनहल्ली पहुँचा। वह पिछले बारह वर्षों से इस बुजुर्ग गौड़ा के घर में सेवा कर रहा था। उसने कभी अपनी ओर से वेतन नहीं माँगा था। न ही गौड़ा ने उसे कुछ दिया था। वे उसे भरपेट भोजन और कपड़े देते थे और स्नेह से उसका ख्याल रखते थे। अपने सभी कार्यों में भरोसेमंद साबित होने के कारण, होन्ना को मंदिर के कार्यों की देखरेख का भी जिम्मा सौंपा गया था।

चिन्नय्या ने कहा: 'ठीक है, ठीक है! अगर पति-पत्नी मेहनत करें तो चार साल में दो एकड़ खेत खरीद सकते हैं। होन्ना तो हड्डियां तोड़कर भी काम करता है। वो मेहनती आदमी है, आलसी नहीं!'

तालुक पहुंचने और झील के किनारे अपना पैक किया हुआ दोपहर का भोजन करने के बाद, शानुभोगा वहां से चले गए, फिर स्टांप पेपर लेकर लौटे और एक विस्तृत दस्तावेज लिखा।

दस्तावेज़ पंजीकृत हो गया था। जब वे गाँव जाने के लिए गाड़ी तैयार कर रहे थे, तभी होबली के शेखदार उनके सामने आ गए। उन्होंने शानुभोग से कहा, 'मैं आपके गाँव आने की सोच रहा था। कलेनाहल्ली से जुड़ा एक मामला है।'

'कौन सा, महाराज?' शानुभोग ने पूछा। अपने गाँव का नाम सुनते ही गौड़ा और चिन्नय्या दोनों के कान खड़े हो गए।

शेखदार ने कहा: 'कलिंग गौड़ा नाम के एक व्यक्ति ने सरकारी जमीन पर अवैध रूप से अतिक्रमण करके बिना अनुमति के अरुणाद्री पहाड़ी की चोटी पर एक मंदिर और एक कल्याणी का निर्माण किया है। यह मामला उच्च अधिकारियों के संज्ञान में आ गया है। मुझे मौके पर जाकर निरीक्षण करने और रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आदेश दिया गया है।'

'यह वही कलिंग गौड़ा है,' शानुभोग ने गौड़ा की ओर इशारा करते हुए पूछा: 'गौड़य्या, क्या आपने मंदिर बनवाने से पहले सरकार से हुकुम नहीं लिया था?'

'मैं अपने वंश की उस गाय की पवित्र स्मृति में मंदिर बनाने के लिए किसी सरकार से कुछ क्यों मांगूं, जिसने अपनी सत्यता से बाघ को परास्त किया था? क्या मैंने उस भूमि पर खेती की है, रागी की फसल काटी है और अपना अन्न भंडार भरा है?'

'गौडय्या, लेकिन सरकारी जमीन पर जो भी करना चाहो, उसके लिए तुम्हें अभी भी अनुमति लेनी होगी। अगर तुम इस तरह बात करोगे, तो कल पुलिस केस हो सकता है।'

'पुलिसवाला क्या करेगा, मेरे दोस्त?'

'अगर सरकार आदेश जारी करती है तो मंदिर को ध्वस्त किया जा सकता है।'

'अहा! कमीने!' गौड़ा गुस्से से भड़क उठा: 'अगर वो भगवान का मंदिर तोड़ देगा तो क्या वो बच पाएगा? मंदिर बनाने के लिए पुण्य कमाना पड़ता है। जो इसे तोड़ेगा उसका वंश नष्ट हो जाएगा। शेखदार, आपकी जाति क्या है?'

शेखदार ने धैर्यपूर्वक कहा: 'गौदय्या, आपको इस तरह क्रोधित नहीं होना चाहिए। मैंने अभी आपको सरकार का कानून बताया है। यदि आप आवेदन दें तो हम अभी भी

सब कुछ ठीक कर सकते हैं। आपको सरकार को कुछ शुल्क देना होगा, बस इतना ही।'

शेखदार ने शानुभोग को एक मिनट के लिए अलग बुलाया। जब वह लौटा, तो शानुभोग ने कहा, 'गौदय्या, वह कह रहा है कि अगर आप उसे सौ रुपये दे दें तो वह सब कुछ बिना किसी परेशानी के ठीक कर देगा। अब हम क्या करें?'

'हम इन नीच लोगों को कुछ क्यों दें? हम तो भगवान का काम कर रहे हैं।' गौड़ा अपनी बात पर अड़े रहे। लेकिन अगर यह समस्या हल नहीं हुई, तो दस दिन बाद होने वाले राज्याभिषेक समारोह और मेले में गड़बड़ी होने की पूरी संभावना थी। शानुभोग के बातचीत में शामिल होने के बाद, बड़े गौड़ा ने शेखदार को पच्चीस रुपये दिए। उन्होंने गौड़ा से आवेदन पत्र भरवाया, अमलदार से मुलाकात की और अपना रिकॉर्ड सुरक्षित कर लिया।

3

प्रतिष्ठापन समारोह और मेला गौड़ा की अपेक्षा कहीं अधिक सफल रहा। सबसे पहले, कल्याणी नदी के जल को गंगा पूजा से पवित्र किया गया। मंदिर की स्थापना की गई और फिर विधिपूर्वक मूर्ति की प्रतिष्ठा की गई। गौड़ा ही नहीं, बल्कि आसपास के क्षेत्र में किसी ने भी इतने सारे ब्राह्मणों को इतने लंबे समय तक मंत्रोच्चार करते हुए पहले कभी नहीं सुना था। यद्यपि भीड़ उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक थी, फिर भी उनके द्वारा तैयार किया गया भोजन न केवल सभी को संतुष्ट कर गया बल्कि पर्याप्त मात्रा में बच गया। मैसूर के एक आदरणीय पुरोहित ने कहा, 'जब कोई पुण्य कर्म करता है, तो भोजन की कभी कमी नहीं होती। यह केवल यहीं नहीं, मैंने इसे कई स्थानों पर देखा है। जब हम पहले चावल के ढेर पर पवित्र जल छिड़कते हैं, तो वह ढेर यह सुनिश्चित करता है कि कितने भी लोगों के लिए भोजन उपलब्ध रहेगा।' मेले में लगभग सात-आठ हजार पशु लाए गए थे। केवल गोबर की ही, जिसकी सरकार द्वारा नीलामी की गई, तीन सौ रुपये मिले।

अब बड़े गौड़ा को कोई चिंता नहीं थी। गौड़ा ने अपने पोते को पत्र लिखकर सूचित किया कि मंदिर का काम पूरा हो गया है और उन्होंने पूजा के लिए कुछ ज़मीन दे दी है। जवाब में पोते ने ज़्यादा कुछ नहीं कहा, बस इतना कहा कि उसे भी यह सुनकर खुशी हुई। अप्रैल की अमावस्या से शुरू होने वाले चैत्र महीने में होन्ना का

विवाह हुआ। क्योंकि ज़मीनें अग्रहारा के पास थीं, इसलिए बड़े गौड़ा ने होन्ना के लिए पास ही, पीछे के हिस्से में, एक बड़ा गौशाला वाला घर बनवाया। जल्द ही बैलगाड़ी और बैल भी आ गए। बारिश होने के बाद, होन्ना ने अपनी नई ज़मीनों पर खेती शुरू कर दी।

जोई परिवार के निधन को दो वर्ष बीत चुके थे। बड़े गौड़ा ने पहल करते हुए वेंकटारमणा का विवाह करवाया। दो परिवार बस गए।

न्यू टाइप मिडिल स्कूल अब अग्रहारा पहुँच चुका था। उनके साथ एसएसएलसी परीक्षा उत्तीर्ण एक अनुभवी अंग्रेजी शिक्षक भी आए। वे एक धर्मनिष्ठ, पारंपरिक व्यक्ति थे जो प्रतिदिन निर्धारित धार्मिक अनुष्ठान नियमित रूप से करते थे और उनकी एक विवाह योग्य पुत्री थी। उनका मानना था कि वेंकटरमण ही सबसे उपयुक्त वर हैं। कुंडली भी मेल खाती थी। गौड़ा परिवार के बड़े सदस्य की उपस्थिति में बातचीत हुई। विवाह का समय तय हुआ और यह ज्येष्ठ माह (मई-जून) में संपन्न हुआ।

विद्यालय में एक और शिक्षक की आवश्यकता थी जिसने एसएसएलसी परीक्षा उत्तीर्ण की हो। वेंकटरमण ने यह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी और वे इस पद के लिए उपयुक्त थे। उनके ससुर ने स्वयं आवश्यक प्रयास किए, उच्च अधिकारियों से संपर्क किया और सभी आवश्यक प्रक्रियाओं के बाद वेंकटरमण को नौकरी मिल गई। उन्हें पैंतालीस रुपये प्रति माह वेतन मिलता था। वे सुबह उठते हैं, स्नान करते हैं, संध्यावंदन करते हैं और फूल-पत्ती लेकर पहाड़ी पर जाते हैं। अग्रहारा से पुण्यकोटी मंदिर तक की सीधी दूरी डेढ़ मील है। वे मंदिर की सफाई करते हैं, जमीन पर जल डालते हैं, उसे साफ करते हैं, पूजा पूरी करते हैं, दस मिनट के भीतर लौट आते हैं और विद्यालय चले जाते हैं।

मंदिर के चारों ओर, बड़े गौड़ा के सेवक बिल्व, ओलियंडर और अन्य फूल उगा रहे हैं जिनका उपयोग पूजा में किया जाता है। कल्याणी के निचले हिस्से में, उन्होंने बरगद और गन्नू के पौधे लगाए हैं और उनकी सिंचाई कर रहे हैं। जब वे सुबह की पूजा के लिए जाते हैं, तो वेंकटरमण द्वारा बजाई गई मंदिर की घंटी की मधुर ध्वनि कलेनाहल्ली में गूंज उठती है। उस क्षण, चाहे वे कहीं भी हों, बड़े गौड़ा और उनके परिवार के सदस्य बिना किसी चूक के हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं, आंखें बंद करते हैं और सिर झुकाते हैं।

खंड 7

1

पिछले एक महीने से बड़े गौड़ा की पत्नी लक्कम्मा बिस्तर पर पड़ी हैं। उन्हें अक्सर बुखार आ जाता है। कभी-कभी उनके घुटने के नीचे का हिस्सा सूज जाता है, फिर सूजन कम हो जाती है और सब ठीक हो जाता है। घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ अब तैयव्वा के कंधों पर आ गई हैं। गौड़ा के हिसाब से लक्कम्मा 67 वर्ष की हो चुकी हैं। उन्हें यह हिसाब समझ नहीं आता। "शादी के समय हमारे गौड़ा की मूंछें उग आई थीं। मैं साड़ी का एक टुकड़ा पहनती थी। आप हिसाब लगा लीजिए।" इस तरह उन्होंने अपनी उम्र का हिसाब लगाया। इससे पहले वे किसी भी बीमारी में इस तरह बिस्तर पर नहीं पड़ी थीं। उनके हाथ-पैर कभी इस तरह नहीं सूजे थे। गौड़ा को लगा कि अब उन्हें अंतिम बीमारी हो गई है। उन्होंने यह जीवन जीया। उन्होंने अच्छा जीवन बिताया। मंदिर बन गया। अब उनके और उनके लिए मृत्यु के अलावा और क्या बचा था? कभी-कभी वे उनकी बीमारी को इसी तरह के अनासक्ति भाव से देखते थे।

लेकिन उनका इकलौता पोता अभी तक लाल देश से नहीं लौटा है। उसे गए तीन साल बीत चुके हैं। उसने एक पत्र लिखकर कहा है कि वह छह महीने में लौट आएगा। क्या उसे गाँव के प्रति ज़रा भी चिंता नहीं होनी चाहिए? उसने कहा था कि वह दो साल के लिए जाएगा। अगर वह लौट भी आया, तो यहाँ कुछ नहीं करेगा। वह गौशाला की देखभाल नहीं करेगा। वह अपनी माँ से बात नहीं करेगा। वह कहेगा कि गूंगे से बात करने का क्या फायदा? वह किसी शहर जाकर अमलदार जैसा कोई काम करेगा। हमारे गाँव में तो हमारी अपनी ही परेशानियाँ हैं... गौड़ा कभी-कभी मन ही मन परेशान हो जाते थे। होन्ना की पत्नी गर्भवती है। वेंकटरमण की पत्नी भी। 'अगर उसकी शादी हो गई होती, तो अब तक हमारे भी दो बच्चे हो गए होते। वह हमारी सुनता कहाँ है?' बड़े गौड़ा कभी-कभी अपनी पत्नी से कहते थे।

उन्होंने होबली से सरकारी डॉक्टर को बुलाया, जिसने सुई चुभोकर उन्हें दवा दी। लेकिन गौड़ा की पत्नी ने फैसला कर लिया कि अब उन्हें मृत्यु का रोग हो गया है। वह मरने से दुखी नहीं थीं। लेकिन मरने से पहले वह अपने पोते को देखना चाहती थीं। उसकी शादी करवाने की अधूरी इच्छा और अपने दो परपोतों के साथ खेलने का

मौका मिलना बाकी था। साथ ही, उनके जाने के बाद उनकी मूक बहू की देखभाल कौन करेगा, यह चिंता भी उन्हें सता रही थी। बुढ़ापे में—जब उनकी सारी शक्ति खत्म हो चुकी थी और उन्हें आराम करना पड़ता—तो उनके स्वामी और पति, गौड़ा की देखभाल कौन करेगा, यह सवाल भी उन्हें परेशान कर रहा था।

इसके अलावा, चूंकि वह दिन भर बिस्तर पर लेटी रहती थी, इसलिए उसकी बगल की त्वचा छिल जाती थी और घाव हो जाते थे। गौड़ा द्वारा घर का बना चंदन का तेल लगाने से ये घाव ठीक हो जाते थे, लेकिन जल्द ही दूसरी तरफ एक नया घाव उभर आता था। हर दिन, वेंकटरमण शाम को घर आता, एक घंटा बैठता और उनसे बातें करता। एक दिन, बड़े गौड़ा ने उससे कहा: 'बेटा, तुम्हारी दादी बीमार हैं। अगर तुम जल्दी नहीं आए, तो तुम उनका चेहरा भी नहीं देख पाओगे—पुत्ता को यह लिखकर एक पत्र लिखो। अगर वह कमीना आना चाहता है तो आ जाए।'

अगले दिन, वेंकटरमण होबली गए और पत्र को डाक से भेज दिया।

इसी बीच, बड़े गौड़ा पर एक और मुसीबत आ पड़ी। यह खबर फैल रही थी कि सरकार ने उनके तालुक और पड़ोसी तालुक को जोड़ने वाली एक तारकोल की सड़क बनाने का फैसला किया है। इस सड़क पर प्रतिदिन एक बार मोटरगाड़ी चलेगी। इसका मतलब यह था कि अगर क्षेत्र के लोग तालुक जाना चाहें, तो वे मोटरगाड़ी में बैठकर जा सकते हैं। कलिंग गौड़ा के लिए यह खबर कोई मायने नहीं रखती थी। उनका ऐसा कोई काम नहीं था जिसके लिए उन्हें तालुक जाना पड़े। लेकिन, अगर उन्हें सचमुच जाना पड़े और बुढ़ापे में चलने की ताकत न हो, तो बैलगाड़ी काफी थी। लेकिन जब खबर की पुष्टि हुई, तो गौड़ा परेशान हो गए: अरुणाद्री की तलहटी के किनारे से गुजरने वाली नई सड़क उनके आधे घास के मैदान को काट देगी। कहा जा रहा था कि सरकारी अधिकारियों ने नाप-जोख कर ली है। चिन्नय्या के बेटे यांगता ने उन्हें नाप-जोख करते हुए देखा था। हालांकि आसपास के गांवों के सारे चरागाह खेत बन चुके थे, लेकिन बड़े गौड़ा ने अपने चरागाह को बचाए रखा था। सरकारी रिकॉर्ड में इसे कृषि भूमि के रूप में दिखाया गया था—और वह पिछले बीस-बाईस वर्षों से कृषि कर भी चुका रहा था—लेकिन वास्तव में यह एक अविभाजित, एकल चरागाह ही था। अब, अगर इसके बीच से सड़क गुजरती है, तो कितनी ज़मीन का नुकसान होगा? इसके अलावा, लोग और मवेशी उस सड़क पर

बेधड़क घूम सकेंगे जो उसकी ज़मीन से होकर गुजरती है। सड़क के दोनों ओर बचे चरागाह पर चरने वाले आवारा मवेशियों की ज़िम्मेदारी किसकी होगी?

यह खबर सुनने के अगले दिन शाम तक, होबली के शेखदार के चपरासी ने बूढ़े गौड़ा को एक नोटिस सौंपा। जब गौड़ा ने पूछा कि उसमें क्या लिखा है, तो उसने वही बात दोहराई। सरकार एक नई सड़क बनाएगी। यह सड़क कलिंग गौड़ा की ज़मीन से होकर गुजरेगी। सरकार गौड़ा की उतनी ज़मीन का अधिग्रहण करेगी और उन्हें उचित मुआवज़ा देगी। यदि ज़मीन मालिक को इस मामले में कोई आपत्ति हो, तो वह एक महीने के भीतर अपील दायर कर सकता है।

उस रात बड़े गौड़ा को नींद नहीं आई। उनके मन में यह सवाल बार-बार उठ रहा था कि उनकी चरागाह में इतनी परेशानी क्यों आ रही है। पिछले एक महीने से उनके गांव के मवेशी बीमार पड़े थे। हालांकि उन्होंने कलेनाहल्ली के सभी मवेशियों को दवा दी, लेकिन उनकी अपनी गौशाला में दो गायें मर गईं। उनका दुख अभी पूरी तरह कम नहीं हुआ था। अब ऐसी स्थिति आ गई है कि उनकी चरागाह दो हिस्सों में बंट जाएगी। अगर ये बदमाश मोटर नहीं लगवाएंगे तो क्या होगा? क्या वे बैलगाड़ियों पर नहीं बैठ सकते? वे रात भर यही सोचते रहे।

गौड़ा की पत्नी एक करवट लेटी हुई थी, लेकिन वह पूरी तरह होश में थी। तैयव्वा भी जाग रही थी और छटपटा रही थी। बड़े गौड़ा ने अपनी चिंता उनसे साझा की। लेकिन तैयव्वा के पास उन्हें दिलासा देने वाले शब्द बोलने की शक्ति नहीं थी। गौड़ा की पत्नी ने कुछ कहने की कोशिश तो की, लेकिन स्पष्ट रूप से बोल पाने की शक्ति नहीं थी।

गौड़ा सुबह उठते ही अग्रहारा गए। उन्होंने वेंकटारमणा को नोटिस दिखाया। दोनों ने मिलकर इसे किसी भी तरह रोकने का निश्चय किया। नोटिस बीस दिन पुराना था। काफी देरी से यहाँ पहुँचा था। वे होन्ना की बैलगाड़ी में बैठकर होबली गए। वहाँ शेखदार और उप-पर्यवेक्षक से मिलकर उन्होंने कहा, 'सड़क का काम तुरंत करना होगा। सर्वेक्षण पूरा हो चुका है। हमारे तालुक से काम शुरू हो गया है। सड़क जिन निजी जमीनों से होकर गुजरेगी, उन्हें अधिग्रहित करने का आदेश भी जारी कर दिया गया है। सरकार आपकी जमीन के नुकसान के लिए कुछ मुआवजा देगी। आपको जमीन की कीमत, उपजाऊपन आदि का विवरण लिखकर अपील करनी होगी', शेखदार ने कहा।

‘मेरे भले आदमी, क्या आप कुछ ऐसा नहीं कर सकते जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि मेरे चरागाह को कोई नुकसान न पहुंचे?’ बुजुर्ग गौड़ा ने पूछा।

‘कुछ भी करना असंभव है। कार्यकारी अभियंता ने स्वयं सर्वेक्षण के आधार पर योजनाओं को मंजूरी दे दी है। दोनों तालुकों से काम शुरू हो चुका है। क्या सरकार मार्ग की लंबाई को अनावश्यक रूप से बढ़ाकर पागलपन कर रही है?’

यहाँ कोई काम न होने के कारण, दोनों एक ही बैलगाड़ी में तालुक पहुँचे। अगर बाईस साल पहले वाला अमलदार आज भी होता, तो कुछ करता। पर कौन जाने इस आदमी का क्या हाल होगा! फिर भी, वेंकटरमण ने एक आवेदन लिखा। बूढ़े गौड़ा ने उसे हाथ में लिया और अंदर चले गए। वेंकटरमण को उनके साथ जाने की अनुमति नहीं थी। वह एक शिक्षक हैं, सरकारी कर्मचारी हैं। ‘तुम इस मामले में कैसे शामिल हो गए? मैं तुम्हारे विभाग में शिकायत करूँगा।’ अगर अमलदार ने इस बात पर उन्हें डाँटा तो उनका क्या हश्र होगा? बूढ़े गौड़ा ने आवेदन अमलदार को सौंप दिया और उनके सामने सिर झुकाया।

‘क्या सरकार को अपनी योजना बदलनी चाहिए क्योंकि आप उस चरागाह को बचाना चाहते हैं जहां आपके मवेशी चरते हैं, बुजुर्ग?’ युवा साहब ने पूछा।

‘मेरे भले आदमी, यह जमीन गोमाता जनजाति की है। कृपया इसे किसी तरह बचा लीजिए। आपको पुण्य मिलेगा।’

चाहे बूढ़े गौड़ा ने उन्हें एकवचन में संबोधित किया हो, या पुण्य की बात की हो, या कोई और कारण हो, साहब क्रोधित हो गए। 'क्या तुम्हारे पास अक्ल नहीं है, बूढ़े? तुम्हारा गाँव कौन सा है?' वे चिल्लाए।

उस बूढ़े का साहस जवाब दे गया। उसकी ज़बान सूख गई थी। लाख कोशिश करने पर भी उसके मुँह से एक शब्द नहीं निकला। साहब ने कहा, 'सरकार चाहे जो भी करे, गाँव वाले हमेशा कोई न कोई मुसीबत खड़ी कर देते हैं। बस। अब आप अपने गाँव जाइए। बाकी सब मैं बाद में कर लूँगा।'

‘मेरे भले आदमी, क्या आपको यकीन है...’ बड़े गौड़ा कह रहे थे।

‘क्या मैंने तुम्हें एक बार भी नहीं कहा था? अब यहाँ से निकल जाओ’, उसने आदेश दिया।

वह बाहर आया और अपने सिर पर ओढ़े कपड़े से चेहरे का पसीना पोंछा। अंदर क्या हुआ था, यह वेंकटरमण को बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी, जो दरवाजे के

बाहर खड़ा सब कुछ सुन रहा था।

वेंकटारमणा, बड़े गौड़ा को सहायक अभियंता के कार्यालय तक ले गए। उन्होंने एक और आवेदन लिखा, उसे बड़े गौड़ा को दिया और जब उन्होंने उनसे अंदर जाकर उसे सौंपने के लिए कहा, तो भयभीत गौड़ा ने अंदर जाने से इनकार कर दिया।

'आप कैसे मना कर सकते हैं? क्या चरागाह को बचाना नहीं चाहिए? सिर्फ इसलिए कि यह अमलदार मूर्ख है, क्या सभी ऐसे ही होंगे? आप अंदर जाइए,' उन्होंने हौसला बढ़ाया। बड़े गौड़ा अंदर गए, आवेदन को मेज पर रखा और प्रणाम किया।

इंजीनियर ने आवेदन पढ़ा। उसने उसकी बात सुनी। वह चिल्लाया नहीं। उसने कहा, 'ठीक है, मैं इस बारे में सोचूंगा।' आगे बात करने से डरकर बूढ़ा आदमी चुपचाप बाहर चला गया। वेंकटरमण क्लर्क के पास गया और उससे कहा कि अगर वह काम करवा देता है, तो वह उसे गौड़ा परिवार से कोई उपहार दिलवाएगा। उसने क्लर्क से कहा कि वह खुद सरकारी कर्मचारी है और जब वह पहली तारीख को अपना वेतन लेने आएगा, तो उससे फिर मिलेगा।

अब दोनों को थोड़ा भरोसा हो गया था। 'भगवान जरूर भलाई करेंगे। अगर हम उन्हें कुछ पैसे दे दें, तो सब ठीक हो जाएगा। शायद पचास-सौ रुपये खर्च करने पड़ें', वेंकटरमण ने कहा, जिस पर बड़े गौड़ा ने जवाब दिया, 'चाहे जितना खर्च हो। चारागाह सुरक्षित रहे तो काफी है।'

2

गौड़ा की पत्नी की हालत बिगड़ती जा रही थी। सबको लग रहा था कि वो बच नहीं पाएगी। लेकिन कोई नहीं कह सकता था कि उसकी मृत्यु कब होगी। लगातार बिस्तर पर रहने के बावजूद वो होश में थी। उसके चेहरे के हाव-भाव से लगता था कि वो सामने वाले की बात समझ रही है। कभी-कभी, जब उसमें थोड़ी ताकत होती, तो वो अपने सूखे होंठों से एक-दो अस्पष्ट शब्द निकाल देती; या फिर अपने दाहिने हाथ की उंगलियां फैला देती, मानो कुछ कहना चाहती हो। तयव्वा ये इशारा तुरंत समझ जाती। उसी हिसाब से वो अपनी सास के मुंह में दूध या पानी डाल देती; या फिर करवट बदल लेती। कभी-कभी आंखें खुली रखकर लेटे हुए भी वो अपनी बहू के इशारे समझ जाती।

बड़े गौड़ा को वेंकटरमण के साथ तालुक गए पंद्रह दिन से अधिक समय बीत चुका था। उनकी पत्नी के अंतिम दिन निकट आ रहे थे, इसलिए वे अब घर से बाहर बिल्कुल नहीं निकलते थे। नौकर मवेशियों को चराने के लिए बाहर ले जाते थे। वेंकटरमण शाम को आते और कुछ देर बैठकर बातें करते।

एक दोपहर, नौकर निंगा घर आया और बोला: 'मालिक, मैं नदी किनारे कुछ पत्ते काटने गया था। लौटते समय मैंने देखा कि उन्होंने हमारे चरागाह से गुजरने वाली सड़क को काटना शुरू कर दिया है। वे इसे एक छोर से दूसरे छोर तक काट रहे हैं। यह सड़क उस जगह के ऊपर से गुजरेगी जहाँ आपके बेटे, छोटे गौड़ा को दफनाया गया है।'

यह सुनते ही गौड़ा को एक अजीब सी आशंका हुई। 'यह क्या है?' उसने अपने नौकर से पूछा, और जब नौकर ने भी वही बात दोहराई, तो वह शांत हुआ, अपनी छड़ी उठाई, 'चलो, चलते हैं,' और नौकर के साथ चरागाह की ओर चल पड़ा। वह चिलचिलाती धूप में चलता रहा, नाला पार किया और वहाँ के खेत से होते हुए ऊपर की ओर बढ़ने लगा। जब गौड़ा बेर की पहाड़ी पर पहुँचा, तो उसने अपने चरागाह पर सौ से अधिक मजदूरों को काम करते देखा। जब वह पास पहुँचा, तो उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, उसने देखा कि इनमें से कोई भी मजदूर आस-पास के गाँवों का नहीं था। उसने पूछा, 'अरे, तुम यहाँ क्यों काट रहे हो?' उनमें से एक ने हाथ से इशारा करके बताया कि उसे भाषा नहीं आती।

सभी मजदूर तमिल भाषी थे। लेकिन इन मजदूरों के प्रभारी पर्यवेक्षक, मेस्त्री, कन्नड़ जानते थे। उन्होंने गौड़ा से कहा: "यहां काम शुरू हुए तीन दिन हो गए हैं। सरकारी अधिकारियों ने प्रत्येक व्यक्ति को आधा मील का ठेका दिया है। हमारा ठेकेदार—क्या आप वह बड़ा पत्थर देख सकते हैं?—उसने वहां से लेकर इस पेड़ तक का काम कर दिया है।"

लेकिन मैंने तो अपने चरागाह के अंदर सड़क न बनाने के लिए आवेदन दिया था?

'मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता, आदरणीय गौड़ा।'

बड़े गौड़ा के सेवक निंगा ने इशारा करते हुए कहा: 'देखो मेरे साहब। उन्होंने हमारे छोटे गौड़ा की कब्र तोड़ दी है।'

बड़े गौड़ा पास जाकर देखने लगे। उनके पुत्र कृष्ण और बाद में पुण्यकोटी को जिस स्थान पर एक साथ दफनाया गया था, उस स्थान पर एक ऊंचे टीले पर दो बड़े-

बड़े पत्थर एक दूसरे के ऊपर रखे हुए थे। पत्थरों को छोड़कर बाकी जगह घास से ढकी हुई थी। लेकिन अब मजदूरों ने न केवल पत्थरों को एक तरफ फेंक दिया था, बल्कि टीले को खोदकर समतल कर दिया था। जैसा कि उन्होंने हर जगह किया था, यहां भी उन्होंने लगभग दो मीटर तक जमीन खोदी थी और मिट्टी वहीं छोड़ दी थी। अब बस इस मिट्टी पर बजरी डालकर उसे सड़क बनाने वाली मशीन से समतल करना बाकी था।

यह दृश्य देखकर बड़े गौड़ा बस बैठ गए। उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। इतने दिनों से कृष्ण अपनी माता पुण्यकोटी के बगल में चुपचाप सो रहे थे। पिछले बीस-बाईस वर्षों में जब भी गौड़ा इस जगह से गुजरते थे, उन्हें यही अनुभूति होती थी। कृष्ण वह पुरुष थे जिन्होंने गाय को बचाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया था। उनका शरीर भी इसी चरागाह में दफनाया गया था। जब तक वे यहाँ थे, कोई बाघ या लकड़बग्घा इस रास्ते से कैसे आ सकता था? और हाँ, उनके मरने के बाद किसी लकड़बग्घे ने इस इलाके में सिर उठाने की हिम्मत नहीं की थी। अब इन लोगों ने उनकी कब्र खोद दी है और उसके ऊपर मोटर चलाएंगे। एक पल के लिए बड़े गौड़ा को चक्कर आया और उन्होंने खुद को संभालने के लिए अपना हाथ सिर पर रख लिया। फिर उन्होंने खुद को संभाला, उठे, पर्यवेक्षक के पास गए और विनती की: 'महोदय, हमने मेरे पुत्र और गाय को वहीं दफनाया था। इन लोगों ने ठीक उसी जगह को खोद दिया है। क्या सड़क को थोड़ा इधर मोड़ना संभव है? मेरा चरागाह तो वैसे भी पहले से ही उजाड़ है।' कुछ ऐसा करो जिससे कम से कम यह जगह तो बच जाए!

पर्यवेक्षक ने सहानुभूति भरे लहजे में कहा: 'आदरणीय गौड़ा, सड़क कैसे और कहाँ बनाई जानी है, इसके सभी विवरण पहले ही तय और मापे जा चुके हैं। उच्च अधिकारियों ने यह सब कर लिया है। हम चाहे कुछ भी कर लें, इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। आपको पहले उपायुक्त के पास जाकर उनसे स्थगन आदेश लेना होगा। उसके बाद आपको कार्यकारी अभियंता से मिलकर सड़क योजना में बदलाव करवाना होगा। वे स्वयं ऐसा करेंगे या यह आदेश उच्च अधिकारियों द्वारा आएगा, यह मुझे नहीं पता। लेकिन जब हमें यह हुकुम मिल गया है कि सड़क दो महीने में मोटर परिवहन के लिए तैयार होनी चाहिए, तो वे इसे नहीं बदलेंगे।'

इसके बाद बुजुर्ग गौड़ा ने कुछ नहीं कहा। शायद उन्हें समझ आ गया था कि अब बात करना व्यर्थ है, शायद बोलने की शक्ति उनमें नहीं बची थी, या शायद वे निराशा से घिर गए थे, उन्होंने बस अपनी लाठी हाथ में ली और चले गए। सेवक निंगा अपने स्वामी के पीछे-पीछे चला गया।

जैसे ही वे टीले से नीचे उतरे और खेत की ओर चलने लगे, तभी एक और नौकर, गोरावा, जो उनकी तलाश कर रहा था, अचानक सामने आ गया। अपनी आँखें पोंछते हुए उसने कहा: 'माँ चली गई हैं।'

बड़े गौड़ा ने बस अपना सिर उठाया और उसकी ओर देखा। जब निंगा ने पूछा कि क्या बात है, तो गोरवा ने उत्तर दिया: “जब आपने कहा था कि वे छोटे गौड़ा की समाधि के ऊपर सड़क बना रहे हैं, तब मैं वहीं था। आपके और गुरुजी के जाने के बाद, माताजी ने धीरे से पूछा, “क्या?” मैं उनके पास गया और कहा, “लगता है वे कृष्ण की समाधि तोड़कर सड़क बना रहे हैं। लगता है वे पुण्यकोटी की समाधि भी तोड़ रहे हैं जो उनके बगल में आराम कर रही हैं।” इसके बाद वे कुछ नहीं बोलीं। उनकी आँखों से एक आँसू गिर गया। मैंने कहा, “माँजी, रोइए मत, बड़े गौड़ा देखने गए हैं।” फिर मैं कुएँ से पानी भरने चला गया। थोड़ी देर बाद, तैयव्वा आई और मुझे बुलाया। मैं गया और देखा: माताजी ने अपनी जान गंवा दी थी।

निंगा नाम के सेवक ने अपनी आँखें पोंछीं। लेकिन बड़े गौड़ा ने एक शब्द भी नहीं कहा। वे आगे बढ़ते रहे। जब तक वे घर पहुँचे, गाँव के लोग इकट्ठा हो चुके थे। तैयव्वा चुपचाप रो रही थी, दोनों हाथों से अपनी सास के शरीर को पकड़े हुए थी, जो कई दिनों तक लाचार पड़े रहने के कारण कंकाल के पिंजरे में तब्दील हो गया था और अब अपनी जीवन शक्ति से रहित था। यह दृश्य देखकर गोरवा ने आँखों में आँसू लिए कहा, 'शायद माँ न मरतीं अगर मैंने उन्हें यह न बताया होता! अब तो ऐसा लगता है जैसे मैंने यह कहकर उन्हें मार डाला हो,' उसने अपनी आँखें मलीं।

बुजुर्ग गौड़ा ने एक शब्द भी नहीं कहा। वे दस मिनट तक खंभे से टिके रहे और खुद को दिलासा देते रहे। हालांकि लोग उनके चारों ओर जमा होकर उनसे बातें कर रहे थे, फिर भी वे वहीं बैठे रहे, मानो अवाक रह गए हों। फिर अचानक वे खड़े हो गए और बोले, ‘ये क्या बकवास है! तुम सब यहाँ ऐसे क्यों बैठे हो? क्या उठकर अर्थी नहीं बना सकते? हम शव को घर में कब तक रखेंगे? क्या एक बार जीवन चला गया तो वापस आएगा?’

पास ही खड़े चिन्नय्या के पुत्र यांगता ने पूछा, “क्या रिश्तेदारों को नहीं आना चाहिए? मुझे बताइए, मुझे किन-किन गांवों में संदेश भेजना चाहिए?” इस पर बुजुर्ग गौड़ा ने उत्तर दिया, “किसी रिश्तेदार के आने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब उठिए। चलिए शव को जल्दी दफना देते हैं।”

बांस की अर्थी तैयार थी। बड़े गौड़ा ने कहा, 'अरे, वह एक विवाहित महिला के रूप में मरी है। उसका पति अभी जीवित है। खूब सारा कुमकुम और हल्दी लगाओ। उसे फूलों से सजाओ। देखो नई साड़ी कहाँ है।'

महिलाओं ने शव को धोया, नई साड़ी लपेटी, गालों पर हल्दी मली ताकि वह साफ दिखाई दे, माथे पर कुमकुम लगाया और सिर पर बची छोटी लटों में फूल लगाए। जब अर्थी उठाते समय बहू बेहोश हो गई, तो बड़े गौड़ा ने महिलाओं से उसे सांत्वना देने को कहा और शव के पीछे चले गए। जैसा उन्होंने आदेश दिया था, इस बार कब्र चरागाह के बजाय खेत में खोदी गई। उनके साथ आए ग्रामीणों ने शव पर चावल के दाने छिड़के और फिर कब्र को मिट्टी से भर दिया गया।

3

शाम तक, पास और दूर से कई रिश्तेदार आ गए। खबर मिलते ही वेंकटारमणा ने स्कूल बीच में ही छोड़ दिया और दौड़ते हुए वहाँ पहुँच गया। बड़े गौड़ा ने खुद दादी की मृत्यु का कारण नहीं बताया। जब बाकी लोगों ने उसे बताया, तो वेंकटारमणा ने कहा, 'क्या हम अभी भी जिले में जाएँ? नहीं, तुम नहीं। मैं अकेला जाऊँगा। चारागाह तो वैसे भी उजाड़ हो चुका है। लेकिन मुझे लगता है कि अगर हम उनसे कब्र के किनारे से थोड़ा हटकर सड़क बनाने का अनुरोध करें, तो वे हमारा काम कर देंगे।'

‘नहीं, नहीं! मत जाओ’, बुजुर्ग गौड़ा ने कहा।

‘ऐसा नहीं है। हमें अपना प्रयास करना होगा। तालुक इंजीनियर के कार्यालय में क्लर्क ने कुछ नहीं किया। हम उसे फिर से पकड़ सकते हैं और कम से कम इतना काम तो करवा ही सकते हैं।’

‘मेरे बेटे, तुम भ्रम में हो। चुप रहो’, बड़े गौड़ा ने बस इतना ही जवाब दिया।

वेंकटारमणा ने बात वहीं खत्म कर दी। अब दादी के अंतिम संस्कार करने थे। अगर उनका बेटा होता, तो सिर मुंडवाने के बाद अंतिम संस्कार करने का अधिकार

उसे स्वतः ही मिल जाता। अब पोते को यह करना था। 'क्या मैं कलिंग को टेलीग्राम भेजूं?' वेंकटारमणा ने पूछा।

'इसका क्या मतलब है?'

'तार के ज़रिए चिट्ठी लिखना। अगर हम बता दें कि ऐसा हुआ है, तो एक मिनट के अंदर डाकघर को उसकी लोकेशन बता दी जाएगी। अगर मैं तालुक जाकर पैसे देकर संदेश लिख दूं, तो काफी है। यह कल सुबह तक उस तक पहुंच जाएगा। अगर वह हवाई जहाज़ से आए, तो दो दिन में यहां पहुंच सकता है। यहां तक कि अगर वह ग्यारहवें दिन से पहले भी यहां पहुंच जाए, तो वह अपनी नानी का अंतिम संस्कार कर सकता है।'

एक मिनट सोचने के बाद, बड़े गौड़ा ने कहा: 'उस नीच आदमी के न आने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। हम अंतिम संस्कार अपने कर्मों को कम करने के लिए करते हैं। उसके आने से क्या फायदा?'

'ऐसा नहीं है। उन्हें सूचित करना हमारा कर्तव्य है। खबर सुनते ही वे जरूर आएंगे।'

ठीक है। तो फिर वायर लेटर भेज दो। इसमें कितना खर्च आएगा?

मुझे भी ठीक से नहीं पता।

एक अनुमान के अनुसार, वेंकटारमणा ने सौ रुपये लिए और उसी रात बड़े गौड़ा की गाड़ी पर बैठकर तालुक के टेलीग्राफ कार्यालय के लिए रवाना हो गया।

लेकिन ग्यारहवें दिन भी कलिंगा अमेरिका से नहीं आई। न ही बड़े गौड़ा ने उस विषय पर दोबारा कोई बात की। लेकिन अंतिम संस्कार के लिए आए रिश्तेदारों और शुभचिंतकों ने इस पर चर्चा की। एक रिश्तेदार ने अपना सिर मुंडवाकर अंतिम संस्कार किया। रात के भोजन में लगभग चार-पाँच हज़ार लोग उपस्थित थे। गौड़ा ने अपनी पत्नी का अंतिम संस्कार पूरी श्रद्धा से संपन्न किया।

4

कृष्ण और पुण्यकोटी की समाधियों पर सड़क बनते देख बड़े गौड़ा पर एक अजीब तरह का दुख छा गया था। अब उनकी किसी से बात करने की इच्छा नहीं रहती थी। ऐसा लगता था मानो उनके शरीर से सारी शक्ति निकल गई हो। पत्नी के अंतिम संस्कार पूरे होने तक उन्होंने खुद को सक्रिय रखा। बस इतना ही। अंतिम संस्कार के

आखिरी दिन रात को जब रिश्तेदार और शुभचिंतक चले गए, तो उन्होंने कंबल बिछाया और लेट गए। बीच-बीच में उनसे मिलने आने वाली बहू को उन्होंने कुछ सांत्वना भरे शब्द कहे। बाकी समय वे चुपचाप लेटे रहते। उन्हें न बुखार था, न ठंड लग रही थी—कोई ऐसी बीमारी नहीं थी जिसका सटीक कारण बताया जा सके। कभी-कभी वे मन ही मन सोचते, "मुझे क्या हो गया है?"

वेंकटारमण ने बड़े गौड़ा की मनस्थिति को भलीभांति समझ लिया था। वे हर शाम वहाँ आते और वेदांत के कुछ वचन सुनाते। वे उनसे पत्नी की मृत्यु पर शोक न करने का आग्रह करते—जैसे कोई पुराना वस्त्र त्याग दिया जाता है, वैसे ही आत्मा एक शरीर त्यागकर दूसरा शरीर धारण करती है। अब समय बदल रहा है। क्या यही कलियुग नहीं है? इसके समाप्त होने के बाद प्रलय, प्रलयकारी प्रलय आएगी। फिर सत्ययुग, सत्य का युग पुनः आरंभ होगा। तब पृथ्वी भर में गाय की पूजा होगी। और गाय के प्रति भक्ति का पुनर्जन्म होगा और वह फलेगी-फूलेगी। गौड़ा उनकी सारी बातें शांतिपूर्वक सुनते थे। परन्तु पहले की तरह, जब वे प्रश्न पूछते और अनभिज्ञ बातें सीखते थे, अब वे कोई प्रश्न नहीं पूछते थे।

गौड़ा कभी-कभी सोचते थे, "मुझे क्या हो गया है?" उन्हें खाने में कोई रुचि नहीं थी; उन्हें अपने घर और ज़मीन की कोई परवाह नहीं थी। गौशाला में मौजूद पशुओं की भी उन्हें कोई चिंता नहीं थी। अब तक वे दिन में कम से कम चार बार अपने पशुओं के पानी के कुंडों की जाँच करना कभी नहीं भूलते थे। अब गौशाला जाने की भी कोई इच्छा नहीं रह गई थी। उनके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी, जिसे वे स्वयं महसूस कर सकते थे। वे रागी का मुड्डे और दाल का शोरबा खाते थे, जो उनकी बहू जबरदस्ती उन्हें थाली में परोस देती थी। वे इसे आधा बर्तन छाछ पीकर सो जाते थे। लेकिन जो खाना वे खा रहे थे, वह दिन-प्रतिदिन उनकी बिगड़ती हालत को नहीं रोक सका।

एक दिन, जब वह कृष्ण और पुण्यकोटी की समाधियों के ऊपर बनी सड़क के बारे में सोच रहा था, तो उसे पुण्यकोटी की मृत्यु याद आ गई। लकड़बग्घे के पंजे के वार से उसके चेहरे पर गहरा घाव हो गया था। वहाँ से घर लौटने के बाद, उसने खुद गाय को दवा दी थी, लेकिन घाव भरने के बाद भी, उसके चेहरे पर छाए उदासी के भाव दूर नहीं हुए। और अब, जैसे मेरी बहू मुझे जबरदस्ती खाना खिला रही है, वैसे ही चावल और नारियल का मिश्रण जो हमने उसे खिलाया, उससे भी उसे ताकत नहीं

मिली। वही उदासी अब मेरे चेहरे पर भी है। उसकी आँखों में कोई चमक नहीं थी। अब मेरे साथ भी वही हुआ है। पुण्यकोटी के मामले में, यह कहा जा सकता है कि लकड़बग्घे के वार के बाद वह इतनी भयभीत हो गई थी। लेकिन, मुझे क्या हो गया है? मैंने ऐसा क्या देख लिया है कि मैं इतना सहम गया हूँ, इतना डर गया हूँ? मुझे किस बात ने जकड़ लिया है?

गाय और मनुष्य—क्या उनका दिमाग एक जैसा नहीं होता? वह अक्सर खुद से यह सवाल पूछता और फिर खुद ही इसका जवाब दे देता: आखिर गाय का दिमाग मनुष्य के दिमाग से बेहतर है। वे दिव्यता से जुड़े थे। मनुष्य का दिमाग नीच था।

चिन्नय्या का निधन एक वर्ष पहले हो गया था। उनका पुत्र यांगता अब उस घर का मुखिया था। एक दिन, बड़े गौड़ा ने यांगता को बुलवाया। इसके बाद, उन्होंने अपनी गाड़ी तैयार की और वे अपने खेत में गए जहाँ गौड़ा ने उन्हें बाड़ और नहर के पास उगी विभिन्न हरी सब्जियाँ और जड़े हुए पौधे दिखाए। फिर उन्होंने प्रत्येक के औषधीय गुणों के बारे में बताया। उन्होंने यांगता को पशुओं के विशिष्ट रोगों के लिए दवा तैयार करने हेतु आवश्यक जड़ी-बूटियों, उन्हें लगाने की विधि, अन्य सामग्रियों को मिलाने, विभिन्न रोगों के लक्षणों और अन्य प्रासंगिक ज्ञान के बारे में बताया। अंत में उन्होंने कहा, 'कोई भी गाय जो बीमार हो, तुम्हें जाकर उसे दवा देनी चाहिए। चाहे वह पशु तुम्हारे शत्रु का ही क्यों न हो, तुम्हें मना नहीं करना चाहिए। दवा देने के लिए तुम्हें पैसे नहीं लेने चाहिए। यदि तुम पैसे लोगे, तो तुम्हारा वंश नहीं बचेगा।' फिर, बड़े गौड़ा ने यांगता का हाथ अपने हाथ में लेकर उससे शपथ ली। फिर वे गाड़ी में बैठे, घर पहुँचे और कंबल पर लेट गए। कुछ देर आराम करने के बाद, उन्होंने यांगता से कहा, "पता नहीं वो कमीना आएगा या नहीं, या आएगा भी या नहीं, और इस घर में रुकेगा भी या नहीं। तुम मेरे गौशाला का ध्यान रखना।" इस पर यांगता गौड़ा ने कहा, "दादाजी, आप इतनी कठोर बातें क्यों कर रहे हैं, बस रहने दीजिए।" फिर उन्होंने बड़े गौड़ा के हाथ एक बार फिर अपने हाथों में लिए और शपथ ली।

इसके तीन दिन बाद, बड़े गौड़ा ने वेंकटरमण से कहा: 'पुत्र, देखो कि कल या परसों कोई शुभ दिन है या नहीं। मैं गोदाना करना चाहता हूँ।'

अब खास अवसर क्या है? दादी के अंतिम संस्कार के दौरान गोदाना संस्कार किया गया था।

‘क्या गोदाना के लिए किसी विशेष अवसर की आवश्यकता है?’ फिर गहरी साँस लेते हुए उन्होंने धीरे से कहा: ‘सुनो, मैं तुम्हें सच बताता हूँ। इतने दिन बीत गए। इस गौशाला का स्वामी बनने के बाद मैंने लगभग बीस-पच्चीस गोदाना किए होंगे। लेकिन मैंने एक भी पुण्यकोटी गाय दान में नहीं दी। याद है, मंदिर के अभिषेक के समय मैंने दो गायें दान में दी थीं? तब मेरे मन में पुण्यकोटी गाय दान करने का विचार आया था। लेकिन क्या मनुष्य का लालच इतनी जल्दी खत्म हो जाता है? इसलिए मैंने तब दूसरी गाय दान कर दी थी। मैं ज्यादा दिन जीवित नहीं रहूँगा। लेकिन मरने से पहले मैं एक पुण्यकोटी गाय दान में जरूर दूँगा।’

वेंकटरमण ने दिनों और नक्षत्रों के संबंध में कुछ गणनाएँ कीं और कहा कि परसों शुभ है। अतः उस सुबह, बड़े गौड़ा रथ पर लेट गए और तैयव्वा के साथ पुण्यकोटी मंदिर गए। पुण्यकोटी नस्ल की दो दूध देने वाली गायें अपने बछड़ों के साथ रथ के पीछे-पीछे चल रही थीं। मंदिर में पूजा समाप्त होने के बाद, गौड़ा ने कल्याणी से जल लिया और वेंकटरमण द्वारा जपे जा रहे मंत्रों के साथ दोनों गायों की पूजा की और उन्हें वेंकटरमण को दान कर दिया। फिर, तैयव्वा ने गायों और ब्राह्मण के चरण स्पर्श किए और आशीर्वाद लिया। बड़े गौड़ा ने कहा: ‘इन दिनों एक चोर मेरे मन में छाया हुआ था। अब वह चला गया है। हमें दान में वही देना चाहिए जो हमें सबसे प्रिय हो, है ना?’

वेंकटारमणा गायों को लेकर अपने गाँव लौट गया। बुजुर्ग गौड़ा अपनी बहू के साथ बैलगाड़ी में बैठकर घर लौटे। घर में पुण्यकोटी नस्ल की छह और गायें थीं। उन्होंने अपनी बहू से कहा, ‘बच्ची, किसी भी नस्ल की कोई भी गाय पुण्यकोटी नस्ल के बराबर होती है। लेकिन यह विशेष नस्ल हमारे वंश को विरासत में मिली है। तुम्हें इसकी ठीक से देखभाल करनी चाहिए। यह बात समझ लो।’

तायव्वा ने श्रद्धापूर्वक सिर हिलाया।

अगली सुबह, कोले बसवा मंडली गाँव में आई। उन्होंने गौड़ा के घर के सामने सीता कल्याण का मंचन किया—भगवान राम और उनकी दुल्हन, देवी सीता का विवाह। 'राम, क्या आप माता सीता से विवाह करेंगे?' प्रश्न के उत्तर में, बैल ने उत्साहपूर्वक अपनी छाती सीधी की और लगातार अपना सिर हिलाया। फिर, 'हम आपको कन्या नहीं देंगे' के उत्तर में, वह रूठकर पीछे हट गया। इसके बाद, उसने शिव के धनुष की तरह अपने पैर मोड़े, जिस तरह भगवान राम ने सीता से विवाह करने की शर्त के रूप में धनुष मोड़ा था। इसके बाद, वह अपनी मर्जी से सीता (गाय)

के बगल में खड़ा हो गया। अब, 'मेरी माता सीता, क्या आप राम से विवाह करेंगी?' के उत्तर में, सीता ने एक नई दुल्हन के समान शर्मीले अंदाज में अपनी गर्दन झुकाई। फिर कोले बसवा मंडली ने अपने नादस्वरम पर शोभना राग—विवाहों के दौरान बजाया जाने वाला शुभ राग—बजाया और सीता और राम के विवाह की रस्में पूरी कीं। फिर जब उनका जुलूस हर घर के सामने रुका, तो ग्रामीणों ने उन्हें रागी और दालों से भरी थालियाँ भेंट कीं। महिलाओं ने सीता और राम पर हल्दी और कुमकुम लगाया।

गांव के सभी घरों का चक्कर लगाने के बाद, मंडली बड़े गौड़ा के घर पहुंची। उनकी मंडली के दो सदस्यों का रिश्ता तय हो चुका था और दूल्हा-दुल्हन दोनों वहीं मौजूद थे। लेकिन उनके पास खर्च के लिए पैसे नहीं थे। अगर बड़े गौड़ा पचास रुपये का कर्ज दे दें, तो वे दो साल में लौटा देंगे। मंडली के नेता ने कहा, "क्योंकि आप बड़े गौड़ा हैं और मुखिया भी, इसलिए हम आपसे मदद मांग रहे हैं। यह शुभ कार्य है। बड़े गौड़ा, आपको पुण्य मिलेगा।"

जब गौड़ा ने पूछा, 'ये क्या बकवास है! पता नहीं तुम किस गाँव से हो? मुझे मेरे पैसे वापस मिलने की क्या गारंटी है?' तो सरदार ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपने समूह के एक युवक और एक युवती को इशारा किया। वह सीता नाम की गाय को घर के अंदर ले गया और दंपति को उसकी पूंछ पकड़ने को कहा। फिर उसने कहा: 'आदरणीय गौड़ा, हम इनकी शादी करवा रहे हैं। देखिए, इन्होंने माता सीता की कसम खाई है। अगर हमने आपके पैसे वापस नहीं किए, तो ये दोनों ज़िंदा नहीं बचेंगे।'

इसके बाद गौड़ा चुप रहे। उन्होंने अपनी बहू को पुकारा और पचास रुपये लाने को कहा। उन्होंने लेटे-लेटे ही एक बार फिर गिनकर उन्हें दे दिए। 'इस घर में शुभ घटनाएँ घटें। यह सोने से भर जाए। तुम्हारे गौशाला में हज़ार पशु पैदा हों।' ये और इसी तरह के आशीर्वाद भरे शब्द कहकर मंडली चली गई।

उसी रात, बड़े गौड़ा ने यांगता को बुलवाया। जब वह आया, तो उन्होंने कहा, 'बेटा, मुझे बांसुरी सुनने की बहुत इच्छा है। जाओ, ले आओ।' यांगता के बांसुरी लाने के बाद, बड़े गौड़ा ने यांगता के कंधों पर हाथ रखा और धीरे-धीरे चलते हुए बाहरी शेड में बने गौड़ा की ओर गए। उन्होंने यांगता से हर नांद की जाँच करवाई कि उसमें घास और पानी है या नहीं। इसके बाद, उन्होंने अपना कंबल बिछाया और गौड़ा के

बीच में बंधी बांस की चारपाई पर लेट गए। गौड़ा में सभी गायें घास खाकर लेटी हुई थीं और चबा रही थीं। दाहिनी ओर, मुंडेर के बाहर बंधे बैल अभी भी घास खा रहे थे। छत के ढलान के पार का पिछवाड़ा चाँदनी से नहाया हुआ था। बड़े गौड़ा की आज्ञा मानते हुए, यांगता चारपाई के एक कोने पर बैठ गया और बांसुरी बजाने लगा।

जब तक उनके फेफड़ों में ताकत थी, बड़े गौड़ा इस इलाके में बेजोड़ बांसुरी बजाते थे। फिर उनके बेटे कृष्ण ने अपने पिता के नाम को सार्थक करते हुए बांसुरी बजाना शुरू किया। सचमुच, पान चबाने के बाद जब रस होठों से टपकने लगता था, तब कृष्ण को बांसुरी में मग्न देखना बेहद आनंददायक होता था। दुनिया की तो बात ही छोड़िए, बांसुरी बजाते समय कृष्ण को खुद का भी होश नहीं रहता था। आजकल लोगों में यांगता बांसुरी बहुत अच्छी बजाती हैं।

लेकिन आधे घंटे तक बांसुरी बजाने के बावजूद, उसके संगीत में कोई रंग नहीं आया। बड़े गौड़ा ने पूछा, 'क्या तुमने पान नहीं खाया?' जब यांगता ने मना किया, तो उन्होंने उसे अंदर जाकर पान चबाने को कहा। लेकिन गौड़ा के घर में पान नहीं था। यांगता अपने घर गया, पान की थैली लेकर लौटा और उसे मुंह भरकर खाया। थोड़ी देर बाद उसकी गर्दन की नसें फूल गईं। उसका तापमान बढ़ गया। फिर उसने बांसुरी का मुंह होठों से लगाया। अब संगीत में शक्ति आ गई थी।

अब तो रात की शांति में बैल भी घास चरना बंद कर चुके थे। तैयव्वा समय-समय पर महुआ का तेल भर रही थी और छोटे से जलते हुए मिट्टी के दीपक की बाती को ठीक कर रही थी। बांसुरी की धुन तेज होती जा रही थी। इस गीत का शास्त्रीय संगीत के किसी सिद्धांत से कोई संबंध नहीं था। जैसे भगवान कृष्ण ने बचपन में अपनी बांसुरी से माया या भ्रम उत्पन्न किया था, वैसे ही यह बांसुरी भी भ्रम पैदा कर रही थी। ऐसी कौन सी दुनिया है जो भ्रम से नहीं बनी है? लेकिन केवल वही माया जो भगवान कृष्ण ने बुनी है, वही वास्तविक सत्य है। बाकी सत्य भ्रम बन जाते हैं।

भगवान कृष्ण के समय में, गायें नदी किनारे चांदनी में चर रही थीं। पास ही में बछड़े उछल-कूद कर खेल रहे थे। वातावरण शांत था। अचानक कुछ शरारती बैल दौड़ पड़े। वे एक-दूसरे को सींगों से मार रहे थे, सींग आपस में उलझ रहे थे और टूट रहे थे। उनके खुरों के नीचे फंसी लाल धूल धरती से उठकर चांदनी की सफेद रोशनी के चारों ओर घेरा बना रही थी। लड़ते हुए बैलों के शरीर से खून बह रहा था। कुछ के

सींग टूट गए थे। फिर भी, उन्होंने अपनी लड़ाई नहीं रोकी। डरी हुई गायें अपने बछड़ों के साथ ग्वाले कृष्ण की ओर दौड़ीं और उनकी शरण में गईं।

मुस्कुराते हुए कृष्ण अपनी बांसुरी निकालते हैं। वे उसे होठों से लगाकर एक बार ज़ोर से बजाते हैं। संगीत सुनते ही बैल लड़ना बंद कर देते हैं। अपनी जगह पर जमे हुए वे बांसुरी बजाने वाले की ओर मुड़ जाते हैं। एक-दूसरे के प्रति उनका क्रोध अपने आप शांत हो जाता है। लाल धूल बैठ जाती है और धरती साफ हो जाती है। चारों ओर केवल बांसुरी का संगीत गूंजता है। सभी पशु अपनी आँखें बंद कर लेते हैं, कान खड़े कर लेते हैं और लेट जाते हैं। नदी भी बहना बंद कर देती है, उसकी कलकल ध्वनि भी थम जाती है ताकि संगीत में कोई बाधा न आए। पानी बहना बंद हो जाता है और अब एक ठोस पिंड जैसा लगता है। चांदनी एक भारी थक्के जैसी लगती है। बांसुरी की धुन थम सी जाती है, जैसे हवा रहित क्षेत्र में लौ की लौ स्थिर हो जाती है। क्या कृष्ण उसमें अपनी सांस भर रहे हैं या उसे बाहर निकाल रहे हैं?

बुजुर्ग गौड़ा वहां आंखें बंद करके लेटे हुए सुन रहे थे।

यांगता आधी रात के बाद तक बांसुरी बजाता रहा, और अब रोशनदान से पलंग के पैर दिखाई देने लगे थे। उस दिन उसे ऐसा तल्लीनता का अनुभव हुआ जैसा उसने पहले कभी नहीं किया था। वास्तव में, ऐसा तल्लीनता का अनुभव किसे नहीं होता, खासकर तब जब वह कलिंग गौड़ा की इच्छा पर उनके खलिहान में बांसुरी बजा रहा हो! जब तक उसने बांसुरी बजाना बंद किया, तब तक बड़े गौड़ा गहरी नींद में सो चुके थे। लेकिन तैयव्वा तब से वहीं बैठी हुई थी और धुन सुनती रही, यहाँ तक कि उसके दोनों कान उससे भर गए। कुछ देर बाद, यांगता ने तैयव्वा से पूछा, 'क्या हम उन्हें जगाकर अंदर ले चलें?'

‘नहीं, उसे वहीं सोने दो’, उसने हाथों से इशारा किया। उसने पूछा, ‘मैं घर जा रहा हूँ। क्या तुम यहीं रहोगी?’ उसने उसे जाने का इशारा किया। नौकर निंगा घर के सामने वाले आँगन में सो रहा था। तयाव्वा ने उसे जगाया और फिर उसे खलिहान में पलंग के पास सोने का इशारा किया। नींद से भरी आँखों से वह उठा, अपना कंबल घसीटा और बाँस के पलंग के बगल में ज़मीन पर रखी पत्थर की पटिया पर सो गया।

महुआ तेल से भरा मिट्टी का दीपक धीमी गति से जल रहा था। तयाव्वा ने दीपक में पूरा तेल भर दिया। लेकिन उसने दीपक की रोशनी बढ़ाने के लिए बाती को हिलाया नहीं।

बड़े गौड़ा गहरी नींद में सो रहे थे। तैयव्वा सोने के लिए अंदर चली गई, लेकिन उसे नींद नहीं आई। बांसुरी की आवाज़ सुनते ही उसे अपने पति की याद आ जाती थी। उनके जैसा सुंदर बांसुरी बजाने वाला कोई नहीं था। और जब वे बांसुरी बजाते थे, तो आवारा मवेशी भी चुपचाप आकर उनके चारों ओर लेट जाते थे। लेकिन उनका अपना बेटा तो बांसुरी बजाना भी नहीं सीख पाया।

कुछ देर करवटें बदलने के बाद, तयाव्वा उठी और फिर से खलिहान में चली गई। तेल लगभग पूरी तरह खत्म हो चुका था और दीपक धीमी आंच पर जल रहा था, हालांकि उसमें कोई हलचल नहीं थी। उसकी रोशनी में बड़े गौड़ा का चेहरा दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह अभी भी बांसुरी की धुन में खोए हुए हों। पत्थर की पटिया पर सो रही निंगा खर्राटे ले रही थी। उसने दीपक में फिर से तेल डाला, फिर अंदर आकर लेट गई। कुछ और करवटें बदलने के बाद, वह भी सो गई।

5

हालांकि सुबह हो चुकी थी, लेकिन तैयव्वा अभी तक नहीं जागी थी।

'तयाव्वा, तयाव्वा!' निंगा चिल्लाई, जिससे वह जाग उठी, और घबराते हुए बोली: 'आओ, देखो। बड़े गौड़ा का निधन हो गया है। उनका निधन सोते हुए ही हो गया, ठीक वैसे ही जैसे वे रात में सो रहे थे।'

एक पल के लिए वह जहाँ लेटी थी वहीं जम गई, मानो उसका दिल चकनाचूर हो गया हो। फिर निंगा द्वारा उसका नाम पुकारे जाने पर वह धीरे-धीरे उठी और गौशाला की ओर गई। और वहाँ उसने क्या देखा? निंगा ने सभी गायों और बैलों को खोल दिया था और उन्हें बाहर बाँध दिया था। बड़े गौड़ा कल रात की तरह ही पलंग पर लेटे हुए थे। उनके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो वे अभी भी बांसुरी की धुन सुन रहे हों। उनकी मृत्यु कब हुई? क्या कल रात जब उसने उन्हें देखा था तब वे मृत पड़े थे या नींद में ही उनकी प्राण शक्ति समाप्त हो गई? तैयव्वा को पता नहीं था। शायद वे मरे नहीं हैं, निंगा झूठ बोल रही हो, उसे शक हुआ। वह पास गई, उनके शरीर को छुआ। उनके हाथ-पैर ठंडे और अकड़े हुए थे।

खंड 8

1

गौड़ा की पत्नी के अंतिम संस्कार में जितने रिश्तेदार आए थे, वे सब उनके अंतिम संस्कार में भी मौजूद थे। लेकिन तब बड़े गौड़ा जीवित थे और सब कुछ संभाल रहे थे। अब मूक तैयव्वा के अलावा, आगे बढ़कर नेतृत्व करने वाला कोई नहीं था। हालाँकि वेंकटरमण सुबह से शाम तक वहीं रहे, लेकिन पैसों के लेन-देन के कारण वे स्वतंत्र निर्णय लेने में हिचकिचा रहे थे। तैयव्वा घर के अंदर से रुपयों से भरा एक बड़ा घड़ा निकालकर उनके सामने रख दिया। उन्होंने उन्हें गिना। कुल आठ सौ बीस रुपये। अंतिम संस्कार इसी राशि में पूरा करना था। लेकिन अगर सारी राशि अंतिम संस्कार में ही खर्च हो गई, तो परिवार अगली फसल तक कैसे गुजारा करेगा? उन्होंने इस बारे में भी सोचा। लेकिन फिर भी, इतने गरिमामय जीवन जीने वाले बड़े गौड़ा का अंतिम संस्कार कंजूसी से नहीं किया जाना चाहिए था। कम से कम आठ-दस हजार लोगों को भोजन कराना था। लेकिन अब न तो अन्न भंडार में रागी थी और न ही भंडार में धान। वह सारा पैसा मंदिर के अभिषेक और उनकी पत्नी के अंतिम संस्कार के दौरान खर्च हो गया था।

हालात को समझते हुए रिश्तेदार और शुभचिंतक अपने-अपने गांवों से रागी का आटा, चावल, गुड़ और दालें लेकर आए। ढोल बजाने वाला आसपास के गांवों में घूम-घूमकर ग्यारहवें दिन होने वाले भव्य भोज की घोषणा कर रहा था। तैयारियां शुरू हो गईं। 'क्या वह कोई साधारण गौड़ा है? उसने तो मंदिर बनवाया,' यह गर्व न केवल उनके रिश्तेदारों और शुभचिंतकों में बल्कि पूरे गांव में व्याप्त था।

दसवें दिन की दोपहर को घर रिश्तेदारों और शुभचिंतकों से भरा हुआ था। कल के भव्य भोज के लिए घर के सामने विशाल खेत में काम ज़ोरों से चल रहा था—मिट्टी का चूल्हा खोदने से लेकर बड़े-बड़े बर्तनों और अन्य सामान धोने तक। तभी धूल से सनी एक गाड़ी वहाँ पहुँची। लोग हैरानी से उसकी ओर देखने लगे, तभी एक लंबे, लाल-भूरे रंग के साहब बाहर निकले। पतलून, कोट, टोपी और बूट पहने हुए वे सीधे बड़े गौड़ा के घर में चले गए। कोई भी रिश्तेदार उन्हें पहचान नहीं पाया। लेकिन तैयव्वा ने उन्हें तुरंत पहचान लिया और मुस्कुरा उठी। पर वह बोल नहीं पाई और बता

नहीं पाई कि वे कौन हैं। उन्होंने खुद कहा, 'अम्मा, दादाजी कहाँ हैं?' अब सब जान गए थे; वे कलिंग थे जो लाल देश गए थे।

कलिंगा ने कार के बूट से पलंग और ट्रंक निकलवाकर घर के अंदर रखवा दिया। ड्राइवर को पैसे देने के बाद गाड़ी चली गई। उसने अपनी पतलून, कोट, टोपी और जूते उतारे और धारीदार पजामा और सफेद कमीज पहनकर पलंग पर बैठ गया। रिश्तेदार उससे बात करने में या तो झिझक रहे थे या डर रहे थे। तभी यांगता आया और पूछा, 'भाई, तुम कब आए?'

जब कलिंग ने उससे पूछा, 'दादी के अंतिम संस्कार पूरे हो गए हैं क्या?' तो यांगता ने विस्तार से सब कुछ बताया—दादी के अंतिम संस्कार पच्चीस दिन पहले पूरे हो चुके थे। कल दादाजी की बारी थी।

तैयव्वा को अपने बेटे के घर लौटने पर राहत मिली। उसने उसे अंदर आने का इशारा किया और फिर उसके सामने रखे घड़े में पैसे रखते हुए उंगलियों से इशारा करके बताया कि ये छह सौ रुपये हैं। शायद उसने सोचा कि उसकी ज़िम्मेदारियाँ यहीं समाप्त हो गईं! कलिंगा पलंग पर लौट आया, उस पर टेक लगाकर आराम करने लगा। यांगता ज़मीन पर बैठकर लगातार बातें कर रहा था। आधे घंटे में तैयव्वा ने गरमागरम चावल पकाए और उन्हें दोपहर के भोजन के लिए बुलाया। उसने बड़े-बड़े थालियों में खाना परोसा। शायद खाना उसके लिए बहुत ज़्यादा मसालेदार था। उसने बार-बार पानी पिया और शोरबे में मिले आधे खाए हुए चावल को छोड़ दिया। उसने दही-चावल खाए और उठ खड़ा हुआ।

इसी बीच वेंकटरमण आ गए। रिश्तेदार, शुभचिंतक और गाँववाले चाहे कितनी भी लगन से काम करें, उन्हें आवश्यक सुझाव और सलाह देना वेंकटरमण का ही काम था। जब उन्होंने कलिंग को देखा, तो वे आश्चर्यचकित और राहत दोनों महसूस कर रहे थे। 'आप कब आए? क्या आपको मेरा टेलीग्राम मिला?'

'मैंने किया। इसीलिए मैंने सब कुछ छोड़ दिया और यहाँ आ गया।'

'इसमें इतना समय क्यों लगा?'

'जब टेलीग्राम आया तब मैं शहर में नहीं था। हमारे यहाँ पहुँचने में कुछ देरी हो गई।'

खैर, कम से कम अब तो आप आ गए। हमारे लिए बहुत बड़ी राहत है। कल के लिए सब कुछ तैयार है। ये सभी लोग मिलकर हर ज़रूरी काम कर रहे हैं। आप चिंता

न करें। मैं एक ऐसे उपयुक्त व्यक्ति के बारे में सोच रहा था जो कल की रस्में निभा सके। अब आप खुद आ गए हैं—वास्तव में रस्में निभाने का अधिकार आपको ही दिया गया है।

वे काफी देर तक बातें करते रहे। वेंकटारमणा ने कलिंग के अमेरिका चले जाने के बाद यहाँ घटी हर बात विस्तार से बताई। उस अवसर को देखते हुए उन्होंने सीमित विवरण ही दिए। उन्होंने मंदिर निर्माण से लेकर अपने दादा-दादी की मृत्यु तक सब कुछ बताया। जब उनसे अमेरिका में उनके जीवन के बारे में पूछा गया, तो वे इसके बारे में बताने के लिए ज्यादा उत्सुक नहीं दिखे। उनका मन यहाँ की घटनाओं के बारे में जानने में मग्न था।

आपने कहा था कि आप दो साल में लौट आएंगे। अब लगभग चार साल हो गए हैं। क्यों?

उन्होंने कहा, 'मैंने पहले कृषि की पढ़ाई की। फिर मुझे एक और फैलोशिप मिली: पशुपालन का अध्ययन करने के लिए, जिसका अर्थ है मवेशियों का संरक्षण, उनकी बीमारियाँ, उनकी उपयोगिता और लाभ। मैंने एक साल तक इसका अध्ययन किया और इसमें डिप्लोमा प्राप्त किया। इन सभी दिनों में, मैं एक फार्म में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था।'

वेंकटरमण उस शाम अग्रहारा के लिए रवाना हुए।

2

अगली सुबह सात बजे से पहले, वेंकटरमण पवित्र सूखी घास दर्भा का एक गट्ठा लेकर आ गया। तब तक घर की अच्छी तरह सफाई हो चुकी थी और गोबर मिले पानी से धोया जा चुका था। भीतरी आंगन में नवग्रह धान्य, नौ पवित्र दालें, केले और आम के पत्ते, एक धोती, एक तांबे का बर्तन और दान के लिए रखे अन्य सभी बर्तन तैयार रखे गए थे। तयव्वा ने दूध देने वाली पुण्यकोटी गाय को नहलाकर उसके बछड़े सहित मुख्य द्वार के बाहर बांध दिया था। यह दान के लिए था।

वेंकटरमण ने एक बड़े बर्तन में दूध, दही, घी, गौमूत्र और गोबर मिलाकर पंचगव्य तैयार किया और उसे दर्भ से धोया। फिर विभिन्न गांवों से लगभग सात-आठ ब्राह्मण वहां एकत्रित हुए। रिश्तेदारों और शुभचिंतकों ने स्नान कर लिया था। यह प्रथा थी कि पहले पंचगव्य ग्रहण किया जाए, फिर नवग्रह और अन्य दान किए जाएं, और अंत में

शव को दफनाए गए स्थान पर जाकर जल और घी अर्पित किया जाए। जब वेंकटरमण केले के पत्ते बिछा रहे थे और नवग्रह धान्यों को उनकी निर्धारित दिशाओं में रखने के निर्देश दे रहे थे, तभी कलिंग स्नान करके वहां पहुंचे। वेंकटरमण ने वहां बैठे यांगता से, जो पत्तों पर पवित्र दालें रख रहे थे, पूछा, 'क्या आप नाई को बुलाना भूल गए?'

मैंने फोन किया था। वह खंभे के पास बरामदे में बैठा है।

'तो फिर, कलिंग गौड़ा, वहाँ जाओ और अपना सिर पूरी तरह मुंडवा लो,' वेंकटरमण ने कहा, जो अब पुरोहित की भूमिका में थे और अंतिम संस्कार की रस्में निभा रहे थे। कलिंग ने कोई जवाब नहीं दिया। पाँच मिनट बाद, जब वेंकटरमण ने फिर पूछा, 'क्या सिर मुंडवाए बिना काम पूरा नहीं हो जाएगा?' वहाँ एकत्रित सभी ब्राह्मणों ने कहा, 'नहीं, नहीं, सिर मुंडवाने के बाद ही उन्हें अंतिम संस्कार करने का अधिकार मिलेगा।' रिश्तेदारों में से एक बड़े गौड़ा ने भी यही बात दोहराई, 'यह कैसे संभव है, मेरे भाई? आपको अपना सिर मुंडवाना ही होगा।'

वेंकटारमणा ने आगे कहा: 'जब मेरे पिता का निधन हुआ, तो मैंने अपना सिर मुंडवा लिया था। आपने खुद देखा होगा। यह बिल्कुल वैसा ही है। आप विदेश से लौटे हैं। अगर पूरी तरह नहीं तो कम से कम सामने से थोड़ा सा, चाप के आकार में, मुंडवा लें। जब तक बाल दोबारा नहीं उगते, तब तक आप टोपी या हैट पहन सकते हैं।'

कलिंग ने एक मिनट सोचा और फिर उत्तर दिया: 'मैं इन सब बातों में विश्वास नहीं करता। बाकी का काम आप कर लीजिए। सब ठीक है।'

'सिर मुंडवाए बिना बाकी काम कैसे होगा?' दूसरे ब्राह्मणों ने पूछा। उनके रिश्तेदारों में से एक बूढ़ी औरत ने कहा, 'बेटा, तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है कि तुम इस तरह बोलते हो?' कलिंग का चेहरा उतर आया। फिर भी, वह सहमत नहीं हुआ।

अंत में, यांगता ने वेंकटरमण से पूछा, 'क्या मैं अपना सिर मुंडवा लूँ?' जोई पुरोहित वेंकटरमण ने कहा, 'ठीक है। तुम बड़े गौड़ा के पुत्र के समान हो। तुम अपना सिर मुंडवा लो। लेकिन फिर तुम्हें नवग्रह के सामने बैठकर सभी अनुष्ठान करने होंगे। क्या यह ठीक है, कलिंग गौड़ा?' कलिंग गौड़ा ने हाँ कह दी। समस्या हल हो गई। लेकिन कोई भी खुश नहीं था। तैयव्वा अत्यंत दुखी थी। लेकिन उसे यह व्यक्त करना

नहीं आता था। इसके अलावा, इतने सारे लोगों की उपस्थिति में वह अपने पुत्र को कैसे समझाती?

यांगता ने अपना सिर पूरी तरह मुंडवा लिया, नई सफेद धोती को घुटनों तक लपेट लिया, जोई समुदाय द्वारा बनाई गई दर्भ-अंगूठी को अपने दाहिने हाथ की अनामिका में पहना और बैठ गए। फिर, जोई समुदाय के मंत्रोच्चार के साथ, उन्होंने पहले गोबर और सूखी घास से बने भगवान गणेश की पूजा की, फिर मंदिर के रूप में स्थापित कलश की और फिर नवग्रहों की पूजा की। साथ ही, पंचगव्य की भी पूजा की गई। कलिंग और तैयव को इसे पहले पीना था। यद्यपि यांगता कलिंग के आसन पर बैठे थे, लेकिन यह उनकी सूतक—मृत्यु से संबंधित अशुद्धता—नहीं थी जिसे धोना था। इसलिए, वेंकटरमण ने कलिंग को बुलाया, और जब वे वहाँ आए और अपनी हथेली फैलाई, तो उन्होंने आम के पत्ते से एक चम्मच बनाया, उसे भरा, फिर पंचगव्य उंडेल दिया। जैसे ही वह उसे दोबारा भरने की तैयारी कर रहा था, कलिंग ने कहा, 'एक बार ही काफी है।' फिर वह खंभे के पीछे गया, और जब उसने उसे पीने की कोशिश की, तो उसमें मौजूद मूत्र और गोबर की दुर्गंध से उसे घिन आ गई, और उसने उसे खंभे पर पोछ दिया। हालाँकि दूसरों ने इस पर ध्यान नहीं दिया, वेंकटरमण ने इसे अपनी आँखों के कोने से देख लिया। खंभे के इस तरफ बैठे तैयव्वा ने भी इसे देख लिया।

तब वेंकटरमण जोइस ने तयव्वा को बुलाया। वह वहाँ गईं, प्रणाम किया, अपना दाहिना हाथ बाएँ हाथ के ऊपर रखा और फैला दिया। पंचगव्य तीन बार उनकी हथेली में उंडेला गया और हथेली लबालब भर गई। भक्ति भाव से आँखें बंद करके उन्होंने वहीं पर उसे पी लिया, फिर हथेली को अपने सिर पर पोंछा, परिक्रमा की और नवग्रह के समक्ष प्रणाम किया। इसके बाद न केवल रिश्तेदारों और शुभचिंतकों ने, बल्कि वहाँ एकत्रित अन्य ग्रामवासियों ने भी उसे पिया।

इसके बाद अन्य मंत्रों का पाठ किया गया और अंतिम संस्कार संपन्न हुए। ब्राह्मणों को दान और दक्षिणा दी गई। तैयव्वा ने गाय केवल वेंकटरमण को ही दी। तब तक वेंकटरमण की माता, पत्नी और एक वर्षीय पुत्री भी अग्रहारा से आ चुकी थीं। उनका काम वहाँ एकत्रित ब्राह्मणों के लिए भोजन करना था। सुब्बम्मा ने बचपन में कलिंग को भोजन कराया था और उनकी पढ़ाई-लिखाई का ध्यान रखा था। जब उन्होंने उनसे पूछा, 'मेरे बच्चे, क्या तुम ठीक हो?' तो उन्होंने आदरपूर्वक हाथ जोड़कर उनसे

विनम्रतापूर्वक बात की। उन्होंने वेंकटरमण की पत्नी मीनाक्षी को नमस्कार किया और उनका हालचाल पूछा।

शवयात्रा में दूध और घी अर्पित करने के बाद, रिश्तेदार पुण्यकोटी मंदिर के लिए रवाना हो गए। वेंकटरमण पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे, कल्याणी नदी में स्नान कर विशेष पूजा कर चुके थे। मंदिर में प्रवेश करने वाला प्रत्येक आगंतुक मंदिर की घंटी बजाता था, और उसकी मधुर ध्वनि आसपास के गाँवों में गूंजती थी।

शाम के भोज के लिए अभूतपूर्व भीड़ जमा हो गई थी। चूंकि यह मंदिर के निर्माता, दिवंगत गौड़ा के सम्मान में आयोजित किया जाने वाला पारंपरिक भोज था, इसलिए उन गांवों से भी भारी भीड़ उमड़ी थी जिन्हें उनके निधन की सूचना नहीं थी। यांगता, जिसने सारी ज़िम्मेदारियाँ संभाल रखी थीं, थोड़ा भयभीत था। लेकिन वेंकटरमण, जो वहीं रुका हुआ था, ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा: 'भगवान के भोज में भोजन की कभी कमी नहीं होती। वरिष्ठ कलिंग का अंतिम संस्कार भगवान के कार्य के समान है। डरो मत।'

वास्तव में, सबका पेट भरा हुआ था। शोरबा, रागी मुड्डे, पायसा, चावल, सब कुछ बच गया था। अंत में, जब पान के पत्तों की कमी महसूस हुई, तो प्रत्येक अतिथि को पूरी थैली के बजाय केवल छह या सात पत्ते ही दिए गए।

3

अगली सुबह, कलिंग देर से उठे क्योंकि वे पिछली रात देर से सोए थे। रिवाज़ के मुताबिक, अंतिम संस्कार में शामिल हुए रिश्तेदार भोज के बाद विदाई की रस्मों में हिस्सा लिए बिना ही तुरंत वापस चले गए थे। घर में सिर्फ़ माता-पिता ही रह गए थे। कलिंग को कुछ ज़रूरी पत्र लिखने थे। जब उन्हें पता चला कि अग्रहारा में एक नया डाकघर खुला है, तो वे तुरंत वहाँ गए। लेकिन उस छोटे से डाकघर में डाक का कोई सामान नहीं था जिससे विदेश भेजा जा सके। जब तक वे वहाँ से वेंकटरमण के घर पहुँचे, तब तक वे मंदिर की पूजा पूरी कर चुके थे और घर पर बैठकर अंग्रेज़ी अख़बार पढ़ रहे थे। यह देखकर कलिंग ने पूछा, “ये क्या है, क्या आप भी अंग्रेज़ी अख़बार पढ़ते हैं?”

‘यह हमारे स्कूल में आता है। मैं इसे पिछले दो सालों से पढ़ रहा हूँ। मैं इसे बहुत अच्छी तरह समझ सकता हूँ। आओ, बैठो।’

कलिंग चटाई पर बैठ गए। सुब्बम्मा ने उन्हें उपमा बनाकर खिलाई। वेंकटरमण ने उनसे कहा कि वे डाकघर को सूचित कर देंगे कि उन्हें कल तक मनचाही विदेशी डाक सामग्री मिल जाएगी।

फिर उन्होंने कुछ औपचारिक बातचीत की। कलिंग ने पूछा, 'अम्मा ने मुझे बताया कि घर में सिर्फ छह सौ रुपये हैं। घर में इतने सारे रिश्तेदार आ गए थे। क्या आपको लगता है कि कुछ गड़बड़ है?'

'छी, छी, नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। जब बड़े गौड़ा का निधन हुआ, तब आठ सौ बीस रुपये थे। कल के अंतिम संस्कार के लिए, रिश्तेदारों ने खुद अपने गांवों से राशन और अनाज लाकर काम पूरा किया।'

'मुझे कभी पता नहीं चला कि दादाजी के पास कितने पैसे थे। लेकिन फिर, जिस परिवार के पास इतनी सारी जमीनें, इतना बड़ा खलिहान है, उसके पास सिर्फ आठ सौ बीस रुपये बचे हैं? यह कैसे संभव है?'

'कलिंगा, क्या तुम्हें किसी पर शक है? मुझे सीधे-सीधे बताओ। तुम घर पर नहीं थे। दादाजी के निधन के बाद, मैं तुम्हारी माँ को सांत्वना देने के लिए दिन में दो बार तुम्हारे घर आता था और लेन-देन संबंधी मामलों पर सलाह देता था। अगर मैंने तुम्हारे घर का एक पैसा भी चोरी-छिपे खाया है, तो मेरी वंश-परंपरा न बचे।'

'वेंकटरमण, मुझे गलत मत समझो। मुझे तुम पर कोई शक नहीं है। मैं तुम्हारे पिता और तुम्हारे दोनों के स्वभाव को जानता हूँ। मैं तुम्हें सच बता रहा हूँ। अब मैं अपने घर के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ। मेरी माँ बोल नहीं सकती। इस बीच जो कुछ भी हुआ है, उसके बारे में मुझे बताने वाला तुम्हारे अलावा और कौन है?'

वेंकटारमण ने उन्हें पैसों से जुड़े हर एक छोटे-बड़े विवरण के बारे में बताया। उनके अमेरिका जाने के बाद मंदिर के निर्माण और अभिषेक में पंद्रह हज़ार का खर्च आया। 'बड़े गौड़ा ने उन खर्चों के बारे में कभी एक शब्द भी नहीं कहा। शास्त्रों में लिखा है कि धर्म के कार्यों में खर्च किए गए धन का हिसाब-किताब नहीं करना चाहिए। लेकिन मेरे पास अनुमान है क्योंकि मैंने इसे शुरू से बनते हुए देखा है', उन्होंने कहा और फिर उन्हें होन्ना के विवाह और बाद में उनकी दादी के अंतिम संस्कार के खर्चों के बारे में बताया। 'आपके घर का सोना सुरक्षित है। वैसे भी, आपके घर में शुरू से ही ज़्यादा सोना नहीं था। आपके दादाजी हमेशा कहते थे, "एक ग्वाले की पत्नी को सोने की क्या ज़रूरत है?" फिर भी, आपकी दादी का ब्रोच, सोने का

गुलदाउदी का फूल, हार, वह दूसरा गोल हार... सब कुछ वहीं है। आपकी माँ के गहने भी वहीं हैं। आपके पिता द्वारा पहने गए ठोस सोने के कंगन और झुमके? वे भी वहीं हैं।' अंत में, आपके दादाजी ने वह एक सौ बीस ग्राम सोने का बाजूबंद पहनना बंद कर दिया था। वह भी घर पर ही है।'

वेंकटारमणा ने उन्हें उस दान के बारे में भी बताया जो बड़े गौड़ा ने मंदिर बनवाने के बाद उनके नाम पर किया था और उन्हें मंदिर की दैनिक पूजा का दायित्व सौंपा था। तब कलिंग ने पूछा, 'क्या सरकार हमारे चरागाह से होकर गुजरने वाली सड़क के लिए कोई मुआवजा नहीं देती?'

'उन्हें यह देना ही होगा। मैंने खुद सुना है कि वे वाकई देते हैं। आप कोशिश कीजिए। चलिए एक दिन अमलदार या उपायुक्त कार्यालय चलते हैं।'

वे साढ़े ग्यारह बजे तक बातें करते रहे। वेंकटरमण को स्कूल जाना था। इसलिए कलिंग अपने गाँव के लिए निकल गया। यांगता बर्तनों और अन्य उपकरणों को धुलवाकर उनके असली मालिकों को लौटाने में लगी हुई थी। ये बर्तन कल के समारोहों के लिए विभिन्न स्थानों से उधार लिए गए थे। तैयव्वा ने अपने बेटे के लिए चावल और शोरबा तैयार किया था। उसने उससे कहा कि शोरबे में इतना मसाला न डाले और फिर खाना खाया। उसने हाथ के इशारों से उससे चार-छह बार कुछ सवाल पूछे। उसे कुछ समझ नहीं आया।

उसने उससे चाबियाँ लीं, अंदर के अँधेरे कमरे में गया और लकड़ी के संदूक से ज़मीन के दस्तावेज़ निकाले और उन्हें बहुत धीरे-धीरे पढ़ा। उसे वह कागज़ मिला जिसमें लिखा था कि लगभग पच्चीस या छब्बीस साल पहले उनकी चरागाह भूमि को खेती योग्य भूमि में बदल दिया गया था, यह सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज था और कर का भुगतान भी हो चुका था। उसने उसे अपने चमड़े के थैले में अलग रख लिया।

अगली सुबह, वह चरागाह गया और उसके बीचोंबीच बनी सड़क का जायजा लिया। सड़क चरागाह के ठीक बीच से होकर गुजर रही थी। सड़क बनाने वाली मशीन से सफेद पत्थर बिछाए गए, उन पर बजरी डाली गई और फिर उसे समतल कर दिया गया। अब वे सड़क के दोनों ओर बरगद के पेड़ लगाने के लिए गड्ढे खोद रहे थे। दाहिनी ओर उन्होंने मील और फर्लांग के पत्थर लगा रखे थे। गणना के अनुसार, तालुक सोलह मील की दूरी पर था।

पेड़ लगाने के लिए खाई खोद रहे मजदूरों ने जब उन्हें पतलून, बूट और टोपी पहने देखा, तो उन्होंने काम रोक दिया और हाथ जोड़ लिए। पास में मौजूद सुपरवाइजर उनकी ओर दौड़ा और बोला, 'नमस्ते साहब।' उसने उन्हें बताया कि इस सड़क पर मोटर सेवा पंद्रह दिनों में, यानी अगले महीने की पहली तारीख से शुरू हो जाएगी।

'क्या आपके पास टेप है?' कलिंगा ने पूछा।

मैं सार करता हूँ।

उनकी सहायता से कलिंग ने सड़क की चौड़ाई नापी। उन्होंने सड़क के दोनों ओर लगाए गए बरगद के पौधों की चौड़ाई का भी ध्यान रखा, जो बड़े होकर विशाल वृक्ष बन जाएंगे। अपने चरागाह से होकर गुजरने वाली सड़क की सटीक लंबाई नापने के बाद, उन्होंने पर्यवेक्षक से एक कागज़ का टुकड़ा और पेंसिल ली, जो उन्होंने अपने कान के पीछे छिपा रखी थी, और फिर गणनाएँ लिख लीं। वे वहाँ से चले, पहाड़ी की ढलान पर चढ़े और मंदिर की ओर चल पड़े। जैसे ही वे चढ़ रहे थे, मंदिर की विशाल घंटी इतनी ज़ोर से बजी कि पूरी पहाड़ी गूंज उठी।

जब वह पहुंचे तो मंदिर का द्वार खुला था। वेंकटरमण ओलियंडर, तनगड़ी और अन्य पौधों से फूल और पत्तियां तोड़ रहे थे। उन्हें देखकर वेंकटरमण प्रसन्न हुए। 'आओ, तुम ठीक पूजा के समय आए हो।' जब वे कल्याणी से जल लेने उतरे तो कलिंग भी उनके साथ गए। विशाल कल्याणी तीन-चौथाई भरी हुई थी। जल स्वच्छ और शुद्ध था। कल्याणी की सीढ़ियाँ मजबूत थीं। कलिंग किसी विचार में लीन थे। वेंकटरमण मंदिर गए और चंदन के लेप, फूलों, धूप और दीपक से पूजा में लीन हो गए।

जब कलिंग मंदिर लौटे, तो पूजा लगभग समाप्त हो चुकी थी। वेंकटरमण आरती की बाती जला रहे थे। उनके बाएं हाथ में एक छोटी घंटी थी। कलिंग को देखकर उन्होंने कहा, 'तुम सही समय पर आए हो। मैं आरती करूंगा। तुम बाहर आँगन में घंटी बजाओ।' घंटी सचमुच बहुत बड़ी थी। उसे बजाना एक अनोखा अनुभव था: घंटी के सिरे पर बंधी रस्सी को पकड़कर तब तक खींचना जब तक कि घंटी अंदरूनी किनारे से न टकरा जाए। उन्होंने पूरी ऊर्जा से घंटी बजाई, जब तक कि वेंकटरमण ने उन्हें रुकने के लिए नहीं कहा। अंत में, उन्होंने वेंकटरमण द्वारा अर्पित आरती को छुआ और फूलों को अपने हाथ में थाम लिया। वेंकटरमण एक इस्पाती धातु का पात्र

लाए और बोले, ‘तुम्हें प्रसाद ग्रहण करना है। जाओ, वहाँ से पलाश का पत्ता काटकर ले आओ।’

‘प्रसाद में क्या है?’

'उबली हुई हरी मूंग दाल, कसा हुआ नारियल, गुड़।'

कलिंग बाहर निकले, पास के पेड़ से पलाश का एक बढ़िया पत्ता तोड़ा, उसे कल्याणी के पानी से धोया, अपने रुमाल से पोंछा और वापस आ गए। वेंकटरमण ने पहले उसमें हरी मूंग भरी और फिर ऊपर से कसा हुआ नारियल और गुड़ छिड़का। कलिंग ने सिर्फ उबली हुई मूंग ही मुंह में डाली और पूछा, 'इसमें काली मिर्च है, है ना?'

'हाँ।'

‘देखो, ये तो बहुत स्वादिष्ट है। पश्चिमी देशों में लोग हमारी तरह मिर्च नहीं खाते। वे काली मिर्च खाते हैं। मिर्च शरीर के लिए अच्छी नहीं होती। मेरी माँ ने कल और परसों जो शोरबा परोसा था, मैं उसे खा नहीं पाई। मुझे उनसे कहना चाहिए कि अब से वो उसमें काली मिर्च डालें।’

‘आपको उस देश का खाना खाने की आदत है। यहां के स्वाद की आदत पड़ने में आपको कुछ महीने लगेंगे।’

उबले हुए चने खाने के बाद, वेंकटरमण ने उन्हें कुछ और चने परोसे।

‘क्या तुम इसे हर रोज इसी तरह तैयार करते हो?’ कलिंग ने पूछा।

'रोज उबले हुए चने ही नहीं होते। कभी-कभी अनाज-सब्जी का सलाद या भीगे हुए अनाज होते हैं। कभी-कभी सांभर-चावल या दही-चावल भी होते हैं। अगर घर में कोई दिक्कत हो तो मैं सिर्फ नारियल ही खा लेती हूँ।'

‘आप प्रतिदिन प्रसाद का क्या करते हैं?’

‘आम तौर पर, कुछ लोग पूजा के समय यहाँ फल और नारियल चढ़ाने आते हैं। मैं उन्हें दे देता हूँ। नहीं तो, मैं कुछ फल सामने बसवन्ना के पास पक्षियों के लिए रख देता हूँ। मैं एक निवाला खा लेता हूँ और बाकी घर ले जाता हूँ।’

इसके बाद वेंकटरमण ने मंदिर का दरवाजा बंद किया और घर चले गए। कलिंग कल्याणी से नीचे उतरने के बाद बाईं ओर स्थित तलहटी की भूमि का निरीक्षण करते हुए घूमते रहे। दोपहर हो चुकी थी जब वे घर लौटे।

शाम को कलिंग अग्रहारा गए और शानुभोगा से कलेनाहल्ली और उसके तलहटी क्षेत्र के नक्शे प्राप्त किए। अगले दिन वे बैलगाड़ी से तालुक गए और वहाँ से मोटरगाड़ी से जिला केंद्र पहुँचे। दोपहर एक बजे उपायुक्त अपने कार्यालय में मौजूद थे। जैसे ही उन्होंने भेजा गया उनका विजिटिंग कार्ड देखा, उन्होंने तुरंत उन्हें साक्षात्कार के लिए आमंत्रित कर दिया: के. कलिंग, बीएससी; एम.एस. (कृषि) ओहियो; डी.ए.एच. (यूएसए)। कलिंग ने टाई और टोपी के साथ पूरा सूट पहना हुआ था।

साहब से कुछ औपचारिक बातचीत करने और सिगरेट पीने के बाद, कलिंगा ने अपने साथ लाया हुआ नक्शा मेज पर फैलाया, उन्हें विवरण दिखाते हुए कहा: "वास्तव में, यह एक खेत था जिस पर खेती की जा रही थी। जब मैं विदेश में था—क्योंकि इसकी देखरेख करने वाला कोई नहीं था, मेरे दादाजी ने इसे बिना कोई फसल काटे ऐसे ही छोड़ दिया था। ये कर रसीदें इस बात का प्रमाण हैं कि यह पिछले पच्चीस वर्षों से कृषि भूमि थी। कृषि भूमि के बीच से सड़क गुजरने के कारण मुझे भारी नुकसान हुआ है।"

'आपके नुकसान का अनुमान क्या है?'

'अगर हम सड़क किनारे पेड़ों द्वारा भविष्य में घेरी जाने वाली जगह का हिसाब लगाएं, तो कुल छब्बीस एकड़ जमीन का नुकसान हो चुका होगा। यह हिसाब सिर्फ जमीन तक ही सीमित नहीं है। जो जमीन अब तक एक ही खेत में थी, वह अब दो हिस्सों में बंट गई है। साथ ही, चूंकि बीच में एक सार्वजनिक सड़क बन गई है, इसलिए दोनों तरफ की फसलों की कोई सुरक्षा नहीं है।'

'मतलब, आप किस मुआवजे की मांग करने की योजना बना रहे हैं?'

मैं एक किसान हूँ—इस धरती का बेटा हूँ। अगर आप मुझे सिर्फ़ पैसा मुआवज़ा के तौर पर देंगे, तो इसका कोई फ़ायदा नहीं होगा। इसके बजाय, अगर सरकार मुझे ज़मीन दे, तो मैं फ़सल उगाऊँगा। इससे मेरा नुकसान भी पूरा हो जाएगा। देश को भोजन भी मिलेगा।'

ये शब्द सुनकर उपायुक्त प्रसन्न हुए। कलिंगा ने कहा, "मैं खेती की वैज्ञानिक पद्धति सीखने के एकमात्र उद्देश्य से अमेरिका गया था। विदेश में अपने चार वर्षों के दौरान, मैंने न केवल कृषि बल्कि पशुपालन का भी अध्ययन किया। लेकिन जब मैं लौटा, तब तक मेरी खेती योग्य ज़मीन बंजर हो चुकी थी और बर्बाद हो चुकी थी। अब मैं क्या करूँ?"

‘यह देश के लिए शुभ संकेत है कि आप जैसे शिक्षित लोगों ने खेती करने का विकल्प चुना है। चलिए देखते हैं, क्या कोई और उपयुक्त भूमि है जो आपको दी जा सकती है?’

नक्शे की ओर इशारा करते हुए कलिंगा ने कहा: 'पहाड़ियों की तलहटी में यह ज़मीन देखिए? यह न केवल मेरी मौजूदा ज़मीन के पश्चिम में पड़ती है, बल्कि खेती के लिए भी उपयुक्त है। इसका क्षेत्रफल लगभग सत्तर एकड़ है। अगर मुझे यह ज़मीन मिल जाए तो मेरे लिए बहुत सुविधाजनक होगा। लेकिन फिर भी, इसे विकसित करने के लिए मुझे कम से कम बीस हज़ार का निवेश करना होगा।'

उपायुक्त ने कहा कि ऋण स्वीकृत हो जाएगा। उन्होंने कलिंगा को निर्देश दिया कि वे अपनी अपील एक आवेदन पत्र के रूप में लिखें और उसे टाइप करवा लें। फिर उन्होंने कहा: ‘देखिए, सरकार ने कृषि भूमि के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की ऋण योजनाएँ बनाई हैं। ब्याज दर भी कम है। जब आपको यह भूमि मिल जाए, तो ऋण के लिए आवेदन करें। आपको आसानी से मिल जाएगा।’

फिर उन्होंने अमेरिका में जीवन और उससे संबंधित अन्य विषयों के बारे में कुछ प्रश्न पूछे। उनके छोटे भाइयों में से एक तीन महीने में अमेरिका जाने वाला था। उन्होंने उस देश के खान-पान और पहनावे के बारे में कुछ प्रश्न पूछे। वह भी ओहियो विश्वविद्यालय में पढ़ने वाला था।

‘आप चिंता न करें। मेरे वहां कई दोस्त हैं। मेरे रिश्तेदार भी हैं। मैं उन्हें पहले ही एक पत्र लिख दूंगा। वे सुनिश्चित करेंगे कि आपका भाई आराम से बस जाए,’ कलिंगा ने आश्वासन दिया।

उन्होंने वादा किया, ‘आज ही जमीन के लिए आवेदन जमा कर दीजिए। अगर आप चाहें तो मैं खुद उसका मसौदा तैयार करवा लूंगा। फिर उसे अमलदार और उसके बाद शेखदार के पास भेजा जाएगा, जो मौके का मुआयना करने आएंगे। उनकी रिपोर्ट मिलने के बाद मैं आदेश जारी कर दूंगा।’

5

कलिंग ने अपने गौशाला में सभी गायों का निरीक्षण किया। कुल साठ गायें थीं। लेकिन उनमें से केवल बारह ही दूध दे रही थीं। दस गर्भवती थीं। तेरह अन्य ऐसी अवस्था में

थीं कि बैल के साथ संभोग करने पर वे गर्भवती हो जातीं। शेष तेईस गायें, जिन्होंने जीवन भर बछड़ों को जन्म दिया था और दूध पिलाया था, अब बूढ़ी हो चुकी थीं।

बैलों में से केवल आठ जोड़े ही वास्तव में काम करने की स्थिति में थे। तेरह बैल, जो अभी भी चार दांत वाले थे, अभी तक पूरी तरह से जवान नहीं हुए थे। शेष बत्तीस बैल पूरी तरह से बूढ़े हो चुके थे और खेती का काम करने की स्थिति में बिलकुल नहीं थे। इन तेईस बूढ़ी गायों और बत्तीस बैलों—कुल पचपन पशुओं—ने कितनी घास खाई होगी? उनकी देखरेख करने वाले नौकरों ने कितना श्रम किया होगा? कलिंग ने सोचा। अगली बार जब वह तालुक गया, तो कलिंग की मुलाकात पशु व्यापार में लगे एक मुसलमान से हुई, उसने उसे बुलाया और सभी पचपन पशुओं को पंद्रह रुपये प्रति पशु की दर से बेच दिया।

उनके खानदान में मवेशी बेचना कोई नई बात नहीं थी। न केवल बड़े गौड़ा के जीवनकाल में, बल्कि उनके पूर्वज भी गाय, बैल और सांड बेचा करते थे। वे अपने खेत में दो बाली वाली मक्का बोते थे और युवा सांडों को कोमल लेकिन मजबूत मक्का खिलाते थे ताकि वे ताकतवर और बड़े हो जाएं, और फिर उन्हें मवेशी मेले में बेच देते थे: यह उनके खानदान में प्रचलित प्रथा थी। वे दूध देने वाली गायों को भी अच्छे दाम पर बेचते थे। लेकिन उनके गांव में कोई भी बूढ़ा मवेशी, चाहे वह बैल हो या गाय, नहीं बेचता था। इसके अलावा, भला कोई ऐसे मवेशी क्यों खरीदेगा जो न तो काम कर सकते हैं और न ही दूध दे सकते हैं? जो उन्हें जवानी में खरीदता था और उनसे काम करवाता था या उनका दूध पीता था, उसे बुढ़ापे में उनकी देखभाल उसी तरह करनी पड़ती थी जैसे कोई अपने माता-पिता की देखभाल करता है। लेकिन हाल ही में, कुछ गांवों ने बूढ़े मवेशियों को मुसलमानों को बेचना शुरू कर दिया था। जो लोग उन्हें खरीदते थे, वे उन्हें मारकर और उनका मांस और चमड़ा बेचकर मुनाफा कमाते थे।

जब कलिंग ने एक ही दिन में अपने सारे पचपन मवेशी बेच दिए, तो तैयव्वा को कुछ समझ नहीं आया। लेकिन शाम को जब उसने देखा कि गौशाला आधी खाली है, तो उसे शक हुआ। जब उसने अपने बेटे को इशारे से पूछा कि क्या बात है, तो उसने भी इशारे से जवाब दिया, 'कुछ नहीं, तुम अंदर जाओ।' तैयव्वा खुद को रोक नहीं पाई। वह इशारों से कुछ कहती रही। लेकिन कलिंग ने कुछ नहीं कहा। वह नहीं मानी। वह सीधे यांगता के घर गई और इशारे किए। यांगता सब समझ गया। इसके

अलावा, उसने उसी दोपहर अपने घर के लड़कों से सुना था कि मुसलमान ने बड़े गौड़ा की गौशाला से मवेशियों का एक बड़ा झुंड चुरा लिया है।

फिर यांगता कलिंग के घर आया और पूछा: 'भाई, ये क्या बात है, क्या कोई कसाई को मवेशी देता है?'

'आप कैसे कह सकते हैं कि वह कसाई है?'

'कसाई के अलावा बूढ़े मवेशियों को और कौन खरीदता है?'

ऐसा नहीं था कि कलिंगा इस मामले से अनभिज्ञ थे। लेकिन उन्होंने यह नहीं सोचा था कि बाहरी लोग उनसे इस तरह सवाल करेंगे। हालांकि, जब उन्हें पता चला कि उनकी अपनी मां ने बाहर जाकर न्याय दिलाने के लिए बाहरी लोगों को बुलाया है, तो वे बेहद क्रोधित हुए। लेकिन बिना कुछ दिखाए उन्होंने कहा: 'अब सब खत्म हो गया है, इसे यहीं छोड़ दो।'

यांगता ने तर्क दिया, 'हम इसे कैसे होने दे सकते हैं? क्या आप अपने ही गौड़ा के मवेशियों को सिर्फ इसलिए दे देंगे क्योंकि वह आपको कुछ रुपये दे रहा है? अगर बड़े गौड़ा वहां होते, तो क्या वे इसकी अनुमति देते?'

'यह सिर्फ इसकी कीमत का सवाल नहीं है। उस घास की कीमत क्या है जिसे यह रोजाना मुफ्त में खाता था और बर्बाद करता था?'

यांगता एक मिनट तक कोई जवाब नहीं सोच पाया। उसने कभी यह नहीं सीखा था कि दूध न देने वाली गाय या बूढ़ी गाय द्वारा खाए जाने वाले घास की कीमत कैसे निकाली जाती है। भला परिवार के सदस्यों के खाने की कीमत कौन तय करता है? उसने कहा: 'यह तो अच्छा सवाल है। तुम्हारी माँ बूढ़ी हो रही है। कुछ दिनों में तो वो भी काम नहीं कर पाएगी। तब क्या तुम उसके खाने की कीमत तय करोगे?'

अब कलिंगा को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। ऐसा नहीं था कि उसने गाँव के हर व्यक्ति से मवेशियों के बारे में यह बहस न सुनी हो। बचपन से ही उसने ये बातें अपने घर के अंदर और बाहर, यहाँ तक कि जोई परिवार के घर में भी सुनी थीं, जहाँ उसने खाना खाया था। लेकिन अमेरिका जाने के बाद उसके विचार बदल गए थे। हालाँकि वह जानता था कि अगर वह अपने विचार स्पष्ट रूप से भी व्यक्त करे तो भी गाँव वाले उसे नहीं समझेंगे, फिर भी उसने कहा: 'क्या आप कह रहे हैं कि एक ही बात इंसानों और मवेशियों दोनों पर समान रूप से लागू होती है? अगर मवेशी इंसानों के काम के लिए नहीं हैं, तो वे किसलिए हैं?'

यांगता इन शब्दों को सुनकर स्तब्ध रह गया। उसने कभी इस प्रश्न पर विचार नहीं किया था कि क्या पशु केवल मानव उपयोग के लिए ही होते हैं, या मनुष्य पशुओं के उपयोग के लिए जन्म लेते हैं, या कोई व्यक्ति केवल दूसरे के उपयोग के लिए ही जन्म लेता है। जैसे घर में जन्मा लड़का खेत में काम करता है, वैसे ही युवा बैल भी खेत में काम करता है। जैसे माँ अपने बच्चे को दूध पिलाती है, वैसे ही गाय मनुष्य को दूध पिलाती है। जैसे लड़का और माँ भोजन करते हैं, वैसे ही बैल और गाय घास खाते हैं। इन सब में, किसे किससे लाभ होता है? उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या उत्तर दे। उसने कहा: 'तुम पढ़े-लिखे हो। तुम्हें हम जैसे साधारण ग्रामीणों को धर्म और कर्म के बारे में बताना चाहिए। नहीं तो, अगर तुम खुद ऐसा करोगे, तो तुम्हारा कुल नहीं बचेगा। तमीज़ से रहो!'

हालांकि कलिंग इन शब्दों से बहुत क्रोधित हुए, लेकिन उन्होंने इसे अपने शब्दों में नहीं दिखाया। गाँव के लोग ऐसे ही होते हैं। उनमें सोचने-समझने की क्षमता नहीं होती। अगर कोई बात उनकी मान्यताओं के विरुद्ध कही जाए, तो वे अभद्र भाषा में जवाब देते हैं। इसलिए उन्होंने बस इतना ही कहा: 'ठीक है, मेरे भाई यांगता। तुम अपने घर के कामों पर ध्यान दो, मैं अपने घर के मामले देख लेता हूँ।'

'क्या मैं तुम्हारे घर से कुछ चुराने आया हूँ? मैं यहाँ कुछ अच्छी सलाह देने आया हूँ, और ये आदमी "तुम्हारा घर और मेरा घर" कहकर हमारे बीच झगड़ा करवा रहा है। तुम्हारा घर? तुम्हारा घर कौन सा है? मैं पूरे गाँव को बता दूँगा कि इस आदमी ने अपने मवेशी कसाई को बेच दिए हैं और ये सुनिश्चित करूँगा कि कोई भी तुम्हारे घर न आए। मैं चुप इसलिए हूँ क्योंकि ये बड़े गौड़ा का घर है—समझ लो! मेरे किसी भी नाजायज बच्चे को तुमसे डर नहीं लगेगा क्योंकि तुम पढ़े-लिखे हो,' गुस्से में यांगता ने कहा और चला गया। उसकी उम्र लगभग पचास के करीब थी। बड़े गौड़ा की मृत्यु के बाद, गाँव में उससे बड़े तीन और लोग थे, लेकिन उनमें से कोई भी उतना ज्ञानी या जानकार नहीं था। इसके अलावा, बड़े गौड़ा के बाद उसका गौशाला गाँव में सबसे बड़ा था। स्वाभाविक रूप से, गाँव का नेतृत्व उसे ही मिलना चाहिए था। कलिंग की उम्र क्या थी? शायद अट्ठाईस। यांगता का एक बेटा है जो अट्ठाईस साल का है।

कलिंगा बेहद निराश था। लेकिन उसने अपने गहरे विश्वास के सहारे खुद को दिलासा दिया। तयाव्वा शेड में गई और हर एक जानवर का बारीकी से निरीक्षण किया। पुण्यकोटी नस्ल के तीन जानवर उन पशुओं में शामिल थे जिन्हें उस सुबह दान

में दिया गया था। कलिंगा ने इन्हें भी उसी कसाई को बेच दिया था। उसकी आँखों में न केवल दुख के आँसू थे, बल्कि उसे यह आशंका भी सता रही थी कि कहीं उसके बेटे के साथ कुछ बुरा न हो जाए। वह गई, उस पलंग के सामने खड़ी हुई जिस पर उसका बेटा बैठा था और उसने इशारों में अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। लेकिन ऐसी कौन सी नई बात है जो यांगता ने पहले ही न कही हो? कलिंगा ने सोचा और उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। इन भावनाओं के साथ-साथ उसे इस बात का भी डर सता रहा था कि उसी ने उस अजनबी यांगता को बुलाया था और उसे डांट पड़वाई थी।

6

एक महीने के भीतर, तलहटी में स्थित सत्तर एकड़ भूमि कलिंग के नाम कर दी गई। सड़क के पश्चिम में स्थित साठ एकड़ भूमि को मिलाकर यह एक सौ तीस एकड़ की उपजाऊ भूमि बन गई। इस कार्य के सिलसिले में तालुक और जिला कार्यालयों के दौरे के दौरान, उन्हें पता चला कि उनके दादा द्वारा निर्मित मंदिर और कल्याणी से संबंधित अभिलेखों पर कोई निर्णय नहीं हुआ है। कानून की जानकारी न होने के कारण, दादा ने सरकारी भूमि पर मंदिर और कल्याणी का निर्माण कराया था और उसके चारों ओर पेड़ भी लगवाए थे। जब यह मामला सरकार के संज्ञान में आया, तो इसकी जांच की गई। शेखदार ने बड़े गौड़ा से रिश्वत लेकर उसे चुपचाप स्वीकार कर लिया। उन्होंने केवल अभिलेखों को रोक दिया, मामले का समाधान नहीं किया।

कलिंग ने सोचा कि जो कुछ भी हुआ वह अच्छे के लिए हुआ और उन्होंने सरकार से उस भूमि को उन्हें सौंपने के लिए आवेदन किया जिस पर मंदिर और कल्याणी स्थित थे। यह भूमि दरखास्त के माध्यम से दी जा सकती थी—एक सरकारी विलेख जिसके द्वारा गैर-कृषि भूमि को कृषि प्रयोजनों के लिए हस्तांतरित किया जाता है। उन्होंने अपने परिचित उपायुक्त से कहा, 'मेरे दादाजी ने धर्म के लिए मंदिर का निर्माण किया था। हम इसके सभी खर्चों का ध्यान रख रहे हैं। हमने इसके पुजारी को भूमि का अनुदान भी दिया है। कृपया वह भूमि दरखास्त के माध्यम से हमारे नाम पर आवंटित कर दें।'

कलिंग ने सरकार को दरखास्त शुल्क के रूप में दो सौ रुपये का भुगतान करके उस इलाके का स्वामित्व प्राप्त कर लिया। इसका अर्थ यह भी था कि लंबित मामला

सुलझ गया। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र लगभग तलहटी में नव अधिग्रहीत भूमि से जुड़ा हुआ था।

इसके बाद उन्होंने अपनी पुश्तैनी सारी ज़मीन सरकार के पास गिरवी रख दी और खेती-बाड़ी के विकास के लिए पच्चीस हज़ार रुपये का कर्ज़ लिया। उन्होंने पहाड़ी की तलहटी के बीचोंबीच एक छोटा सा घर बनवाया और उस पर जस्ता की चादर बिछाई। खिड़कियाँ और दरवाज़े लगवाने और बाकी सभी ज़रूरी काम पूरे करने के बाद उन्होंने लोगों को बताया कि वे तीन-चार दिनों के लिए शहर जा रहे हैं।

घर के रोज़मर्रा के काम पहले की तरह ही चल रहे थे। नौकर खेत और दलदली ज़मीन की जुताई करते थे और हमेशा की तरह मक्का बोते थे, जो मौसम की पहली बारिश की फसल होती थी। मानसून में खेत की जुताई करनी पड़ती थी। पहली बारिश अभी शुरू ही हुई है। कलिंगा एक दिन भी खाली नहीं बैठते। वे खेत में घूमते हैं। चरागाहों में जाते हैं। तालुक का दौरा करते हैं। पिछले एक महीने से गाँव के पास बनी नई सड़क पर मोटर सेवा रोज़ चल रही है। वे हर दो-तीन दिन में एक बार उसमें आना-जाना करते हैं, मानो वह सड़क और मोटर उन्हीं के लिए बनी हो और चल रही हो। सूट और टोपी पहने हुए, अगर वे हाथ बढ़ाते हैं, तो खाकी वर्दी पहने मोटर का मालिक उन्हें रोककर आगे की सीट पर बिठा देता है। ग्रामीणों में कलिंगा के प्रति न केवल आश्चर्य, बल्कि भय और सम्मान भी पैदा हो गया है। और खासकर जब उन्हें पता चला कि उन्होंने सरकार से पहाड़ियों के पूर्व में स्थित पूरी ज़मीन अधिग्रहित कर ली है, तो उनमें हैरानी और भी बढ़ गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिला प्रमुख उसे कुर्सी पर बैठाते हैं - अग्रहारा के शानुभोग ने स्वयं यह बात बताई थी।

चार दिन बाद, कलिंगा एक ट्रैक्टर लेकर आया। पहले दो-तीन दिन उसने खुद ही ट्रैक्टर चलाया और पहाड़ियों की तलहटी और सड़क के उस पार के चारागाह की जुताई की। फिर एक चालक आया और उसके साथ काम करने लगा। ट्रैक्टर की बुड-बुड बुड-बुड की आवाज़ न सिर्फ पूरी तलहटी में बल्कि आसपास के गांवों में भी सुनाई देती थी। वह बिना बैलों की मदद के ही जुताई करता रहता था। उसके बड़े-बड़े लोहे के दांत ज़मीन को फाड़ते हुए मिट्टी के ढेले उखाड़ देते थे, जो किसी आदमी की बाहों की चौड़ाई के बराबर होते थे। चाहे कितनी भी देर तक जुताई करे, वह कभी थकता नहीं। यहां तक कि उसे चलाने वाला भी लाल सीट पर आराम से बैठकर ही

पहिया घुमाता है। उसके सिर पर धूप की तेज़ गर्मी से बचने के लिए मोटे कपड़े की छत है।

जब कलिंगा ने पहली बार ट्रैक्टर चलाना शुरू किया, तो उसके गौशाला के मवेशी सड़क के पूर्व में स्थित चरागाह में चर रहे थे। ट्रैक्टर की तेज़ आवाज़ से भयभीत होकर, अपरिचित जानवर इधर-उधर भागने लगे। निंगा, जो उनकी चराई की देखरेख कर रहा था, लाख कोशिश करने के बावजूद उन्हें पकड़ नहीं पाया। लेकिन फिर वे डरी हुई गायें कहाँ भागतीं? वे चरागाह में अलग-अलग दिशाओं में बिखर गईं और अंत में खेतों और दलदलों को रौंदते-लाड़ते गौशाला पहुँच गईं। तैयव्वा भी दोपहर में इतनी जल्दी मवेशियों को लौटते देखकर हैरान रह गई। हालाँकि वह भी इस असामान्य आवाज़ को सुन सकती थी, लेकिन उसने सोचा कि यह सड़क पर आई किसी नई तरह की मोटर की आवाज़ है। वह भी एक दिन मोटर देखने सड़क पर गई थी। उसने उसकी गर्जना सुनी थी और उसे इस मोटर की गड़गड़ाहट से समानता महसूस हुई थी। पहले तो उसने सोचा कि मवेशी इसे नहीं समझेंगे। लेकिन अचानक उसके मन में एक अलग विचार आया: हम कैसे समझ सकते हैं जो मवेशी नहीं समझ सकते? वे तो मानो भगवान हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें भविष्य में होने वाली हर बात का ज्ञान है। लेकिन भविष्य में क्या होगा? यह वे उसे बताने में असमर्थ थे।

कुछ दूर खड़े लोगों की आँखों में सिर्फ़ भय झलक रहा था, और उनमें से कुछ के शरीर और पैर काँप रहे थे। तयाव्वा यह नहीं समझ पा रही थी कि क्या वे भविष्य में आने वाली किसी बुरी घटना का संकेत दे रहे थे या फिर वे सिर्फ़ डर के मारे काँप रहे थे।

ट्रैक्टर चलाने वाले का नाम जमाल था। नौकर के ज़रिए उसके लिए खाना भेजा जाता था। दिन भर ट्रैक्टर चलाने के बाद, वह उसे नए बने घर के एक कोने में बने शेड में खड़ा कर देता था, जहाँ वह रात को सोता भी था। लेकिन वह गाँव में बहुत कम ही कदम रखता था। गाँव में उसका रुतबा बहुत ऊँचा था। एक तरफ़ वे ग्रामीण थे जो दिनभर अपने कंधों पर हल उठाकर बैलों के पीछे चलते थे, सिर्फ़ आधा एकड़ ज़मीन जोतने के लिए, और दूसरी तरफ़ यह सारथी था, जो पैरों में बूट पहने बैठा, एक राक्षसी जबड़े वाली मशीन चला रहा था, जो आगे बढ़ते हुए बुड-बुड की आवाज़ करते हुए मिट्टी के बड़े-बड़े टुकड़े उखाड़ देती थी! वह खाने की थाली तक नहीं धोता था। हल से खेती करने वाले दूसरे नौकरों को यह काम करना पड़ता था।

सात-आठ दिन बाद एक और मशीन आई। उसके साथ खाकी कपड़े पहने कुछ मजदूर भी आए। तब तक कलिंग ने मंदिर के पास कल्याणी नदी के किनारे एक छोटा सा ईंट का घर बना लिया था। इस मशीन को उसी घर के अंदर लगाया गया। मजदूरों ने मशीन से जुड़ी एक मोटी पाइप को कल्याणी नदी के पानी में डुबो दिया। जब मशीन चालू की गई, तो उससे भी ट्रैक्टर की तरह बुड-बुड-बुड की आवाज आने लगी। कल्याणी नदी का पानी तुरंत ऊपर उठा और एक बड़े नल से बहने लगा। लगता है उस मशीन का नाम सिंचाई पंप था। उस गांव में कोई भी उसका उच्चारण नहीं कर पाता था। वे बस 'पंप' कहकर रुक जाते थे।

हर दिन, कलिंग अपने नौकरों से नए बड़े खेत में काम करवाता था। पानी के बहाव के लिए नहरें खोदी गईं। कुछ जगहों पर लोहे के पाइप ज़मीन के अंदर गाड़ दिए गए। सड़क से मवेशियों को आने से रोकने के लिए नुकीले तारों की बाड़ लगाई गई। नई सड़क पर केवल बोरियों से लदी मोटरें चलती थीं। ऐसा लगता है कि इन मोटरों का नाम लॉरी था। मवेशियों के गोबर की जगह, बोरियों में भरी हुई विदेशी खाद से भरी सफेद रंग की बोरियाँ लॉरियों में आती थीं। वह क्या उगाएगा? रागी, धान या कोई विदेशी फसल? गाँव वाले आश्चर्य से सोचते। अगर कोई पूछता, तो कलिंग कहता, 'तुम खुद देख लोगे।' उसके बड़े खेत का नाम 'फार्म' था। गाँव वाले इसका उच्चारण 'पा-रा-म' करते थे, जो लगभग सही था।

खंड 9

1

वेंकटरमण को अग्रहारा के माध्यमिक विद्यालय में आए तीन साल बीत चुके थे। इस बीच, उनके ससुर का तबादला दूसरे तालुक में हो गया था। अब उन्हें भी तबादला हो गया था और एक महीने के भीतर जाना था। आखिर एक सरकारी कर्मचारी एक ही जगह पर, वो भी अपनी जन्मभूमि में, कैसे रह सकता है? लेकिन अगर वेंकटरमण गांव छोड़ देते, तो पुण्यकोटी मंदिर में पूजा का क्या होता? यह सच था कि उन्हें वास्तव

में स्कूल में काम करके जीविका कमाने की ज़रूरत नहीं थी। आखिर बड़े कलिंग गौड़ा ने उन्हें वह ज़मीन क्यों दी थी, जिससे परिवार का भरण-पोषण आराम से हो सके?

फिर भी, वेंकटरमण ने निरीक्षक कार्यालय में अपना काम किया और अपना तबादला बसवनपुरा में करवा लिया, जो अग्रहारा के पास ही था। बसवनपुरा और अग्रहारा के बीच की दूरी मात्र एक मील थी। अग्रहारा का विद्यालय अब एक पक्का माध्यमिक विद्यालय था, जबकि बसवनपुरा में नया टाइप स्कूल हाल ही में स्थापित हुआ था। वेंकटरमण ने आने-जाने में आसानी के लिए एक साइकिल खरीदी। वह अपनी धोती घुटनों तक लपेट लेता था और झील के किनारे खेत में गिरने और घुटनों में चोट लगने के बाद आखिरकार उसने साइकिल चलाना सीख लिया।

वह प्रतिदिन सुबह पूजा करता रहा। हमेशा की तरह, मंदिर का दरवाजा खोलने से पहले, वह इस मंत्र का जाप करता और सामने के परिसर में लगी बड़ी घंटी को दस-बीस बार जोर से बजाता।

> Namo Gobhyah srimatibhyah sourabheyibhyah eva ca |
> नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ||
>
> गाय को प्रणाम, श्रीमती को प्रणाम, दिव्य गाय की पुत्री कामधेनु को प्रणाम,
> ब्रह्मा की पुत्री को प्रणाम, और परम पवित्र को प्रणाम।

जैसे ही घंटी की आवाज़ पहाड़ी से होते हुए आसपास के गांवों तक पहुंची, उसने मंदिर का दरवाज़ा खोला और अंदर-बाहर दोनों तरफ़ से धूल झाड़ने लगा। लेकिन कलिंगा द्वारा लाई गई दोनों मशीनें एक साथ बुद-बुद की आवाज़ कर रही थीं, मानो आपस में प्रतिस्पर्धा कर रही हों। अगर ट्रैक्टर पहाड़ियों की शांति भंग कर रहा था, तो कल्याणी के ठीक बगल में लगे डीज़ल-तेल पंप का शोर सीधे मंदिर के अंदर घुस रहा था। अब मंदिर की घंटी को डीज़ल मशीनों के शोर से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही थी। इस शोरगुल के बीच भावपूर्ण और श्रद्धापूर्वक मंत्रों का जाप करते हुए पूजा करना उसके लिए असंभव होता जा रहा था।

वेंकटारमणा को कलिंगा के खेत में हुई हर प्रगति की जानकारी मिलती रहती थी। कलिंगा को पहाड़ी की तलहटी में स्थित ज़मीन का मालिकाना हक मिलने की खबर

सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए। इतनी विशाल उपजाऊ भूमि की घास अब इतने बड़े गौशाला की गायों के लिए उपलब्ध थी, यह किसी के लिए भी खुशी की बात थी। लेकिन जब कलिंगा ने ट्रैक्टर से उस ज़मीन की जुताई शुरू कर दी तो वे नाराज़ हो गए। उन्होंने सीधे कलिंगा से पूछा, "आपके पास गाँव के पास पहले से ही इतनी ज़मीन है कि आप नौकरों का भरण-पोषण कर सकते हैं और चार और परिवारों का पेट भर सकते हैं। फिर आप गायों के लिए बनी इस चरागाह भूमि पर खेती क्यों करवा रहे हैं?"

'क्यों, फसल उगाने के लिए।'

'गोमाता का भोजन छीनकर फसलें उगाने से तुम्हें क्या हासिल होगा? आखिर हमें भोजन तभी मिलता है जब गोमाता का पेट भर जाता है। है ना?'

'वेंकटरमण, तुम अभी भी मेरे परदादा के ज़माने में जी रहे हो। गायें न खाएँ तब भी हमारा पेट भर जाएगा। इस ट्रैक्टर को देखो। क्या बैलों के बिना भी ज़मीन जोती नहीं जा रही? इसी तरह, हम गोबर के बिना भी ज़्यादा पैदावार पा सकते हैं। तुम खुद ही देख लो कि मेरे पास जो विदेशी गोबर है उससे कैसी फसल होगी।'

वेंकटरमण के पास इसका कोई जवाब नहीं था। 'तो क्या गाय का अस्तित्व केवल खेती-बाड़ी के लिए ही है? अगर वह भी न हो, तो क्या आप कहेंगे कि गाय की अब कोई आवश्यकता नहीं है?'

कलिंग मन ही मन हँसा और बोला, "बस यही बात है! लेकिन दूध के लिए गायों की ज़रूरत तो ज़रूर पड़ेगी। हमें उनकी और भी अच्छी देखभाल करनी होगी। बस देखते रहिए कि मैं उनकी कितनी अच्छी देखभाल करता हूँ।"

इस उत्तर से वेंकटारमणा को तसल्ली मिली। आखिरकार, कलिंग ने अभी-अभी उनसे कहा था कि वे गायों की और भी अच्छी तरह देखभाल करेंगे—इतना ही काफी था।

लेकिन तभी उन्हें याद आया कि कलिंग ने पचपन बूढ़ी गायों और बैलों को मुस्लिम कसाई को बेच दिया था। इससे उन्हें बहुत दुख हुआ। उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्या ईश्वर ने उन्हें इससे कम कुछ दिया है? उन्होंने मन ही मन सोचा। जब वे लगातार दो दिन कलिनहल्ली गए उनसे इस बारे में बात करने के लिए, तो कलिंग वहां नहीं मिले।

एक सुबह, वेंकटरमण लगभग नौ बजे पूजा के लिए मंदिर पहुंचे। रविवार होने के कारण उनकी छुट्टी थी। मंदिर के अंदर झाड़ू लगाने और ज़मीन को पानी से धोने के बाद, उन्होंने चंदन का लेप निकाला। जब उन्होंने पूजा शुरू की, तभी एक तोप की 'धम्म!' ध्वनि पहाड़ी पर गूंज उठी। उन्हें तुरंत याद आया कि कलिंग हाल ही में एक तोप लेकर आए थे। पिछले कई दिनों से, वेंकटरमण तोप की 'बुड-बुड' ध्वनि के बीच मंत्रों से जुड़ी भक्ति की भावना को महसूस करने के लिए मानसिक रूप से संघर्ष कर रहे थे। और अब, तोप आ गई थी। क्या वे भी शिकार करना शुरू कर देंगे? लेकिन मंदिर के पास कौन शिकार करेगा? पक्षी? जानवर? यही सोचते हुए, उन्होंने यंत्रवत मंत्रों का जाप करते हुए पूजा समाप्त की।

आरती के समय कलिंग मंदिर में आए। उनके हाथ में बंदूक नहीं थी। उन्होंने खाकी रंग की निकर पहनी हुई थी, कमीज अंदर tucked थी और कमर पर चमड़े की मोटी बेल्ट थी। सिर पर टोपी ने उन्हें गर्मी से बचाया। जब वेंकटरमण ने आरती की थाली उनके सामने रखी, तो उन्होंने घी में डूबी जलती हुई बाती पर अपना हाथ फेरा। दिया गया फूल लेने के बाद उन्होंने पूछा, 'वेंकटरमण, क्या आप मुझे प्रसाद नहीं देंगे?'

‘आप इस तरह के सवाल क्यों पूछ रहे हैं? मैं पूजा के समय आने वाले सभी भक्तों को प्रसाद अवश्य दूंगा।’

‘सिर्फ प्रसाद ही नहीं। मुझे बहुत भूख लगी है। आज आपने क्या बनाया है?’

‘दही चावल। जाओ एक पत्ता ले आओ।’

वेंकटारमणा ने मंदिर के बाहर से लाए गए बड़े पलाश के पत्ते पर दही-चावल की दो बड़ी प्लेटें लगाईं। हरी मिर्च, करी पत्ते और कसा हुआ नारियल छिड़के हुए, गाय के दही से बने दही-चावल से स्वादिष्ट सुगंध आ रही थी। कलिंग के भरपेट खाने के बाद भी, बचा हुआ चावल दो और लोगों के लिए पर्याप्त था। वेंकटारमणा ने प्रसाद के रूप में बस एक मुट्ठी भर चावल लिया। बाहर जाकर, हाथ धोकर और वापस आकर, कलिंग ने पूछा: 'देखिए, इतने दिन हो गए। आप मेरे नए बने फार्महाउस में एक बार भी नहीं आए। क्यों?'

'हर दिन, पूजा के बाद मुझे स्कूल जाने की जल्दी रहती है।'

‘लेकिन आप शाम को आ सकते हैं। ऐसा लगता है कि आप गाँव आते हैं, घर आते हैं और शाम को कई बार मेरी माँ से बात करते हैं। आप फार्महाउस क्यों नहीं आए?’

‘मुझे देखने के लिए क्या है? विदेशी खाद की बोरियाँ, खेती के औजार... बस इतना ही, है ना?’

कलिंगा एक मिनट तक चुप रहे। वे मन ही मन सोचते रहे, फिर बोले: ‘देखो, हम बचपन से दोस्त हैं। क्या तुम्हें कम से कम यह जानने की जिज्ञासा भी नहीं है कि मैं क्या नया काम कर रहा हूँ? मेरे मामले में तुम लापरवाही क्यों बरत रहे हो?’

‘यह लापरवाही नहीं है। मैंने तो बस वही कहा जो सच था।’

‘वैसे भी आज रविवार है। देर से घर जाना ठीक है। नीचे उतरो और मेरे साथ आओ।’

वेंकटरमण ने प्रसाद के पात्र को अपने तौलिये में लपेटा, मंदिर का दरवाजा बंद किया, चाबी अपनी कमरबंद में रखी, अपने कंधे पर ओढ़ा हुआ कपड़ा इस तरह लपेटा कि वह उनके सिर को भी ढक ले और वे निकल पड़े। उन्होंने जूते नहीं पहने थे। कलिंग ने वे जूते पहने थे जो उन्होंने मंदिर के बाहर उतारे थे। वे कल्याणी नदी पार करके उस तरफ से नीचे उतरे जहाँ से पानी की पाइपें नीचे जाती थीं। पूरे खेत में बोई गई आलू की फसल अब अंकुरित हो रही थी। उस विशाल खेत में इधर-उधर कुछ नौकर फसल को पानी दे रहे थे। पहाड़ियों को पार करके फार्महाउस पहुँचने पर वेंकटरमण को उसका पूरा भीतरी भाग दिखाई दिया।

यह महज खेती के औजारों को रखने की झोपड़ी नहीं थी। न ही यह उतनी छोटी थी जितनी मंदिर जिस पहाड़ी पर बना था, उसकी ऊँचाई से दिखाई देती थी। एक तरफ ट्रैक्टर खड़ा करने के लिए एक अलग शेड था। दूसरी तरफ खेती के औजारों को रखने के लिए एक बड़ा गोदाम था। ठीक उसके बगल वाले हिस्से में सुसज्जित रहने के कमरे थे। छत के अंदर पतले लकड़ी के तख्ते लगे थे। रहने के कमरों में एक बरामदा और तीन कमरे थे; रसोई और स्नानघर पीछे की तरफ थे। घर में नल और पानी की टंकी थी। बरामदे में सोफे के अलावा, कमरों में स्प्रिंग वाले पलंग थे। कलिंग द्वारा एक-एक करके सब कुछ दिखाने के बाद, वेंकटरमण ने पूछा: 'आगे चलकर, क्या आप अपने परिवार को गाँव से यहाँ स्थानांतरित करेंगे? यह आपको रास आएगा। लेकिन क्या तैयव्वा यहाँ अकेले ऊब नहीं जाएगी?'

‘बैठो, चलो बात करते हैं’, कलिंग ने सोफे की ओर इशारा करते हुए कहा। लेकिन वेंकटरमण अभी भी पवित्र वस्त्र पहने हुए थे और उनके हाथ में प्रसाद था, इसलिए वे लकड़ी की कुर्सी पर बैठ गए। सामने वाली दीवार पर एक तोप टंगी हुई थी। पूजा

करते समय उसकी आवाज़ याद करते हुए वेंकटरमण ने पूछा: 'आपने यह तोप किसलिए ली—शिकार के लिए? पुराने समय में, ऐसा लगता है कि इस पहाड़ी पर बाघ और लकड़बग्घे हुआ करते थे। ऐसा लगता है कि आपके पिता की मृत्यु के बाद से एक भी जंगली जानवर इस तरफ नहीं आया है। मैं प्रतिदिन पूजा के लिए वहां जाता हूं। मैंने एक भी जानवर नहीं देखा। आपने यह क्यों ली?'

'शिकार के लिए नहीं। मैं यहीं रहूंगा। एक अकेला परिवार दिन-रात यहीं रहेगा। लुटेरों का डर है। मैंने इसे अपनी सुरक्षा के लिए लिया है।'

जैसे ही वेंकटरमण ने 'तयव्वा...' कहा, कलिंग ने बीच वाक्य में ही उन्हें रोक दिया और कहा, 'तुम्हें अभी भी नहीं पता। मैंने किसी को नहीं बताया है। मेरी शादी अमेरिका में हुई है। मेरा एक आठ महीने का बेटा भी है। आज से पांच दिन बाद मेरी पत्नी और बच्चा दोनों हवाई जहाज से मुंबई आएंगे। मैं उन्हें लेने जाऊंगा।'

'हममें से किसी को कुछ पता नहीं था', वेंकटरमण ने कुछ कहना शुरू किया था, लेकिन वह वहीं रुक गया। हालांकि कलिंग दस मिनट तक उसे देखता रहा, लेकिन उसने आगे कुछ नहीं कहा।

तब कलिंग ने स्वयं पूछा: 'तुम चुप क्यों हो गए? क्या तुम्हें यह सुनकर खुशी नहीं हुई कि मेरी शादी हो गई है?'

'क्या मैं खुश नहीं होऊंगा? क्या मुझे खुशी नहीं होगी अगर आपकी शादी हो जाए और एल्डर कलिंग गौड़ा की वंश परंपरा आगे बढ़े?'

'तो फिर तुम चुप क्यों हो गए?'

'कुछ नहीं', वह फिर चुप हो गया। चाहे उसे पता न हो कि उसे क्या कहना है, या उसे लग रहा हो कि इस मामले में उसे कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है, या उसे कुछ भी बेतरतीब ढंग से कहना हो—लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, उसके मन में कुछ भी नहीं सूझा।

कलिंगा ने कहा: 'मुझे पता था कि गांव वाले इसे स्वीकार नहीं करेंगे। आप रूढ़िवादी हैं। इसके अलावा, आप गांव के पुरोहित हैं। फिर भी, आप मेरे दोस्त हैं। मैंने सोचा था कि खबर सुनते ही आप मुझे बधाई देंगे।'

मेरी शुभकामनाएं हमेशा आपके साथ हैं। जब भी मैं मंदिर में पूजा करता हूँ, मैं हमेशा प्रार्थना करता हूँ कि बड़े कलिंग गौड़ा का घर समृद्ध हो। लेकिन आप अपनी जाति से ही कोई उपयुक्त लड़की चुनकर उससे शादी कर सकते थे। आप पढ़े-लिखे

हैं। इन ग्रामीण परिवेश में थोड़ी भी पढ़ी-लिखी लड़की मिलना मुश्किल है। लेकिन मैसूर में तो अपनी जाति से भी पढ़ी-लिखी लड़कियाँ मिल जाती हैं। अगर ज़रूरत पड़ती, तो मैं खुद जाकर ऐसे परिवार से बात करता और आपके लिए एक लड़की तय कर देता।

'वेंकटरमण, अगर अमेरिका में किसी की शादी होती है, तो कोई भी लड़की के वंश या कुल के बारे में नहीं पूछता। खुले मन से, वे तुरंत बधाई देते हैं। ये सब जटिल पुराणों के बारे में हम सिर्फ इसी देश में सोचते हैं। आप तो रोज़ाना अंग्रेज़ी अख़बार भी पढ़ते हैं। क्या आप थोड़ी सी भी तरक्की नहीं कर सकते?'

'यह सिर्फ मेरे बारे में नहीं है। मैं कहना चाहता हूँ कि अगर हमें कोई ऐसी लड़की मिले जिसकी परवरिश हमारे जैसी ही परंपराओं का पालन करते हुए हुई हो, तो वह हमारे परिवार की परंपराओं, रीति-रिवाजों, धर्म और कर्म को आगे बढ़ाएगी। उदाहरण के लिए, अगले साल आने वाले संक्रांति त्योहार में पुण्यकोटी मंदिर में एक मेला आयोजित करना है। अगर आपको अपनी जाति की लड़की मिल जाती, तो वह व्रत रखती, पंचगव्य ग्रहण करती और पूजा-अर्चना व अन्य अनुष्ठान करती। वास्तव में, पति से अधिक पत्नी को गोमाता की पूजा करनी चाहिए। मुझे नहीं पता कि लाल देश से आई आपकी पत्नी यह सब करेगी या नहीं। उसकी जाति क्या है? क्या उस देश के सभी लोग ईसाई नहीं हैं?'

कलिंगा ने मुस्कुराते हुए कहा, "ये भी खेती-बाड़ी वाली जाति से हैं। ये लड़की मेरे साथ विश्वविद्यालय में कृषि विज्ञान की पढ़ाई कर रही थी। उसके पिता का एक बड़ा खेत है। उसे वहाँ काम करने का अनुभव और अभ्यास है। किसी भी पुरुष से कम नहीं, वो ट्रैक्टर पर बैठकर सुबह से शाम तक काम करती है। उसके काम करने का तरीका देखकर हमारे देश की महिलाओं को शर्म आनी चाहिए।"

'हो सकता है। लेकिन क्या हमारे गाँव में बहुत सी औरतें हल नहीं चलातीं और खेत जोतती नहीं हैं? क्या वहाँ औरतें बैलगाड़ी नहीं चलातीं? खरपतवार हटाने और पौधे लगाने का काम औरतें करती हैं या मर्द? मेरा कहने का मतलब यह है: आपकी पत्नी ने अपने देश की खेती-बाड़ी की विधि सीखी है। हमारी औरतें हमारी विधि का पालन करती हैं। अगर उन्हें सिखाया जाए कि कैसे करना है, तो हमारी वो औरतें जो बैलगाड़ी चलाती हैं और हल चलाती हैं, वो ट्रैक्टर भी चला सकती हैं। इसके अलावा, हमारी औरतें हमारी सभी परंपराओं, रीति-रिवाजों, धर्म और कर्म को जानती हैं।'

कलिंग को समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दें। लेकिन वेंकटरमण की बातों को बिना जवाब दिए स्वीकार करना भी उनके लिए संभव नहीं था। उन्होंने कहा, “आप जानते हैं, हमारे विचार अलग-अलग हैं। मतलब, हमारे नजरिए में अंतर है। ठीक है।”

वेंकटारमण कलिंग की बात नहीं समझ पाए। यह संस्कृत परंपरावादी, जो मात्र एक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक थे, यह नहीं समझ पाए कि 'ठीक है' का संदर्भगत अर्थ है, 'हमारी बात काफी हो गई, अब और कोई चर्चा नहीं।' बातचीत जारी रखते हुए उन्होंने कहा: 'देखिए, मैं आपको यह बताना चाहता था। लेकिन आप कभी उपलब्ध नहीं थे। आपको कल्याणी नदी में पंप नहीं लगाना चाहिए था और उसके पानी का उपयोग खेती के लिए नहीं करना चाहिए था। वह जल देवता के लिए है।'

‘क्यों? लगता है आपको जानकारी नहीं है। मेरे दादाजी के खिलाफ सरकारी जमीन पर बिना अनुमति के मंदिर बनाने के आरोप में जांच हुई थी और मामला दर्ज किया गया था। इसीलिए मैंने उचित कदम उठाकर उस जमीन को अपने नाम करवा लिया। मंदिर, कल्याणी, आसपास का सारा इलाका, सभी पेड़-पौधे, सब अब मेरी निजी संपत्ति हैं और इस फार्म का हिस्सा हैं। कल्याणी के पानी के इस्तेमाल में कोई कानूनी बाधा नहीं है।’

वेंकटरमण को अचानक लगा जैसे उन्हें कोई नया ज्ञान प्राप्त हुआ हो। उन्होंने कहा: ‘मैं कानून से संबंधित मामलों की बात नहीं कर रहा हूँ। एक तरह से, मुझे खुशी है कि यह भूमि आपकी है। लेकिन किसी को भी किसी मंदिर के संबंध में यह नहीं कहना चाहिए कि “यह मेरी है”। इसे कोई भी बनाए, मंदिर भक्तों का होता है।’

‘ठीक है। आपने कहा था कि मुझे पंप नहीं लगाना चाहिए था। क्यों?’

‘यह देवता का तीर्थ है—यह देवता के स्नान के लिए बनाया गया था। इसका उपयोग केवल भक्तों और पशुओं द्वारा ही इसके जल के पीने के लिए किया जाना चाहिए। जो भी इसे पिए, उसे यह भाव रखना चाहिए कि वह देवता को अर्पित किए गए तीर्थ, पवित्र जल का सेवन कर रहा है। आपको यहाँ पंप नहीं लगाना चाहिए था और इसे अपने कृषि कार्यों के लिए उपयोग नहीं करना चाहिए था। मैं अभी भी यही कह रहा हूँ। मैं स्वयं इस भूमि का निरीक्षण करूँगा और एक ऐसा स्थान ढूँढूँगा जहाँ पानी का अच्छा स्रोत हो। वहाँ एक कुआँ खोदें। आपको पर्याप्त पानी मिलेगा। उस पंप को हटाकर यहाँ लगाएँ।’

‘कल्याणी के पानी का उपयोग खेती के लिए करने से क्या नुकसान है?’

‘यह हानि का प्रश्न नहीं है। जो भी वस्तु देवता के लिए बनाई गई है, उसका उपयोग केवल देवता के कार्य के लिए ही होना चाहिए, किसी और चीज़ के लिए नहीं। आपके दादाजी ने इसे धर्म के कार्य के रूप में, एक पवित्र कर्म के रूप में बनवाया था। यदि आप इससे कोई लाभ उठाते हैं, तो इसका अर्थ होगा कि आपने उनकी पवित्रता का त्याग कर दिया है। इसके अलावा, यदि मंदिर पहाड़ियों, पर्वतों, नदी तटों और ऐसे अन्य स्थानों पर बनाए जाते हैं, तो वहां मनुष्यों के लिए उपयोगी कोई भी कार्य नहीं होना चाहिए। वे स्थान केवल भक्ति, पूजा और ऐसे ही अन्य कार्यों के लिए समर्पित होने चाहिए।’

‘मैंने भी इस तरह की बातें सुनी हैं। लेकिन मुझे बताओ’, कलिंगा ने सोफे पर सीधे बैठते हुए पूछा: ‘उस कल्याणी को बनाने में कितना खर्च आया?’

मुझे ठीक-ठीक नहीं पता कि इसमें कितना खर्च आया। बड़े गौड़ा धर्म के कार्यों को करते समय कभी हिसाब-किताब नहीं करते थे। हालांकि उन्हें यह बात पता थी, फिर भी उन्होंने कभी किसी और को नहीं बताई। मुझे पता है कि मंदिर और कल्याणी दोनों के निर्माण के लिए शिवलिंगाचारी और पत्थर के कारीगरों को कितना भुगतान किया गया था। बैल, गाड़ियां, पुरुष और महिला मजदूर, सभी ने मुफ्त में काम किया। अगर हम इन सबका हिसाब लगाएं, तो मेरे अनुमान के अनुसार अकेले कल्याणी पर ही कम से कम आठ हजार रुपये खर्च हुए होंगे।

‘आठ हजार रुपये पर सालाना ब्याज कितना होगा? बैंक की दरों के हिसाब से भी कम से कम आठ सौ रुपये होंगे।’

जब ईश्वर के कार्य के लिए धन का कोई हिसाब नहीं लगाया जाता, तो उस पर ब्याज की गणना का प्रश्न ही कहाँ उठता है?

‘उन्होंने हिसाब नहीं लगाया। आपको पता नहीं मैंने क्या किया है। मैंने सरकार से अपनी सारी पुरानी संपत्ति गिरवी रखकर पच्चीस हजार रुपये का कर्ज लिया है। हर सौ रुपये पर बारह रुपये का ब्याज देना होगा। यह सब जमीन के विकास के लिए है। और इस ट्रैक्टर, पंप, फार्महाउस, विदेशी खाद, बीजों के लिए पैसा कहां गया? ट्रैक्टर और पंप पर दस हजार रुपये का कर्ज भी है। दादाजी ने सारा पैसा धर्म के कामों में लगा दिया। उन्होंने घर खाली कर दिया और उनका निधन हो गया। जिस दिन मैं घर लौटा, उस दिन सिर्फ छह सौ रुपये बचे थे। और अब, अगर मुझे वैसा ही नया कुआं

खोदना पड़ा, तो मुझे आठ या दस हजार रुपये और चाहिए होंगे। इसके अलावा, इसकी क्या गारंटी है कि जहां हम खोदेंगे वहां पानी जरूर मिलेगा? उसके लिए पैसा कहां है?'

वेंकटारमण चुप रहे: इसलिए नहीं कि उनके पास कोई जवाब नहीं था, बल्कि इसलिए कि वे अपने मन की बात तुरंत व्यक्त करने का तरीका ढूंढ रहे थे। तब तक कलिंग ने स्वयं बोलना शुरू किया: 'आप कहते हैं कि मंदिर का जल केवल देवता के कार्य के लिए ही प्रयोग किया जाना चाहिए, किसी और चीज़ के लिए नहीं। यह एक पुरानी मान्यता है। भले ही मैं प्रतिदिन इससे जल निकालूं, कल्याणी सुबह तक भर जाती है। इसे अछूता छोड़ना एक प्रकार की विलासिता है। हमारे जैसे गरीब देश में ऐसी विलासिता असंभव है। इसके अलावा, आपका क्या मतलब है? कि आध्यात्मिकता और सांसारिक उपयोगिताओं को अलग रखा जाना चाहिए। ऐसा सोचना गलत है। जो कुछ भी आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए है, उसका उपयोग दैनिक जीवन में भी किया जाना चाहिए।'

वेंकटरमण ने उसे वहीं रोक दिया और कहा: 'रहने दो। तुमने अभी कहा कि घर लौटने पर तुम्हारे पास सिर्फ छह सौ रुपये थे, और तुमने पच्चीस हजार रुपये का कर्ज लिया और फिर यह सब करने के लिए दस हजार रुपये और लिए। अगर तुमने ये कर्ज न लिए होते तो तुम्हारा क्या नुकसान होता? क्या तुम्हारी पुश्तैनी संपत्ति कम है? घर के लिए ज़रूरी रकम अलग रखने और बाकी फसल बेचकर तुम्हें दो-तीन हजार रुपये से ज़्यादा मिल जाते। तुम्हें इस सब धंधे की क्या ज़रूरत थी? मवेशी इस नई ज़मीन पर आराम से चर रहे होते।'

इन शब्दों पर कलिंगा हँस पड़ा: 'हमारा देश इसी मानसिकता के कारण पिछड़ा रहा है। क्या आप नहीं जानते कि इस देश में पैदा होने वाला भोजन यहाँ के लोगों के लिए पर्याप्त नहीं है? जब तक 'जो हमारे पास है उसी से संतुष्ट रहने' की मानसिकता दूर नहीं हो जाती, तब तक हमारा देश कभी प्रगति नहीं कर पाएगा।'

इसी बीच ट्रैक्टर चालक जमाल अंदर आया। उसने खाकी पैंट और कमीज पहनी हुई थी और उसका चेहरा पसीने से भीगा हुआ था। कलिंगा को सलाम करने के बाद उसने कहा, 'बारह बज चुके हैं। आज नाश्ता नहीं मिला। मेरा पेट बुरी तरह भूख से चिल्ला रहा है।'

ऐसा कभी-कभार होता था। तैयव्वा के लिए हमेशा सब कुछ समय पर तैयार करके भेजना संभव नहीं होता था। इसके अलावा, जमाल बाकी नौकरों की तरह रागी की रोटी नहीं खाता था। घर के बाकी नौकरों का काम उसे नाश्ता और दोपहर का खाना देना था। कभी-कभी वे जानबूझकर उसे खाना नहीं देते थे। कलिंग ने वेंकटरमण से पूछा: 'बारह बज चुके हैं। क्या आप अपने पास रखा प्रसाद खाएंगे?'

नहीं। मैं घर जाकर दोपहर का भोजन करूँगा।

“तो इसे जमाल को दे दो। दो लोगों के लिए पर्याप्त दही-चावल है। इसमें बढ़िया मसाले डाले गए हैं और यह स्वादिष्ट है। इसे खा लो जमाल।”

मानो घबराकर वेंकटरमण ने पूछा: 'क्या वह मुसलमानों में से नहीं है?'

'क्यों?'

‘यह देवता का प्रसाद है।’

क्या शास्त्रों में यह लिखा है कि देवता का प्रसाद मुसलमानों को नहीं दिया जाना चाहिए?

‘ऐसा नहीं है। प्रसाद उन लोगों को नहीं दिया जाना चाहिए जो मंदिर नहीं आते, भगवान के प्रति अपनी भक्ति नहीं दिखाते और तीर्थयात्रा नहीं करते। वह तो हमारे देवताओं के सामने हाथ भी नहीं जोड़ते।’

‘वेंकटरमण, आप इस तरह भेदभाव क्यों करते हैं? एक भूखे व्यक्ति को एक निवाला भोजन देने के लिए इन सभी शास्त्रों का क्या अर्थ है?’

‘अगर यह सिर्फ भोजन है, तो इसे किसी को भी दिया जा सकता है। वास्तव में, शास्त्र में भी यही कहा गया है कि भूखे व्यक्ति को तुरंत भोजन देना चाहिए। लेकिन यह सिर्फ भोजन नहीं है। क्या आपको याद है? जब आप प्राथमिक विद्यालय में पढ़ते थे, तब आप दोपहर में हमारे घर पर भोजन करते थे। उस समय, हम आपको दादा-दादी की पुण्यतिथि पर भोजन नहीं देते थे। इसका कारण यह है: हमारे अनुसार, हमारे पूर्वज हमारे भगवान हैं। वे बाहरी लोगों के लिए भगवान नहीं बन जाते। यानी, बाहरी लोग उन्हें अपना भगवान नहीं मानते। जो व्यक्ति उन्हें भगवान नहीं मानता, उसे उनके द्वारा पहले अर्पित किए गए प्रसाद को खाने का भी अधिकार नहीं है। पुण्यतिथि के दिन, हमारे परिवार के बाहर के लोग हमारे घर पर भोजन नहीं करते, चाहे वे हमारी जाति के ही क्यों न हों। यह भी कुछ इसी तरह है। अगर जमाल

पुण्यकोटी मंदिर की गाय को भगवान मानता है, तो इस प्रसाद पर उसका अधिकार है। वरना, यह कैसे दिया जा सकता है?'

'वेंकटरमण, मैंने तो बस तुमसे बचा हुआ खाना देने को कहा था, लेकिन तुम अपने पिता, दादा, परदादा की पुण्यतिथि से संबंधित शास्त्रों की बात कर रहे हो,' कलिंग ने कहा। जमाल की ओर मुड़कर उसने कहा: 'कोई बात नहीं, रसोई में रोटी होगी। उसे खा लो। वैसे भी आज दोपहर ट्रैक्टर का कोई काम नहीं है। गाँव जाओ, अपना दोपहर का भोजन करो और मेरे लिए भी कुछ ले आना।'

जमाल की उम्र लगभग पैंतीस या चालीस वर्ष थी। उसके साफ़-सुथरे चेहरे पर मूंछें थीं। वह पहले ट्रक चालक था। वह कलिंगा के घर में नौकर के रूप में नहीं था: उसे मासिक वेतन पर रखा गया था। अब ऐसा प्रतीत होता था कि वेंकटरमण जोइस के शब्दों से उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुंची थी। तिरछी निगाहों से जोइस को देखते हुए, वह अपने बूट पहने रसोई में चला गया।

एक मिनट बाद, कलिंग ने वेंकटरमण से पूछा: 'इस तरह का भेदभाव केवल हमारे धर्म में ही मौजूद है, है ना?'

'मुझे कैसे पता चलेगा कि यह सिर्फ हमारे धर्म में ही मौजूद है या अन्य धर्मों में भी? आपने लाल देश देखा है। आप ही बताइए।'

कलिंग मन ही मन सोचते हुए याद करने लगे: ईसाई मंदिर में तो सबको अंदर जाने देते हैं। लेकिन गैर-ईसाइयों को पवित्र भोज में शामिल नहीं होने देते। वे रोटी और शराब भी नहीं देते, जो भोज का हिस्सा है। अमेरिका में उनका अपना अनुभव ऐसा ही था। उन्होंने कहीं सुना था कि मुसलमानों में भी कुछ ऐसा ही रिवाज है। लेकिन उन्हें ठीक से याद नहीं आ रहा था। तभी जमाल रसोई से बाहर आए और बोले, 'साहिब, रोटी सूख गई है। मैं गाँव जाकर खा लेता हूँ। फिर अग्रहारा जाकर शाम तक लौट आता हूँ। कुछ खर्चों के लिए एक रुपया दे दीजिएगा।'

उसने कलिंग से पैसे लिए और चला गया। वेंकटरमण ने कहा: 'इसका मतलब है कि अब तुम्हारे पास भी खाने को कुछ नहीं है। मैं अपने गाँव जा रहा हूँ। तुम यह प्रसाद ले लो। मेरे लिए एक बर्तन ले आओ।'

'वैसे भी दो लोगों के लिए पर्याप्त भोजन है। चलो साथ में खाते हैं। अंदर एक नल है। उसका पानी कल्याणी से आता है।'

ठीक है। लेकिन मुझे नल का पानी नहीं चाहिए। चलो, हम दोनों कल्याणी नदी पर चलते हैं। हम किनारे पर बैठकर खाना खाएंगे।

कलिंग ने घर को ताला लगा दिया। दोनों पहाड़ियों पर चलते हुए पाइपों के पास वाली छोटी पहाड़ी पर चढ़े और जब तक वे कल्याणी के पास पहुँचे, पंप की मशीन अभी भी चल रही थी। 'इसे थोड़ी देर के लिए रोक दो। कम से कम देवता की कल्याणी के पास प्रसाद ग्रहण करते समय हमें शांति तो मिलनी चाहिए।' कलिंग ने उसे रोक दिया। वेंकटरमण ने अपने साथ लाए दो बड़े पलाश के पत्तों पर दही-चावल परोसा। दोनों ने एक बार खाया, फिर बचा हुआ चावल भी खा लिया।

जब वे आखिरी निवाला खा रहे थे, तब कलिंग ने पूछा: 'वेंकटरमण, अगर मैं तुम्हारे पत्ते पर रखे भोजन को छू लूं, तो क्या तुम उसे फिर भी खाओगे?'

'यह सच है कि आप अमेरिका से लौट आए हैं। लेकिन मुझे बताइए कि आपने इसे क्यों छुआ? क्या इसे न छूने से आपके हाथों में खुजली होगी? यह तो सरासर शरारत है।'

कलिंग वहीं रुक गए। उनका पेट भर चुका था। दोनों कल्याणी में उतरे और मुट्ठी भर पानी पिया। चूंकि वे फिर से यहाँ आए थे, वेंकटारमण मंदिर वापस गए, बाहरी परिसर में लगी बड़ी घंटी को ज़ोर से बजाया, मंदिर का द्वार खोला, जलते हुए दीपक में महुआ का तेल भरा, देवता के सामने हाथ जोड़कर द्वार बंद किया और बाहर आ गए। इसी बीच, कलिंग खेत में उतर गए थे और आलू की फसल का निरीक्षण कर रहे थे। वेंकटारमण ने प्रसाद के पात्र से बंधे कपड़े को पानी में डुबोया, उसे भिगोया, अपने सिर पर रखा और अपने गाँव की ओर चल पड़े।

3

वेंकटारमण परेशान थे क्योंकि कलिंग ने कई दिनों तक यह बात नहीं बताई थी कि उनका विवाह हो चुका है। अमेरिका से लौटने के बाद, वे अपनी कई योजनाओं में से एक भी किसी से साझा नहीं करते। दूसरों को उनके बारे में तब पता चलता है जब वे उन्हें लागू करते रहते हैं। उनका रवैया पहले जैसा नहीं रहा। पहले तो वे आम लोगों की तरह थे। अब वे ऐसे क्यों हो गए हैं? इस विचार के साथ ही वेंकटारमण के मन में एक और जिज्ञासा जाग उठी: क्या उन्होंने अपनी माँ को अपने विवाह के बारे में

बताया है? वेंकटारमण को कलेनहल्ली गए दस-पंद्रह दिन हो चुके थे। शायद उन्होंने अपनी माँ को बता दिया हो। वे सोचने लगे कि तैयव्वा को इस बारे में कैसा लगा होगा।

अगली शाम वह कलेनाहल्ली गया। तयाव्वा ने उसे बैठने के लिए एक लकड़ी का तख्ता दिया। उसका हालचाल पूछने के बाद उसने पूछा: 'क्या तुम अपने बेटे की शादी नहीं करोगी, तयाव्वा?'

जवाब में उसने अपना माथा छुआ और दोनों हाथ हिलाए। उसकी बात पूरी तरह समझे बिना ही उसने पूछा, 'क्यों, क्योंकि वह तुम्हारी बात नहीं सुनता?' उसने हाँ में सिर हिलाया। वह समझ गया कि उसे इस मामले की जानकारी नहीं है। उसे सब कुछ बताने की तीव्र इच्छा होने के बावजूद वह चुप रहा।

उसने अपने ससुराल वालों के निधन का दुख बयां किया। उसने कलिंग द्वारा गौशाला के बूढ़े पशुओं को बेच दिए जाने पर भी अपना दुःख व्यक्त किया। वेंकटरमण कलिंग से इस बारे में पूछना चाहता था, लेकिन कल उससे बात करते समय उसे याद नहीं आया। उसने अगली बार मिलने पर उससे पूछने का फैसला किया।

तैयव्वा से निकलने के बाद उनकी मुलाकात यांगता गौड़ा से सड़क पर हुई। उन्होंने कहा, 'आपको आए हुए कई दिन हो गए। कृपया अंदर आइए, महाराज' और उन्हें अपने घर ले गए। उस वर्ष बारिश की संभावनाओं के बारे में पूछताछ करने और फसलों की स्थिति बताने के बाद, उन्होंने पूछा: 'क्या आपने देखा कि वह सब पर किस तरह अपना दबदबा बनाए हुए है?'

'हम्म। मैं देख रहा हूँ।'

ऐसा लगता है कि वह देवता की कल्याणी में मशीन रखकर पानी निकाल रहा है। ऐसा लगता है कि उसने मंदिर, कल्याणी... सब कुछ अपने नाम कर लिया है।

'हां। मुझे कल ही पता चला। मैंने उसे ऐसा न करने के लिए कहा—कि ऐसा करना गलत है।'

'उसके दादा ने इसे धर्म के नाम पर बनवाया था। क्या हमने इसके लिए उससे कम मेहनत की है? क्या तुम जाकर उस कमीने को एक थप्पड़ नहीं मार सकते और उस मशीन को उखाड़ नहीं सकते?'

वेंकटारमणा के मन में इस तरह बल प्रयोग करके लड़ने का विचार नहीं आया था। लेकिन उनका दृढ़ निश्चय था कि उस पानी के पंप को हटवाया जाए। जब वे गाँव

के सभी लोगों के एक साथ कलिंगा को समझाने जाने के बारे में सोच ही रहे थे, तभी यांगता गौड़ा ने पूछा: 'लगता है उस कमीने के पास बंदूक है। क्या यह सच है?'

'हम्म। मैंने खुद भी देखा है।'

ऐसा लगता है कि वह डिप्टी कमिश्नर मास्टर के साथ कुर्सी पर बैठता है। क्या यह सच है?

'हम्म। मैंने शानुभोग को यह कहते हुए सुना है।'

'ऐसे नीचों का क्या किया जा सकता है, हे प्रभु?' यांगता ने कलिंग को गाली देकर ही खुद को तसल्ली दी। लेकिन भविष्य में इस बारे में क्या किया जाना चाहिए, इसके लिए उसके पास शब्द नहीं थे।

स्वयं वेंकटरमण ने कहा, 'गांव के सभी लोग एक साथ आओ, उसका सामना करो और उसे दृढ़ता से बताओ। हो सकता है कि इतने सारे लोगों के एक साथ विरोध करने से वह डर जाए।'

'गांव वाले उससे डरते हैं, महाराज। आपको पता नहीं है।'

'वे उससे क्यों डरेंगे?'

'उसका पहनावा, उसके पास मौजूद वह जुताई मशीन, बंदूक, डिप्टी कमिश्नर मास्टर के साथ उसका बैठना। वे बस यह सब सुनते हैं और डर जाते हैं।'

वेंकटरमण चकित रह गया। लेकिन यही तो सत्य था।

लेकिन यह भी सच था कि कलेनाहल्ली के लोग असाधारण साहस से संपन्न थे। हर घर में ऐसे लोग थे जिन्होंने कम से कम एक पीढ़ी में भाले से बाघ या लकड़बग्घे का वध किया था। गाँव में ऐसे लोग भी थे जिन्होंने मात्र लाठी से लकड़बग्घे से लड़ाई की थी। यांगता गौड़ा भी कम साहसी नहीं थे। पचास वर्ष की आयु में भी वे घोर अंधेरी रातों में अकेले ही मीलों पैदल चल सकते थे। एक ही वार से वे सबसे लंबे कोबरा को भी सुला सकते थे। कई बार उन्होंने जीवित साँपों को पूंछ से पकड़कर धोबी की तरह पीट-पीट कर मार गिराया था। 'आप इतने अदम्य साहस से संपन्न हैं। आपको कलिंग की बंदूक से डरने की क्या ज़रूरत है? अगर वह सिर्फ बंदूक होने के कारण किसी को भी गोली मार दे, तो सरकार उसे फांसी पर चढ़ा देगी। क्या? क्या बंदूक बाघ या कोबरा से ज़्यादा क्रूर है?' वेंकटरमण ने कहा, 'आप एक ऐसे वंश से आते हैं जिसने सबसे दुर्जेय बाघों और लकड़बग्घों से लड़ाई लड़ी है!'

लेकिन उनके पास वैसी ही मशीन है, महाराज। वह जमीन को खोदती है और बुड-बुड-बुड की आवाज करती है, जैसे जुताई कर रही हो।

'आपको जमीन जोतने वाली मशीन से डरने की क्या जरूरत है?'

'हमें भी समझ नहीं आता, हे प्रभु। देखिए, मोटर हमारे गाँव के पास से चलने लगी? कभी-कभी हमारे गाँव के लोग उस पर बैठकर शहर जाते और लौट आते थे। तब से वे मोटर से डरते हैं, वे कलिंग से डरते हैं।'

वेंकटारमणा को यह बात समझ नहीं आई। लेकिन यह सच था। उनका इरादा यह नहीं था कि गाँव के लोग इकट्ठा होकर कलिंग पर हमला करें। इतना ही काफी था कि उन्हें गाँव वालों के सामने बुलाया जाए, मंदिर के कल्याणी में लगाए गए पंप को हटवाया जाए, कसाई को मवेशी बेचने की अपनी गलती स्वीकार करवाई जाए और वादा लिया जाए कि वे भविष्य में ऐसा कभी नहीं दोहराएंगे। उन्हें अब भी इस बात पर भरोसा था कि चाहे कोई भी हो, गाँव वालों की सामूहिक शक्ति से सबको डरना ही पड़ता है: यहाँ तक कि कलिंग भी डर जाएँगे। लेकिन कलिंग ने अपना घर गाँव से डेढ़ मील दूर बनाया था। वहाँ सोफे और पलंगों को देखकर लगता था कि वे अपनी लाल पत्नी के साथ वहीं बस जाएँगे। गाँव से बाहर रहने वाले व्यक्ति का गाँव वाले क्या बिगाड़ सकते हैं? जिसे गाँव से डरने की ज़रूरत ही नहीं, उसे गाँव से डरने की क्या ज़रूरत है।

उस समय उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने यांगता गौड़ा को कुछ हौसला बढ़ाने वाले शब्द कहे और अपने गाँव लौट गया।

खंड 10

1

सड़क किनारे मोटरगाड़ी से उतरकर कलिंग ने बच्चे को गोद में उठा लिया। उनकी पत्नी हिल्डा के हाथ में एक पर्स था। सड़क पर आए जमाल ने नौकर निंगा को चमड़े का संदूक सिर पर उठाने को कहा। निंगा आश्चर्यचकित रह गया। उसने अपने पूरे

जीवन में कभी किसी स्त्री को इतना लाल नहीं देखा था। न ही उसने कभी ऐसी कोई स्थिति देखी थी जहाँ वह कल्पना भी कर सके कि मनुष्य इतने लाल रंग के भी हो सकते हैं! उसे देखते ही उसके मन में भय और सम्मान दोनों उमड़ आए। लेकिन वह इस बात से भी हैरान था कि साड़ी की जगह उसने एक कमीज़ क्यों पहन रखी थी—उसे नहीं पता था उसे क्या कहते हैं—जो उसके कंधे से घुटनों तक थी? उसके पैर इतने लाल थे! कलिंग की गोद में शिशु इतना लाल था! 'नाटकों में भगवान इंद्र भी इतने लाल नहीं दिखते। न ही उनकी नर्तकी रंभा!' संदूक लिए उनके पीछे चलते हुए वह विस्मय से सोचने लगा।

हिल्डा फार्महाउस के सामने खड़ी थी, धीरे से घूमी और एक गहरी सांस लेते हुए उसने कलिंगा से कहा: 'मेरे प्यारे, कितना रोमांचक है।'

'सचमुच?' उसने पूछा।

'तुम तो बड़े ही शरारती हो। तुमने मुझे बताया ही नहीं कि यह इतना रोमांचक होगा', उसने दोनों हाथों से ताली बजाई जिससे एक आवाज़ आई और फिर उन्हें आपस में दबाकर रखा।

वह अंदर गई, घर का जल्दी से चक्कर लगाया, मुड़ी और बोली, 'ठीक है।' कलिंगा को पवित्रता का अहसास हो रहा था। जब तक उसने नहाकर नई स्कर्ट पहनी, कलिंगा ने अपने साथ लाई रोटी पर जेली लगा दी थी, जिसे उसने चाकू से काटा था। फिर उसने चूल्हा जलाया और दूध गर्म होने के लिए रख दिया। उन्होंने बच्चे को बोतल दी, और दोनों के नाश्ता करने और दूध पीने के बाद हिल्डा बाहर आई। तब तक सात-आठ नौकर उसे देखने के लिए वहाँ जमा हो चुके थे। हिल्डा ने उनकी तरफ नहीं देखा। वह बाईं ओर बने शेड की तरफ चली जहाँ ट्रैक्टर खड़ा था। बच्चा पलंग पर लेटा बोतल से दूध पी रहा था। कलिंगा उसके पीछे-पीछे चल रहा था। 'यह किस कंपनी का है?' उसने ट्रैक्टर पर चढ़कर उसे चालू करते हुए पूछा। ट्रैक्टर चलने लगा और बुड-बुड-बुड की आवाज़ करने लगा। उसने उसे कुछ दूर तक चलाया। नौकर न केवल अचंभित थे, बल्कि उसकी उपस्थिति में उन्होंने समर्पण का भाव भी महसूस किया। उसने उसे आसपास के इलाके में घुमाया, वापस शेड में ले आई, पार्क किया और उसकी ऊंचाई से नीचे कूद गई।

जैसे ही कलिंग उसके पास पहुंचा, उसने उसके हाथ पकड़कर कहा, 'वहाँ जो कुछ दिखाई दे रहा है—क्या वह मंदिर है? चलो देखते हैं।'

‘अब थोड़ा आराम कर लो। हम कल चलेंगे’, कलिंग ने कहा, लेकिन इससे उसका इरादा नहीं बदला। ‘यह बहुत रोमांचक है। मुझे रोमांटिक महसूस हो रहा है। चलो अभी चलते हैं!’ उसने हाथ पकड़कर उसे खींच लिया। ‘बच्चा पलंग पर है। अगर वह रोए तो उसका ध्यान रखना’, कलिंग ने नौकरों को निर्देश दिया और उसके पीछे-पीछे चल दिया। नौकर जानते थे कि दोनों आपस में अंग्रेजी में बात करते हैं। लेकिन उन्हें भी उस भाषा के प्रति एक अजीब सा आकर्षण महसूस हो रहा था।

वे दोनों साथ-साथ कल्याणी की ओर जाने वाली छोटी पहाड़ी की दिशा में चल पड़े। लाल स्त्री कलिंग के समान लंबी थी। एक सेवक ने पूछा, 'देखो वह स्त्री कैसी है?'

‘यह तो हाथीदांत के फल जैसा दिखता है। देखा तुमने कि वह मशीन कैसे चला रही थी?’

उनके ठीक पीछे खड़े जमाल ने फटकार भरे लहजे में कहा, "अरे, क्या? क्या तुम उसे अपनी नौकरानी समझते हो जो तुम उसके लिए एकवचन का इस्तेमाल कर रहे हो? उन्हें यूरोपीय महिलाएँ कहते हैं। तुम्हें उसे मैडम कहना चाहिए। उसे बंदूक चलाना आता है। तुम्हें पता है ना?"

इससे उनमें भय और जिज्ञासा दोनों ही बढ़ गईं। जमाल ने कहा, 'मैडम साहब अंग्रेजी बोलती हैं। मैं भी बोल सकता हूँ। मैं पहले एक यूरोपीय साहब के घर में ड्राइवर हुआ करता था।'

सबको यह एहसास हो गया था कि इस महिला के कारण जमाल का दबदबा और भी बढ़ेगा। लेकिन वे उसके दबदबे को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उनमें सबसे बुद्धिमान निंगा ने कहा, 'वह मशीन तो खुद उस महिला ने चलाई थी, तो अब उसके आने के बाद तुम्हारा यहाँ क्या काम है? वे तुम्हें बाहर निकाल देंगे। क्या तब तुम हमारी तरह ज़मीन जोतोगे और खेती करोगे?'

ये शब्द सुनते ही जमाल का चेहरा पीला पड़ गया। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसे ये सब पता चलेगा। ट्रक चालक की नौकरी छूटे अभी पाँच महीने भी नहीं बीते थे। जब उसके पास आजीविका का कोई साधन नहीं बचा, तब उसने ट्रैक्टर चालक की ये नौकरी शुरू की। 75 रुपये प्रति माह। कलिंग साहब ने उससे कहा था कि वे उसके परिवार के लिए रहने की जगह भी देंगे। अब तक उसे मुफ्त खाना मिल रहा था। अब उसकी नौकरी भी जा सकती है। क्या साहब ने उससे झूठ बोला था? वह तुरंत चिंतित हो गया।

कल्याणी नदी को देखकर हिल्डा ने कहा: 'आपने मुझे इसके बारे में लिखा था, है ना? पानी सचमुच बहुत शुद्ध है। पानी का स्रोत कैसा है?'

'हम चाहे जितना भी पंप करें, यह एक रात के भीतर फिर से भर जाएगा।'

'बहुत ठीक।'

मंदिर के सामने खड़े होकर उसने पूछा, 'क्या यह वही मंदिर है जिसके बारे में आपने अपने पत्र में लिखा था? अंदर की मूर्ति कैसी है? यह किस प्रकार की मूर्ति है?'

'मुख्य देवता गाय है। फिर त्रिमूर्ति भी हैं, अर्थात् त्रिमूर्ति।'

'प्रिय, ट्रिनिटी ठीक है। क्या इसका मतलब यह है कि इस देश के लोग भी पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं?'

'हां, लेकिन एक अलग अर्थ में।'

'तो फिर वे इस जानवर की पूजा क्यों करते हैं?'

'इसके पीछे एक कहानी है: ऐसा लगता है कि यह हमारे पूर्वजों के समय में हमारे ही घर में घटित हुआ था', कलिंग ने कहा और पुण्यकोटी की कहानी सुनाई और अपने दादा द्वारा मंदिर के निर्माण की पृष्ठभूमि के बारे में बताया।

'कितना रोमांचक! कितना रोमांटिक। लेकिन हम इसे महज़ एक कहानी मान सकते हैं। इसे सच मानकर पूजा करना अंधविश्वास है। क्या तुम भी इन सब बातों पर यकीन करते हो, प्रिय?'

'बिल्कुल नहीं।'

'अच्छा, दरवाजा खोलो। मुझे देखना है कि अंदर क्या है।'

'मुख्य बात पुजारी के पास है। मेरे दादाजी ने उन्हें यहाँ प्रतिदिन पूजा करने की व्यवस्था के तहत भूमि अनुदान दिया है।'

'मजेदार। लेकिन यह बहुत ही दिलचस्प है। हम इसे कल देख सकते हैं, है ना?'

हम्म। हम इसे सुबह साढ़े आठ बजे तक देख सकते हैं। पुजारी मेरा दोस्त है। उसे अंग्रेजी भी आती है। उसने प्राचीन काल की सभी चीजों का अध्ययन किया है क्योंकि यह इस देश के शास्त्रों से संबंधित है।

उसने मंदिर के सामने स्थित नंदी या बसवा मूर्ति के बारे में कहा, 'दिलचस्प'। उस दृश्य से उनका नया खेत, उसके आगे सरकारी सड़क और सड़क के पार फैला उनका चारागाह साफ दिखाई दे रहा था। लेकिन उस चारागाह के पीछे पेड़ों के

झुरमुट में छिपा कलेनाहल्ली दिखाई नहीं दे रहा था। जुते हुए खेत में बोए गए आलू की फसल को पकने में अभी दो महीने और लगेंगे।

हिल्डा ने पूछा: 'सड़क के उस पार वह खुला मैदान सिर्फ घास से भरा है... आपने उसमें खेती क्यों नहीं की और कोई फसल क्यों नहीं लगाई?'

मैंने तुम्हें तब भी कहा था, हमें ये सब एक साथ करने के लिए पूंजी की जरूरत है। हमें पैंतीस हजार रुपये का मौजूदा कर्ज जल्दी चुकाना होगा। अगली मानसूनी बारिश के बिना हम वहां ट्रैक्टर नहीं चला सकते। इसके लिए एक अलग सिंचाई प्रणाली चाहिए। यह पानी पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, हमें गायों के चरने के लिए भी जगह चाहिए।

'वैसे, गायें कहाँ हैं? मुझे तो दिख ही नहीं रही हैं।'

'वे अभी भी गाँव में हैं। हमें अंततः उनके लिए एक शेड बनाना होगा। अभी बहुत काम बाकी है। हमें खेत के हर हिस्से की रासायनिक संरचना की जाँच करनी होगी और फिर यह तय करना होगा कि कौन सी फसल अच्छी तरह उगेगी। मैं यह सब अकेले कैसे कर सकता हूँ? अब जब आप आ गए हैं, तो आइए मिलकर इस भूमि पर विजय प्राप्त करें। आइए इसकी क्षमता का पूरा उपयोग करें। आप ही इसके पीछे की योजना हैं।'

'मैं आपकी बहुत आभारी हूं प्रिय,' उसने कृतज्ञता से कहा और फिर उसके कंधे से सटकर खड़ी हो गई और उसे चूम लिया।

बाद में, कलिंगा ने कहा: 'प्रिय, तुम भूल गई। इस देश में, तुम्हें किसी भी जगह पर ऐसा नहीं करना चाहिए। यह एक अत्यंत पारंपरिक देश है। लोग तुम्हारा उपहास करेंगे।'

'तो फिर यह देश बहुत ही नीरस होगा। यह देश प्रगति कैसे करेगा? यह गरीबी कैसे दूर होगी? और यह गरीबी कब दूर होगी? क्या आपने खुद नहीं देखा कि पश्चिमी देशों के लोग कितने खुले विचारों वाले हैं?'

तभी, निंगा कल्याणी की दिशा से दौड़ती हुई ऊपर आ रही थी। शाम हो चुकी थी, सूरज डूबने वाला था। निंगा ऊपर आकर बोली: 'बच्चा लगातार रो रहा है।'

'क्या तुम लोगों ने उसे उठाकर शांत नहीं किया?'

'यह हमें इसके पास भी नहीं आने देता। अगर हम इसे उठाने की कोशिश करते हैं, तो यह पागलों की तरह चीखता है।'

कलिंगा ने इसका अंग्रेज़ी में अनुवाद अपनी पत्नी को सुनाया। दोनों तेज़ी से नीचे उतरे और पहाड़ियों पर दौड़ पड़े। घर के सामने खड़े नौकर उत्सुकता से उसे अपने पति से आगे दौड़ते हुए देख रहे थे। जब उसने बच्चे को गोद में लिया, उससे खेला और उसे ट्रैक्टर पर बिठाया, तो वह शांत हो गया। फिर हिल्डा ने अपने पति से कहा: 'इस तरह की शारीरिक बनावट और इस तरह के कपड़े पहने लोग जैक को अजीब लगे होंगे। इसीलिए जब उन्होंने उसे उठाने की कोशिश की तो वह रोने लगा। है ना?'

'हां', कलिंग ने बच्चे को गोद में उठाते हुए कहा।

नौकर अभी भी वहीं खड़े थे। वह उनके पास गया और बोला, 'तुम सब इतनी देर से क्या कर रहे हो? सूरज तो डूब चुका है। पिछले चार घंटों से तुम सब आलस कर रहे हो। अरे, निंगा, देखो दूध आया है या नहीं।'

नौकर चले गए। केवल जमाल ही पीछे रह गया।

'जमाल, सड़क की ओर वाले खेत के हिस्से में पर्याप्त पानी नहीं डाला गया है। कल पूरे दिन उसे केवल उसी दिशा में पलटना', यह सुनकर जमाल ने पूछा: 'साहिब, क्या यह सच है कि आप मुझे नौकरी से निकाल देंगे?'

'यह किसने कहा?'

"मैडम साहब ट्रैक्टर चलाती हैं। अब तुम्हारा क्या काम है? घर जाओ", निंगा ने कहा। क्या तुमने मुझे बताया था कि मेरी नौकरी यहाँ सिर्फ मैडम साहब के आने तक ही रहेगी?'

'वो निंगा तो बिल्कुल पागल है। और तुम उसकी बातों पर ध्यान देते हो? मैडम साहब को न सिर्फ ट्रैक्टर चलाना आता है, बल्कि वो खराब होने पर उसे ठीक भी कर लेती हैं। लेकिन वो रोज़ खेत जोतने के लिए ट्रैक्टर पर नहीं बैठतीं। वो सिर्फ देखरेख का काम करती हैं। देखो, मैं अब से गाँव में खाना नहीं खाऊँगा। मैडम साहब को खाना बनाने के लिए जो भी सामान चाहिए, वो सब तुम्हें लाना होगा।'

'बताओ तुम्हें क्या चाहिए। मैं गाड़ी से शहर जाकर ले आऊंगा।'

'तुम्हें समझ नहीं आया? उसे हर दिन लाल तरकारी, यानी लाल मांस चाहिए।'

अब जमाल को बात समझ आ गई। उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी। मुस्कुराते हुए उसने कहा, 'होबली में करीम नाम का एक आदमी है। मुझे हर दिन ताज़ा सामान नहीं मिलता। मुझे ऐसा सामान मिल जाता है जो दो दिन तक चलता है। वह खराब नहीं होता।'

‘देखो, इस फार्महाउस के उस तरफ, हमें घर के लिए पर्याप्त मुर्गियाँ पालनी होंगी। मैं कुछ बढ़िया देसी मुर्गियाँ मंगवाता हूँ। हमें रोज़ अंडे चाहिए।’

‘ठीक है साहब, मैं सब कुछ संभाल लूंगा’, जमाल ने कहा और यह जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली।

इसी बीच हिल्डा उसके पास आई और पूछा, 'आज रात के खाने का क्या इंतजाम है?'

‘आज आप आराम कीजिए। जमाल कुछ न कुछ इंतजाम कर देगा’, कलिंगा ने कहा।

3

अगली सुबह लगभग आठ बजे मंदिर की बड़ी घंटी बजी। हिल्डा, जो अभी-अभी उठी थी और अपने दांत साफ कर रही थी, ने पूछा: 'यह क्या है, क्या यह चर्च की घंटी जैसी आवाज है?'

नहीं। मंदिर के पुजारी आ गए हैं। पूजा अब शुरू होगी। क्या आप आएंगे? चलिए देखते हैं।

सुबह की कॉफी पीने के बाद, बच्चे को साथ लेकर वे कल्याणी नदी के पास की छोटी पहाड़ी पर चढ़े और फिर मंदिर की ओर खड़ी चट्टान पर चढ़ाई करने लगे। जब तक वे मंदिर पहुँचे, अंदर पूजा चल रही थी। हिल्डा ने देवता की मूर्ति देखी। यह चार भुजाओं वाली मूर्ति थी। एक हाथ में मशीन के पहिये जैसी आकृति थी। दूसरे हाथ में शंख था। नीचे वाले हाथ में गदा थी। तीसरे हाथ में कमल था। दूसरी मूर्ति की दाढ़ी थी। तीसरी मूर्ति विचित्र थी। अर्धनग्न पुरुष की मूर्ति मोटे कपड़े से ढकी थी, जो केवल उसके लज्जा को ढकने के लिए पर्याप्त था। लेकिन उसके हाथ में मौजूद हथियार उसे किसी जंगल में रहने वाले असभ्य पुरुष की मूर्ति जैसा बना रहा था। इन तीनों मूर्तियों के सामने एक गाय खड़ी थी। वह बहुत छोटी थी। अमेरिका की गायों के विपरीत, उसके अंग भारत की गायों की तरह छोटे थे। उसके सामने एक बाघ मृत पड़ा था।

हिल्डा को पुजारी का पहनावा भी कुछ अटपटा लगा। उसने अपने सिर के आगे के बाल मुंडवा रखे थे और लंबे बालों के सिरे को सिर के पीछे बांध रखा था। बाकी बाल खुले हुए थे। उसके माथे पर तीन क्षैतिज सफेद धारियां थीं। ऐसी ही धारियां

उसके कंधों, बांहों और छाती पर भी थीं। केवल कमर पर लिपटा चौड़ा सफेद कपड़ा ही आकर्षक लग रहा था।

यद्यपि उन्हें बाहर किसी की उपस्थिति का आभास हुआ, फिर भी वेंकटारमण ने मंत्रों का जाप करते हुए पूजा जारी रखी। चंदन का लेप, फूल, धूप, दीपक और नैवेद्य (भोजन, फल और नारियल का अर्पण) अर्पित करने के बाद, वे बाहर आए और बसवा पर विभूति (पवित्र राख) लगाई, उसकी पूजा की और वापस अंदर चले गए। फिर उन्होंने थाली में रखी घी में डूबी बाती को प्रज्वलित किया और अपने बाएं हाथ से घंटी बजाते हुए आरती करने लगे। उसी क्षण, कलिंग ने बाहर लगी बड़ी घंटी बजानी शुरू कर दी। स्वयं घंटी बजाने की इच्छा से हिल्डा ने रस्सी हाथ में ली और उसे चर्च की घंटी की तरह धीरे-धीरे बजाने लगीं। आरती समाप्त होने के बाद, वेंकटारमण ने आरती की थाली उनके सामने रख दी। तब कलिंग ने अपनी दोनों हथेलियों को आरती की लौ पर फेरा और उन्हें आपस में मिला लिया। जब उसने अपनी पत्नी को भी ऐसा ही करने को कहा, तो उसने पूछा, 'इसका क्या मतलब है?' यहाँ तक कि कलिंग को भी इसका मतलब नहीं पता था। 'जो भी हो, लेकिन तुम्हें इसे इस तरह करना है, तो करो', उसने कहा। उसने कहा, 'दिलचस्प', और उसने भी वैसा ही किया।

इसके बाद वेंकटरमण तीर्थ लेकर आए। जब उन्होंने उसे अपनी हथेली पर ग्रहण किया, तो कलिंग ने उसे पिया, उनके सामने खड़े हुए और चम्मच में भर लिया। जब उन्होंने पूछा, 'यह क्या है?' तो वेंकटरमण ने स्वयं अंग्रेजी में कहा, 'यह भगवान का पवित्र जल है।' कलिंग ने टिप्पणी करते हुए कहा, 'पूजा से पहले उस मूर्ति को जल से धोया गया था। यह वही जल है।'

अपना हाथ पीछे खींचते हुए हिल्डा ने कहा, 'कृपया मुझे क्षमा करें। मैं ऐसे अस्वच्छ पदार्थों का सेवन नहीं कर सकती।'

वेंकटरमण बिना कुछ कहे अंदर चले गए। जब तक कलिंग पलाश के पत्ते लेकर बाहर गए और वापस आए, तब तक वेंकटरमण घर जाने की तैयारी कर रहे थे। इस बात से अनभिज्ञ होकर कलिंग ने पूछा, 'आज आपने कौन सा प्रसाद बनाया है?'

उत्तर आया, 'रसायन'।

"मतलब, केले, गुड़ और कसा हुआ नारियल का मिश्रण। सुगंध के लिए इसमें पिसी हुई इलायची भी मिलाई जाती है। यह स्वादिष्ट है," कलिंग ने अपनी पत्नी को समझाया, उसके हाथ में पलाश का पत्ता रखा और वहीं खड़े होकर इंतज़ार करने

लगे। लेकिन बाहर आए वेंकटरमण ने प्रसाद केवल कलिंग के पत्ते पर रखा और वापस मुड़ गए। हिल्डा को अपमानित महसूस हुआ। कलिंग शर्मिंदा हो गए। उन्होंने कन्नड़ में कहा, “वेंकटरमण, क्या आप उसे प्रसाद नहीं देंगे?” वेंकटरमण रुक गए और उनकी ओर मुड़े। वे एक मिनट के लिए सोच में डूबे रहे। वे बहुत असहज लग रहे थे। फिर अचानक उन्होंने अंग्रेज़ी में कहा, “जो तीर्थ में नहीं आते, उनके लिए कोई प्रसाद नहीं होता। जो हमारे देवताओं, हमारी पूजा में विश्वास नहीं करते, उन्हें प्रसाद खाने का भी अधिकार नहीं है। मैं उसे प्रसाद नहीं दूंगा।”

उसने बस इतना ही कहा और गर्भगृह के भीतर चला गया। उसने बचे हुए प्रसाद को एक कपड़े में बांधा, दूसरा कपड़ा अपने कंधे पर रखा और बाहर आ गया। तभी उसकी नज़र कलिंग की पत्नी पर पड़ी: उसने अपने पैरों में पहनी हुई रबर की चप्पलें नहीं उतारी थीं। जब उसने कहा, 'कृपया रास्ता दीजिए, मुझे दरवाजा बंद करना है', तो कलिंग चुपचाप वहीं खड़ा था, उसके हाथ में प्रसाद का पत्ता था। हिल्डा वेंकटारमण के इस व्यवहार को घृणा से देख रही थी। दरवाजे से बाहर निकलते ही वेंकटारमण ने बड़े ताले को कुंडी से बंद किया, लंबी चाबी को अपनी कमरबंद के सिरे में फंसाया और नंगे पैर चलकर वहां से चला गया।

कलिंगा पांच मिनट तक उदास खड़ा रहा। फिर उसने अपनी पत्नी से कहा: 'प्रिय, तुम बच्चे को लेकर घर जाओ। मैं उससे बात करके तुम्हारे पास आऊंगा।'

‘उस पुजारी से बात करने लायक क्या है?’ उसने तिरस्कारपूर्वक पूछा।

‘तुम्हें नहीं पता। उससे कुछ गलती हो गई होगी। मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा’, उसने कहा और उसे जवाब देने का मौका दिए बिना ही बाहर आया, अपनी रबर की चप्पलें पहनीं और तेज़ी से नीचे उतर गया। उसके बाएं हाथ में प्रसाद वहीं पड़ा रहा।

अमेरिका से लौटने के बाद, कलिंग ने अपनी योजनाओं के बारे में किसी को नहीं बताया, उन्हें अपने तक ही सीमित रखा और उसी के अनुसार अपना काम करते रहे। लेकिन अगर वे बता भी देते, तो इस गाँव में कोई भी उन्हें समझ नहीं पाता। अगर उनकी योजनाओं का विरोध भी होता, तो उन्हें समझने के बाद कोई भी उनका विरोध नहीं कर पाता। इसके अलावा, उन्हें यह भी लगता था कि उन्होंने अमेरिका में पढ़ाई की है, तो भला इन लोगों को, जो केवल परंपराओं और अंधविश्वासों में जीते थे, वे क्या बता पाते? यांगता गौड़ा, जो कसाई को पचपन गायें बेचने के कारण उनसे बहस करने आया था, बिना जीत हासिल किए ही लौट गया।

लेकिन पिछले सात-आठ दिनों में एक बार वेंकटरमण ने कहा था, 'मैं भगवान का प्रसाद उसे नहीं दूंगा जो हमारे देवताओं के सामने सिर नहीं झुकाता।' उन्होंने कलिंग के अनुरोध को अपने सेवक के सामने ही ठुकरा दिया था। उस दिन से कलिंग को अनजाने में ही वेंकटरमण के प्रति श्रद्धा का भाव आ गया था। उनके मन में कोई ऐसी भावना थी जिसे वे स्वयं समझ नहीं पा रहे थे। अपनी पत्नी के आने तक उन्हें लगता था कि उन्हें किसी से डरने की जरूरत नहीं है, वे यहां बिना किसी की मित्रता के रह सकते हैं। लेकिन जिस क्षण वे मुंबई गए, उन्हें यहां लाए और कल उनके साथ इस धरती पर कदम रखा, उनके मन में अचानक एक अकेलापन सा आ गया। हालांकि उन्होंने रात में अपनी पत्नी के साथ अंतरंग संबंध बनाए और कई विषयों पर चर्चा की, फिर भी यह भावना दूर नहीं हुई। बल्कि, हर गुजरते घंटे के साथ यह और भी मजबूत होती गई। हालांकि यह पहली बार नहीं था जब वह इस फार्महाउस में सो रहा था, लेकिन अलगाव जैसी यह भावना, जिसका अनुभव उसने पहले कभी नहीं किया था, पूरी रात उसे परेशान करती रही।

लगभग आधी रात तक, कलिंग को वेंकटरमण की याद आ गई। उनकी रूढ़िवादिता, उनकी परंपरा, उनके विचार कलिंग के लिए अनजान नहीं थे। लेकिन उनके मन ने उन्हें बताया कि केवल वही उनके और हिल्डा दोनों के लिए एक अच्छे साथी हो सकते हैं। चाहे उनके विचारों में कितना भी मतभेद क्यों न हो, उनके अलावा कोई और नहीं था जो उनसे बात कर सके। कलिंग ने सोचा था कि वे वेंकटरमण का परिचय हिल्डा से करवाएंगे और उन्हें अक्सर अपने घर आने का निमंत्रण देंगे। लेकिन उस सुबह, उनकी योजना शुरू होते ही शत्रुता में बदल गई।

कल्याणी को बाईं ओर छोड़कर और पीपल के पेड़ को पार करते हुए जब वह सीढ़ियों तक पहुँचा, तो उसने वेंकटरमण को देखा जो पहले ही इन सभी को पार कर चुका था और नीचे पीपल के उपवन के पास चल रहा था। हालाँकि उसने ज़ोर से 'वेंकटरमण' पुकारा, लेकिन वेंकटरमण को सुनाई नहीं दिया। जब तक कलिंग तेज़ी से पीपल के उपवन की ओर दौड़ा, वेंकटरमण नदी पार कर रहा था। उसने कलिंग की आवाज़ सुनी। वह मुड़ा, और कलिंग उसके पास आकर हाँफते हुए बोला: 'वेंकटरमण, तुमने ऐसा क्यों किया?'

'मैंने क्या किया?'

'तुमने हिल्डा से बहुत सख्ती से बात की और मुझसे बात किए बिना ही चले गए?'

‘इसमें कठोर क्या है? मैंने तो बस वही कहा जो सच था।’

‘वह दूसरे देश से है। उसे यहाँ की परंपराओं और रीति-रिवाजों का ज्ञान नहीं है। अगर आप थोड़ा धैर्य दिखाएँगे तो आपका क्या नुकसान होगा?’

वेंकटरमण एक मिनट के लिए चुप रहे और फिर बोले: 'आप कहते हैं कि वह दूसरे देश से है। दूसरे देश से आए व्यक्ति का इस देश में क्या काम है? लेकिन जब वह यहाँ आती है, तो उसे इस देश की परंपराओं और रीति-रिवाजों का सम्मान करना चाहिए। जब मैंने कहा कि तीर्थ का अर्थ भगवान का पवित्र जल है, तो आपने तुरंत इसका अर्थ मूर्ति धोने के जल से लगा लिया। लेकिन उसने ऐसा व्यवहार किया मानो यह केवल पत्थर धोने का पानी हो और स्वास्थ्य के लिए अच्छा न हो। यह आपकी गलती है।'

अब कलिंगा को थोड़ी राहत महसूस हुई। 'हाँ। यह मेरी गलती है। मैं स्वीकार करता हूँ। उसे यहाँ के तौर-तरीके नहीं पता। आप उसे धैर्यपूर्वक सब कुछ समझा दीजिए।'

‘मैं ऐसा क्यों करूं? वह तुम्हारी पत्नी है, तुम उसे सिखाओ।’

इस गंभीर बातचीत के बीच, कलिंग को अचानक हंसी आ गई। लेकिन उन्होंने खुद को संभाला और कहा: 'तुम्हें उसे बताना ही होगा। क्या तुम्हारा परिवार शुरू से ही हमारे परिवार का पुरोहित नहीं रहा है? शास्त्रों से संबंधित किसी भी मामले में हमें मार्गदर्शन देना तुम्हारा कर्तव्य है।'

इन शब्दों को सुनकर वेंकटरमण को थोड़ा गर्व महसूस हुआ। उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि कलिंग कम से कम इस हद तक तो उनकी बात मान लेंगे। फिर उन्होंने कहा, 'थोड़ी देर बैठो, मैं तुम्हें बताता हूँ', और दोनों पास ही रेशम-कपास के पेड़ की छाया में बैठ गए। कलिंग ने अपने बाएं हाथ में रखा प्रसाद घास पर रख दिया और उसके सामने पालथी मारकर बैठ गए। उनसे तीन फुट की दूरी पर बैठे वेंकटरमण ने कहा, 'देखो, मुझसे गलती हो गई। मैंने आज तुम्हें प्रसाद दिया। मैंने तुम्हें परसों भी दिया था। उस समय मुझे यह बात समझ में आई कि तुम भगवान का प्रसाद ग्रहण करने के योग्य नहीं हो।'

बातचीत फिर से गंभीर हो गई और कलिंगा का चेहरा पीला पड़ गया: 'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?'

‘उस समय मैं खुद लगातार दो दिन गांव आया था ताकि आपसे इस मामले पर बात कर सकूं। आप वहां नहीं थे। लगता है आपने अपने गौशाला में मौजूद बूढ़े मवेशियों को बेच दिया।’

‘देखो, मुझे पता है कि तुम इस मामले में क्या तर्क दोगे। तुम्हें नहीं पता कि अगर बूढ़े मवेशी घर की सारी घास खा जाएं तो बाकी जानवरों की देखभाल करना कितना मुश्किल हो जाता है।’

‘इसका मतलब है कि आपको इस मुद्दे पर बात नहीं करनी चाहिए, है ना? मैं कुछ नहीं कहूंगा। लेकिन यह जान लीजिए। इससे आपको कोई फायदा नहीं होगा; इससे आपके वंश का भला नहीं होगा। अब तक, जब भी मैं पूजा करता था, मैं यह प्रार्थना भी करता था कि बड़े गौड़ा का वंश फले-फूले और समृद्ध हो। लेकिन अगर आपकी यही मानसिकता है, तो बड़े गौड़ा के नरक में जाने से भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन इस वंश का विकास नहीं होना चाहिए।’

ये शब्द सुनकर कलिंग के मन में हंसी, क्रोध, निराशा और उदासी सहित कई तरह की भावनाएं उमड़ आईं। वेंकटरमण ने कहा, “इस पलाश के पत्ते पर रखा प्रसाद? इसे मत खाइए। इस पर अभी तक जल भी नहीं छिड़का गया है, मैं इसे अपने साथ ले जाऊंगा। आपको इसे छूने का कोई अधिकार नहीं है।” इतना कहकर उन्होंने पलाश के पत्ते को एक हाथ में उठाया और दूसरे हाथ में कपड़े में बंधा प्रसाद का पात्र लेकर खड़े हो गए और वहां से चले गए।

कलिंग के मन में ‘थोड़ा रुक जाओ’ चिल्लाने का ख्याल तो आया, लेकिन वह बोल नहीं सका। उसने पहले कभी इस तरह की अपमान और हार का सामना नहीं किया था।

4

जब तक उसकी पत्नी आठ महीने के लड़के को लेकर गांव नहीं आई, तब तक गांव में किसी को भी यह पता नहीं था कि कलिंगा की शादी लाल देश में पहले ही हो चुकी है। लेकिन उसके आने की शाम को ही नौकरों ने यह खबर पूरे गांव में फैला दी।

‘लाल, मतलब वो बिल्कुल भी कुमकुम नहीं लगाती—वो ऐसी ही दिखती है। उसका रंग मेलों में आने वाली कपूर की गुड़ियों जैसा है। उसके बाल भी उसी रंग के

हैं। उसने उसी गुड़िया जैसी स्कर्ट भी पहनी है', उनमें से एक ने बताया, जिस पर दूसरे ने कहा, 'देखा कैसे वो ट्रैक्टर मशीन पर कूद पड़ी और उसे चलाने लगी?'

एक तीसरे व्यक्ति ने कहा, 'वह अपने पति की तरह ही मजबूत है, मेरा आदमी। ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जो उसे न पता हो।'

उस गाँव में बहुत कम लोग थे जिन्होंने लाल लोगों को देखा था। हालाँकि यांगता गौड़ा ने जिले में एक बार एक लाल साहब को देखा था, लेकिन उनकी पत्नी को नहीं। गौशाला के पूर्व ठेकेदार, कट्टेमाने शिंगरी गौड़ा के बेटे तम्मय्या एक बार जंबू सवारी देखने मैसूर गए थे। वहाँ उन्होंने अंग्रेज़ महिलाओं को देखा था। उस अनुभव के आधार पर, उन्होंने अनुमान लगाया कि कलिंग की पत्नी उनसे मिलती-जुलती दिखती थीं और उनका वर्णन किया।

नौकर निंगा ने कहा, 'क्या आप जानते हैं, वह राइफल उठाती है, निशाना साधती है और आकाश में उड़ते पक्षी को भी गोली मार देती है?' जब उसने यह कहा, तो गांव वालों की उसके प्रति जिज्ञासा भय में तब्दील हो गई।

एक दिन यांगता गौड़ा घर आई और तैयव्वा से पूछा: 'लगता है तुम्हारी लाल बहू आई थी। क्या तुम उससे मिलने गई थीं?'

तैयव्वा ने सिर हिलाकर मना कर दिया। कलिंग की पत्नी के आने के बाद से छह दिन बीत चुके थे। उनकी तो बात ही छोड़िए, कलिंग भी उस दिन से गाँव में नहीं आया था। लेकिन नौकर अपनी मर्ज़ी से गायों का दुहना जारी रखे हुए थे। मशीन से चलने वाले उस खेत में काम करने वाले कुछ नौकर दिहाड़ी मजदूर थे। कुछ घरेलू नौकर थे। केवल वही लोग यहाँ खाना खाने आते थे। कलिंग की पत्नी के आने के बाद, कलिंग और जमाल दोनों को खाना भेजने की असुविधा खत्म हो गई।

यांगता गौड़ा ने पूछा: 'लगता है पोता भी आ गया है?'

तैयव्वा ने हां में सिर हिलाया। गौड़ा ने कहा: "उसने पहले ही गुपचुप तरीके से शादी कर ली थी। एक बच्चा भी पैदा हो गया है। तो फिर उसे गांव लौटने की जिम्मेदारी कैसे महसूस होगी? इसीलिए तो वह इतने लंबे समय तक वहीं रुका रहा। उसे देखो! गांव आए हुए उसे छह-सात महीने हो गए हैं। क्या उसने कभी अपने मुंह से भी कहा कि उसकी शादी हो गई है? वह धूर्त कहीं का!"

तैयव्वा ने सिर हिलाकर मना कर दिया। यांगता गौड़ा ने कहा: 'क्या हमें अपनी जाति में कोई अच्छी लड़की नहीं मिल सकती? लगता है लाल जाति के लोग गाय का

मांस खाते हैं। अब से तुम्हारे गौशाला के सारे मवेशी तुम्हारे बेटे और बहू के काम आएंगे। खैर, छोड़ो इसे।'

ये शब्द सुनकर तैयव्वा ने अपने दोनों कान हाथों से बंद कर लिए। उसकी नज़र में ऐसी बात सुनना भी पाप था। पर वह बेबस थी। उसके बेटे ने बूढ़े मवेशियों को कसाई को बेच दिया था। ऐसा व्यक्ति तो खुद ही मवेशियों को मारकर खा सकता था। यांगता गौड़ा ने कहा था कि कलिंग ने लाल देश में इन दिनों उन्हें खाया था।

तैयव्वा उस रात सो नहीं सकी। वह आधी रात को उठी, एक छोटा सा मिट्टी का दीपक जलाया, गौशाला गई और वहाँ सभी पशुओं को गिनकर लौटी। कुल चौवन पशु और उन्नीस बछड़े थे। वह अंदर गई और एक छोटा सा मिट्टी का घड़ा लेकर लौटी। अपनी याददाश्त को बरकरार रखने के लिए, उसने उसमें बाईस जलकुंभी के बीज (गाय के लिए), सोलह चने के बीज (बैल के लिए), सोलह अरंडी के बीज (हल बांधने के लिए अभी तैयार न हुए किशोर बछड़ों के लिए), और उन्नीस लाल चने (छोटे और थोड़े बड़े हो चुके बछड़ों के लिए) रखे और घड़े का ढक्कन बंद कर दिया। उस दिन से, जब भी पशु गौशाला में लौट आते, वह पशुओं की गिनती का मिलान उस मिट्टी के घड़े में रखे बीजों से करती। जब उसने सात-आठ दिनों तक इस तरह गिनती की और पाया कि गिनती सही है, तो उसके मन को कुछ शांति मिली।

कलिंग की लाल पत्नी के आने के पंद्रह दिन बाद भी न तो वह और न ही कलिंग गाँव आए। नौकर यहाँ आते और अपनी ज़रूरत का सामान ले जाते। तयाव्वा उसे कम से कम एक बार देखने के लिए बेताब थी। इसके अलावा, सभी नौकरों ने बताया था कि लड़का लाल और मोटा-ताज़ा है। बच्चे को देखने की इच्छा उसे लगातार सताती रहती थी। लेकिन उसे किसने बुलाया था? इसके अलावा, बेटे को अपनी पत्नी और बच्चे को लाना था—चाहे वह कैसी भी हो—और उन्हें माँ को दिखाना था। जब बेटे को ही परवाह नहीं है, तो वह वहाँ क्यों जाए?

कभी-कभी जब वह अकेली होती, तो अपने भाग्य पर रोती, अपनी साड़ी के किनारे से अपने आँसू पोंछती और खुद को दिलासा देती। शायद अगर उसके दादा-दादी जीवित होते तो वह ऐसा न करता! लेकिन फिर, उसने तो उनके जीवित रहते ही वहाँ शादी कर ली थी! उसने यह बात गाँव वालों को नहीं बताई थी। क्या वह, जो खुद को बहू कहती है, कम से कम एक बार यहाँ आकर उससे मिल नहीं सकती थी? क्या

मैंने उसे यहाँ साथ रहने से मना किया था? ये विचार लगातार उसके मन को परेशान करते रहते थे।

5

लेकिन एक दोपहर करीब दो बजे कलिंगा घर आया। लेकिन तैयव्वा चुप रही और उसने उसे देखा तक नहीं। वह खलिहान में गया और वापस आया। उसने अन्न भंडार और गोदाम का निरीक्षण किया। फिर, 'इतने दिनों में क्या तुम वहाँ आकर अपनी बहू और पोती से नहीं मिल सकती थीं?' उसने ऐसे कहा जैसे किसी खंभे या दीवार को संबोधित कर रहा हो। तैयव्वा ने कोई इशारा किया। वह उसकी तरफ मुड़ा नहीं। उसने कहा, 'आओ, अभी आओ।' वह वैसे ही जाने के लिए तैयार हो गई। उसने अपना सिर ऊपर उठाया और उसे देखा। उसके बालों में कई दिनों से तेल नहीं लगा था। उसने जो साड़ी पहनी थी वह गंदी थी। रसोई में चूल्हे की राख साफ करने के कारण उसकी दाहिनी कोहनी पर कालिख लगी थी। उसके चेहरे पर सुबह से बहता पसीना सूख चुका था। 'नहा लो और कम से कम नई साड़ी पहन लो', बेटे ने कहा। माँ स्नानघर चली गई।

उसने शिखाकाई और रीठा के पाउडर के मिश्रण से अपना शरीर रगड़ा, उसी से अपने बाल भी धोए, स्नान किया और नई साड़ी पहनी। उसने खुरदरी लकड़ी की कंघी से अपने बालों को सुलझाया और जाने के लिए खड़ी हो गई। हालाँकि कलिंगा ने अपनी माँ के पहनावे के बारे में कुछ और सुझाव देने के बारे में सोचा, लेकिन उसे याद नहीं आया कि उसने इससे ज़्यादा कभी सज-धज कर रखी हो। घर में ताला लगाने के बाद, तयाव्वा अपने बेटे के पीछे चली गई।

गाँव में कोई नहीं था। औरतें और मर्द, सब खेतों और दलदली इलाकों में काम करने गए थे। सूरज बहुत तेज़ चमक रहा था। कलिंग ने पैरों में रबर के जूते और सिर पर खाकी टोपी पहन रखी थी। तैयव्वा को ज़रा भी गर्मी नहीं लग रही थी। उसने अपने गीले बाल खुले छोड़ दिए थे ताकि उन्हें सुखा सके और वह नंगे पैर उसके पीछे-पीछे चल रही थी। उसने अपने बेटे का नया खेत या फार्महाउस कभी नहीं देखा था। जुताई की मशीन एक बार गाँव के अंदर आई थी। उसने तब उसे और उसके पीछे के विशाल दाँतों को देखा था और दंग रह गई थी।

सड़क के किनारे लगी धातु की तार की बाड़ के बीचोंबीच बने फाटक को पार करते ही, जुताई मशीन बुड-बुड की आवाज़ करते हुए चल रही थी। जैसे ही वह उसके पास पहुँची, उसने देखा कि उसे चलाने वाली वही लाल महिला थी। 'क्या वह उसकी बहू थी!' तैयव्वा का दिल जिज्ञासा से तेज़ी से धड़कने लगा। डर से उसके हाथ-पैर हल्के-हल्के काँपने लगे। फिर भी, वह अपने बेटे के पीछे-पीछे चली। जब वे उसके पास पहुँचे, तो ऐसा लगा मानो जुताई मशीन सीधे उनकी ओर आ रही हो और धूल उड़ा रही हो। तैयव्वा घबरा गई। तभी कलिंग ने अपनी पत्नी से कुछ कहा। मशीन रुक गई। उसकी पत्नी उससे नीचे कूद गई। तैयव्वा यह नहीं समझ पाई कि वह स्त्री है या पुरुष। शरीर की बनावट स्त्री जैसी थी, लेकिन उसने घुटनों तक की शॉर्ट्स और सीने पर कमीज़ पहनी हुई थी। हालाँकि चोटी नहीं थी, लेकिन बाल काफी लंबे थे और नाटक के कलाकारों की तरह कटे हुए थे। कलिंग ने अंग्रेज़ी में कुछ कहा। वह तैयव्वा के पास आई, उसके हाथ पकड़े और उसकी दाहिनी हथेली के ऊपरी हिस्से को चूमा। तैयव्वा को अजीब लगा। उसने तुरंत अपने हाथ पीछे खींच लिए। बिना ध्यान दिए ही बहू ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे गले लगा लिया। सास शर्म से लाल हो उठी।

जब तीनों टिन के घर पहुँचे, तो जमाल बच्चे के साथ खेल रहा था। शिशु अपनी माँ की तरह लाल था। उसकी आँखें नीले काँच की तरह चमक रही थीं। उसकी त्वचा कटे हुए पपीते से भी ज़्यादा लाल थी। उसके बाल अंगूठियों की तरह घुंघराले थे। कलिंगा भी बचपन में ऐसा ही दिखता था। लेकिन उसका रंग इतना लाल नहीं था। वह सफ़ेद था। उसने बच्चे को उठाया और उसकी माँ को दे दिया। माँ ने हाथ फैलाकर उसे अपनी बाहों में लिया और बड़े प्यार से गले लगाया। लेकिन इस नए, अपरिचित मानव रूप को देखकर बच्चा चीख उठा। इतना ही नहीं, वह रोने लगा और उसकी साँस अटक गई। कलिंगा ने उसे उठाया तो भी उसकी साँस नहीं लौटी। तुरंत ही हिल्डा ने अपने बच्चे को अपनी बाहों में लिया और अपनी भाषा में कुछ दिलासा भरे शब्द कहे। जो साँस अंदर अटकी हुई थी, वह अब रोने की आवाज़ बनकर निकली। जमाल ने कहा, 'यह पहचान नहीं पाया।'

शिशु पाँच मिनट में शांत हो गया। लेकिन जब तैयव्वा ने दोबारा उसकी ओर हाथ बढ़ाया, तो वह फिर से तेज़ आवाज़ में रोने लगा। इस बार जमाल उसे बाहर ले गया। बहू अंदर रसोई में चली गई। बेटे ने अपनी माँ को सोफे की ओर इशारा करते हुए

बैठने को कहा। वह ज़मीन पर बैठ गई। जब उसने बार-बार सोफे पर बैठने को कहा, तब भी उसने हाथ हिलाकर कहा, मानो कह रही हो, मुझे सोफे की क्या ज़रूरत है?

अभी बहू कांच की थालियों में जैम लगी ब्रेड की कटी हुई स्लाइस और बिस्कुट लेकर आई। साथ में केले और संतरे भी थे। जब थाली उसके सामने रखी गई, तो उसने हाथ हिलाकर इशारा किया, 'मुझे यह नहीं चाहिए।' लेकिन जब बेटे ने उसे ज़बरदस्ती खिलाई, तो उसने हाथ में लेकर ब्रेड और केले खा लिए। बेटा सोफे पर बैठा था। बहू उसके बगल में बैठ गई और सामने रखी चायदानी पर रखी थाली से खाने लगी। सास वैसे भी चुप थी। बहू को भाषा नहीं आती थी। बेटा कुछ कह नहीं पा रहा था। चुपचाप नाश्ता खत्म होने के बाद, बहू अंदर से कॉफी ले आई। लेकिन सास ने उसे नहीं पिया।

कुछ देर वहाँ बैठने के बाद, तयव्वा उठी और मंदिर की ओर चल पड़ी। कल्याणी में लगा हुआ पंप उसने पहली बार देखा था। वहाँ से वह मंदिर की ओर ढलान पर चढ़ी और परिसर में लगी बड़ी घंटी को चार बार बजाया। उसने दक्षिणावर्त परिक्रमा की, फिर मंदिर की दहलीज पर अपना माथा टेककर प्रणाम किया। वेंकटरमण ने दहलीज पर जो तीन बिल्व पत्र रखे थे, उनमें से एक उसने अपनी साड़ी के किनारे पर बाँध लिया। इसके बाद, उसने मंदिर की ओर मुख किए नंदी के चरणों को छुआ और फिर अपना हाथ अपने सिर पर रखा। उसने नंदी के चेहरे और सींगों को दोनों हाथों से थामकर प्यार से गले लगाया, अपनी आँखों को हाथों से छुआ और फिर लगभग एक घंटे तक मंदिर के बरामदे में अकेली बैठ गई। वह मंदिर के निर्माण के समय को याद करने लगी: कैसे उसके ससुर हमेशा यहाँ मौजूद रहते थे, कैसे उसकी सास घर पर उत्सव के माहौल में रहती थी, कैसे वह पत्थर के काम करने वालों के लिए भोजन लाती थी, और फिर मूर्ति की स्थापना। मंदिर बनने के बाद ही यहाँ पशु मेला लगता था। मवेशी नीचे उस जगह पर इकट्ठा हो जाते थे, जिसे अब इन लोगों ने मशीनों से जोतकर फसलें बो दी हैं। उसके दोनों ससुराल वाले एक साल के भीतर ही मर गए। अब बेटे ने वहाँ एक खेत बनाया है और बाड़ लगा दी है। अब से किसी भी संक्रांति पर यहाँ पशु मेला नहीं लग सकता। पिछली संक्रांति पर वेंकटरमण ने देवता की विशेष पूजा की थी। तैयव्वा ने उपवास रखा, फिर यहाँ आकर तीर्थ और प्रसाद ग्रहण किया। अपने घर के गौशाला में उसने मीठा पोंगल बनाया और सभी गायों को हल्दी और कुमकुम लगाकर खिलाया।

यहां मेला कब लगेगा? उसका मन चिंता से भर गया। इसी बीच, उसने नीचे खेत में जुताई मशीन की बुद-बुद की आवाज सुनी। तयव्वा अपनी जगह से उठी, आगे आई और देखा। उसकी बहू खुद उस पर बैठी उसे चला रही थी। तयव्वा ने फिर से देवता को प्रणाम किया, नंदी को छुआ और नीचे उतरने लगी। अपने बेटे के खेत की ओर मुड़ने के बजाय, उसने अग्रहारा मार्ग चुना, हालांकि वह लंबा था, और वहां से गांव की ओर मुड़ गई।

6

तैयव्वा फिर कभी अपने बेटे के फार्महाउस नहीं गई। वह घर पर ही रही और अपने रोज़मर्रा के काम करती रही। हर दिन उस घर में दूध जाता था। लेकिन वहाँ से एक भी गाय नहीं ली जाती थी। यही उस बूढ़ी औरत के लिए एकमात्र सांत्वना थी।

एक शुक्रवार की दोपहर करीब तीन बजे, उसने पूरे घर का फर्श साफ कर दिया था और रंगोली बना रही थी। गाँव के हर परिवार में हर शुक्रवार शाम को घर की सफाई और फर्श पोंछने और पशुओं की पूजा करने की सदियों पुरानी परंपरा थी। तयव्वा भीतरी आंगन की सामने वाली दीवार के नीचे दो पैटर्न वाली रंगोली बना रही थी। शाम को, उसे रंगोली पर गाय खड़ी करने के बाद अगरबत्ती जलानी होती थी। तभी कलिंग और उसकी पत्नी अंदर आए।

उनका आना अप्रत्याशित था। झुकने से कमर में दर्द हो रहा था, तैयव्वा ने कमर सीधी की और स्थिर खड़ी हो गई। उसकी बहू ने आज चड्डी नहीं पहनी थी। उसने घुटनों तक खुला हुआ स्कर्ट और पुरुषों की तरह ऊपरी शरीर पर कमीज़ पहनी थी। उसके सिर पर एक चौड़ी टोपी थी। अपने पति के निर्देशानुसार, उसने अपने जूते बाहर दरवाजे पर ही उतार दिए, दहलीज पार की और अंदर कदम रखा। लेकिन अचानक, उसने अपने पैर रोक लिए, दहलीज पर खड़ी हो गई और अपने पति से पूछा: 'यह क्या गंदगी है?'

घर की सफाई हो चुकी है।

'मतलब क्या? इसमें गोबर की बदबू आ रही है। फर्श पर गोबर फैलाना सफाई कहलाता है?'

मैंने तुम्हें इस देश के रीति-रिवाजों के बारे में पहले ही बता दिया है—फर्श तभी साफ होता है जब उसे गोबर से धोया जाए। उस सफाई से धार्मिक शुद्धता भी प्राप्त

होती है। शास्त्रों में यही कहा गया है।

यह एक सचमुच समझ से परे प्रथा है।

'गाय के गोबर में रोगाणुनाशक और रोगनाशक गुण होते हैं। इसीलिए वे ऐसा करते हैं', कलिंगा ने अपने विश्लेषण को उसके तर्क से मेल खाने की कोशिश करते हुए कहा।

'उन्हें रोगाणुनाशक लोशन लगाने दो, उन्हें डेटॉल लगाने दो। उन्हें गोबर क्यों लगाना चाहिए? यह किस प्रकार का धर्म है?'

तब तक तैयव्वा ने उसे अंदर आने का इशारा किया। उसने अपने पैर इस तरह रखे कि तलवे ज़मीन पर सपाट हों और उंगलियां ऊपर की ओर हों, और अंदर आकर उसने अपने पति से पूछा: 'ये ज़मीन पर क्या डिज़ाइन बने हैं?'

'आज शुक्रवार है। शाम को, डिजाइन के केंद्र में एक गाय खड़ी होगी और मेरी मां उसकी पूजा करेंगी।'

'काफी दिलचस्प।'

हिल्डा मवेशी बाड़ा देखना चाहती थी। हाल ही में, वे अपनी मौजूदा खेती के साथ-साथ वैज्ञानिक पद्धति से पशुपालन शुरू करने की योजना बना रहे थे। वह यह जानने के लिए उत्सुक थी कि इस देश में लोग मवेशियों का पालन-पोषण कैसे करते हैं और उन्हें पारंपरिक तरीके से कैसे पालते हैं। कलिंगा उसे अपने परिवार का गौशाला दिखाने के लिए यहाँ लाया था, जो पुराने समय से मौजूद था। वह उसे अपने साथ ले गया और पिछले दरवाजे से गौशाला में गया। उसने पूरे गौशाला का एक बार निरीक्षण किया और कहा: 'यह काफी बड़ा है। लेकिन यह बिल्कुल भी स्वस्थ नहीं है। वे मवेशियों को अपने घर के एक हिस्से में बांधते हैं, क्या उन्हें बीमारी नहीं लगती?'

'यहाँ के लोग ऐसा नहीं सोचते। उनका मानना है कि गाय का गोबर और मूत्र रोगनाशक होते हैं। इसके अलावा, उनकी मान्यता के अनुसार, गाय भगवान के समान होती है। बीच में इस पलंग को देखो। मेरे दादाजी रात को इस पर सोते थे।'

'बेचारा बूढ़ा आदमी। शायद इसीलिए उसकी जल्दी मौत हो गई।'

'बिल्कुल भी जल्दी नहीं। जब उनका निधन हुआ तब वे पचहत्तर वर्ष के थे। शायद वे और अधिक जीते...' कलिंग ने कहा और चुप हो गए। अपने दादा की मृत्यु की याद ने उनके मन में बेचैनी पैदा कर दी। हिल्डा ने भी इस विषय पर और चर्चा नहीं की। वह पास जाकर पशुओं के पानी के कुंड और घास के नाले का निरीक्षण

करने लगीं। कुछ कुंडों में न केवल चावल धोने का पानी था, बल्कि मिट्टी के बर्तन को धोने का पानी भी था जिसमें रागी का आटा उबाला जाता था। उन्हें उसकी गंध असहनीय लगी। वहाँ से वह खलिहान के पीछे वाले दरवाजे पर गईं और उसके बाहरी हिस्से को एक बार देखने के बाद अपने पति का हाथ पकड़कर बोलीं: 'चलो, चलते हैं।'

जब वे हॉल में पहुँचे, तो तयव्वा रसोई में थीं। कलिंग ने पुकारा, 'हम जा रहे हैं।' वह बाहर आईं और उन्हें बैठने का इशारा किया। दोनों कुछ देर तक पलंग पर बैठे रहे। तयव्वा का मन हुआ कि उन्हें कुछ खाने को दें। घर में और कुछ नहीं था। सुबह का खाना था: सेम का शोरबा, रागी मुड्डे और चावल। उन्होंने हाथ के इशारे से पूछा, 'क्या तुम खाना खाओगे?' उनकी बात ठीक से न समझ पाने पर कलिंग ने कहा, 'हाँ, अगर कुछ हो तो।' जब कलिंग ने अंदर से लाई हुई दो पीतल की थालियाँ देखीं, तो उन्होंने कहा कि उन्हें खाना नहीं चाहिए। तयव्वा ने दोनों को दो-दो प्याले दूध दिया। उन्होंने दूध पिया और जाने की तैयारी करने लगे।

हिल्डा के पैरों के तलवों पर गोबर लगा हुआ था। उसने उसे धोने के लिए पानी माँगा। कलिंग के कहने पर तैयव्वा एक बर्तन में पानी लेकर आई। फिर कलिंग ने स्वयं उसके पैरों पर पानी डाला। उसने अपने तलवों को द्वार पर रखे पत्थर पर रगड़ा और धोने के बाद कलिंग ने उसे अपनी जेब से एक रुमाल दिया। उसने उससे अपने पैर सुखाए, फिर जूते-चप्पल पहने और चली गई। पति अपनी पत्नी के पीछे-पीछे गया।

यह सब देखकर तैयव्वा बहुत क्रोधित हुई। बाहर से घर में आने वाला हर व्यक्ति प्रवेश करने से पहले पैर धोता है। लेकिन उसके बेटे की पत्नी ने घर से बाहर जाने से पहले ही पैर धो लिए। हर जगह पत्नी पति के पैरों पर जल डालती है। लेकिन इस पति ने स्वयं बर्तन से उसके पैरों पर जल डाला। यह सोचकर उसका क्रोध और बढ़ गया। वह एक बार रो पड़ी और ऐसी बहू मिलने पर अपना दुर्भाग्य व्यक्त किया।

जब फसल की कटाई और बिक्री पूरी हो गई, तो बीज, खाद, ट्रैक्टर और पंप के ईंधन और नौकरों की मजदूरी पर हुए खर्च को घटाने के बाद साढ़े नौ हजार रुपये बचे। यह खेत की पहली फसल थी। कलिंगा और हिल्डा दोनों को पूरा विश्वास था कि जैसे-जैसे ज़मीन उपजाऊ होती जाएगी, फसल की पैदावार बढ़ेगी और मुनाफा भी बढ़ेगा। चूंकि उन्हें थोक का कारोबार मिलता था, इसलिए मुंबई को आलू भेजने वाले जिले के एक सट्टेबाज व्यापारी ने तेरह हजार दो सौ रुपये दिए और आलू की पूरी फसल बोरियों में भरकर एक ट्रक में ले गए।

यहां आने के अगले दिन ही हिल्डा ने खेत के हर हिस्से की मिट्टी की गुणवत्ता की बारीकी से जांच की। हालांकि वह काफी हद तक कलिंगा द्वारा पहले किए गए परीक्षण परिणामों से सहमत थी, लेकिन उसने कलिंगा को यह भी दिखाया कि उसके कुछ निर्णय गलत थे। क्षेत्र की सामान्य जलवायु और विभिन्न महीनों की जलवायु परिस्थितियों पर विचार करने के बाद, उन्होंने खेत के एक हिस्से में कपास और दूसरे हिस्से में सिगरेट में इस्तेमाल होने वाला वर्जीनिया तंबाकू बोने का फैसला किया। कलिंगा जिला कृषि सहकारी समिति गए, उनकी सलाह ली और आवश्यक बीज और खाद लेकर वापस आए।

आलू की कटाई के दिन से ही जमाल प्रतिदिन आठ घंटे ट्रैक्टर चलाकर खेत जोत रहा था। जब उसे आराम की ज़रूरत होती, तो हिल्डा ट्रैक्टर चलाती थी। इसी वजह से इस बार मिट्टी पहले से कहीं ज़्यादा शुद्ध थी।

कपास और तंबाकू की बुवाई हो जाने और पौधे अंकुरित होने के बाद, कलिंगा और हिल्डा को कुछ खाली समय मिला और उन्होंने अन्य चीजों के बारे में सोचना शुरू किया। एक दिन, हिल्डा सड़क के उस पार स्थित चारागाह में टहलने के बाद लौटी और बोली: “उस चारागाह की घास साधारण किस्म की है। यदि उचित मात्रा में खाद डाली जाए और पानी की व्यवस्था की जाए, तो हम उस जगह पर बेहतर गुणवत्ता वाली घास उगा सकते हैं। उसी ज़मीन पर हम लगभग सत्तर-अस्सी मवेशी पाल सकते हैं।”

‘इन सब कामों के लिए हमें पूंजी की जरूरत है। कपास और तंबाकू में निवेश की गई रकम मिलने के बाद हम ये सब शुरू कर सकते हैं। सबसे पहले हमें चरागाह के

लिए बाड़ लगानी होगी। फिर हमें ट्रैक्टर चलाना होगा, जमीन जोतनी होगी और फिर नई घास लगानी होगी। लेकिन उससे पहले हमें पानी की व्यवस्था करनी होगी।'

हिल्डा ने इन सब खर्चों का अनुमान लगाया और कहा: 'हमने सरकारी ऋण की किस्त चुका दी है। इसके अलावा, कपास और तंबाकू की कटाई तक के खर्चों को घटाने के बाद हमारे पास तीन हजार बचेंगे। गांव वाले घर में अनाज और दालें देख लो और उन्हें बेच दो। अगर उससे भी पर्याप्त न हो, तो तुमने कहा था कि घर में कुछ सोना है—उसे बेच दो। उस बेकार पूंजी, सोने का क्या फायदा—उससे तो कोई लाभ नहीं होता?'

मैं अनाज बेच सकता हूँ। लेकिन अगर मैंने सोने के पास जाने की कोशिश की तो मेरी माँ चुप नहीं बैठेगी। वह पूरे गाँव में हंगामा खड़ा कर सकती है।

'मेरे प्रिय, यह देश प्रगति नहीं करेगा', हिल्डा ने अपना मत व्यक्त किया। कलिंगा भी इससे सहमत थी।

अगली फसल तक आवश्यक मात्रा अलग रखने के बाद बचे हुए अनाज को बेचकर उसने दो हजार रुपये प्राप्त किए। इसमें उसने अपने घर में मौजूद तीन हजार रुपये भी मिला दिए और सड़क के उस पार स्थित चरागाह के चारों ओर धातु के कांटेदार तार की बाड़ लगा दी। इसके अलावा, उसने जस्ता की चादर से बना एक बड़ा खलिहान भी बनवाया और पास की ढलान पर एक कच्चा कुआँ खोदा। चूंकि वहाँ पर्याप्त भूजल था, इसलिए वह जल्दी भर गया। उसने खलिहान के पीछे रखे भूसे के ढेरों में से एक को बैलगाड़ी पर लादकर अपने घर में पहुँचाया। इसके बाद, उसने दूध देने वाली गायों को यहाँ स्थानांतरित कर दिया, जबकि दूध पीना छोड़ चुके बैलों और बछड़ों को वहीं छोड़ दिया।

2

बाईस गायें थीं—जिनमें से सोलह दूध देने वाली थीं—और सोलह बछड़े थे। किसी भी तरह, चरने के लिए गए पशुओं में से अड़तीस गायब थे। जब तयाव्वा ने यह देखा, तो उसने नौकरों से इसके बारे में पूछा। नौकर ने कहा कि वे सभी चरागाह में बने नए बाड़े में बंधे हुए हैं। हालांकि रात के दीपक पहले ही जला दिए गए थे, फिर भी वह एक नौकर को साथ लेकर नए बाड़े में गई। उसने न तो उसे देखा था और न ही उसके बारे में सुना था। हालांकि नौकरों को पता था कि बाड़ लगाने के बाद चरागाह के बीच में

टिन का घर बनाया गया था, लेकिन उन्होंने मान लिया था कि यह जुताई मशीन रखने और मनुष्यों के रहने के लिए है। जब वे वहां गए और देखा, तो सभी गायें अलग-अलग बंधी हुई थीं। नौकर उनका दूध दुह रहे थे। शायद पहले दिन होने के कारण, कलिंग गायों के दूध दुहने की देखरेख कर रहे थे।

खलिहान में पहुँचकर तायव्वा ने गुस्से से कलिंग से पूछा कि यह सब क्या है। उसने सोचा भी नहीं था कि वह अंधेरे में, इस समय यहाँ आएगी। 'मैंने इसे इसलिए बनाया है क्योंकि तुम अकेले इन सबकी देखभाल नहीं कर पाओगे। ये सब रोज़ाना तुम्हारे लिए घर के लिए ज़रूरी दूध लाएँगे।'

तैयव्वा ने हाथ हिलाते हुए कहा, 'तुम इन्हीं गायों को मारोगे और खाओगे।' उसने पूछा, 'किस कमीने ने तुम्हें ये बताया? ये सब झूठ है। क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?' तैयव्वा ने गायों के बंधन खोलने शुरू कर दिए। 'माँ, क्या तुम यहाँ से चली जाओगी और घर वापस आ जाओगी? या नहीं?' उसने तैयव्वा को फटकारा। जमाल, जो अभी-अभी वहाँ पहुँचा था, ने तैयव्वा को दिलासा देते हुए कहा, 'डरो मत माँ। गायों को कुछ नहीं होगा। सोचो कि इनकी देखभाल करना मेरी ज़िम्मेदारी है।'

तैयव्वा ऐसी स्थिति में थी जहाँ वह कुछ नहीं कर सकती थी। उसकी आँखों में आँसू भर आए। पास खड़ी एक गाय का चेहरा पकड़कर वह सिसकियाँ भरती रही। कलिंग को यह देखकर दुख तो हुआ, लेकिन साथ ही अपनी माँ के इस व्यवहार पर गुस्सा भी आया। उसने कहा, “अगर तुम चाहो तो दो दूध देने वाली गायें घर ले जाओ।” तैयव्वा यह भी नहीं चाहती थी, इसलिए वह चली गई। लेकिन कलिंग ने उसके साथ आए नौकर से कहा कि वह दो गायों को खोलकर अपने साथ ले जाए। अनजाने में ही सही, नौकर ने दो पुण्यकोटी गायों को उनके बछड़ों सहित खोल दिया और तैयव्वा के साथ चला गया।

तायव्वा गाँव तो आई, लेकिन घर नहीं लौटी। वह यांगता गौड़ा के घर पहुँची। उसके पीछे आई नौकरानी ने गायों को दरवाजे के खंभे से बाँध दिया और उसके साथ अंदर चली गई। यांगता गौड़ा, जो अभी-अभी अपना खाना खाकर हथेली पर तंबाकू मल रहे थे, ने उसका स्वागत किया और उसे खजूर के पत्तों से बनी चटाई पर बैठाया। उसने हाथ के इशारों से सारी बात बताई। उसके साथ आई नौकरानी ने उसे शब्दों में समझाया। उसने इशारों से बताया कि वे उन गायों को काटकर खाएँगे।

तब तक आस-पड़ोस के चार बुजुर्ग आ गए। उनके संदेश भेजने के बाद, लगभग सात-आठ अन्य प्रमुख ग्रामीण भी इसमें शामिल हो गए। वे सभी कलिंगा से पहले से ही बहुत नाराज़ थे। यह सच था कि वह चारागाह सदियों से बुजुर्ग कलिंगा गौड़ा के पूर्वजों की थी। लेकिन जिनके पास अपना निजी चारागाह नहीं था, वे भी उसमें अपने मवेशी चराते थे। गाँव में किसी ने भी कभी भेदभाव नहीं किया था और न ही उस ज़मीन पर अपना मालिकाना हक जताया था जहाँ मवेशी चरते थे। अब, एक साल के भीतर, कलिंगा ने न केवल सड़क के बाहर स्थित अपने चारागाह की बाड़बंदी कर दी थी, बल्कि चारागाह के आगे की पहाड़ियों की ज़मीन की भी बाड़बंदी करके खेती कर दी थी। गाँव के आसपास मवेशियों के चरने की जगह कम हो गई थी। अब उसने सड़क के किनारे वाली ज़मीन पर भी बाड़ लगा दी है। उन लोगों का क्या होगा जिनके पास अपना चारागाह नहीं था? अब, गाँव में केवल यांगता गौड़ा का छोटा सा चारागाह ही बचा था। लेकिन अगर यांगता गौड़ा के मवेशी समेत गांव के सारे मवेशी अंदर आ जाएं, तो भी यह एक महीने तक नहीं टिक पाएगा।

कई ग्रामीणों ने सड़क के किनारे चरागाह के चारों ओर बाड़ बनते हुए देखा था। कलिंग की लाल पत्नी ने बड़ा सा पैमाना (वही पैमाना जो इंजीनियर साहब के नौकर इस्तेमाल करते थे) पकड़ रखा था, नाप ले रही थी और खास जगहों पर गड्ढे खोदने के निर्देश दे रही थी। उसने गड्ढों में पत्थर के खंभे लगवाए और फिर एक पर्यवेक्षक की तरह, खंभों के छेदों में धातु के कांटेदार तार डालने और निकालने के निर्देश दे रही थी। सभी ग्रामीणों के मन में उसके प्रति एक अजीब सा डर था। हालांकि उनमें से कई उसे करीब से देखना चाहते थे, फिर भी वे दूर खड़े होकर डरते हुए उसे देखते और फिर लौट जाते।

अब यांगता गौड़ा ने सबसे पूछा कि क्या किया जा सकता है। तयाव्वा ने इशारा किया, 'जाओ, उस बाड़ को काट दो।' यांगता गौड़ा ने भी सहमति जताते हुए कहा, 'यही सबसे अच्छा उपाय है।' लेकिन गांव के पुरुष इस तरह का आक्रामक कार्य करने से डर रहे थे।

एक ने पूछा, 'उसके पास बंदूक है, मेरे दोस्त। अगर वह तुम्हें उससे मार डाले तो तुम क्या करोगे?'

एक और ने बताया, 'वह उस मशीन पर बैठती है और उसे चलाती है जिससे वह बैरो-रो की आवाज आती है। वह उसे बाहर निकालेगी और सीधे तुम्हारे ऊपर घुमा

देगी।'

'कातिल कुतिया, एकदम घिनौनी कातिल कुतिया, मेरे यार। वो उस चड्डी में किसी मर्द जैसी दिखती है। उसकी हर जांघ हम दोनों के बराबर लंबी है। अगर वो हमारे देश की औरत होती, तो हमें डरने की ज़रूरत नहीं होती।' जब एक और आदमी ने ये कहा, तो चौथे बहादुर आदमी ने अपनी समझदारी भरी बात जोड़ते हुए कहा: 'वो मुसलमान हरामखोर? उसके पास खंजर है। वो उसके साथ आएगा।'

यांगता गौड़ा का बेटा, माता, अब सत्ताईस या अट्ठाईस साल का था। उसकी पत्नी ने अभी-अभी दूसरे बेटे को जन्म दिया था। वह खड़ा हुआ और गरजते हुए बोला, 'शिखंडी के सभी बेटों, तुम सब नपुंसकों, क्या तुम सब चूड़ियाँ पहने हो? मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूँ। उसके पास बंदूक है, है ना? बंदूक? अगर गाँव के सारे लोग लाठियाँ लेकर आ जाएँ, तो वह भाग जाएगी, उसकी जांघें उसकी निकर के अंदर काँपती रहेंगी!'

इन शब्दों को सुनकर सभा में जोश भर गया। तैयव्वा ने इशारा करते हुए पूछा, 'क्या आप सबने अपनी मूंछें मुंडवा ली हैं?' लेकिन कट्टेमाने तम्मय्या ने व्यावहारिकता से कहा, 'देखो, लगता है वो डिप्टी कमिश्नर के साथ बैठकर सिगरेट पीता है। अगर कोई झगड़ा हुआ तो वो पुलिस को बुला लेगा, और पुलिस आकर पूरे गांव को गिरफ्तार कर ले जाएगी। अगर तुम्हारे हाथों में हथकड़ी लगाकर तुम्हें जेल में डाल दिया जाए तो क्या तुम्हारी मर्दानगी काम आएगी?' सभा में तुरंत ही जोश गायब हो गया।

वे आधी रात तक चरागाह के चारों ओर लगी बाड़ हटाने के बारे में बातें करते रहे। लेकिन उनके मन में कोई ठोस योजना नहीं बनी। केवल यांगता गौड़ा के बेटे माता ने ही सबको नपुंसक कहकर कोसा और शारीरिक शक्ति के महत्व पर बल दिया। लेकिन गाँव का जोश फीका पड़ गया था। वहाँ मौजूद कोई भी यह नहीं समझ पा रहा था कि इन पुरुषों की आंतरिक शक्ति—वही शक्ति जिसने उन्हें बाघों और लकड़बग्घों पर हमला करके उन्हें मार गिराने में सक्षम बनाया था—इस तरह क्यों क्षीण हो गई। किसी में भी इस बारे में सोचने की क्षमता नहीं थी।

चौदह दुधारू गायों में से दो गायों का दूध कलिंगा, हिल्डा, उनके बच्चे और जमाल के लिए पर्याप्त था, फिर भी कुछ दूध बच जाता था। बाकी बारह गायों का दूध, उनके बछड़ों के जी भर कर पीने के बाद भी, सुबह लगभग पैंतीस से चालीस लीटर और शाम को लगभग तीस लीटर बच जाता था। उस सारे दूध का क्या किया जाता? चाहे कितना भी दूध पैदा होता, गाँव में कोई भी उसे बेचता नहीं था; जिन घरों में दुधारू गायें नहीं होती थीं, वहाँ के बच्चों को वह मुफ्त में दे दिया जाता था। बचे हुए दूध को दही बनाकर उसका मक्खन निकाला जाता और उसे भंडारित कर लिया जाता। छाछ भी दाना की तरह मुफ्त में दी जाती थी, जो भी माँगता था। घर में सबके खाने के बाद जो मक्खन बचता था, उसे ही साप्ताहिक बाजार में बेचा जाता था। इस प्रकार, दुधारू गायों का पालन-पोषण बिल्कुल भी लाभदायक व्यवसाय नहीं था। पैसा तभी दिखाई देता था जब वयस्क पशुओं को पशु मेले या बाजार में बेचा जाता था।

एक दिन कलिंगा मोटरगाड़ी से तालुक गए और बस स्टैंड पर होटल मालिक से मिले। उन्होंने कलिंगा से कहा कि वे जितना चाहें उतना दूध भेज दें, और अगर उसमें पानी न मिलाया गया हो, तो वे हर दो लीटर दूध के लिए दस आना देंगे। उसी दिन कलिंगा ने दूध के चार बड़े डिब्बे खरीदे और वापस आ गए। अगले दिन से उन्होंने मोटरगाड़ी के आने से पहले चालीस लीटर दूध निकालने और उसे दो डिब्बों में भरने की व्यवस्था कर ली। पिछले तीन महीनों से उस सड़क पर तीन मोटरगाड़ियाँ चल रही थीं। शाम की मोटरगाड़ी छह बजे आती थी। उन्होंने नौकरों को निर्देश दिया कि मोटरगाड़ी के आने से पहले दूध निकालना पूरा करके भेज दें। डिब्बे के बाहर उन्होंने एक कागज का नोट चिपकाया जिस पर उन्होंने उसमें मौजूद दूध की मात्रा लिखी थी।

सत्तर लीटर दूध, यानी कम से कम प्रतिदिन इक्कीस रुपये और चौदह आना। प्रत्येक मोटर के लिए पच्चीस रुपये प्रति माह देने पड़ते थे। यह राशि काटने के बाद प्रतिदिन बीस रुपये बचते थे। कलिंग ने मन ही मन यह बात नोट कर ली। पशुपालन वाकई एक लाभदायक व्यवसाय था! लेकिन इसे आर्थिक रूप से सुरक्षित तरीके से करना आवश्यक था। यदि उसके दादाजी द्वारा दान में दिया गया सारा दूध बेच दिया जाता, तो चार-पाँच लाख रुपये प्राप्त हो जाते। उन्होंने वह भी नहीं किया। अंत में, उन्होंने मंदिर के निर्माण में अपना सारा पैसा खर्च कर दिया और फिर मर गए, जिससे मुझे सरकार से ऋण के लिए भीख मांगनी पड़ी, कलिंग ने मन ही मन सोचा।

एक दिन जब नौकर गायों का दूध दुह रहे थे, तभी हिल्डा वहाँ आ पहुँची। बछड़े हर गाय के थन के एक तरफ से दूध पी रहे थे। नौकर दूसरी तरफ के थनों से दूध दुह रहा था। यह देखकर हिल्डा ने अपने पति से पूछा, “ये बछड़े लगातार दूध क्यों पी रहे हैं?”

‘अगर बछड़ा दूध नहीं पिएगा तो गाय दूध नहीं देगी। इसके अलावा, बछड़े को पर्याप्त भोजन की भी जरूरत होती है।’

प्रिय, क्या तुम अब भी यही मानती हो? अगर थन दूध से भर जाए, तो गाय को तब तक आराम नहीं मिलेगा जब तक दूध बाहर न निकल जाए। क्या उसे तब तक बेचैनी नहीं होती जब तक मूत्राशय में भरा मूत्र बाहर न निकल जाए? थन के साथ भी ऐसा ही होता है। यह कहना अवैज्ञानिक है कि गाय तब तक दूध नहीं देती जब तक उसका बछड़ा अपना मुंह वहां न लगाए। तुमने खुद अमेरिका में देखा है। क्या वे रबर की नली लगाकर सारा दूध नहीं निकाल लेते? इसके अलावा, किसी भी बछड़े का पेट सिर्फ मां के दूध से नहीं भरता। बछड़े को स्वस्थ रूप से बढ़ने के लिए अन्य प्रकार के पौष्टिक आहार की भी आवश्यकता होती है। अब से नौकरों को कहो कि दूध निकालने से पहले बछड़े को बांध दें।

कलिंग ने आदेश दिया। लेकिन बछड़े को थन से अलग करने के बाद, जब नौकरों ने उसे छूने की कोशिश की, तो गायें लात मारने लगीं। बछड़े चीखने-चिल्लाने लगे, "अंबाआ" और छटपटाने लगे। उन गायों को अपने बछड़ों के बिना दुहा जाने की आदत नहीं थी। लेकिन हिल्डा नहीं मानी। वह ऐसी व्यक्ति थीं जिन्होंने वैज्ञानिक रूप से इस बात का अध्ययन किया था कि विशिष्ट मांसपेशियों से दूध कैसे निकलता है, कहाँ और कैसे जमा होता है, और अगर दूध न निकले तो किस तरह की तकलीफ होती है।

लकड़ी के चबूतरे बनाए गए और गायों को दुहने के लिए उन पर रखा गया। तीसरे दिन से गायें आज्ञाकारी हो गईं। वे बछड़ों को दुहने से पहले केवल एक मिनट के लिए थन लगाने देती थीं, और जब तक बछड़ा दूध छोड़ देता और पेशाब कर लेता, तब तक वे उसे खींचकर गाय के सामने बांध देती थीं। बछड़ा चुपचाप अपनी माँ के शरीर को चाटता रहता था। फिर, जब सारा दूध निकल जाता, तब बछड़े को अपनी माँ के थन से दूध पीने का आनंद लेने दिया जाता था।

जब उन्होंने यह नई व्यवस्था देखी, तो गाय दुहने में लगे नौकर परेशान हो गए। उन्होंने बड़े गौड़ा के परिवार में गाय दुहने का यह तरीका पहले कभी नहीं देखा था। न ही उन्होंने कभी इसके बारे में सुना था। उनमें से एक बुजुर्ग ने एक दिन कलिंग से पूछा, “मेरे साहब, लोग कहते हैं कि अगर आप बच्चे का मुंह छीनकर गाय दुहते हैं, तो दूध जहरीला हो जाता है। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।”

हालांकि, इस बात का कोई सबूत नहीं था कि दूध जहरीला हो जाएगा। सारा दूध होटल को भेज दिया गया। इस दूध से बनी कॉफी और चाय पीने वाले हजारों लोगों में से किसी की भी मौत जहर से नहीं हुई। कलिंग ने कहा, 'मुझे तुम्हारे पुराणों की जरूरत नहीं है। बस अपना काम करो।'

जब गायों को उनके बछड़ों से अलग करके दुहा गया, तो सुबह के समय दूध की मात्रा सत्तर लीटर और शाम को साठ लीटर तक पहुँच गई। कलिंगा ने तालुक के अन्य होटलों से पूछताछ की। उन्होंने कहा कि अगर वह बिना मिलावट वाला दूध नियमित रूप से उपलब्ध कराने का वादा करे, तो वे हर दो लीटर दूध के लिए बारह आना देंगे। बस स्टैंड वाले होटल ने अपनी मर्ज़ी से बारह आना देने पर सहमति जताई, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उन्हें मिलने वाला शुद्ध दूध खो न जाए। ज़िला बस स्टैंड पर उनका एक बड़ा होटल भी था। अगर उन्हें बेहतर दूध ज़्यादा मात्रा में मिलता, तो वे उसे मोटर से वहाँ भेज सकते थे। उन्होंने कहा, 'दूध चाहे कितना भी हो, सिर्फ़ हमें ही दीजिए, कहीं और नहीं।' यह मायने नहीं रखता था कि दूध कौन ले रहा है, बस पैसा समय पर मिलना चाहिए और लेन-देन ईमानदार होना चाहिए। बस स्टैंड वाले होटल ने उन्हें अग्रिम भुगतान भी दिया। कलिंगा ने चार और डिब्बे खरीदे।

अब प्रतिदिन चालीस से तैंतालीस या चौवालीस रुपये का दूध प्राप्त होने लगा था। मोटर को दिए जाने वाले पैसे बढ़कर पचास या साठ रुपये प्रति माह हो गए थे। बछड़ों के पौष्टिक आहार पर अतिरिक्त खर्च होने लगा था। लेकिन हिसाब-किताब करने पर पता चला कि दूध निकालते समय बछड़ों को बांधकर रखना अधिक लाभदायक था।

एक दिन, जब गायों का दुहरण हो रहा था, हिल्डा वहाँ आई और बोली: ‘प्रिय, अगर गायों को बेहतर और अधिक पौष्टिक चारा दिया जाए, तो हम दूध उत्पादन बढ़ा सकते हैं। वैसे भी, इन गायों की दूध देने की क्षमता कम है। इस लिहाज से मेरे देश की गायें कहीं बेहतर हैं। इसके अलावा, हमें दुहने की तकनीक भी बदलनी होगी। अगर हम इंसानी उंगलियों की जगह रबर की नलियों का इस्तेमाल करके मशीन के दबाव

से दूध निकालें, तो यह स्वच्छता के लिहाज से भी बेहतर होगा। आपने यह हमारे अमेरिका वाले घर में देखा ही होगा, है ना?'

'हां, मैंने इसे देखा है। लेकिन इसके लिए हमें छह महीने और चाहिए', कलिंगा ने कहा।

सरकार ने पिछली तालुक से इस तालुक तक बिजली का कनेक्शन देने का फैसला किया था। दो महीने पहले, बिजली विभाग के लोगों ने खंभे लगाने के लिए नाप-जोख कर ली थी। खंभों की कतार उनके खेत के ठीक बगल से गुज़र रही थी। अगर वे उसमें से एक तार खींच लेते, तो न केवल उनका फार्महाउस रोशन हो जाता, बल्कि वे सीमित शक्ति वाले डीज़ल की बजाय बिजली से कल्याणी से सारा पानी निकाल सकते थे। और जैसा कि हिल्डा ने सुझाव दिया, वे गाय के थन से आखिरी बूंद तक दूध भी निकाल सकते थे।

खंड 12

1

कपास और तंबाकू की फसलें उम्मीद से बेहतर बढ़ रही थीं। मौजूदा बाजार भावों के हिसाब से यह निश्चित था कि बीज, खाद, मशीन का ईंधन, मजदूरी और अन्य खर्चों को घटाने के बाद कम से कम पैंतीस हजार रुपये बचेंगे। मोटर से दूध भेजना शुरू होने के बाद तो पैसों की चिंता करने की कोई जरूरत ही नहीं रही। हिल्डा ने सुझाव दिया कि फसल कटाई के बाद वे अपनी खुद की वैन खरीद लें। सबसे पहले उन्हें गौशाला में कुआँ गहरा करना था, उसके लिए सीमेंट का ढांचा बनाना था और उसमें बिजली का पंप लगाना था। कलिंगा की योजना थी कि चरागाह में बेहतर गुणवत्ता वाली घास उगाई जाए और मंदिर के कल्याणी में लगे पंप में बिजली की मोटर लगाई जाए।

सरकारी हलकों में कलिंगा की प्रतिष्ठा काफी बढ़ चुकी थी। वे कृषि विभाग के उस विभाग के लिए आदर्श बन गए थे जो वैज्ञानिक खेती का प्रचार करता था। वे अमेरिका में पढ़ाई करके लौटे थे; उनकी पत्नी अमेरिकी थीं। ऐसा लगता है कि उनकी

पत्नी कृषि विज्ञान और पशुपालन दोनों में उनसे कहीं अधिक निपुण थीं। एक बार जब जिले के उप आयुक्त दौरे पर इस रास्ते से गुजरे, तो उन्होंने खेत का दौरा किया, सब कुछ देखा और उनकी पत्नी से अंग्रेजी में बातचीत की।

फिर भी, कलिंगा को मन की शांति नहीं मिली। हालाँकि हिल्डा हमेशा उसके साथ रहती थी, वही उसके खेत की तरक्की की सूत्रधार, खेत की देखरेख करने वाली और आत्मीयता प्रदान करने वाली पत्नी थी, फिर भी अकेलेपन का एहसास उसे सताता रहता था। सरकारी अधिकारियों ने उसकी उपलब्धियों को देखा और सराहा था, लेकिन जिन ग्रामीणों के साथ वह पला-बढ़ा था, उन्होंने ऐसा नहीं किया था। जमाल और उन नौकरों के अलावा, जो केवल गुज़ारा करने के लिए उसके यहाँ काम करते थे, गाँव का कोई भी व्यक्ति उसके खेत पर नहीं आता था। उसकी अपनी माँ भी केवल एक बार खेत पर आई थी। बस। या तो उसे वहाँ का माहौल पसंद नहीं आया या हिल्डा के पहनावे और व्यवहार से वह खुश नहीं थी, किसी भी कारण से वह फिर कभी उस तरफ नहीं आई। नए गौशाला में आने के बाद, उसने झगड़ा किया, रोई और दो गायें अपने साथ ले गई, और नौकरों के लिए खाना बनाना भी बंद कर दिया। कलिंगा उन्हें रागी, दाल और मिर्च का उनका हिस्सा देता था और उनके अपने घरों में भोजन की व्यवस्था करता था।

यहां तक कि उनके बचपन के मित्र वेंकटरमण भी दस महीनों से खेत की ओर नहीं आए हैं—यानी हिल्डा के आने के अगले दिन से, जब वे उसे फटकार लगाने के बाद अपने गाँव लौट गए थे। प्रतिदिन सुबह लगभग आठ बजे, वे पूजा के लिए मंदिर आते हैं। सामने के प्रांगण में लगी घंटी की आवाज़ हर किसी को सिर पर लगी चोट की तरह सुनाई देती है। जैसे ही वे इसे सुनते हैं, खेत में काम करने वाले नौकर अपना काम रोक देते हैं, मंदिर की ओर मुड़ते हैं, हाथ जोड़कर आँखें बंद कर लेते हैं। कई दिनों तक वे पूजा के समय मंदिर जाते हैं, वेंकटरमण से प्रसाद लेते हैं और लौट आते हैं। ऐसे भी दिन होते थे जब दूसरे गाँवों से भक्त या श्रद्धालु अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ विशेष पूजा करने आते थे। वे कल्याणी से जल लेकर खाना पकाते थे और उसे मंदिर के पिछले हिस्से में स्थित छोटे पत्थर के मंडप में खाते थे। मंदिर एक तीर्थस्थल बन गया था। दिन-प्रतिदिन मंदिर के देवता की महिमा दूर-दूर के गाँवों तक फैलती जा रही थी। नौकर आपस में इसी बात पर चर्चा कर रहे थे।

जिस समय वेंकटारमण पूजा के लिए आए, कलिंग उस दिशा में चलने तक में असमर्थ थे। शायद डर, शर्मिंदगी या लज्जा के कारण; उन्हें अपना चेहरा दिखाना या उनकी उपस्थिति में चलना मुश्किल लग रहा था। लेकिन उनसे बात करने की इच्छा निरंतर बनी हुई थी। वे अक्सर हिल्डा से, जो सामाजिक जीवन से विमुख होकर अकेलेपन से जूझ रही थी, कहते थे: 'चाहे वे कितने भी पारंपरिक क्यों न हों, यहाँ केवल वेंकटारमण ही हमें सच्चा साथ दे सकते हैं। कम से कम उनमें इतनी हिम्मत तो है कि वे सीधे मेरे सामने मेरी आलोचना कर सकते हैं और मुझसे सारे संपर्क तोड़ सकते हैं। ऐसा चरित्र और किसमें है?'

हिल्डा कहती थी: 'क्या उसकी पारंपरिक मानसिकता थोड़ी अतिवादी नहीं है? कोई भी इसे सुधार नहीं सकता, है ना?'

उनके अनुसार, ऐसा लगता है कि हमें सुधार करने की आवश्यकता है। जहाँ तक उनका सवाल है, उनकी ओर से सुधार का कोई सवाल ही नहीं उठता।

उसमें एक प्रकार का अहंकार है।

कलिंग इस बात से सहमत होगा।

उनके घर में अभी तक बिजली नहीं आई थी। हिल्डा समय बिताने के लिए बैटरी से चलने वाला रेडियो चलाती थी। रात में पश्चिमी संगीत बजता था। उसे यहाँ का संगीत पसंद नहीं था। कलिंगा एक ग्रामोफोन और कुछ संगीत रिकॉर्ड लेकर आया था। एक दिन उसने एक रिकॉर्ड बजाया और अपने पति को गले लगाकर नाचने लगी। अंग्रेजी अखबार पढ़ने और खेत में काम करने के अलावा उसका कोई और संपर्क या गतिविधि नहीं थी।

हाल ही में, उसने जमाल से बात करके कन्नड़ का अभ्यास करना शुरू किया था। शुरुआत में, कलिंग ने उसे कुछ शब्द और वाक्य सिखाए थे।

2

एक दिन, वेंकटरमण और कलिंगा की अचानक तालुक बस स्टैंड पर आमना-सामना हो गया। बिना सोचे-समझे, कलिंगा ने सहजता से बातचीत शुरू की: 'क्या बात है, क्या आप वेतन लेने आए हैं?' उतनी ही सहजता से वेंकटरमण ने कहा, 'नहीं, मुझे इंस्पेक्टर के कार्यालय में कुछ काम था।'

एक मिनट बाद, कलिंगा ने कहा: 'मुझे लगा था कि तुम मुझसे बात नहीं करोगे।'

‘क्या तुम मेरे शत्रु हो जिसने मेरा राज्य चुरा लिया है?’

'वो बात नहीं। उस दिन तो तुमने मुझे दिया हुआ प्रसाद वापस ले लिया था।'

'जी हां। आपको प्रसाद पाने का अधिकार नहीं है। लेकिन आपसे बात करने में क्या आपत्ति है?'

दोनों को एक ही मोटर से गाँव लौटना था। इसलिए वे दोनों बस स्टैंड पर यात्रियों के लिए बनी पत्थर की बेंच पर अगल-बगल बैठ गए। जब कलिंगा ने फिर से तालुक आने का कारण पूछा, तो वेंकटरमण ने कहा: 'शुरू में मुझे अपने गाँव के स्कूल में नियुक्त किया गया था। फिर मेरा तबादला हो गया। लेकिन मैंने किसी तरह इसे अपने गाँव के पास बसवनपुरा के नए प्रकार के मध्य विद्यालय में स्थानांतरित करवा लिया। अब उन्होंने मेरा तबादला फिर से दूसरे गाँव में कर दिया है। मैं यहाँ इसे रद्द करवाने और इसे वापस अपने गाँव में स्थानांतरित करवाने आया हूँ।'

‘दूसरे गाँव जाने में तुम्हें क्या दिक्कत है?’

‘पूजा।’

कलिंग मुस्कुराया। वेंकटरमण ने तुरंत यह देखकर कहा: 'हाँ, तुम्हें पूजा शब्द हास्यास्पद लगता है। इसीलिए मुझे तुमसे बात भी नहीं करनी चाहिए।'

‘मैं उस बात पर नहीं हँसा, महाराज। मुझे कुछ और याद आ गया। आइए। मैं अमलदार को जानता हूँ। मैं उनसे कहूँगा कि वे आपके इंस्पेक्टर से बात करें। ज़रूरत पड़ने पर हम ज़िला शिक्षा अधिकारी पर भी दबाव डाल सकते हैं’, यह कहते हुए वह उठ खड़ा हुआ। वेंकटरमण चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला गया। कलिंगा अकेले अमलदार के दफ्तर में गया, उनसे बात की, बाहर आया और बोला: ‘उन्होंने अपना वचन दे दिया है। बसवनपुरा से अपना तबादला मत करवाइए। लगभग पाँच-छह दिनों में आपको एक आदेश मिल जाएगा जिसमें लिखा होगा कि आपका तबादला आपके अपने गाँव में कर दिया गया है।’

Venkataramana felt grateful to Kalinga.

बाद में, दोनों ने एक साथ बस में यात्रा की। वेंकटरमण अग्रहारा में उतर गए। कलिंग थोड़ा आगे अपने खेत की ओर चले गए। वेंकटरमण को अग्रहारा स्थानांतरित करने का आदेश एक सप्ताह में उन तक पहुँच गया।

एक सुबह वेंकटरमण मंदिर में पूजा कर रहे थे। ऐसा लगा जैसे कोई बाहर से आया हो। पूजा के समय भक्तों या आस-पास के गांवों के लोगों का आना आम बात थी, इसलिए उन्होंने उस तरफ देखे बिना अपनी पूजा जारी रखी। उन्होंने नैवेद्य पूरा किया और फिर अंतिम आरती के लिए बाती जलाई। जब उन्होंने अपने बाएं हाथ में घंटी बजानी शुरू की, तो बाहर खड़े व्यक्ति ने भी बड़ी घंटी बजानी शुरू कर दी। जब उन्होंने अंदर के देवता की आरती पूरी की और मंदिर के सामने वाले नंदी की आरती करने के लिए मुड़े, तो वे आश्चर्यचकित रह गए। घंटी बजाने वाली कलिंग की पत्नी थीं। वहां कोई और नहीं था। उन्होंने देखा कि उन्होंने अपने जूते मंदिर के बाहर ही उतार दिए थे और अंदर आने से पहले कल्याणी में पैर धोए थे। वे नंदी के पास गए और आरती पूरी की मानो उन्होंने उन्हें देखा ही न हो। जब वे लौट रहे थे, तो उन्होंने कहा, 'कृपया इसे मेरे सामने रखें।'

'इसे उन लोगों के सामने आयोजित नहीं किया जाना चाहिए जो इसमें विश्वास नहीं करते', यह कहते हुए वह चले गए।

अगर मैं तुमसे कहूँ कि मैं यहाँ आस्था के साथ आया हूँ, तो तुम्हें मुझ पर विश्वास करना होगा।

फिर भी वेंकटारमण अंदर चले गए। लेकिन, एक मिनट सोचने के बाद वे आरती की थाली बाहर ले आए। हिल्डा ने अपनी हथेलियों को आरती की जलती हुई लौ पर फेरा और अपनी आँखों पर रख लिया। वेंकटारमण अंदर गए और तीर्थ ले आए। उन्होंने अपनी दाहिनी हथेली को बाईं हथेली पर रखकर उसमें डाले गए तीन चम्मच तीर्थ को पिया और फिर अपनी दाहिनी हथेली को अपने सिर के लाल बालों पर फेरा। अंदर गए वेंकटारमण दो मिनट तक फिर सोचते रहे। बाद में, मानो उन्होंने कोई निर्णय ले लिया हो, वे उनकी ओर मुड़कर बोले, 'मैं तुम्हें प्रसाद दूंगा। कृपया बाहर से एक पत्ता ले आओ।'

हिल्डा बाहर गई और दो पत्ते लेकर लौटी। एक पत्ते पर उसने परोसा हुआ नींबू-चावल का मिश्रण स्वीकार किया। दूसरा पत्ता आगे बढ़ाते हुए उसने कहा, 'यह बच्चे के लिए है।' परोसने के बाद वेंकटारमणा ने पूछा, 'कलिंग कहाँ है?'

‘वह शहर में नहीं है। वह इलेक्ट्रिक पंपों का ऑर्डर देने गया है।’

आगे क्या कहें, यह न जानते हुए वह अंदर गया, बचे हुए प्रसाद को अपने कपड़े में लपेटा और घर जाने की तैयारी करते हुए बाहर आया। 'मैं आपसे बात करने आई

थी। आप अभी से गांव के लिए निकल रहे हैं?' उसने पूछा।

वह न केवल इसलिए आश्चर्यचकित था कि वह आज इस तरह यहां आई और श्रद्धापूर्वक तीर्थ और प्रसाद ग्रहण किया, बल्कि इसलिए भी कि उसने अब क्या कहा।

'क्या बात क्या बात?'

'अगर आप मुझसे इस तरह खड़े होकर पूछेंगे तो मैं क्या कहूँ? कृपया बैठ जाइए। अन्यथा, कृपया हमारे फार्महाउस पर आइए, मैं आपको बता दूँगी।'

'अभी मेरे पास वहाँ आने का समय नहीं है। मुझे ग्यारह बजे स्कूल जाना है', उसने कहा और मंदिर के चबूतरे पर बैठ गया। उसके पास ही चबूतरे पर बैठी हिल्डा ने पूछा, 'लगता है आप और कलिंग बचपन के दोस्त हैं और आपने उसे पढ़ाया भी है। क्या यह सच है?'

क्योंकि वह उसके पास ही बैठी थी, इसलिए वह थोड़ा हट गया और जवाब दिया: 'हां।'

यह देखकर वह मुस्कुराई, फिर खुद भी थोड़ा हटकर बोली: 'आप कहते हैं कि आप बचपन के दोस्त हैं। तो फिर आपने उससे इतनी दूरी क्यों बनाए रखी है? बौद्धिक मतभेद हो सकते हैं। क्या इस वजह से दोस्ती खत्म हो जानी चाहिए? मतभेदों के प्रति लोकतांत्रिक दृष्टिकोण रखना जरूरी है।'

वेंकटरमण चुप रहे, उन्हें कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। पाँच मिनट इंतजार करने के बाद हिल्डा ने पूछा: 'है ना?'

अब वेंकटरमण को जवाब मिल गया। 'यह महज़ मतभेदों का मामला नहीं है। अगले साल तंबाकू की कीमतों में मतभेद हो सकते हैं, लेकिन इससे आस्था पर कोई असर नहीं पड़ेगा। यह हमारी आस्था का सवाल है। यह धर्म, परंपरा और रीति-रिवाज से जुड़ा सवाल है। इसे इतनी हल्के में लेना संभव नहीं है।'

तब तक, हिल्डा, जिसने एक हाथ में पत्ता पकड़े हुए नींबू चावल खाना शुरू कर दिया था, ने पूछा: 'क्या तुम नहीं खाओगे?'

नहीं। मैं घर जाकर इसे दोपहर के भोजन के साथ खाऊंगा।

'यह बहुत स्वादिष्ट है। इसे कैसे तैयार करते हैं? इसमें क्या-क्या डालते हैं?'

'नींबू का रस, मिर्च पाउडर, मसाला, करी पत्ते, ये सब। किस तरह से, कितनी मात्रा में, ये सब तो औरतें जानती हैं। मैं नहीं जानता।'

‘देखो, मुझे यहाँ आए लगभग एक साल हो गया है,’ हिल्डा ने उदास स्वर में कहा। ‘तुम कभी हमारे घर नहीं आए। न ही तुम अपनी पत्नी को लाए। न ही तुमने हमें अपने घर बुलाया है। हम अकेले कैसे रह सकते हैं?’

यह सुनकर वेंकटारमणा दुखी हुए। फिर भी उन्होंने कहा, “जब तुम हमारे जीवन, जीवनशैली और आदर्शों को नहीं अपनाना चाहते, तो कोई तुम्हारे घर क्यों आएगा? अगर तुम लोगों से मिलना-जुलना चाहते हो, तो हमारे जैसे बनो। वरना, जैसे हो वैसे ही रहो।”

‘दोस्तों को इतना कठोर नहीं होना चाहिए। आप मानते हैं कि आप उसके दोस्त हैं, लेकिन आप अपना रवैया नरम नहीं करते। आपके देश के तौर-तरीके अजीब हैं। अगर कोई आपसे अलग व्यवहार करता है या अलग तरह से रहता है, तो आप उसे तुरंत अलग कर देते हैं। हम ऐसा नहीं करते। हम उन्हें अपने साथ शामिल करते हैं। हम चर्चा करते हैं। हम उन्हें अपनी राय से सहमत कराते हैं। अन्यथा, हम उनकी राय मान लेते हैं।’

वेंकटारमणा चुप रहीं। उन्होंने पूछा: 'क्या आपको मेरी बातों का सार समझ आया?'

'क्या?'

अब से आपको इस तरह की दूरी नहीं रखनी चाहिए। कृपया हमारे घर आइए। आप हममें जो भी गलती देखें, उसे तर्क के माध्यम से हमें समझाएं और सुधारें। ऐसा लगता है कि आप कलिंग वंश के पुरोहित हैं। क्या हमें सुधारना आपका कर्तव्य नहीं है?

ये शब्द सुनकर उसे गर्व का अनुभव हुआ। इससे पहले कलिंग ने भी यही शब्द कहे थे। लेकिन जब उसने ये शब्द एक विदेशी महिला, एक अलग जाति की महिला, एक पढ़ी-लिखी महिला, और गहरे लाल रंग की, आत्मविश्वास से भरी चाल वाली महिला के मुख से सुने, तो उसे एक पल के लिए अकल्पनीय उल्लास का अनुभव हुआ। उसने अपनी घड़ी देखी और मन ही मन कहा, 'दस बज चुके हैं। मुझे लगता है कि अब तुम्हें अपने गाँव जाना चाहिए, दोपहर का भोजन करना चाहिए और स्कूल जाना चाहिए!'

वेंकटरमण उठे, मंदिर का दरवाजा बंद किया, चाबी अपनी कमरबंद में रखी, मंदिर की घंटी फिर से बजाई और नंगे पैर पहाड़ी से नीचे उतर गए।

रविवार को वेंकटारमणा ने अपनी पूजा समाप्त की, प्रसाद और अन्य वस्तुएँ मंदिर में छोड़कर उसे ताला लगाया, नीचे उतरे और फार्महाउस की ओर चले गए। पके हुए तंबाकू के पत्तों की तीखी गंध पूरे फार्म में फैली हुई थी। बाईं ओर पूरी तरह से विकसित कपास के पेड़ खड़े थे। अंदर रेडियो बज रहा था। बाहरी दरवाजे पर कलिंग का बच्चा एक रंगीन लकड़ी के घोड़े पर बैठा खेल रहा था। ट्रैक्टर शेड के बगल में एक नया टिन का मकान बना हुआ था। उसके दरवाजे के बीच में एक अधेड़ उम्र की मुस्लिम महिला खड़ी थी। वेंकटारमणा को तुरंत समझ आ गया कि वह जमाल की पत्नी होगी। उस मकान के बगल में तार की ऊँची जाली लगी हुई थी और वहाँ कुछ देसी मुर्गियाँ पाली जा रही थीं।

कलिंग ने वेंकटारमण का बड़े स्नेह से स्वागत किया, जो यहाँ अपना परिवार बसाने के लगभग एक वर्ष बाद उनके घर आए थे। वेंकटारमण अभी भी पवित्र वस्त्र पहने हुए थे, इसलिए वे लकड़ी की कुर्सी पर बैठ गए। “आप वैसे भी मंदिर से आए हैं। क्या आप प्रसाद नहीं ला सकते थे?” कलिंग के इस प्रश्न पर उन्होंने तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया। अंदर से निकली हिल्डा ने कहा: “याद है आपने मुझे उस दिन नींबू चावल दिए थे? वे बहुत स्वादिष्ट थे। मैंने जमाल की पत्नी बिलकिस से उन्हें बनाने का तरीका पूछा। उन्होंने मुझे सिखाया। लेकिन उन्होंने खुद बताया कि आपके बनाने के तरीके और उनके सिखाने के तरीके में स्वाद का अंतर है। इसके अलावा, हम उसमें एक और सामग्री भी डालते हैं जो आप नहीं डालते।”

कलिंग ने तुरंत कहा, “प्रिय, उन्होंने अभी-अभी अपनी पूजा समाप्त की है और पवित्र वस्त्र पहनकर यहाँ आए हैं। तुम ये सब बातें बिना सोचे-समझे बोल रही हो। बेहतर होगा कि वे उठकर यहाँ से चले जाएँ।”

इस पूरे समय, एक ऐसी गंध वेंकटरमण की नाक पर घात लगाए बैठी थी जिससे वह परिचित नहीं थे। अब जब उन्हें ठीक से समझ आ गया कि यह क्या है, तो वे सचमुच वहाँ नहीं बैठ सके। वे खड़े हो गए और बोले: 'मैं यहाँ बैठने नहीं आया था। मैं आप दोनों को मंदिर आने के लिए कहने आया था।'

कलिंग सब कुछ समझ गए थे। उन्होंने वेंकटरमण पर कोई दबाव नहीं डाला। उन्होंने कहा: ‘आप अभी जाइए। हम दस मिनट में आपके पास आ जाएँगे।’ वेंकटरमण बाहर निकल गए। पहाड़ी की ओर चलते हुए उन्होंने अपने दोनों ओर लगे

तंबाकू के पौधों को ध्यान से देखा। प्रत्येक पत्ता केले के पत्ते जितना चौड़ा था। प्रत्येक पौधे में कम से कम बीस पत्ते थे। हालाँकि उन्होंने पहले भी तंबाकू के पौधे देखे थे, लेकिन इतनी अधिक मात्रा में उगने वाली किस्म उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी। इससे कितने हज़ारों का लाभ होगा? उन्होंने कल्याणी की ढलान पर चढ़ते हुए और मंदिर पहुँचते हुए अनुमान लगाया। उन्हें भूख लगी थी और हालाँकि वे प्रसाद, भीगी हुई हरी मूंग दाल से बना मसालेदार मिश्रण, खाना चाहते थे, लेकिन उन्हें कलिंग के घर की दुर्गंध याद आ गई और घृणा से उन्होंने खुद को रोक लिया।

लगभग आधे घंटे में कलिंग और हिल्डा आ गए। तुरंत ही कलिंग ने उनसे फिर पूछा: 'मुझे क्षमा करें, वेंकटरमण। उन्हें पृष्ठभूमि की जानकारी नहीं है। वे बिना सोचे-समझे बोल देती हैं। आपको मेरे घर पर रुकने के बजाय बेवजह यहाँ आना पड़ा।'

'मंदिर का बरामदा घर से हमेशा बेहतर होता है, है ना?'

‘वो नहीं, लेकिन आप मांसाहारी भोजन को लेकर इतने नखरे क्यों दिखाते हैं?’ हिल्डा ने पूछा।

कलिंग ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'आप शुरुआत में ही इतने गंभीर सवाल क्यों पूछते हैं? क्या आप किसी और हल्के-फुल्के विषय के बारे में नहीं सोच सकते थे?'

उसे पूछने दो। इसमें क्या गलत है?

‘देखो, हिल्डा। वह तार्किक बहसों से नहीं डरता। उसने दस साल तक संस्कृत में वेदों और वेदांत का अध्ययन किया है। उस क्षेत्र में तुम्हारा ज्ञान सचमुच बहुत कम है। तुमने वेदांत का अध्ययन नहीं किया है। ज़्यादा से ज़्यादा, गंभीर बहस के दौरान उसकी अंग्रेज़ी थोड़ी लड़खड़ा सकती है।’

मैं ये सब उसे हराने के इरादे से नहीं कह रहा हूँ। वो ज्ञानी है। उसे मुझे सिखाने दो। अगर उसकी अंग्रेजी में कोई दिक्कत हो तो तुम मदद कर देना।

इन शब्दों को सुनकर वेंकटरमण का शरीर फूल उठा। उन्हें मैसूर के संस्कृत पाठशाला में बिताए अपने अध्ययन के वर्ष याद आ गए और उन्होंने पूछा, 'क्या मांसाहारी भोजन का अर्थ पशुओं के प्रति क्रूरता नहीं है?'

‘यह क्रूरता का सवाल नहीं है। क्या जानवर इंसानों को भोजन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ही नहीं मौजूद हैं? उन्हें इस तरह देखना धर्म के दृष्टिकोण के भी विरुद्ध नहीं है।’

‘यह बात किस धर्म ने कही है?’

मुझे आपके धर्म के बारे में नहीं पता। हमारे ईसाई धर्म में, हम यह मानते हैं कि जानवरों में मनुष्यों की तरह आत्मा नहीं होती।

‘अगर ऐसा है, तो आपके धर्म की मान्यताएँ मूल रूप से गलत हैं। दुनिया में आज तक जितने भी प्राणी बने हैं, उन सभी में आत्मा होती है। ईश्वर की सृष्टि में कोई भी प्राणी किसी दूसरे के हित के लिए जन्म नहीं लेता। केवल मनुष्य को ही सभी प्राणियों में श्रेष्ठ मानना एक गलत धारणा है।’

अब कलिंग ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा। मैंने आपको खुद यह कहते सुना है कि मनुष्य का जन्म सभी जन्मों में श्रेष्ठ है। अब आप यह कह रहे हैं?'

‘सर्वश्रेष्ठ कहने का आपका क्या मतलब है? मनुष्य में विवेक की क्षमता होती है, जो किसी अन्य जानवर में नहीं होती। मनुष्य केवल इस मायने में सर्वश्रेष्ठ है कि वह सही और गलत में अंतर कर सकता है और उसी के अनुसार आचरण कर सकता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वह अन्य जानवरों को खा सकता है। क्या अपने से कमतर को निगल जाना श्रेष्ठता का गुण है?’

हिल्डा और कलिंग दोनों को इसका कोई उत्तर सूझा नहीं। वेंकटरमण ने आगे कहा: ‘कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि केवल मनुष्य जन्म ही सर्वथा श्रेष्ठ है। मनुष्य जन्म दैवीय जन्म से हीन है। मनुष्य जन्म से भी नीचा राक्षसी जन्म है। लेकिन फिर, पशु राक्षस नहीं होते। कई उदाहरणों में, श्रेष्ठ व्यक्ति पशु रूप में जन्म लेते हैं।’

हिल्डा के लिए यह बिल्कुल नया था। उसने उनसे इन शब्दों का आधार पूछा। वेंकटरमण ने उत्तर दिया कि पुराणों को पढ़ने से उसे सब कुछ समझ आ जाएगा।

‘हम प्राचीन पुराणों में लिखी हर बात पर कैसे विश्वास कर लें?’ कलिंग ने पूछा।

‘हर देश के अपने अनोखे और विचित्र पुराण या पौराणिक कथाएँ हैं। अगर हम उन्हीं के आधार पर आगे बढ़ें, तो सभी को स्वीकार्य सहमति तक पहुँचना असंभव हो जाएगा। इसके अलावा, मिथक कलात्मक कल्पना की एक अवैज्ञानिक रचना है। इसलिए, हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बात करने की आवश्यकता है,’ हिल्डा ने तर्क दिया।

‘आपने हाई स्कूल में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान की पढ़ाई की है, है ना?’ कलिंगा ने पूछा।

वेंकटरमण ने कहा, 'हां, मैंने उनका अध्ययन किया है।'

फिर हिल्डा बोली: 'तो फिर प्राणीशास्त्र के अनुसार इस पर विचार कीजिए: पशु जीवन का इतिहास दर्शाता है कि कमजोर जानवर ताकतवर जानवर का भोजन बन जाता है। प्राकृतिक जीवनचक्र भी इसी प्रकार संरचित है। छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है, जिसे बदले में उससे भी बड़ी मछली खा जाती है। एक और जानवर है जो इस बड़ी मछली को भी खा जाता है। वह जानवर जरूरी नहीं कि मनुष्य ही हो। केवल इसलिए कि मनुष्य मांस खाना छोड़ देता है, बाकी जानवरों का भोजन पैटर्न नहीं बदलेगा।'

इसी बीच, कलिंग ने दीवार की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा, 'इधर देखो।' दोनों उस दिशा में मुड़े: दीवार पर एक कीड़ा रेंग रहा था। ठीक उसके पीछे, एक छिपकली बिना आवाज किए तेजी से गुजरी और बड़ी चालाकी से उसे पलक झपकते ही निगल गई।

'यही उदाहरण है। यह सर्वत्र जीव-जंतुओं के कार्य करने का सत्य है। प्रत्येक प्राणी की जीवन अवस्था ही उसकी मूलभूत अवस्था है, उसका मूलभूत सत्य है, एक अटल सत्य है। यह सत्य मनुष्यों पर भी लागू होता है। मनुष्य बकरियों, भैंसों, भेड़ों, गायों और अन्य पशुओं का पालन-पोषण क्यों करता है? लेकिन इस मामले में मनुष्य अन्य पशुओं जितना स्वार्थी नहीं है। यद्यपि वह उनका उपयोग उनके मांस के लिए करता है, फिर भी उसने उन्हें अन्य क्रूर पशुओं का शिकार बनने से बचाकर उनकी प्रजाति को विलुप्त होने से बचाया है। उसने उनके वंश का पालन-पोषण किया है, उन्हें पाला-पोसा है और केवल अपनी आवश्यकता के अनुसार ही खाया है। किसी भी तरह से, उसने उनकी प्रजाति को बचाया है। क्या यह मनुष्य द्वारा पशुओं को दी गई सेवा नहीं है?'

हिल्डा विस्तार से और गहराई से बात करना चाहती थी। लेकिन उस समय उसे सब कुछ याद नहीं आ रहा था। अब उसे कुछ याद आया और उसने बोलना शुरू किया। लेकिन वेंकटरमण ने हाथ से इशारा करके उसे रुकने को कहा। वह अपनी प्रतिक्रिया तैयार कर रहे थे। एक मिनट बाद उन्होंने कहा: 'तुमने विज्ञान की बात की, जिसमें कहा गया है कि सभी जानवरों के लिए अपने से कमजोर जीवों को खाकर जीवित रहना प्राकृतिक नियम है। यह झूठ है। जिस प्रकार बाघ, लकड़बग्घे, कुत्ते और गिद्ध होते हैं, उसी प्रकार पशु जगत में बैल, घोड़े, गाय, तोते और कबूतर जैसे

शाकाहारी जीव भी होते हैं। तुम्हारे देश के लोग कहते हैं कि मनुष्य मूल रूप से एक जानवर है। अगर हम इसे सच भी मान लें, तो क्या मनुष्य कुत्तों और गिद्धों की श्रेणी में आता है, या गायों और कबूतरों की श्रेणी में? तुम कह सकती हो कि उसके पास ऐसे दांत हैं जो मांस को फाड़ सकते हैं और चबा सकते हैं। लेकिन वह उन्हीं दांतों से फल और सब्जियां भी खा सकता है। तो, तुम्हारी राय में, मनुष्य किस प्रकार का जानवर होना चाहिए?'

हिल्डा अत्यंत एकाग्रता से उनकी बातें सुन रही थी। उसकी नीली आँखें उन पर टिकी हुई थीं। वेंकटरमण ने आगे कहा: 'आपने कहा कि मनुष्य विभिन्न पशु प्रजातियों को विलुप्त होने से बचाकर उनका संरक्षण कर रहा है और इस प्रकार उन पर बड़ा उपकार कर रहा है। यदि यह बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा के किया जाए तो यह वास्तव में प्रशंसनीय है। लेकिन मनुष्य ऐसा क्यों करता है? स्वार्थवश, क्योंकि यदि ये सभी जानवर उन क्रूर जानवरों का शिकार बन जाएँ, तो मनुष्य के पास खाने के लिए कुछ नहीं बचेगा। जिस प्रकार वह बकरी और भेड़ को मांसाहारी जानवरों से बचाता है, वह तेंदुए और गिरगिट जैसे छोटे मांसाहारी जानवरों की रक्षा क्यों नहीं करता? जिस विज्ञान का आप हवाला दे रहे हैं, वह मांसाहार की नैतिकता या अनैतिकता का निर्णय करने में सक्षम नहीं है। अपनी नैतिकता का निर्माण मानवीय स्वार्थ के आधार पर न करें।'

जब तक उसने यह कहा, वातावरण शांत हो चुका था। हिल्डा उसे देखते हुए उसके कथन पर विचार कर रही थी। क्योंकि वह पूजा के लिए आया था, इसलिए उसने रेशों से बनी पवित्र धोती पहनी थी, कंधों पर सूती धागा डाला हुआ था और शरीर के ऊपरी हिस्से को पतले कपड़े से ढका हुआ था। उसका पेट और छाती दिखाई दे रही थी। उसके सिर के पीछे लटकते लंबे चमकदार बाल सूखे थे। उसके कंधों, बाहों, छाती और माथे पर लगाई गई विभूति (पवित्र राख) जम गई थी और गिर रही थी। कलिंग ने पूछा: 'क्या आप हमारे घर से यहाँ आने के बाद प्रसाद लेकर आए थे?'

'नहीं।'

'क्यों?'

सच कहूं तो, मुझे वहां एक तरह की घृणा महसूस हुई। कुछ भी खाने का मन नहीं कर रहा था।

‘बारह बज चुके हैं। क्या तुम्हें भूख नहीं लगी?’ हिल्डा ने पूछा।

‘मैं कल दोपहर बारह बजे तक भी इसी तरह रह सकता हूँ। उपवास कोई बड़ी बात नहीं है।’

‘आखिरकार वह ब्राह्मण है और उसने संस्कृत का अध्ययन किया है।’ कलिंग ने कहा, ‘उपवास करना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं है। उपवास करने से न तो उसकी शक्ति कम होती है और न ही उसका धैर्य टूटता है। लेकिन हमारे लिए यह असंभव है।’

‘उपवास करने के लिए ब्राह्मण होना ही काफी नहीं है। आपके दादाजी ने इसी मंदिर के अभिषेक से पहले पूरे दिन उपवास रखा था। उस दिन, अभिषेक समारोह समाप्त होने के बाद और सभी भक्तों के भोजन करने और थालियाँ साफ करने के बाद—अर्थात् शाम को सूर्यास्त तक, न तो उन्होंने और न ही आपकी दादी ने पानी की एक बूँद को छुआ।’

‘वे पुराने जमाने के लोग हैं।’

तो आपकी मां की उम्र क्या है? जरूरत पड़ने पर वो तीन दिन तक उपवास भी रख सकती हैं और फिर भी शांत रहती हैं। आज भी वो हर शुक्रवार शाम को गोपूजा समाप्त होने तक पानी की एक बूंद भी नहीं पीतीं। क्या आपको इस बात की जानकारी नहीं है?

हिल्डा को शुक्रवार की दोपहर को कलिंगा की मां से मिलने के लिए गांव की अपनी पिछली यात्रा याद आई। किसी अनकही सोच में डूबी हुई उसने कहा, 'ये लोग धर्म के नाम पर उपवास करके खुद को क्यों प्रताड़ित करते हैं?'

और जब आप स्वयं को जरा सा भी कष्ट नहीं दे सकते, तो आप अन्य जानवरों को पहुँचाए गए कष्ट को इतने जोर-शोर से जायज क्यों ठहराते हैं? केवल वही व्यक्ति जो भूख सहन कर सकता है, वह अपनी भूख मिटाने के लिए अन्य जानवरों को मारे बिना शांत रह सकता है।

कलिंग कुछ कहने ही वाला था कि हिल्डा ने उसे रोक दिया और बोली: ‘बस करो ये बहस। हम किसी और दिन बात करेंगे। अगर हम इसे जारी रखते हैं, तो वह सारा दिन उपवास करेगा। इससे उसे आंतरिक सुख मिल सकता है। लेकिन मैं ये नहीं देख सकती। वैसे भी कुछ टिफिन तो है ही। कम से कम तुम वो खा लो ना?’

नहीं। मैं घर पर ही दोपहर का भोजन करूँगा।

हालाँकि हिल्डा इसके पीछे का कारण जानना चाहती थी, उसने खुद को रोक लिया। थोड़ी देर बाद, वेंकटरमण उठे, मंदिर का दरवाजा खोला, प्रसाद के पात्र को कपड़े में बांधा और दरवाजा बंद कर दिया। उन्होंने एक बार दरवाजे को छुआ और श्रद्धापूर्वक अपनी आँखों पर उंगलियाँ फिराईं, परिसर में लगी विशाल घंटी को चार-छह बार ज़ोर से बजाया और चिलचिलाती धूप में नंगे पैर अपने गाँव की ओर चल पड़े।

अपने गाँव जाते समय, उसके मन में एक अलग ही उमंग उमड़ रही थी। इस गाँव में उसने कभी किसी के साथ इस तरह की गंभीर और तार्किक बहस नहीं की थी। घर पर वह रोज़ शास्त्र या पुराण पढ़ता था, लेकिन कोई ऐसा नहीं था जो उससे बहस कर सके। लेकिन आज, कलिंग की पत्नी, उस लाल स्त्री ने उससे बहुत बातें करवाईं। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या वह उसकी राय से सहमत है। उसने सोचा कि वह उससे किसी और दिन पूछेगा।

4

एक दिन जब वेंकटारमणा पूजा कर रहे थे, हिल्डा वहाँ आ गईं। पहले की तरह ही उन्होंने आरती ली, प्रसाद का पत्ता लाईं और आगे बढ़ा दिया। वेंकटारमणा द्वारा पत्ते पर मिठाई परोसने के बाद, उन्होंने पूछा: 'आप यहाँ कुछ क्यों नहीं खा लेते?'

मैं प्रतिदिन प्रसाद के रूप में मुट्ठी भर खाता हूँ।

‘वो नहीं। जितना तुमने मुझे दिया है, उतना ही खाओ। रुको, मैं तुम्हारे लिए एक पत्ता और लाती हूँ’, उसने कहा और दूसरा पत्ता लेकर लौट आई। उसने पत्ता भर लिया और बरामदे में बैठ गया। उसने एक निवाला खाया और पूछा: ‘इसे क्या कहते हैं? इसे कैसे बनाते हैं?’

‘इसे गुलपौते कहते हैं। इसे सूजी से बनाते हैं और उसमें गुड़, घी, किशमिश और इलायची मिलाते हैं। मुझे बनाने की विधि नहीं पता।’

‘ये बहुत स्वादिष्ट है। मैंने तुम्हें परसों कहा था कि अपनी पत्नी को हमारे घर ले आओ। तुम नहीं लाए। न ही तुमने मुझे अपने घर बुलाया। मैं ये व्यंजन बनाना कैसे सीखूँ?’

क्या जमाल की पत्नी तुम्हें नहीं सिखाती?

‘यह सवाल गुस्से से उपजा है। आप जानते हैं कि उसे इस तरह के व्यंजन बनाना नहीं आता। आप मुझे चिढ़ाने के लिए ऐसा कह रहे हैं। ठीक है। लेकिन देखिए, मैं आपको एक बात बता दूं: मैं एक अमेरिकी हूं। हमारे सामाजिक जीवन में एक-दूसरे को चिढ़ाना, मज़ाक करना और आम तौर पर अच्छा समय बिताना शामिल है। यहां आने के बाद से इन सभी दिनों में मेरे पास बात करने के लिए कोई नहीं था। और आप, एक दोस्त, गुस्से में हमसे दूर रहे हैं। याद रखिए, यह पहली बार है जब आपने मुझे चिढ़ाया है।’

लेकिन मैंने तुम्हें चिढ़ाने के लिए ऐसा नहीं कहा था।

‘सच में? तो क्या तुमने ये बात गुस्से में कही? क्या मैं तुमसे दोस्ती की उम्मीद भी नहीं कर सकती? क्या ये सिर्फ गुस्सा है?’ उसने सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखते हुए कहा। तब तक उसका पत्ता खाली हो चुका था। वेंकटरमण ने ये देखा और पूछा, ‘क्या मैं और परोसूँ?’

'अगर आप परोसेंगे तो मैं खा लूंगा। लेकिन आपके लिए घर ले जाने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा।'

‘मैं इसे यहाँ इसलिए नहीं लाया हूँ कि घर के लिए कुछ बचा सकूँ। यह उन भक्तों के लिए है जो पूजा के समय यहाँ आते हैं। प्रसाद के रूप में घर ले जाने के लिए बस एक मुट्ठी भर ही काफी है’, उन्होंने हाथ धोते हुए और फिर से पत्ते में भरते हुए कहा। फिर उन्हें याद आया और उन्होंने पूछा: ‘कलिंग कहाँ है? तुम अकेली आई हो।’

वह जिले में गया है। दुहने की मशीनें पार्सल से रेलवे स्टेशन पर पहुंच गई हैं। वह उन्हें लेने गया है।

‘दूध दुहने वाली मशीनें?’

‘अरे, इसमें हैरानी की क्या बात है? अमेरिका में हम हाथों से दूध नहीं दुहते। अगर मशीन का इस्तेमाल किया जाए तो गायों को आराम मिलता है और हमारे लिए भी आसानी होती है। इसके अलावा, यह बहुत ही स्वच्छ तरीका है। जब यह यहाँ आ जाएगी तो आप खुद देख लेंगे।’

दूसरी बार परोसने के बाद भी गुलपौटे की काफी मात्रा बची हुई थी। उसने कहा, 'यह अपने बच्चे के लिए ले लो', और फिर एक और पत्ता काटकर थोड़ा और गुलपौटे परोस दिया।

‘बहुत-बहुत धन्यवाद। जब भी हम यहाँ आते हैं, आप हमें कुछ न कुछ खाने को देते हैं। आपने अभी तक हमसे एक बूँद पानी भी नहीं लिया है। क्या यह जाति व्यवस्था वाकई भयानक नहीं है?’

‘मैंने तुम्हें सिर्फ भोजन ही नहीं दिया है। और यह सिर्फ तुम्हारे लिए नहीं है। मैं पूजा के समय यहाँ आने वाले हर भक्त को भोजन देता हूँ। आज कोई नहीं है, इसलिए मैंने तुम्हें बहुत कुछ दिया है। जहाँ तक जाति व्यवस्था की बात है, वह एक अलग विषय है।’

‘आप शिक्षित हैं। आपने दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया है। क्या आप जाति व्यवस्था में विश्वास करते हैं?’

'हम्म, मुझे पता है। जाति मानव स्वभाव में ही विद्यमान है।'

‘मानव स्वभाव के अलावा, क्या इसे जन्म के आधार पर तय करना गलत नहीं है?’

'सदियों से चली आ रही परंपरा के बारे में कोई कुछ नहीं कर सकता।'

‘देखो, यही फर्क है मुझमें और तुममें’,’ वह एक बार ज़ोर से हंसते हुए बोली: ‘हम तर्क से परे हर चीज़ को काट कर आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन तुम किसी चीज़ से सिर्फ इसलिए चिपके रहते हो क्योंकि वह पीढ़ियों से चली आ रही है। खैर, आज रविवार है। तुम्हारे स्कूल में छुट्टी है। घर आ जाओ। लगता है तुम दूध और फल लेकर आते हो, अगर कुछ और नहीं तो।’

लेकिन मुझे घर जाना होगा।

‘तुम्हारा घर तो वहीं रहेगा। तुम्हें आना ही होगा,’ उसने कहा। उठते हुए उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे ऊपर खींच लिया। वह न केवल इसलिए चौंक गया कि एक महिला ने इस तरह उसका हाथ छुआ था, बल्कि इसलिए भी कि वह पवित्र अवस्था में था। उसकी माँ ने दोपहर का भोजन तभी किया जब उसने पवित्र अवस्था में घर लाया हुआ प्रसाद खाया। अब वह अपवित्र हो गया था। तभी हिल्डा ने स्वयं कहा: ‘कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिए। इस देश के लोग पुरुष द्वारा स्त्री को छूने पर और स्त्री द्वारा पुरुष को छूने पर भी बुरा मानते हैं। हमारे यहाँ ऐसा नहीं है। वैसे भी, ऐसा लगता है कि आप पवित्र अवस्था में हैं। खैर, अब कृपया घर आ जाइए।’

वेंकटरमण ने एक योजना बनाई। उन्होंने मंदिर के अंदर बचा हुआ प्रसाद वहीं छोड़ दिया, दरवाजा बंद किया और हिल्डा के साथ निकल पड़े। दोनों कल्याणी नदी की दिशा से नीचे उतरे। पंप से जुड़ी डीजल मशीन को हटा दिया गया था और उसकी

जगह एक इलेक्ट्रिक मोटर लगा दी गई थी। पानी पंप करते समय उससे कोई शोर नहीं होता था, बस भम्मम्म की हल्की सी आवाज आती थी। तंबाकू लगभग एक हफ्ते में कटाई के लिए तैयार था। हालांकि उसकी तीखी गंध नाक को चुभ रही थी, फिर भी उसमें एक आकर्षण था। वेंकटरमण से आगे चल रही हिल्डा ने कहा: 'इसे एक हफ्ते के अंदर काट लेना चाहिए। नहीं तो हमें नुकसान उठाना पड़ेगा।'

हिल्डा का घर बंद था। जमाल की पत्नी वहाँ आई और बोली कि वह बच्चे को गोद में लेकर गौशाला गया है। उसने कहा, 'मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी। मैं पहाड़ियों से कुछ टहनियाँ ले आती हूँ,' और चली गई। हिल्डा के दरवाजा खोलने पर वेंकटारमणा अंदर गए और लकड़ी की कुर्सी पर बैठ गए। हिल्डा हँसी और बोली, 'तुम्हारी पवित्र अवस्था अब समाप्त हो गई है। कृपया सोफे पर बैठो।' फिर भी वेंकटारमणा लकड़ी की कुर्सी से नहीं हिले। हिल्डा अंदर गई और एक कांच की थाली में चार केले, मुट्ठी भर किशमिश और काजू लेकर लौटी। उसने थाली को वेंकटारमणा के सामने चायदानी पर रखा और खुद भी उनके सामने सोफे पर आराम से बैठ गई। हालाँकि वेंकटारमणा भूखा नहीं था, लेकिन हिल्डा ने ज़ोर देकर कहा कि उन्हें खाना ही चाहिए। उन्होंने एक केला छीला और अपने दाहिने हाथ से उसके छोटे-छोटे टुकड़े तोड़कर मुँह में डाल लिए ताकि उनकी उंगलियाँ फल के संपर्क में आकर मुँह को न छूएँ। यह देखकर हिल्डा ने कहा: 'अगर आप जैसे लोग अमेरिका आ जाएं तो कैसे गुजारा करेंगे? पवित्रता, प्रदूषण, परंपरा, शाकाहारी भोजन के प्रति ये सभी सख्त नियम। क्या यह मुश्किल नहीं होगा?'

‘सबसे पहले तो, ऐसी कोई स्थिति नहीं आएगी जब मुझे वहां जाने की जरूरत पड़े। और अगर मुझे जाना भी पड़े, तो मैंने सुना है कि वहां ऐसे लोग भी हैं जो पूरी तरह शाकाहारी रहे हैं। लगता है वहां फल और दूध भरपूर मात्रा में हैं। चावल, आटा और घी हर जगह उपलब्ध है। हम कुछ न कुछ पका तो लेंगे।’

‘ऐसे में तो आप सामाजिक जीवन में घुलमिलकर कुछ भी नहीं सीख पाएंगे।’

‘अगर मैं लोगों से न मिलूं तो कोई फर्क नहीं पड़ता। इसमें नुकसान क्या है?’

'क्या यह नुकसान नहीं है? क्या यह नुकसान नहीं है अगर आप लाभ कमाने के संभावित अवसर को खो देते हैं और खाली हाथ अपने वतन लौटते हैं?'

'लेकिन आप जिस लाभ की बात कर रही हैं वह क्या है?' उसने पूछा, क्योंकि वह उसकी बात का अर्थ नहीं समझ पा रहा था।

‘क्या तुम्हें समझ नहीं आया?’ उसने हँसी से आँखें भरते हुए पूछा: ‘मुझे लगा था कि तुम्हारा दिमाग तेज़ है। पुजारी जाति के लोग हर मामले में इतने समझदार नहीं होते। यह बात हमारे चर्च के पुजारियों पर भी लागू होती है! तुम्हारा दोस्त हमारे देश आया और खाली हाथ नहीं लौटा। वह सामाजिक जीवन में घुलमिल गया और कुछ बड़ा हासिल करके लौटा।’

अब वेंकटरमण को हिल्डा का मतलब समझ आ गया। उन्हें इस विषय पर बोलने में शर्म भी महसूस हुई। लेकिन हिल्डा ने स्वयं कहा: 'पवित्रजनों को अक्सर ऐसे लाभ से वंचित कर दिया जाता है।'

वेंकटारमणा ने पूछा: ‘मुझे भी पता है कि पश्चिमी देशों में पुरुष और महिलाएं अपनी मर्जी से शादी करते हैं। लेकिन हमारे कलिंग तो एक अलग ही देश के हैं। वे काले रंग की त्वचा वाले समुदाय से हैं। आपने ऐसे व्यक्ति से शादी कैसे कर ली?’

आप यह सवाल क्यों पूछ रहे हैं?

'क्योंकि मुझे पूछने का मन हुआ। अगर यह कोई गलती हो तो कृपया मुझे क्षमा कर दें।'

‘आप बहुत संवेदनशील हैं। इसमें क्या गलती है? अपने दोस्तों के साथ अपनी शादी की कहानी साझा करना हमेशा ही सुखद होता है’, हिल्डा ने कहा: ‘मैं कृषि विज्ञान महाविद्यालय में पढ़ रही थी। वह एक अच्छे खिलाड़ी थे। मुझे खेलों में बहुत रुचि है। आज भी हम दोनों आपके मंदिर के कल्याणी में तैरते हैं। क्या आपको यह पता नहीं था?’

‘नहीं,’ वेंकटरमण ने कहा। उनका मन अचानक विचलित हो गया। मनुष्य! विशेषकर एक स्त्री, उस कल्याणी जल में तैर रही है जिसका उपयोग देवता को अभिषेक करने के लिए किया जाता है। उन्हें लगा कि यह पूरी पूजा का अपमान है। उन्होंने तुरंत कहा: ‘देखिए, मैं बस इतना ही कहूंगा। मैं आपके काम में बाधा नहीं डाल रहा हूं। वह जल देवता का अभिषेक करने के लिए है। एक नियम है कि कोई भी उसमें पैर न रखे और न ही उससे कपड़े धोए। आगे से आपको उसमें तैरना नहीं चाहिए। मुझे अब तक इसकी जानकारी नहीं थी।’

ठीक है। मैं कलिंगा को बता दूँगा। अब अमेरिकी कहानी सुनो। इस तरह हम दोनों, यानी तुम्हारे दोस्त, एक-दूसरे से परिचित हुए और फिर दोस्त बन गए। मेरे पिता भी किसान हैं और उनका अपना खेत है। तुम्हारा दोस्त प्रायोगिक खेतों के दौरे के

दौरान हमारे खेत पर आया करता था। कई बार वह हमारे साथ खाना खाता था। वह नाच-गाने और शराब पार्टियों में भी शामिल होता था। आखिरकार हमने शादी करने का फैसला किया।

'देखो, यह सवाल मेरे मन में कई दिनों से चल रहा है: तुम्हारे सामाजिक परिवेश में चाहे पुरुष और महिलाएं कितनी भी खुलेआम और उदारता से प्रेम करें और शादी करें, यह बात शायद सिर्फ तुम्हारे समाज के दायरे में रहने वाले पुरुषों और महिलाओं पर ही लागू होती है। लेकिन तुम जानती थी कि तुम्हें अपना जन्मस्थान, अपनी जाति, अपने माता-पिता, सब कुछ छोड़कर दस-बारह हजार मील दूर एक अनजान देश में बसना होगा। यह सब जानते हुए भी तुमने इस शादी के लिए कैसे हामी भरी?'

हिल्डा का लाल चेहरा और भी लाल हो गया, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह इन शब्दों से खुश थी। 'अगर मुझे इस सवाल का जवाब देना है, तो मुझे आपको बताना होगा कि हम कैसे प्यार में पड़े।'

इससे पहले कि वह आगे कुछ कह पाती, वेंकटरमण ने कहा, 'अगर मेरे कहे में कोई गलती हो तो मुझे माफ कर दीजिए। मेरा इरादा यह निजी सवाल पूछने का नहीं था।' शर्मिंदगी से उनका चेहरा बिगड़ गया था।

'तुम माफ़ी क्यों मांगते हो? हम तो अपने प्रेम जीवन के बारे में खुलकर बात करते हैं। और जब हम दोस्तों से इसके बारे में बताते हैं, तो एक तरह का रोमांटिक आनंद आता है, मानो हम उस अनुभव को फिर से जी रहे हों। तुम इस देश में सब कुछ दबा देते हो। मुझे पता था कि दुनिया के कई अन्य देशों की तरह, भारत भी कृषि में बेहद पिछड़ा हुआ है। दुनिया के विभिन्न देशों में खाद्य उत्पादन के मानक हमें कॉलेजों में व्यापक रूप से पढ़ाए जाते हैं। कलिंगा अक्सर मुझे इस देश में कृषि की स्थिति के बारे में बताया करते थे। जब उन्होंने विवाह का प्रस्ताव रखा, तो उन्होंने कहा: "मैं तुमसे इस विवाह के लिए केवल इसलिए सहमत होने के लिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि तुम मुझसे प्यार करती हो। मैंने अपने बेहद पिछड़े हुए हिंदुस्तान में वैज्ञानिक तरीके से खेती करने का फैसला किया है। किसी भी उपलब्धि के लिए, मनुष्य को एक ऐसे साथी की आवश्यकता होती है जो उसकी प्रेरणा का स्रोत और उसके दिमाग का मार्गदर्शक हो। और मुझे तुम्हारे जैसी साथी कहीं नहीं मिली। अगर मेरे लिए नहीं, तो मेरे देश के उत्थान के लिए सोचो और मुझसे विवाह कर लो।" ये शब्द सुनकर न सिर्फ

मेरा शरीर उत्साह से कांप उठा, बल्कि मुझे ऐसा भी लगा कि मैं एक महान लक्ष्य की ओर बढ़ रहा हूँ। मैंने सहमति दे दी।

हिल्डा ने यह बात बड़ी भावुकता से सुनाई। वेंकटरमण ने पूछा, 'तो इसका मतलब यह है कि आप यहाँ केवल हिंदुस्तान के उत्थान के लिए आए हैं?'

'मैं ऐसा नहीं कहूँगा। लेकिन फिर, परंपराओं, अंधविश्वासों और विज्ञान की कमी से भरे देश में, कलिंग जैसे उद्यमी प्रयोगकर्ता को उपयुक्त साथी कहाँ मिल सकता है? कलिंग ने न केवल अमेरिका में रहते हुए मुझे यह बात बताई थी, बल्कि मेरे यहाँ आने के बाद भी वे यही कहते रहते हैं। सरकारी कृषि विभाग के अधिकारी स्वयं हमें बताते हैं कि हमारा खेत अब हर जगह एक मिसाल बन गया है। समय के साथ, अन्य किसान भी हमारा अनुसरण करेंगे और अपनी खेती के तरीकों में सुधार करेंगे। मैंने आपको इसलिए बताया क्योंकि आपने पूछा था। मुझे इस बात का संतोष है कि अपने देश, अपनी जाति और अपने माता-पिता को छोड़कर एक अनजान भूमि पर आने के बावजूद, एक पिछड़े देश के लोगों का उत्थान हो रहा है, चाहे वह थोड़ा ही सही, और अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, क्योंकि मैं उनकी वजह से ऐसा कर रहा हूँ। आपके मित्र का मुझे चाहना और मेरा सहमत होना, इसके पीछे एक उच्च उद्देश्य का पहलू भी है।'

वेंकटरमण ने अपनी गर्दन ऊपर उठाई और हिल्डा के चेहरे को देखा। उसकी नीली आँखें गर्व और आत्मसंतुष्टि से भरी हुई थीं। हिल्डा भी टकटकी लगाए उसके चेहरे को देख रही थी। अपनी दृष्टि दूसरी ओर मोड़ते हुए उसने पूछा: 'आपने अभी कहा था कि आप इस देश के खाद्य उत्पादन में सुधार लाने के उद्देश्य से यहाँ आई हैं। आपने अपने पूरे खेत में तंबाकू और कपास उगा ली है। कपड़े के लिए कपास की आवश्यकता तो होती ही है। लेकिन फिर हिंदुस्तान की गर्म जलवायु में कपड़े की कोई कमी नहीं है। आपके खेत के शेष आधे हिस्से में आपने केवल तंबाकू उगाया है। यह सच है कि यह तंबाकू की एक विशेष किस्म है। लेकिन क्या तंबाकू इस देश के लोगों का पेट भरता है? हमें बस कुछ और बीड़ी और सिगरेट ही मिलेंगी, है ना?'

हिल्डा ने इस तरह के सवाल की उम्मीद नहीं की थी। उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था। लेकिन एक मिनट बाद उसने कहा: 'कृषि शब्द का क्या अर्थ है? इसका मतलब है धरती पर कुछ उगाना और उसकी कटाई करना। यह ज़रूरी नहीं कि एक ही शब्द हो। तंबाकू की वजह से एक खास उद्योग फलता-फूलता है। यह उस उद्योग का कच्चा माल है। देश की आर्थिक प्रगति में इसका भी योगदान है। आपको

इसे अर्थशास्त्र के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझना होगा। अगर हम इस देश का तंबाकू दें, तो कोई दूसरा देश बदले में हमें भोजन देगा।'

'मुझे उस अर्थशास्त्र की जानकारी नहीं है जिसकी आप बात कर रहे हैं। न ही मैंने इसका अध्ययन किया है। लेकिन फिर, आपने इसे क्यों उगाया है? क्योंकि इसमें आलू, धान, रागी और मक्का से ज़्यादा लाभ है। है ना? और क्योंकि यह लाभदायक फसल है, इसलिए हमारे गाँवों में कुछ लोग आधे एकड़ या एक एकड़ में तंबाकू भी उगाते हैं। लेकिन कोई भी अपनी पूरी कृषि योग्य भूमि पर भोजन की खेती छोड़कर इसे नहीं उगाता। हमारे पिछड़े गाँव के किसान मानते हैं कि यदि कोई धरती माता की कोख में भोजन के बीज नहीं बोएगा और अनाज की वर्षा नहीं प्राप्त करेगा, तो धरती माता उसे श्राप देगी। आपकी मान्यता अलग है। इसे छोड़िए। ऐसा नहीं लगता कि किसी पिछड़े देश में आकर उसे खाद्य उत्पादन की समस्याओं से मुक्त करने का कोई महान उद्देश्य आपके प्रेम और विवाह का प्रेरक था। आपने भी वहाँ के अन्य युवकों की तरह अपने समाज के रीति-रिवाजों के अनुसार ही विवाह किया, और आप कलिंगा के साथ उसी तरह आए जैसे एक पत्नी अपने पति के साथ आती है।' आप ट्रैक्टर चलाकर अपने पति की मदद कर रही हैं, ठीक वैसे ही जैसे हमारे गांव की महिलाएं अपने सिर पर गोबर की बाल्टियां ढोकर अपने पतियों की मदद करती हैं।'

यह सुनकर हिल्डा को गहरा अपमान महसूस हुआ। आज वह धर्म, नैतिकता, नीतिशास्त्र और अन्य गहन विषयों पर उनसे तार्किक बहस नहीं कर रही थी। वह किसी के साथ निजी और गहरी भावनाओं को साझा करके मित्रता का आनंद ले रही थी। इसी कारण वह सुबह मंदिर गई थी और वेंकटरमण को भी साथ ले गई थी। अनजाने में ही चर्चा गंभीर मोड़ ले चुकी थी। लेकिन यह पुजारी अब चुपचाप बैठा है, अपने मन की बात सीधे-सीधे कह कर, इस बात की परवाह किए बिना कि उसके शब्दों का हिल्डा की भावनाओं पर क्या प्रभाव पड़ेगा। अचानक उसे लगा कि वह यहाँ बिल्कुल अजनबी है। इस देश में उसके पति के अलावा उसका कोई मित्र नहीं था। इन गाँवों में भी मित्र बनने की कोई संभावना नहीं थी। कभी-कभी उसका पति कहता था कि केवल यही व्यक्ति उनका साथी बन सकता है। लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि वह इतनी कठोरता से, उसकी भावनाओं की परवाह किए बिना बोल सकता है। पिछले कुछ दिनों में वह उससे मिली थी और उससे बात भी की थी। हालांकि धर्म और नैतिकता के मामले में उनके विचार उससे बिलकुल अलग और यहाँ तक कि

विपरीत भी थे, फिर भी उसने उसके व्यक्तित्व में एक तरह का आकर्षण महसूस किया था। उसे सचमुच लगा था कि वह उनका दोस्त है। लेकिन शायद उसने उसके प्रति कभी भी थोड़ी सी भी दोस्ती या सहानुभूति नहीं दिखाई!

अपमानित महसूस करते हुए हिल्डा की आँखों में आँसू भर आए। क्योंकि उनके सामने रोने से उनका आत्मसम्मान चकनाचूर हो जाता, इसलिए वह तुरंत उठीं और अंदर चली गईं। उन्होंने भी यह देखा। हालाँकि उस क्षण उन्हें एहसास हुआ कि उनके शब्दों से हिल्डा को ठेस पहुँच सकती है, लेकिन उनका इरादा ऐसा नहीं था। पंद्रह मिनट बीतने के बाद भी हिल्डा बाहर नहीं आईं। अंत में, वेंकटरमण ने स्वयं कहा, 'यदि आपको दुख हुआ है, तो कृपया मुझे क्षमा कर दें। मुझे देर हो रही है, मैं चलता हूँ।' एक मिनट तक इंतजार करने के बाद भी वह बाहर नहीं आईं। वह उठे और बाहर चले गए।

दोपहर का सूरज ढल रहा था। सिर की छाया अब पैर से एक हाथ की दूरी पर थी। देवता का प्रसाद अभी भी मंदिर में था। लेकिन उसे चिंता होने लगी जब उसे याद आया कि जब तक वह पवित्र अवस्था में प्रसाद ग्रहण नहीं कर लेता, उसकी माता उपवास करती रहेंगी। लेकिन हिल्डा ने उसका हाथ छूकर उसे अपवित्र कर दिया था। वह मंदिर गया, धातु का घड़ा लाया, उसे कल्याणी नदी के पानी से भरा, किनारे पर आया और सारा पानी अपने ऊपर डाल लिया, जिससे वह सिर से पैर तक पूरी तरह भीग गया। फिर भीगे हुए कपड़ों में—जो 'पवित्रता' का प्रतीक थे—उसने प्रसाद का पात्र उठाया, दरवाजा बंद किया, परिसर में लगी बड़ी घंटी को सात-आठ बार बजाया और जलती हुई भूमि पर तेजी से कदम बढ़ाते हुए अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

5

कपास और तंबाकू की सारी फसल काट ली गई थी और बेच दी गई थी। सभी खर्चों को घटाने के बाद छत्तीस हजार रुपये बचे थे। गर्मी का मौसम आ रहा था। चाहे कोई भी फसल हो, अगर तुरंत बुवाई शुरू भी कर दी जाए, तो मई के अंत में शुरू होने वाली बारिश से वह खराब हो जाएगी और सड़ जाएगी। इसलिए उन्होंने आलू की एक और बुवाई करने का फैसला किया और फसल काटने के बाद खेत को एक महीने के

लिए खाली छोड़ने का तय किया। फिर वे पूरे खेत में दोबारा उच्च गुणवत्ता वाला तंबाकू बोएंगे।

हाल ही में हिल्डा बहुत अंतर्मुखी हो गई थी और लगातार अपने मन में कुछ न कुछ सोचती रहती थी। इसके अलावा, उसका स्वास्थ्य भी कुछ खास अच्छा नहीं था। उसे अचानक चक्कर और मतली आने लगती थी और वह आमतौर पर अस्वस्थ रहती थी। जब वह बहुत उदास होती, तो वह अपने ढाई साल के बेटे जैक को गले लगा लेती और एक मिनट के लिए अपनी आँखें कसकर बंद कर लेती। छोटा जैक अंग्रेजी बोल सकता था। वह कन्नड़ भी बोल लेता था जो जमाल और उसकी पत्नी ने उसे सिखाई थी। वह उर्दू भी बोल सकता था। जैक का कोई दोस्त भी नहीं था। जमाल ही उसका एकमात्र साथी था।

एक दिन हिल्डा ने अपने पति को कसकर गले लगाया और कहा: 'प्यारे, मेरी सेहत की चिंता मत करो। ये तो कुछ भी नहीं है। जैक को जल्द ही एक बहन या भाई मिल जाएगा। तुम गुस्सा तो नहीं करोगे ना?'

नहीं, नहीं। मैं नाराज़ नहीं हूँ। तुम उदास मत हो। लेकिन तुम हमेशा इतने उदास क्यों रहते हो? मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है! मुझे पता है कि यहाँ तुम्हारे साथ कोई नहीं है। लेकिन हम क्या कर सकते हैं?

'प्रिय, मुझे इस देश में कभी कोई साथी नहीं मिलेगा।'

कलिंग भी अंतर्मुखी हो गया था। अकेलापन उसे भी सता रहा था। जब भी वह गाँव जाता, उसे लगता कि वह केवल इस गाँव में ही नहीं, बल्कि पूरी जाति में अकेला है। सामाजिक जीवन का अनुभव उसे तभी होता था जब वह तालुक या जिले में जाता था। खेती-बाड़ी के काम के अलावा, उसे हमेशा लगता था कि यह अकेलापन उसे चारों ओर से घेरे हुए है और उसका दम घोंट रहा है। उसने कहा, "प्रिय, वेंकटरमण हमसे मिलने आते थे। अब तो उन्होंने भी आना बंद कर दिया है। कम से कम अगर वे आते तो शायद हमारी उदासी तो कम हो जाती।"

'उस आदमी के साथ हमारी कभी कोई अनुकूलता नहीं हो सकती। इतने दिनों में उसने मुझे एक बार भी अपने घर नहीं बुलाया। मैं उसका सम्मान करती हूँ। लेकिन हमारी जीवनशैली और सोच बिल्कुल मेल नहीं खाती। भला कोई ऐसे व्यक्ति की संगति में कैसे खुश रह सकता है जो हर बात का विरोध करता हो? यह जमाल और उसकी पत्नी, केवल वही हमारे करीब आ सकते हैं।'

कलिंग ने कुछ देर सोचा और फिर कहा, 'देखो, अगर हम लगातार इस खेत की चारदीवारी के अंदर ही रहेंगे तो हमारी नीरसता और बढ़ जाएगी। हमें पहल करनी चाहिए और किसी ऐसी जगह जाना चाहिए जहां लोग इकट्ठा होते हों, और कुछ सामाजिक जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए।'

लेकिन हम कहाँ जाएँगे?

'यहाँ से चार मील दूर मारिकेरे नाम का एक गाँव है। वहाँ गाँव की देवी मारम्मा का एक विशाल मंदिर है। आठ दिन बाद वहाँ एक जात्रा (मेला) लगने वाला है। आपको वहाँ मुखौटा नृत्य और आग पर चलने जैसे कई रोचक दृश्य देखने को मिलेंगे। जैक को भी अच्छा लगेगा। चलिए चलते हैं।'

'यह एक बढ़िया विचार है।'

खंड 13

1

मारीकेरे की मारम्मा देवी की महिमा आसपास के तीस मील के क्षेत्र में प्रसिद्ध थी। वे क्रोधित देवी थीं, जिनकी आंखें धधकते अंगारों जैसी थीं; उनके दांत इतने तीव्र थे कि वे किसी भी चीज को चीर सकते थे। केवल मारम्मा ही ऐसी शक्ति और सामर्थ्य रखती थीं कि वे प्लेग, चेचक और पेचिश सहित किसी भी महामारी को, जो इस क्षेत्र में पैर रखने का प्रयास करती, नष्ट कर देती थीं। लेकिन मारम्मा किसी भी महामारी को यूं ही नहीं भगाती थीं। उनका भयानक हाथ केवल उन्हीं ग्रामीणों और घरों की सहायता करता था जो पैदल चलकर उनके पास आते और आवश्यक बलि अर्पित करते थे। दूसरों की रक्षा करना उनका कर्तव्य नहीं था। इसलिए, अन्य शांत देवताओं की तुलना में, लोग बड़ी संख्या में उनकी यात्रा में आते और अत्यंत श्रद्धा से उनकी पूजा करते थे।

इस साल पहले से कहीं ज़्यादा भीड़ थी। उनके मंदिर के सामने का विशाल मैदान खचाखच भरा हुआ था, मानो फट जाएगा। इसके अलावा, फसल कटाई के बाद खाली पड़े मैदानों में खरीदारी के स्टॉल और स्टॉल लगे हुए थे। सब कुछ उपलब्ध था:

नए कपड़ों से लेकर बर्तनों तक, और ऐसे स्टूडियो भी थे जो सिर्फ एक रुपये में फोटो खींचते थे। मंदिर के सामने बज रहे ढोल, तुरही और बिगुल की मिली-जुली आवाज़ों के साथ-साथ बच्चों की सीटियों, बांसुरी और तुरही की गूंज से पूरा मेला गूँज रहा था।

हिल्डा, कलिंग और जैक सुबह लगभग ग्यारह बजे नाश्ते और दोपहर के भोजन के बाद बैलगाड़ी पर मेले में पहुँचे। मेले में जमा हुए लोगों के लिए हिल्डा का लाल रंग, उसकी लंबाई, उसका शरीर और उसका पहनावा किसी आश्चर्य से कम नहीं था—ठीक वैसे ही जैसे वहाँ दिखाए जा रहे जादू के शो, मंत्र और बाज़ीगरी के करतब। जात्रा में कई ऐसे पुरुष थे जिन्होंने लाल रंग के लोगों को पहले भी देखा था, लेकिन ज़्यादातर महिलाओं के लिए हिल्डा और जैक किसी अजूबे से कम नहीं थे। पूरे मेले का एक चक्कर लगाते-लगाते बारह बज गए। दो पुलिस कांस्टेबल मंदिर के ठीक सामने खड़े ऊँचे बलि के खंभे के चारों ओर से भीड़ हटा रहे थे। इससे एक विशाल और खाली गोलाकार जगह बन गई। मंदिर के बाईं ओर बाड़े के बाहर दो सौ से ज़्यादा बैल बंधे हुए थे।

कालिंग, हिल्डा को मंदिर के भीतरी भाग दिखाने के बाद बाहर आ रहे थे: उन्होंने मंदिर के भीतरी प्रांगण की दोनों दीवारों पर उकेरी गई मारम्मा देवी की मूर्ति और विभिन्न भूतों की मूर्तियां दिखाईं। बाहर आते ही कालिंग की मुलाकात एक पुलिस अधिकारी से हुई, जिसने उनका अभिवादन किया और उनसे हाथ मिलाया। अपनी पत्नी का परिचय देने के बाद, अधिकारी ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, उनका दाहिना हाथ पकड़ा और जरूरत से ज्यादा देर तक हिलाते रहे। हिल्डा के गांव आने के बाद से यह पहली बार था जब किसी दूसरे व्यक्ति ने उनसे हाथ मिलाया था। हालांकि उपायुक्त और अन्य सरकारी अधिकारी कभी-कभार ही उनके खेत में आते थे, लेकिन वे दूर से ही उन्हें नमस्ते करते थे। यह व्यक्ति तालुक का निरीक्षक था। वह लंबा और हट्टा-कट्टा आदमी था, जो कालिंग से एक-दो साल बड़ा लग रहा था। खाकी पुलिस वर्दी में उसका व्यक्तित्व और भी निखर रहा था।

‘ये क्या बात है, तुम लोग मेले में आ गए हो? क्या होबली के सब-इंस्पेक्टर का आना ही काफी नहीं था?’ कलिंगा ने पूछा।

उन्होंने अंग्रेजी में कहा, 'मुझे नहीं पता कि मैडम कलिंगा कन्नड़ समझती हैं या नहीं।'

'आपके विचार के लिए धन्यवाद,' हिल्डा ने आभार व्यक्त किया।

फिर उन्होंने कहा: 'आप इस देवता को अर्पित किए जाने वाले बैल की बलि के बारे में तो जानते ही होंगे। यह इस अनुष्ठान का अंतिम वर्ष है। सरकार का आदेश है, जिसके अनुसार अब से किसी भी देवता को किसी भी जानवर की बलि देना प्रतिबंधित है। इस वर्ष जात्रा रथों को रोके जाने के बाद—अर्थात जुलाई से—हम इस आदेश को और भी सख्ती से लागू करेंगे। चूंकि यह उनका अंतिम अवसर है, इसलिए भक्तों ने देवता के प्रति अपनी सभी पिछली और भविष्य की प्रतिज्ञाओं को मिलाकर भैंसों को यहां लाया है। अब तक 230 बैल आ चुके हैं। मुझे इसका पूर्वाभास था और मैं स्वयं यहां आया हूं। ऐसी स्थिति में, लोग हर वर्ष की तुलना में मेले में अधिक संख्या में आएंगे। अशांति फैलने की भी संभावना है। बेशक, मेरा अधीनस्थ सब-इंस्पेक्टर भी आया है। 20 कांस्टेबल भी आसपास मौजूद हैं।'

'वे बैल की बलि कैसे देते हैं?' हिल्डा ने पूछा।

'यह यहीं होगा। आप खुद देख लीजिए। चलिए, हमें धूप में कितनी देर खड़ा रहना चाहिए?' इंस्पेक्टर ने कहा और उन्हें उत्सव मूर्ति के मंडप में ले गए, जो कि मेले में घुमाई जाने वाली उत्सव की मूर्ति थी। मंडप एक ऊँचा ढाँचा था और वहाँ से न केवल छाया मिलती थी, बल्कि यज्ञ स्तंभ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। इंस्पेक्टर ने मंदिर के गौड़ा को बुलवाया और उनसे तीन कुर्सियाँ लाने को कहा। हिल्डा बीच वाली कुर्सी पर बैठ गई। इंस्पेक्टर उसके बाईं ओर बैठ गए। कलिंगा जैक को गोद में लिए दूसरी कुर्सी पर बैठ गया। सब-इंस्पेक्टर सुझाव लेने के लिए पास आया। बैठे-बैठे ही इंस्पेक्टर साहब ने उसका अभिवादन स्वीकार किया और उसे हुकुम दिया। उन्होंने एक कांस्टेबल को बुलवाया और उसे चार कच्चे नारियल लाने का आदेश दिया।

कुछ देर बाद बलि शुरू हुई। निरीक्षक घटित हो रही हर घटना का विस्तृत वर्णन कर रहा था और आवश्यक पृष्ठभूमि जानकारी दे रहा था। उसने इसी तरह के मेलों में देखी गई अन्य बलि की विशेषताओं का भी उल्लेख किया। हिल्डा आश्चर्य भरी निगाहों से बलि के खंभे की ओर देखते हुए उसकी बातें सुन रही थी।

लोग खंभे के चारों ओर बीस फुट की दूरी पर जमा हो गए थे। दोपहर की तपिश सबके सिर पर झुलसा रही थी। पुरुष अपने शरीर और चेहरे से पसीना पोंछ रहे थे और धूप से बचने के लिए सिर पर धोती या कपड़ा ओढ़े हुए थे, जबकि महिलाएं अपनी साड़ियों के ढीले सिरे से अपना सिर ढके हुए थीं। सभी लोग यज्ञ के खंभे की ओर देख रहे थे। देवी के पुजारी आए। उन्होंने अपने माथे, बांहों, छाती, गर्दन और

कंधों पर हल्दी और सिंदूर लगाया हुआ था और एक महिला की तरह साड़ी का ऊपरी सिरा कंधों पर डालने के बजाय कमर पर लपेटा हुआ था। उन्होंने नीम की पत्तियों के गुच्छे से खंभे पर जल छिड़का। दो हट्टे-कट्टे आदमी लगभग दो फुट लंबे ब्लेड वाली सात-आठ कुल्हाड़ियाँ लेकर आए और उन्हें पास में रख दिया। लोहार द्वारा कल ही धोई गई तेज धारें धूप में चमक रही थीं। उनके तीन फुट लंबे हैंडल बबूल के पेड़ की मजबूत लकड़ी से बने थे।

कुल्हाड़ियों और वध करने वाले पुरुषों पर जल छिड़कने के बाद, पुजारी उस स्थान की ओर चल पड़ा जहाँ बैल बंधे हुए थे। एक-दूसरे से अपरिचित और छायादार स्थान की चाह में बेचैन बैल फुफकार रहे थे। पुजारी ने अपने हाथ में रखे जलपात्र में नीम की पत्तियाँ डुबोईं और अपने हाथों को ज़ोर से हिलाया जिससे पानी की बूँदें प्रत्येक बैल पर गिरीं। जब पानी की बड़ी बूँदें कुछ बैलों के चेहरों पर गिरीं, तो उन्होंने प्रसन्नता की आह भरी। तब तक, उत्सव मूर्ति (जुलूस के देवता) के साथ कहीं और गए ढोल वादक लौट आए और पूरे जोश से ढोल बजाने लगे।

एक अधेड़ उम्र का विशालकाय आदमी मंदिर से दौड़ता हुआ बाहर आया, उसका चेहरा और शरीर सिंदूर से लिपटा हुआ था, और वह यज्ञ स्तंभ के पास खड़ा हो गया। मंदिर के गौड़ा ने उसे एक भेड़ सौंप दी। अकेली भेड़ लगातार मिमिया रही थी, जबकि उस विशालकाय ने उसे गले लगाया और उसकी गर्दन पर अपने दांत गड़ा दिए। जब तक उसने अपना मुंह हटाया और दूसरी जगह दांत गड़ाए, तब तक उसकी गर्दन से खून टपक रहा था। एक राक्षस की तरह, उसने फिर से अपने जबड़े चौड़े किए, अपने नुकीले दांतों से उसकी गर्दन की नस को काटा, आंखें बंद कीं, कसकर चबाया, उसके मांस का एक गोला अपने मुंह से अलग किया और थूक दिया, जिससे उसकी गर्दन से खून तेजी से बहने लगा। एक चीख के बाद, भेड़ की आवाज बंद हो गई। जब उसने फिर से अपने दांत उसकी गर्दन पर गड़ाए, तो उसके चेहरे का खून उसके पूरे शरीर पर बह गया। भेड़ पहले ही देवी के चरणों तक पहुंच चुकी थी।

ढोल बजाने वाले अब ढोल को और तेज़ गति से बजा रहे थे। दैत्य ने अपना मुँह खोला, अपने दाँत इस तरह दिखाए जैसे भीतर विराजमान देवता के दाँत हों, चार बार उछला, फिर एक छलांग लगाई और एक तरफ खड़ा हो गया। वहाँ खड़े लोग धार्मिक भय और श्रद्धा से दस फीट पीछे हट गए। तब तक हट्टे-कट्टे आदमी बैलों को एक कतार में ला रहे थे। उन्होंने पहले बैल के सींगों को एक मोटी रस्सी से बाँधा और उसे

खींचकर मंदिर की ओर सीधा कर दिया। फिर उन्होंने उसका मुँह बलि के खंभे से सटा दिया और रस्सी को खंभे के चारों ओर बाँध दिया। ढोल की रव-रव-रव-रव की आवाज़ पहले की गति से भी तेज़ हो गई। बलवानों में से एक ने अपने हाथ में एक बड़ी कुल्हाड़ी पकड़ी, उसके हैंडल को छुआ, फिर अपनी उंगलियों को अपनी आँखों पर रखा, उसे ऊपर उठाया और उसकी गर्दन पर वार किया। कुल्हाड़ी चार-पाँच इंच अंदर तक धँसी, और मांस के ऊपर उभरा हुआ सफेद हिस्सा चकनाचूर हो गया। जानवर दर्द से चीख उठा, उसकी चीख ने ढोलों के शोर को भी दबा दिया। जानवर के मांस में धंसी कुल्हाड़ी को निकालने के बाद, दूसरा वार चार-पाँच इंच और गहरा हो गया। भैंस ने अपने चारों पैरों पर पूरी ताकत लगाकर एक बार उछल पड़ी। लेकिन तब तक तीसरा वार हो चुका था और उसकी गर्दन मुड़ गई थी। शरीर नीचे गिर गया, और उसका सिर सींगों समेत उस रस्सी में ही फंसा रह गया जिससे वह बलि के खंभे से बंधा था। खून तेजी से बहने लगा और मिट्टी में एक नाली बनाने लगा। यह देखकर, वहाँ काम के लिए जमा हुए मदिगाओं ने उसके शरीर के चारों ओर रस्सियाँ डालीं और उसे दूर घसीट कर ले गए। इस बीच, बलि के खंभे से चिपका हुआ चेहरा नीचे आ गया था।

वे तुरंत दूसरे बैल को खंभे के पास ले आए। पिछली घटना देखकर बुरी तरह भयभीत होकर, वह आगे बढ़ने से इनकार कर रहा था और अपने घुटने भींचकर चिल्लाने लगा। लेकिन ऐसे जानवरों को तरह-तरह की सजाओं से वश में करने और उन पर शासन करने में माहिर चार आदमियों ने उसे आगे धकेला और उसके सींगों को खंभे से सटाकर उसका चेहरा बांध दिया। पिछले भैंस की तरह, तीन वारों के बाद उसका सिर धड़ से अलग हो गया। पिछले भैंस के खून से बनी नाली सूख रही थी, लेकिन इस भैंस से बहता खून उसे बहा ले गया। मदिगा लोग इस भैंस के सिर और शरीर को भी घसीटकर ले गए। अब तीसरे की बारी थी।

एक घंटे में लगभग बीस भैंसों की बलि दी गई। खून से लथपथ नाली मंदिर के बाईं ओर की धारा की ओर बह रही थी और मिट्टी में एक बड़े ढेर के रूप में जम गई थी। हालांकि मदिगा लोग मृत भैंसों के शवों को घसीटकर गाड़ी में लादकर ले जा रहे थे, लेकिन वे इतनी तेज़ी से हो रही बलि की गति को नियंत्रित नहीं कर पा रहे थे। इस प्रकार, शवों का ढेर लग गया था। अब तक चीलें, गिद्ध और कौवे मेले में बच्चों के हाथों में मौजूद मिठाई, वड़ा और पकौड़ा की तलाश में आकाश में मंडरा रहे थे, किसी

भी अनदेखे पल का इंतज़ार कर रहे थे। अब, खून और मांस की गंध से निर्देशित होकर, वे बलि के खंभे के पास आए, शोर मचाते हुए लेकिन ऊपर ही उड़ते रहे। उनमें नीचे मौजूद लोगों की भीड़ में गोता लगाकर मांस और खून का स्वाद चखने का साहस नहीं था।

यह दृश्य देख रही हिल्डा ने अपने पति की ओर मुड़कर कहा: 'प्रिय, इस बर्बर दृश्य को देखना बंद करो। चलो, घर चलते हैं।'

कलिंग उस दिशा में देख भी नहीं रहा था। उसका मन कहीं और ही सोच रहा था। उसने उसकी बात नहीं सुनी। लेकिन उसके बगल में बैठे निरीक्षक ने कहा: 'जी महोदया। यह सचमुच एक असभ्य प्रथा है। इसीलिए सरकार ने इसे रोकने का आदेश जारी किया है। क्योंकि इतने सारे बलिदान आखिरी बार किए जा रहे हैं। लेकिन आपको शाम को कोयला उछालने का अनुष्ठान अवश्य देखना चाहिए। अपनी बाईं ओर देखिए, इन सभी भैंसों को हटाने में शाम पांच-छह बजे तक का समय लगेगा। तब तक मेरे साथ आइए। आप विद्यालय में आराम कर सकती हैं और फिर शाम को कोयला उछालने और रथ यात्रा के अनुष्ठान देखने के लिए वापस आ सकती हैं।'

कलिंगा मान गया। इंस्पेक्टर सबसे पहले चला। हिल्डा उसके पीछे चली और फिर कलिंगा जैक के साथ। भीड़ ने उन्हें रास्ता देने के लिए एक तरफ हट गई।

2

वे शाम साढ़े पाँच बजे तक गाँव से दो फर्लांग दूर स्थित स्कूल भवन में ही रहे। इंस्पेक्टर ने नौकर को बुलवाया और दो बेंचों को जोड़कर हिल्डा से कहा कि अगर वह चाहे तो आराम कर सकती है। इंस्पेक्टर की अत्यधिक मेहमाननवाज़ी से शर्मिंदा होकर हिल्डा एक कुर्सी पर लेट गई और आराम करने लगी। इंस्पेक्टर ने जैक से भी अंग्रेज़ी में बात की। उसने जैक की प्रशंसा की। हालाँकि इंस्पेक्टर को हिल्डा के आलसी ढंग से हाथ-पैर फैलाने और एक बार उल्टी करने से यह आभास हो गया था कि वह गर्भवती है, फिर भी उसने जैक से पूछा, 'क्या तुम अपने माता-पिता की इकलौती संतान हो?'

साढ़े पाँच बजे, वे तीनों जैक के साथ उस स्थान से निकलकर गाँव के पास स्थित एक अन्य मंदिर पहुँचे। दोनों मंदिर एक ही देवता के लिए बने थे। यदि मुख्य देवता के मंदिर के बाहर यज्ञ स्तंभ लगा होता था, तो उत्सव मूर्ति इसी मंदिर में स्थापित थी। यह

मंदिर गाँव के आरंभिक बिंदु के निकट बना था। उत्सव मूर्ति मंदिर के सामने कच्चे कोयले का एक ढेर था जो माणिक्य के समान चमक रहा था, यह तीस गाड़ियों में भरी कच्ची लकड़ियों को जलाने का परिणाम था। लोग इसके चारों ओर एकत्रित थे। वही लोग जो दोपहर में भैंसा यज्ञ देखने आए थे, यहाँ एकत्रित हुए थे।

सबसे पहले ढोल बजाने वाले पहुंचे। उनके पीछे, देवता की उत्सव मूर्ति लिए चार आदमी आए और अंगारों के सामने रुक गए। बाएं हाथ में तांबे का पात्र पकड़े और दाहिने हाथ से आम के पत्तों की नोकों को पात्र के अंदर के पानी में डुबोकर चारों दिशाओं में छिड़कते हुए वेंकटरमण मंदिर के अंदर से बाहर निकले। उन्होंने वही वस्त्र पहने हुए थे जो वे प्रतिदिन पहाड़ी पर स्थित पुण्यकोटी मंदिर में पूजा करने के लिए पहनते थे। उन्हें देखकर आश्चर्यचकित हिल्डा ने कलिंग से पूछा, 'यह क्या है, वह यहां भी आ गए?'

'ये आस-पास के सभी गांवों के पुरोहित हैं। शायद ये किसी खास दिन आए हैं,' कलिंग ने कहा। इंस्पेक्टर ने हिल्डा को समझाने के लिए तुरंत इसका अर्थ बताया: 'हमारे सामने इतने बड़े पैमाने पर हो रहे बलिदानों से उत्पन्न अपवित्रता को पहले एक ब्राह्मण पुरोहित द्वारा शुद्ध किया जाता है, जिसके बाद देवता अग्नि पर से गुजरते हैं। उसके बाद रथ उत्सव होता है।'

वेंकटरमण ने देवता के लिए पुण्यहावाचन, यानी शुद्धिकरण अनुष्ठान संपन्न किया। फिर उन्होंने आम के पत्तों से वहां उपस्थित सभी लोगों पर जल छिड़का—देवता को ले जाने वाले पुरुषों से लेकर पीछे खड़े सैकड़ों पुरुषों और महिलाओं तक, जिन्होंने अग्नि पर चलने की प्रतिज्ञा ली थी। उन्होंने अब समान रूप से प्रज्वलित हो चुकी अग्नि पर पवित्र जल भी छिड़का।

ढोल की थाप तेज़ हो गई। 'अब देवता आग की ओर दौड़ेंगे। बस देखते रहो,' इंस्पेक्टर ने हिल्डा से कहा और उसके चेहरे के भावों को देखते हुए वहीं खड़ा रहा। हिल्डा डर के मारे देवता के वाहकों को देख रही थी। देवता एक बार पीछे की ओर झुके। मंदिर के गौड़ा और चार-पाँच अन्य प्रमुख व्यक्ति 'रास्ता दो, रास्ता दो' चिल्लाते हुए अंदर आए और पास खड़े कुछ लोगों को पीछे धकेलकर जगह खाली कर दी। ढोल की आवाज़ अब महज़ लयबद्ध थाप से कहीं तेज़ हो गई थी और लगातार रव-रव-रव-रव की आवाज़ निकल रही थी। देवता के वाहक पीछे से दौड़ते हुए आए और मानो उन्हें पता ही न हो कि उनके सामने आग फैली हुई है, वे सीधे आगे बढ़े और उस

पर से चल दिए। हिल्डा ने अपना चेहरा सिकोड़ लिया और मुँह खुला रखकर यह दृश्य देखती रही, मानो आग ने उसके अपने पैरों को झुलसा दिया हो। देवता फिर लौटे और तीसरी बार आग की राख पर चले। इसके बाद, शपथ लेने वाले सभी लोग दौड़ पड़े और एक-एक कदम बढ़ाते हुए आग पर चलने लगे। हिल्डा उनके पैरों को देख रही थी। तभी उसने देखा कि कलिंगा की माँ भी जलते हुए अंगारों पर चलने वालों में शामिल थी। कलिंगा ने भी उसे देखा।

सब कुछ खत्म होने के बाद, उसने पूछा: 'वे भगवान के नाम पर खुद को क्यों यातना देते हैं?'

'यह कोई यातना नहीं है। जलते हुए कोयलों पर चलने पर भी जरा सी भी जलन नहीं होती,' इंस्पेक्टर ने कहा।

मुझे इस बात पर विश्वास नहीं है।

'अगर ऐसा है तो खुद जाकर उस पर पैर रख दो। लेकिन इसके लिए तुम्हें सुबह से उपवास रखना होगा।'

'न तो मैंने उपवास किया है और न ही मैं इतना मूर्ख हूं कि एक अनावश्यक चुनौती के कारण खुद को संकट में डालूं।'

'आपकी बात सही है,' इंस्पेक्टर ने सहमति जताते हुए औपचारिक मित्रता की हल्की सी मुस्कान बिखेरी।

अब देवता रथ पर आसीन होंगे। निरीक्षक उन्हें रथ के पास ले गया। विशाल लकड़ी के पहियों वाला रथ अठारह फीट ऊंचा था। ऊपर से नीचे तक रंग-बिरंगे पोस्टरों से लिपटा हुआ था और चारों ओर झूलों की तरह चार तकिए लटके हुए थे। रथ पर जगह-जगह छोटे-छोटे छेद बने हुए थे। हिल्डा को रथ का पूरा दृश्य, जिसमें देवता विराजमान थे और हजारों लोग उसे खींच रहे थे, बेहद रोमांटिक लगा। इसलिए जब उसने कहा, 'यह बहुत ही रोमांटिक दृश्य है,' तो निरीक्षक ने इसका अलग अर्थ निकाला और उसके चेहरे पर एक अजीब सा भाव आ गया। देवता के रथ पर आसीन होने से पहले, वेंकटरमण ने रथ के लिए पुण्यहवच भी किया। लेकिन भीड़ में उसने उन्हें नहीं देखा।

शोभायात्रा समाप्त होने के बाद भी देवी माँ उसी पर विराजमान थीं। 'देवी महात्मे' या 'मातृदेवी की महिमा' नामक यक्षगान नृत्य प्रस्तुति दो घंटे बाद देवी के ठीक सामने ताड़ के पत्तों से बने मंच पर शुरू होने वाली थी। निरीक्षक ने कहा, 'आपको इसे

अवश्य देखना चाहिए। मैं आपके लिए कुर्सियों का इंतजाम कर देता हूँ। अब आप दोनों मेरे साथ भोजन कीजिए।' लेकिन हिल्डा ने बार-बार आग्रह करने के बावजूद मना कर दिया। वह बहुत थकी हुई थीं। निरीक्षक के पास एक जीप थी। वह उसे स्वयं चलाकर उन्हें घर छोड़ने के लिए तैयार थे। लेकिन जब कलिंगा ने यह कहकर उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया कि उनके पास अपनी गाड़ी है, तो वह थोड़ा निराश दिखे। लेकिन उन्होंने कहा, 'ठीक है। फिर मिलेंगे। शुभ रात्रि महोदया।' फिर उन्होंने काफी देर तक हिल्डा से हाथ मिलाया, जैक को चूमा, उनके गाड़ी पर चढ़ने तक इंतजार किया और उन्हें अलविदा कहा।

चांदनी रात में कई बैलगाड़ियाँ चल रही थीं। बहुत से लोग पैदल अपने-अपने गाँवों की ओर लौट रहे थे। कलिंग ने सोच में डूबी हिल्डा से कहा, “पता नहीं वो वेंकटरमण कहाँ गायब हो गया। वैसे भी हमारे पास ये बैलगाड़ी थी। हम साथ-साथ जा सकते थे। वो अग्रहारा के संगम पर उतरकर आधा मील पैदल चल सकता था।”

हिल्डा ने ऐसे बात की मानो उसने उसकी बातें सुनी ही न हों: 'इतने दिनों के बाद, लगता है हमें कोई ऐसा मिल ही गया है जो हमारे साथ दोस्ती का हाथ बढ़ा सकता है। वो इंस्पेक्टर अच्छा आदमी है, है ना? तुमने उसकी जीप लेने से मना क्यों कर दिया?'

‘आपको अभी भी लोगों की मानसिकता का अंदाजा नहीं है। केवल वेंकटरमण ही हमारे सच्चे साथी बन सकते हैं।’

‘प्रिय, इतने दिनों बाद भी क्या तुम्हें उस पुजारी की मानसिकता समझ नहीं आई? क्या तुमने उसे कभी हमारे साथ हंसमुख होकर बात करते देखा है, या बिना बहस-मुबाहिसा किए, बिना हमें अपमानित किए, बिना हमसे बातचीत करते देखा है? इंस्पेक्टर को देखो। वह दोपहर से हमारे साथ था। एक भी अपशब्द नहीं बोला। एक भी कड़वाहट भरी घटना नहीं हुई। यहां तक कि जब मतभेद हुआ, तब भी उसने बड़ी सहजता से खुद को संभाला और शांत रहा! उसमें पुलिस अधिकारियों के आम गुणों से बिल्कुल विपरीत गुण हैं। तुम्हारे मित्र वेंकटरमण का स्वभाव एक पुजारी के स्वभाव से बिलकुल विपरीत है।’

'डार्लिंग, तुम दुनिया को इतनी जल्दी नहीं समझ सकती। तुम मेले का तमाशा देख रही थी। क्या तुम्हें पता है कि वह इंस्पेक्टर क्या देख रहा था?'

'नहीं।'

इसीलिए मैंने कहा था कि तुम दुनिया को नहीं समझते।

‘सच में?’ अब उसे समझ आया। उसे शर्मिंदगी महसूस हुई और ऐसा लगा जैसे उसने खुद कोई गलती कर दी हो। अपने पति का हाथ पकड़कर उसने कहा: ‘प्रिय, मुझे सच में कुछ समझ नहीं आया। मुझे क्षमा कर दीजिए।’

उसने उसे शांत करते हुए कहा, 'इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है।'

जब तक गाड़ी दो-तीन मील नहीं चल गई, वे चुप रहे। फिर हिल्डा ने कहा: “दोपहर से मैंने जो कुछ भी देखा है, वह मुझे लगातार परेशान कर रहा है। मुझे इस देश के रीति-रिवाज और मान्यताएं समझ नहीं आतीं। ये लोग भगवान के नाम पर जानवरों की भयानक बलि देते हैं। फिर वही लोग खुद को इतनी तकलीफ देते हैं। भैंस को क्यों मारते हैं? जलते कोयले पर क्यों पैर रखते हैं? इन सबका क्या मतलब है?”

‘आपको वेंकटरमण से पूछना चाहिए। मुझे नहीं पता’, कालिंग ने स्वीकार किया।

घर पहुँचते ही वे सोने चले गए। लेकिन हिल्डा को नींद नहीं आई। उन भयानक दृश्यों की यादें उसके मन में बार-बार उठ रही थीं। उसने अगले दिन वेंकटरमण से मिलने का फैसला किया। लेकिन जिस दिन उसने उसे रुलाया था, उस दिन से वह फार्महाउस नहीं आया था। अब आत्मसम्मान की भावना उसके अकेले जाने में बाधा बन रही थी। उसने कई दिनों तक इस उम्मीद में इंतज़ार किया कि वह खुद आ जाएगा। उसे उससे बहुत कुछ कहना था। लेकिन तीन महीने बीत जाने के बाद भी वह उनसे मिलने नहीं आया। अब वह उससे सचमुच नाराज़ थी।

3

एक शाम करीब चार बजे वेंकटारमण फार्महाउस आए। पवित्र वस्त्रों के बजाय, उन्होंने धोती और कमीज पहनी हुई थी। उन्होंने जूते भी पहने हुए थे। उन्होंने अपने बालों को एक गोले की तरह बांध रखा था। हालांकि हिल्डा इस बात से नाराज़ थी कि वे इतने दिनों से नहीं आए थे, फिर भी उन्होंने उनका सहर्ष स्वागत किया। उन्होंने पूछा, 'कलिंग कहाँ हैं?' हिल्डा ने कहा, 'वे शहर गए हैं। हमें अपनी खुद की वैन चाहिए थी। वे उसे ऑर्डर करने गए हैं। वे कल शाम या शायद परसों आ जाएँगे। आप अभी भी खड़े हैं। कृपया बैठ जाइए।'

इस बार तो वेंकटारमणा ने भी अपने खेत में विदेशी खाद का प्रयोग करके अच्छी फसल प्राप्त करने की योजना बनाई थी। उन्होंने और उनके बटाईदार होन्ना ने खाद

का खर्च बराबर-बराबर बाँटने का निर्णय लिया था। लेकिन केवल कलिंग ही भूमि का आकलन कर सकते थे और बता सकते थे कि कौन सी खाद किस अनुपात में प्रयोग करनी है। वे इसी विषय में सलाह लेने यहाँ आए थे। लेकिन उन्होंने यह बात हिल्डा को नहीं बताई।

हिल्डा ने कहा: 'कृपया आइए, चलिए टहलते हैं और अपने गौशाला में चलते हैं। जमाल ने मुझे बताया कि दुहने की मशीन में कुछ खराबी आ गई है। मुझे इसे ठीक करना होगा।'

वेंकटारमणा को पता था कि उन्होंने दुहने की मशीन खरीद ली है। न तो उन्होंने उसे देखा था और न ही यह उनके मन में कभी आया था। 'ठीक है, चलिए चलते हैं। मैंने इसे नहीं देखा है,' उन्होंने उठते हुए कहा।

हिल्डा ने जमाल की पत्नी को घर की देखभाल करने का निर्देश दिया और वेंकटारमणा के साथ चली गई। वह गर्भावस्था के पाँचवें महीने में थी। जमाल को इस बात का पता नहीं था। लेकिन उसे चलते हुए देखने वाला कोई भी व्यक्ति यह समझ सकता था।

उसने पूछा: 'घर आए हुए तुम्हें छह महीने हो गए हैं। क्यों?'

'आप जानते ही हैं कि कैसा होता है—स्कूल का काम। किसी और चीज के लिए बिल्कुल भी समय नहीं मिलता।'

इस मुद्दे को और आगे बढ़ाना उसकी ओर से उचित नहीं लग रहा था। 'स्कूल के काम को छोड़ो, कम से कम रविवार को घर तो आओ। मैं रविवार को कोई काम नहीं करती।'

वेंकटारमणा ने हाँ कहा। खेत में तंबाकू के छोटे-छोटे पौधे उग चुके थे। एक हाथ की ऊँचाई पर, वे सभी हरे-भरे और खिले हुए थे। अभी तक उनकी गंध तीखी नहीं थी। वे मेड़ पर चले और मोटर रोड के पास बाड़ के फाटक से बाहर निकले। जब वे बाड़ वाले चरागाह के फाटक में दाखिल हुए, तो उन्होंने देखा कि घास छाती तक ऊँची उग गई थी। वेंकटारमणा ने अपने पूरे जीवन में इस किस्म की घास कभी नहीं देखी थी। हिल्डा चलते-चलते इसके विशेष गुणों और इसे उगाने की विधि के बारे में बता रही थी।

जब वे दोनों गौशाला पहुँचे, तो जमाल मशीनों से दूध दुहने का काम देख रहा था। एक नौकर गाय के सामने खड़ा था और उसके बछड़े को पकड़े हुए था। गाय के चारों

थनों पर चार-चार रबर की नलियाँ लगी हुई थीं, जिन्हें एक-एक करके क्लैंप से अपनी जगह पर टिकाया गया था। ये चारों नलियाँ एक बड़ी नली में समाप्त होती थीं, जिससे वे बाहर निकली हुई थीं। यह बड़ी नली पास में रखी एक छोटी इलेक्ट्रिक मोटर से जुड़ी हुई थी। इसका दूसरा सिरा थोड़ी दूरी पर रखे एक बर्तन के अंदर था। पारदर्शी रबर की नलियों से बहता हुआ दूध आँखों से दिखाई दे रहा था। दूध चारों थनों से एक साथ निकल रहा था, फिर सात-आठ सेकंड के लिए रुकता था और फिर से शुरू हो जाता था। वेंकटरमण आश्चर्य से यह सब देख रहा था।

जमाल ने हिल्डा से कहा, 'मैडम साहब, यह मोटर कल से कर्कश आवाज कर रही है। हमें इसे खोलकर देखना होगा कि समस्या क्या है।'

हिल्डा ने एक मिनट तक ध्यान से आवाज़ सुनी और बोली: 'हमें इसे खोलकर इसके अंदरूनी हिस्सों को ठीक से जोड़ना होगा। अब तुम सारी गायों का दूध दुह लो, नहीं तो दूध बस तक पहुँचने में देर हो जाएगी। उसके बाद घर जाकर मुझे औजारों का किट ला दो। मैं इसे पंद्रह मिनट में ठीक कर दूंगी।'

इस बीच, मशीन ने गाय के थनों से सारा दूध चूस लिया था। जमाल ने मोटर का स्विच बंद कर दिया और थनों से नलियाँ निकाल दीं। नौकर गाय को ले गया और दूसरी गाय ले आया। जमाल ने उसके थनों पर नलियाँ लगा दीं और स्विच चालू कर दिया। पहले की तरह, उन्होंने इस गाय के बछड़े को उसके सामने रख दिया। गाय उसे चाट रही थी। लेकिन बछड़े ने अपनी माँ के थन को एक बार भी नहीं छुआ था। फिर भी, चारों थनों से दूध फव्वारे की तरह नली में बहने लगा। वेंकटरमण ने हिल्डा से पूछा: 'यह मशीन कैसे काम करती है?'

‘यह वास्तव में बहुत सरल है। यह मोटर ट्यूबों के अंदर निर्वात उत्पन्न करती है। दबाव के कारण थन से दूध अपने आप बाहर बहने लगता है। इस दौरान जो निर्वात बना रहता है, दूध बर्तन में खाली होने के बाद वह फिर से बन जाता है। इस मशीन का मूल सिद्धांत निर्वात उत्पन्न करना है।’

क्या गाय तब भी दूध देगी जब उसका बछड़ा उसके थन से दूध न पिए?

‘क्या तुमने अभी-अभी नहीं देखा? यह सच है कि गाय अपने बछड़े के दूध पीने से एक खास तरह की उत्तेजना महसूस करती है। इसी उत्तेजना के कारण भरपूर दूध निकलता है। लेकिन बछड़े के बिना भी वह दूध दे सकती है। बस उसे इस विधि की आदत डालनी होती है।’

‘तो, हाथ से दुहने और इस मशीन का उपयोग करने में क्या अंतर है?’

'मशीन से काम जल्दी और स्वच्छता से हो जाता है। इतना ही नहीं, यह पूरी तरह से दूध निकाल लेती है, थन में एक बूंद भी नहीं बचती।'

‘तो फिर बछड़े का क्या होगा?’

‘ऐसा नहीं है कि बछड़े को सिर्फ अपनी माँ का दूध ही चाहिए। हम उसे अन्य पौष्टिक आहार भी देते हैं। आपने खुद देखा है, क्या बछड़े स्वस्थ नहीं हो रहे हैं?’

इसी बीच गाय का दूध दुह लिया गया। जमाल द्वारा ट्यूब निकालने के बाद, नौकर उसे ले गया और दूसरी ट्यूब ले आया। लेकिन इस गाय के पास बछड़ा नहीं था। जब तक जमाल ने ट्यूब को उसके थनों से जोड़ा, नौकर एक कृत्रिम बछड़ा लेकर लौटा और उसे गाय के सामने रख दिया। गाय की खाल से बना वह खिलौना बछड़ा असली बछड़े जितना लंबा और चौड़ा था। उसके अंदर भूसा भरा हुआ था और उसे बोरी के थैलों से सिला गया था। केवल उसका बाहरी हिस्सा ही खाल से ढका हुआ था। गाय उसे चाटने लगी। मशीन का स्विच चालू करते ही, ट्यूब में बने वैक्यूम ने दूध खींचना शुरू कर दिया।

वेंकटरमण ने पूछा: 'क्या हम बिना बछड़े के गाय का दूध दुह सकते हैं?'

‘अरे, दूध और बछड़े के बीच क्या संबंध है?’ हिल्डा ने पूछा।

क्या दूध और बछड़े के बीच कोई संबंध नहीं है? बिना बछड़े वाली गाय से दूध निकालना घोर पाप है। और अगर उसका बछड़ा है भी, तो आप उसे उसका दूध नहीं दे रहे हैं। क्यों?

‘क्या आपको पता नहीं है? बछड़े को दूध पिलाना आर्थिक रूप से लाभदायक नहीं है। क्या हम गायों का प्रजनन और पालन-पोषण केवल दूध के लिए ही नहीं करते?’

‘अगर किसी और ने ये कहा होता, तो शायद इन शब्दों को माफ़ कर दिया जाता। लेकिन एक स्त्री होने के नाते, तुम... तुम पहले से ही एक बच्चे की माँ हो और उसे अपना दूध पिला चुकी हो। अब तुम गर्भवती हो, एक और बच्चे को जन्म दोगी और उसे अपना दूध पिलाओगी। अगर तुम ये शब्द बोलती हो, तो मुझे नहीं पता कि इसे असभ्यता की निशानी कहूँ या अज्ञानता की।’ ये कहते ही वेंकटरमण ने अचानक अपने होंठ कसकर बंद कर लिए। एक मिनट बाद, उन्होंने कहा, ‘मैं हर बार तुमसे

मिलने पर झगड़ा नहीं करना चाहता। तुम्हारे घर आना मेरी गलती थी।' वे जाने के लिए मुड़ गए।

लेकिन पास खड़ी हिल्डा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें रोका और मुस्कुराते हुए कहा, "परम पूज्य पुजारी जी, आपको इस तरह गुस्से में भागना नहीं चाहिए। मतभेद होने पर बहस करनी चाहिए। नाराज़ होना दोस्तों का गुण नहीं है। कृपया बैठ जाइए। मुझे भी आपसे बहुत सी बातें करनी हैं।"

हालांकि एक पल के लिए उन्हें लगा कि उन्हें अपना क्रोध नहीं दिखाना चाहिए, लेकिन वेंकटरमण को अपने इस गुस्से पर कोई पछतावा नहीं था। उन्होंने अपने क्रोध पर काबू पाया और कहा: 'मैं यहाँ बैठकर यह तमाशा नहीं देख सकता। चलो कहीं और चलते हैं।'

'जमाल, जल्दी से दूध दुह लो। बस छूटने में देर हो सकती है,' हिल्डा ने बाहर आते हुए कहा। दोनों नए बने तालाब के पास गए। सीढ़ियाँ बन चुकी थीं और एक बिजली का पंप लगा दिया गया था। एक ऊपर से टंकी भी बनाई गई थी। वेंकटरमण ने इसे पहले कभी नहीं देखा था। न ही उन्होंने हिल्डा से पूछा कि यह सब कब हुआ था। वे तालाब के किनारे एक पत्थर की बेंच पर बैठ गए। उनके सामने एक और बेंच थी। लेकिन उस पर बैठने के बजाय, हिल्डा उनके बगल में बैठ गईं। शर्मिंदा होकर वेंकटरमण किनारे की ओर खिसक गए। हिल्डा ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। वह एक मिनट के लिए सोच में डूबी रहीं और फिर बोलीं: 'देखो, हर देश के अपने अलग-अलग रीति-रिवाज होते हैं। मेरे देश में हम सब कुछ वैज्ञानिक और योजनाबद्ध तरीके से करते हैं। किसी भी उद्योग में, हम हर वस्तु की लागत का हिसाब लगाते हैं और यह देखते हैं कि क्या वह लागत उस उद्योग के समग्र परिप्रेक्ष्य से अपरिहार्य है। और अगर हमें लगता है कि यह अपरिहार्य नहीं है, तो हम उस वस्तु को ही हटा देते हैं। उदाहरण के लिए, देखो: दूध उत्पादन एक उद्योग है। क्या इसके लिए बछड़ा अपरिहार्य है?' पहले वे ऐसा मानते थे। लेकिन आधुनिक वैज्ञानिक शोध के निष्कर्षों के आधार पर हमें पता चला कि ऐसा नहीं है। लेकिन अगर हम सभी बछड़ों को नष्ट कर देंगे, तो गायों की संख्या कैसे बढ़ेगी? इसलिए, हम केवल उतने ही स्वस्थ बछड़ों को रखते हैं जितने प्रजनन के लिए आवश्यक हैं और बाकी को मार देते हैं। वरना, इन बचे हुए बछड़ों द्वारा खाई और बेवजह बर्बाद की जाने वाली घास की क्या कीमत है?

वेंकटारमणा हैरानी और भय से भौंहें चढ़ाकर उसे देख रहा था। उसकी प्रतिक्रिया की उम्मीद करते हुए, जब उसे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, तो उसने आगे कहा: 'लेकिन हम बिना किसी कारण के बछड़ों को नहीं मारते। उनका एक और उपयोग है। चबाने वाले जानवरों में एक अंग होता है जिसे चौथा पेट कहते हैं। इसे जुगाली करने वाला जानवर कहते हैं। हम इससे एक एंजाइम प्राप्त कर सकते हैं। दूध से पनीर बनाने के लिए हमें इसे मिलाना पड़ता है।'

'बछड़ों को कैसे मारते हैं?' वेंकटरमण ने पूछा।

'एंजाइम बनाने वाली डेयरी कंपनियां हमसे बछड़े खरीदती हैं और उनका वध करती हैं। वे बछड़े की गर्दन काटकर उसे मार सकती हैं। या फिर उसे बेंत से पीट-पीटकर मार सकती हैं और फिर उसकी खाल से मुलायम जूते बना सकती हैं।'

'क्या अर्थ है?'

क्या आपको यह भी नहीं पता? ये लोग तो हमारे देश में भी ऐसा करते हैं। मैंने सुना है कि आपके कानपुर और दूसरे शहरों में भी ऐसी फैक्ट्रियां हैं। कोमल बछड़ों की खाल बहुत नरम होती है। उन्हें खूंटी से कसकर बांध दिया जाता है और उनके पूरे शरीर पर लगातार पीटा जाता है। उनकी खाल सूज जाती है और रोमछिद्रों से खून बहने लगता है। तब तक बछड़ा या तो मर जाता है या शायद बच भी जाता है। लेकिन यह महत्वपूर्ण नहीं है। इसके बाद, अगर खाल को कच्चा ही छीलकर तैयार किया जाए, तो उससे बेहद नरम जूते, थैले, पर्स और ऐसी ही दूसरी चीजें बनाई जा सकती हैं। लेकिन वे महंगे उत्पाद होते हैं।

वेंकटारमणा कल्पना में भी समझ नहीं पा रहा था कि उसने अभी क्या कहा है, और वह वहाँ ऐसे बैठा रहा जैसे बोल ही न पा रहा हो। तभी जमाल वहाँ प्रकट हुआ और बोला: 'महोदया साहब, दो गायें मद में आ गई हैं। उन्हें दवा देनी होगी।'

'तुम भी मेरे साथ आ जाओ,' हिल्डा उठते हुए बोली। वेंकटरमण उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। हिल्डा गौशाला के एक कमरे में गई, दवाइयों का डिब्बा खोला, थर्मामीटर निकाला, उसे जमाल द्वारा दिखाई गई गायों की योनि में डाला, थोड़ी देर वहीं रखा, फिर बाहर निकाला, जांच की और बोली: 'हाँ, ये मद में है। हमें इसे दवा देनी होगी ताकि ये गर्भवती हो जाए। घर जाओ और फ्रिज से मेरे लिए एक ट्यूब ले आओ।'

'मैं इसे पहले ही ले आया हूँ। टूलकिट लाने जाते समय मुझे यह मिल गया था।'

हिल्डा ने जमाल द्वारा दी गई नली ली और एक अनुभवी डॉक्टर की तरह, उसमें से आधी दवा एक सिरिंज में भर ली। उसने सिरिंज को गाय की योनि में डाला और उसमें दवा भर दी। दूसरी गाय के साथ भी यही प्रक्रिया दोहराने के बाद, उसने जमाल से कहा, 'इन्हें इनकी सही जगह पर बांध दो।' उसने सिरिंज को धोया।

वेंकटरमण ने पूछा: 'यह क्या है?'

'क्या आपको इतनी सरल बात भी समझ नहीं आई? ये गायें अपने प्राकृतिक चक्र के अनुसार मद में थीं। मैंने उनमें वीर्य डाला।'

हालांकि उसने ये शब्द बिना किसी झिझक के कहे, वेंकटरमण को बोलने में कठिनाई हो रही थी। फिर भी उसने पूछा: 'तुम्हें ऐसा करने की क्या ज़रूरत है? अग्रहारा के चन्ने गौड़ा के पास बहुत ही ताकतवर बैल हैं। वो तीन रुपये में एक बैल देते हैं। कलेनहल्ली में हर कोई सदियों से अपनी गायों को चन्ने गौड़ा के बैलों के पास भेजता आ रहा है।'

इसी बीच, हिल्डा ने टूलकिट खोलकर दुहने वाली मशीन का मोटर खोल दिया। काम करते हुए उसने कहा, "यह तो बिल्कुल ही अवैज्ञानिक तरीका है। इस तरीके से गाय के गर्भवती होने की कोई गारंटी नहीं है। इसके अलावा, हमें उस बैल की नस्ल भी नहीं पता! अगर इस देश में मवेशियों की नस्ल सुधारनी है, तो बेहतर गुणवत्ता वाले बैलों की ज़रूरत होगी। लेकिन फिर एक ही गाय पर बैल का सारा वीर्य इस्तेमाल करना फ़ायदेमंद नहीं है। सरकार का पशुपालन विभाग न्यूज़ीलैंड से सबसे अच्छी नस्ल के बैल आयात करता है, उनका वीर्य निकालता है, उसे कल्चर करता है और इस तरह की ट्यूबों में स्टोर करता है। हमें ये चार दिन पहले मिले थे और हमने इन्हें फ्रिज में रखा था। कुछ लक्षणों से हमें पता चला कि ये दोनों गायें बहुत जल्द हीट में आ जाएँगी। अब मैंने उन्हें वीर्य दे दिया है। इस प्रक्रिया की बदौलत, आप खुद देख लेंगे कि इन गायों से किस तरह के बच्चे पैदा होंगे।" अगर यह मादा बछिया है, तो भविष्य में आपको पता चल जाएगा कि बड़ी होने पर यह कितना भरपूर दूध देगी।

यह कहकर उसने मोटर को निकालकर उसके पुर्जों की जांच की। अब उसका ध्यान मशीन की आंतरिक संरचना पर केंद्रित था। जमाल भी वहीं खड़ा उसे देख रहा था और सीखने की कोशिश कर रहा था। हिल्डा ने कहा: 'ग्रीस की बोतल लाओ। ग्रीस लगाने के बाद इसे पोंछकर वापस लगाना होगा।'

वेंकटारमणा इन गायों के बारे में सोचते-सोचते व्याकुल हो गए। पश्चिमी देशों में गायों की देखभाल वैज्ञानिक तरीके से की जाती है। हिंदुस्तान की गायों के विपरीत, वहाँ कुपोषण की समस्या नहीं होती, महामारियों का प्रकोप नहीं होता, और उनकी उपेक्षा भी नहीं की जाती। उन्होंने यह बात एक अंग्रेजी अखबार में पढ़े लेख में पढ़ी थी। लेकिन हिल्डा द्वारा दिए गए वर्णन ने उन लोगों के घोर स्वार्थ को उजागर कर दिया। दूध न देने वाली गायों के लिए घास नहीं; उन्हें जीने का भी कोई अधिकार नहीं था। गाय का दूध निकालने के लिए बछड़ा भी अनावश्यक समझा जाता था। वे बछड़े को मारकर उसके पेट से कुछ तत्व निकाल लेते थे और उससे पनीर बनाते थे। उसे बेंत से पीट-पीटकर उसका खून बहाते थे, फिर जिंदा ही उसकी खाल उतारकर उससे मुलायम जूते बनाते थे। उस मशीन से सारा दूध निकाल लेते थे। अगर गाय मद में होती थी, तो नली के जरिए वीर्य चढ़ाते थे। बैल को उस पर चढ़ाना भी व्यर्थ था। उनकी नजर अचानक हिल्डा के गर्भवती पेट पर पड़ी। लेकिन पल भर में ही उन्होंने अपनी दृष्टि कहीं और घुमा ली।

कलिंग ने अपनी पत्नी के माध्यम से अपने गौशाला में इन सभी तकनीकों को लागू किया है। इन गायों को मातृत्व के उस स्वाभाविक आनंद से वंचित कर दिया गया है जो अपने बच्चों को दूध पिलाने से मिलता है; न ही उन्हें माहवारी के दौरान बैल के साथ संभोग करने का सुख मिलता है। वेंकटरमण कुछ दूर चलकर बंधी हुई गायों के चेहरों को देखने लगे। उनकी नज़र में वे केवल जानवर ही थीं, और कुछ नहीं। उन्हें तुरंत बड़े गौड़ा की गौशाला याद आ गई। बड़े गौड़ा के लिए गायें उनकी अपनी माँ के समान थीं, और बछड़े उनके छोटे भाई-बहनों के समान। जैसे मनुष्य की माँ के स्तन का दूध केवल उसके शिशुओं के लिए बहता है, वैसे ही गाय के स्तन का दूध केवल उसके बछड़ों के लिए बहता है। बड़े गौड़ा का दृढ़ विश्वास था कि गाय को पौष्टिक आहार दिया जाना चाहिए ताकि वह भरपूर दूध दे और जब उसका बछड़ा तृप्त हो जाए, तभी मनुष्य शेष दूध दुह सकते हैं। और जिस प्रकार किसी शिशु की मृत्यु के बाद और नए शिशु के जन्म तक माँ का स्तन सूख जाता है, उसी प्रकार कोई भी उस गाय का दूध नहीं दुह सकता जिसका बछड़ा मर गया हो।

वेंकटारमणा पास आकर प्रत्येक गाय के सामने रखे चारा पात्र को देखने लगे—इन पर संख्याएँ अंकित थीं—1, 2, 3, इत्यादि। प्रत्येक गाय के गले में एक क्रमांकित एल्युमिनियम का बैज बंधा था और बैज तथा चारा पात्र पर अंकित संख्याएँ आपस में

मेल खाती थीं। प्रत्येक चारा पात्र के ऊपर दीवार पर कागज़ के चार्टों का एक गुच्छा टंगा था, जो अस्पताल में किसी मरीज़ के पास रखे जाने वाले केस हिस्ट्री की तरह लग रहे थे। वेंकटारमणा ने एक चार्ट का अध्ययन किया। गाय के ब्याने की तिथि, प्रतिदिन दिए जाने वाले दूध की मात्रा और अन्य संबंधित विवरण उसमें दर्ज थे। बड़े गौड़ा के समय में, प्रत्येक गाय का एक वास्तविक नाम होता था, जैसे गंगा, गौरी, तुंगा, भद्रा, कामधेनु, सीता और सावित्री। प्रत्येक गाय अपने आप में एक देवी थी। लेकिन अब उनके पोते कलिंग के गौशाला में, प्रत्येक गाय महज़ एक संख्या बनकर रह गई थी, और उनकी देखरेख इस विदेशी महिला के हाथों में थी।

जहां वह खड़ा था, वहीं से वेंकटारमण ने बड़े गौड़ा के पोते की पत्नी को घूरकर देखा। हालांकि उसने वीर्य, गर्भावस्था और योनि जैसे शब्दों का इस्तेमाल सिर्फ गायों के संदर्भ में किया था, लेकिन उन्हें बोलते समय जरा भी शर्म नहीं आई थी। स्कूल में उसकी नौकरी स्थायी होने से पहले, सरकारी कानून के अनुसार उसे तालुक अस्पताल में मेडिकल चेकअप करवाना पड़ता था। डॉक्टर ने उससे भी ऐसे ही सवाल पूछे थे और उसके गुप्तांगों की जांच भी की थी। उसे बहुत शर्मिंदगी सहनी पड़ी थी। लेकिन फिर भी, आखिर वह एक डॉक्टर था। उसे हाई स्कूल में जीव विज्ञान के अपने पाठ याद आ गए। शिक्षक ने भी विज्ञान के नाम पर ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया था। लेकिन क्या कलिंग की इस पत्नी को शर्म नहीं आनी चाहिए? शायद उसके लिए भी यह सब विज्ञान ही था? उसने एक बार फिर उसकी ओर देखा। उसने मोटर का ढक्कन बंद कर दिया था और पेंच कस रही थी। शायद उसकी नजरों में सब कुछ वाकई विज्ञान ही था! यदि कलिंग विदेश न गए होते, और संयोगवश उन्होंने इस स्त्री से विवाह न किया होता, तो शायद बड़े गौड़ा के खलिहान का पुण्य बचा रहता। वह इस तरह नष्ट न होता। 'जब कोई व्यक्ति किसी स्त्री से विवाह करता है, तो वह उसकी मान्यताओं से भी विवाह करता है।' उन्हें एक अंग्रेजी समाचार पत्र के संपादकीय पृष्ठ के शीर्ष पर छपा यह कथन याद आया।

पश्चिमी देशों में तो बछड़ों को मार डाला जाता है। इस बाड़े में तो अभी तक यह प्रथा शुरू ही नहीं हुई है। अगर यह सब इस महिला के हाथ में होता, तो शायद वह अब तक ऐसा कर चुकी होती! पश्चिमी देशों में खेती के लिए किसी को मवेशी नहीं चाहिए। लेकिन यहाँ चाहिए। हम यहाँ एक साल के बछड़े को बेचकर पैसा कमाते हैं।

वरना, ये पति-पत्नी की जोड़ी सारे बछड़ों को मार डालती! वेंकटरमण घृणा से आग बबूला हो गया। उसका पेट मतली से भर उठा।

तभी हिल्डा वहां आई और बोली, 'क्या सोच रहे हो? चलो, तालाब के किनारे बैठकर बातें करते हैं।'

अब उससे बात करने के लिए क्या बचा था? उसने सोचा। वह चुपचाप वहीं खड़ा रहा। 'चलो, लगता है तुम कुछ गहरा सोच रहे हो। कृपया मुझे बताओ। किसी को अपने विचारों पर एकाधिकार नहीं रखना चाहिए,' उसने कहा और उसके हाथ खींचे। हालाँकि उसने अपने हाथ हटा लिए, लेकिन वह उसके पीछे-पीछे चला गया। जब वह पहले वाली बेंच पर बैठ गया, तो हिल्डा पहले से भी ज़्यादा पास आकर बैठ गई और पूछा: 'बताओ, तुम क्या सोच रहे थे?'

उसने कुछ नहीं कहा।

क्या तुम मुझे नहीं बताओगे?

'कहने को कुछ नहीं है।'

'देखो, अब तुम नाराज़ हो गए हो,' उसने अपना दाहिना हाथ उसके कंधे पर रखा और स्नेह भरे लहजे में बोली: 'दोस्तों को कभी नाराज़ नहीं होना चाहिए। अपना चेहरा देखो। क्या तुम छोटे बच्चे हो जो इस तरह व्यवहार कर रहे हो? तुम यहाँ बहुत कम आते हो। हर बार जब तुम हमसे मिलने आते हो तो ऐसा क्यों करते हो? क्या हम एक भी ऐसे व्यक्ति के लायक नहीं हैं जिसे हम दोस्त कह सकें?'

ये दोस्ताना और स्नेहपूर्ण शब्द सुनकर वेंकटरमण का क्रोध आग की तरह भड़क उठा। उसने कहा, "तुम जैसे बर्बर व्यक्ति के लिए मुझे किस प्रकार का स्नेह होना चाहिए? तुम कहते हो कि हमें बहस करनी चाहिए और मतभेदों को सुलझाना चाहिए। हम तो पहली मुलाकात से ही बहस कर रहे हैं। तब से तुम्हारे रहन-सहन और मान्यताओं में कोई बदलाव नहीं आया है। तुम्हारी नज़र में बहस करना बस अपनी बोरियत मिटाने का एक और तरीका है। जानवरों पर क्रूरता करने से तुम्हारा ज़मीर ज़रा भी नहीं दबता। तुम, तुम्हारी जाति, तुम्हारा जीवन-उद्देश्य, सब कुछ पूरी तरह बर्बर है। तुम बाघों और लकड़बग्घों से भी ज़्यादा क्रूर हो! तुम इंसानी दोस्ती के बिलकुल लायक नहीं हो।"

इसी बीच जमाल वहां आया और पूछा, 'क्या मैं टूलकिट लेकर घर जाऊं?'

‘हम्म, ठीक है, जाओ’, हिल्डा ने उसे विदा कर दिया। शाम ढल चुकी थी और अंधेरा छा रहा था। लेकिन हिल्डा मुस्कुराते हुए वेंकटरमण की व्यंग्यात्मक बोली सुनती रही: ‘कलिंग एक पापी है जिसने अपने पूर्वजों के धर्म और कर्म का पालन नहीं किया। और तुम एक अभिमानी स्त्री हो जो अपने घर की परंपराओं का पालन नहीं करती। तुम दोनों उस पूजनीय और महान आत्मा, बड़े गौड़ा के घर की हो, लेकिन तुम उनके सारे पुण्य को नष्ट कर रही हो!’

‘हम उनके घर से कैसे संबंधित हैं, महाराज?’ उसने शरारती हंसी हंसते हुए पूछा। ‘हमने गांव के बाहर इस जंगल के बीच में एक घर बनाया है और हम अपना पेट भरने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।’

देखो, मैं तुमसे न तो तुम्हारा मज़ाक उड़ाने के लिए बात कर रहा हूँ और न ही खुद हंसी का पात्र बनने के लिए। अब मैं पूरी तरह समझ गया हूँ कि तुम गाय को किस नज़रिए से देखते हो और तुमने उसे कितनी दयनीय स्थिति में पहुँचा दिया है। तुम गर्व से कहते हो कि तुम्हारे देश में कोई गाय भूखी नहीं रहती। यहाँ तक कि हमारे अख़बार भी यही लिखते हैं। लेकिन ज़रा सोचो: हिंदुस्तान में आधे लोग आधे पेट भरकर जीते हैं। अगर भविष्य में ईश्वर इंसानों और पशुओं का भी यही हाल कर दे, तो भी कोई बड़ी समस्या नहीं है। हमारे पशु भूख से मर जाएँ। लेकिन इतना काफ़ी होगा अगर इस देश के लोगों के मन में यह घिनौनी मानसिकता पैदा न हो... कि गायें सिर्फ़ इंसानों की स्वार्थी भूख मिटाने के लिए पैदा होती हैं और उनके थनों का दूध सिर्फ़ उनका पेट भरने के लिए होता है।

और अगर यह बात उनके मन में उठती है तो क्या होगा?

‘क्या होने वाला है? इस देश की आत्मा नष्ट हो जाएगी। धर्म और कर्म चकनाचूर हो जाएंगे।’

‘क्या आप मुझे विस्तार से बता सकते हैं कि यह कैसे होगा, परम पूज्य?’ उसने चिढ़ाने वाले लहजे में पूछा।

वेंकटरमण ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा: ‘तुम्हारे विचार से गाय वास्तव में किसका प्रतिनिधित्व करती है? यह संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतीक है। ब्रह्मांड की विभिन्न गतिविधियों को संचालित और नियंत्रित करने वाले सभी देवी-देवता गाय में निवास करते हैं। ब्रह्मा और विष्णु इसके सींगों के आधार में निवास करते हैं। सभी पवित्र नदियाँ इसके सींगों के शीर्षों पर स्थित हैं। सूर्य और चंद्रमा इसकी दो आँखों में,

वायु इसके दाँतों में, वर्षा इसकी जीभ में; विद्या की देवी सरस्वती इसकी हूम ध्वनि में, सूर्योदय और सूर्यास्त इसके दो होठों में, चारों धर्म इसके चार पैरों में, पवित्र गंगा इसके मूत्र में, चारों समुद्र इसके थनों में, और प्रत्येक समुद्र इसके शरीर के बालों में, कुल मिलाकर तैंतीस करोड़ देवता। यही कारण है कि ऋषियों ने कहा है:

विक्रमार्थं हि यो हिमस्याद् भक्षयेद वा निरंकुशः
घटयानां हि पुरुषम् य एणुमण्येउरर्थिनः
घातकं खडक् ओ वापि तथा यश्चानुमन्यते
भविष्य उज्ज्वल है, भविष्य उज्ज्वल है, भविष्य उज्ज्वल है

अर्थ: जो कोई भी गाय को खाने या वध करने के लिए बेचता है, या जो कोई भी ऐसी बिक्री की अनुमति देता है, ऐसे व्यक्ति उतने ही वर्षों तक एक विशेष प्रकार के नरक में डूबते रहेंगे जितने वर्षों तक गाय के शरीर पर बाल होते हैं!

'सच में?' हिल्डा ने आश्चर्य जताते हुए पूछा।

'तुमने और क्या अनुमान लगाया था?' उसने दृढ़ स्वर में पूछा।

उस शांत रात में हिल्डा एक बार ज़ोर से खिलखिलाई और बोली, "आपने जो अभी बताया, उसके पीछे की कल्पनाशीलता तो वाकई अद्‌भुत है। अगर हम गाय को ब्रह्मांड का प्रतीक मानें, तो उसके अंग आपके पुराणों में वर्णित देवी-देवताओं का प्रतिनिधित्व करेंगे। लेकिन, वह प्रतीक केवल गाय ही क्यों हो? उदाहरण के लिए, वह कुत्ता या भैंस क्यों नहीं हो सकता?"

इस सवाल से वेंकटरमण क्रोधित हो गए। खड़े होकर बोले, "मैं जो कह रहा हूँ, वह उतना मामूली नहीं है जितना तुम इसे मज़ाक समझ रही हो। तुमसे बात करना भी ठीक नहीं है।" वे जाने के लिए मुड़े। लेकिन हिल्डा खड़ी हो गईं, उनके दोनों कंधे पकड़े और बोलीं, "आप बिना जवाब दिए बहस से भाग नहीं सकते।" हिल्डा के इस तरह कंधे छूने से वे शर्मिंदा तो हुए ही, साथ ही क्रोधित भी हो गए। फिर भी उन्होंने खुद को संभाला, वापस बैठ गए और पूछा, "तुम्हारी बहस क्या है?"

आप गाय को अत्यंत पवित्र मानते हैं, फिर भैंसों के साथ इतना निर्दयतापूर्ण व्यवहार क्यों करते हैं? मैं भी इस वर्ष के मारम्मा मेले में गया था। वहाँ कितनी भैंसों का वध किया गया? वहाँ बहा खून, उनके शरीर से टपकती चर्बी का क्या? भगवान के

नाम पर या उन्हें प्रसन्न करने के लिए मारे गए जानवरों की चौंका देने वाली संख्या—क्या यह आपके धर्म का दूसरा चेहरा नहीं है? आप दावा करते हैं कि ईश्वर की सृष्टि में सभी जानवर समान हैं। फिर भी, आप एक जानवर की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं, जबकि दूसरे को मारने के लिए उतने ही तत्पर रहते हैं। क्यों?

वेंकटरमण इस प्रश्न का उत्तर नहीं सोच पाए। फिर भी उन्होंने कहा, "देखिए, यह नीच लोगों की पूजा पद्धति है। सरकार ने स्वयं देवताओं की पूजा करते समय पशु वध पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून पारित किया है। श्रेष्ठ शास्त्रों में पशु वध का कोई विधान नहीं है। फिर भी..." उन्हें कुछ याद आया और उन्होंने कहा, "वे इस विश्वास में पशु वध करते हैं कि इससे उन्हें उच्चतर अवस्था प्राप्त होगी।"

'मेरे प्रिय मित्र, क्या आपको एहसास है कि आप किस तरह की मुसीबत में फंस गए हैं?' उसने चमकती आँखों से उसे दृढ़ता से देखते हुए पूछा: 'आप स्वयं कहते हैं कि यह नीच लोगों की पूजा पद्धति है। लेकिन फिर आपने स्वयं उस देवता, उस अग्नि और उस रथ पर पवित्र जल क्यों छिड़का? यह सच है कि जब वध हुआ तब आप वहाँ उपस्थित नहीं थे। लेकिन फिर भी आपने उन उत्सवों के एक पहलू में भाग लिया। इसलिए, चाहे आपने किसी भी पहलू में भाग लिया हो और चाहे जिस हद तक, आपको पूरी प्रक्रिया की सभी कमियों और गलतियों के लिए मूल रूप से जिम्मेदार होना ही होगा। इसके अलावा, आपने अभी-अभी सरकार के उस कानून का समर्थन किया है जो ईश्वर के नाम पर पशु वध को प्रतिबंधित करता है। क्या इसका मतलब यह है कि सरकार को आपके धार्मिक विचारों में सुधार के लिए हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है? आपने कहा कि वे लोग इस विश्वास से पशुओं का वध करते हैं कि वे उच्चतर अवस्था प्राप्त करेंगे। इससे मूर्खतापूर्ण उत्तर और कोई नहीं हो सकता।'

यह कहते-कहते हिल्डा की आवाज़ गंभीर हो गई और अंत में क्रोध से कांप उठी: 'तुमने मुझे और मेरी जाति को बर्बर कहा। पहले तुम अपने भीतर और अपने धर्म में बर्बरता को सुधारो। शायद तभी तुम्हें किसी दूसरे की जीवनशैली की आलोचना करने का अधिकार मिलेगा।'

वेंकटरमण ने तुरंत कहा: 'हमारा मूल दृष्टिकोण हमेशा श्रेष्ठ है। प्रत्येक प्राणी को जीने की स्वतंत्रता है। हमारी मान्यता के अनुसार, किसी भी प्राणी को किसी अन्य प्राणी पर किसी प्रकार का अधिकार नहीं है। सांप और मेंढक, हिरण और बाघ आपसी स्नेह से एक साथ रहते हैं—यही हमारे उन जंगलों का आदर्श था जहाँ ऋषि या

साधु तपस्या करते थे। यह सच है कि कुछ निम्न स्तर की पूजा पद्धतियों में बकरी और भैंस की हत्या शामिल थी। यह इस वर्ष से समाप्त हो गया है। लेकिन आप अपना वह बर्बर दृष्टिकोण बदलें जो कहता है कि जानवर केवल मनुष्य के क्रूर पेट को भरने के लिए ही मौजूद हैं। तब तक आपसे बात करना भी व्यर्थ है।'

इस बार वह बस खड़ा हुआ और चला गया। हिल्डा ने तुरंत कहा: 'अगर मांसाहारी भोजन पाप है, तो सभी प्रकार का मांसाहारी भोजन समान रूप से पापी है। आपके देश के लोग बकरी, भेड़, मुर्गी और मछली खाते हैं। लेकिन केवल गाय का मांस वर्जित है। यह एक अतार्किक मान्यता है।' तब तक वेंकटरमण काफी दूर जा चुका था। खलिहान में बिजली जल रही थी। हालांकि तालाब के पास एक बिजली का खंभा था, लेकिन उसमें स्विच नहीं लगा था। बाहर पूरी तरह अंधेरा तो नहीं था, लेकिन फिर भी पर्याप्त अंधेरा था। हिल्डा ने उसके पीछे से आवाज़ लगाई: 'देखो, खलिहान के नौकर रात के खाने के लिए चले गए हैं। वे नौ बजे तक लौट आएंगे। मैं अकेली हूँ। मैं घर कैसे जाऊँ? मैंने जमाल को इसलिए भेजा था ताकि तुम मेरे साथ रहो। क्या तुम मुझे घर छोड़ दोगे?'

'तुम जैसे खून के प्यासे लोगों के लिए डर का सवाल ही क्या उठता है? मुझे तुम्हारे साथ जाने की कोई ज़रूरत नहीं है,' उसने चिल्लाते हुए जवाब दिया और आगे बढ़ गया। हिल्डा एक मिनट तक वहीं खड़ी रही, उसकी आँखों में धधकती नज़रें थीं। फिर वह धीरे-धीरे खलिहान की ओर गई, अंदर के कमरे से मशाल ली और उसे हाथ में पकड़े हुए मुख्य दरवाज़ा बंद कर दिया और अकेली ही चली गई।

तभी उसने किसी को अपनी ओर आते देखा। उसने टॉर्च आगे की ओर चमकाई। वह वेंकटरमण था। 'चलो, मैं तुम्हें घर छोड़ देता हूँ और फिर घर चलता हूँ,' उसने कहा।

'धन्यवाद। मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। कृपया चले जाओ,' उसने रूखेपन से कहा। वह आधे मिनट तक चुपचाप खड़ा रहा और फिर तेज़ी से चला गया।

5

हिल्डा का मन सर्प की फुफकार की तरह क्रोध से भरा हुआ था। जब भी हिल्डा और वेंकटरमण बात करते, बात हमेशा किसी न किसी बहस में ही उलझ जाती थी, लेकिन अंत में वे हमेशा अपने विचारों में अंतर को समझ लेते थे। और चाहे कितने भी मतभेद

क्यों न होते, हिल्डा को अनजाने में ही उनके प्रति स्नेह का भाव विकसित हो गया था। उन्हें उनके व्यक्तित्व की प्रबल शक्ति से एक विशेष आकर्षण महसूस होता था। लेकिन आज वह सब कुछ खत्म हो गया था और उसकी जगह घृणा ने ले ली थी। धैर्यपूर्वक उनसे बहस करने और फिर घर लौटने के बजाय, उन्होंने बार-बार हिल्डा और उनकी जाति को बर्बर कहकर अपमानित किया था।

उस रात उसे नींद नहीं आई। अब तक उसे इस देश के लोगों के विश्वास, रीति-रिवाज और तौर-तरीके अजीब लगे थे। अब तो वे सब पाखंडी लगने लगे। वह सुबह छह बजे उठी और जमाल को पुकार कर बोली: 'देखो, मुझे आज कुछ बढ़िया मांस चाहिए।'

'करीम ने कल शाम कुछ भेजा था। क्या वह खराब हो गया?'

नहीं, मेरा मतलब वो नहीं है। मुझे एक जवान गाय का मांस चाहिए।

'मुझे वो साहिबा कहाँ मिलेगी?'

'हमारे गौशाला में। मेरे लिए एक छोटी गाय लाओ। तुम उसे यहीं मारो और उसका मांस मेरे पास ले आओ। देखो, नौकर लोग पुण्यकोटी नाम की किसी गाय की बात कर रहे हैं। उनमें से एक छोटी गाय मेरे लिए ले आओ।'

इसी बीच जमाल की पत्नी आ गई। वह हिल्डा की टूटी-फूटी कन्नड़ समझ सकती थी। उसने कहा: 'अम्मा जी, कृपया ऐसा मत कीजिए। अगर किसी एक व्यक्ति को भी पता चल गया, तो वे गड्ढे खोदकर हम सबको दफना देंगे।'

जमाल ने इस बात का समर्थन करते हुए कहा: 'तुम इन हिंदू लोगों को नहीं जानते। अगर तुम उनमें से किसी एक को मार भी दो तो शायद चुप ही रहो। लेकिन अगर तुम एक गाय को मार दोगे, तो सब मिलकर तुम पर टूट पड़ेंगे। करीम—जो हमें मांस सप्लाई करता है, उसने एक बार रमज़ान के त्योहार के दौरान एक गाय को मार दिया था। आठ दिन बाद यह खबर पूरे कस्बे में फैल गई। सारे आदमी अंदर घुस आए और उसका घर जला दिया। अगर वह छुपकर भाग न जाता, तो वे उसे भी खत्म कर देते।'

लेकिन हिल्डा ने निर्णायक स्वर में कहा: 'मुझे परवाह नहीं कि कैसे। मुझे यह आज किसी भी कीमत पर चाहिए। अभी जाओ और मेरे लिए एक गाय ले आओ। यहाँ किसी को पता नहीं चलेगा। अगर ज़रूरी हो तो आज नौकरों के लिए छुट्टी घोषित कर दो।'

जैसे कि अब उसे सब कुछ समझ आ गया हो, जमाल की पत्नी ने मुस्कुराते हुए कहा, “देखो, अम्मा जी को अब पाँच महीने पूरे हो गए हैं। उन्हें ख्वाहिश हो गई है, उसे खाने की तीव्र इच्छा हो रही है। अपने देश में, वह इसे हर दिन बड़े चाव से खाती थीं।”

जमाल ने हाँ कहा और गौशाला की ओर चल पड़ा। वह तंबाकू के पौधों के बीच से गुज़रती हुई मेड़ पर तेज़ी से चला और गौशाला पहुँच गया। उसे वहाँ पहले से ही गायों का दुहना देख रहा होना चाहिए था। उसके पहुँचने से पहले ही नौकरों ने सारी तैयारी कर रखी थी। पहुँचते ही उसने मशीन से हर गाय से दूध निकलवाया। उसने दूध नापा, डिब्बों में भरा और नौकरों के ज़रिए बस स्टॉप तक भिजवा दिया। बस पंद्रह मिनट में आई और चली गई। बाकी नौकरों से उसने कहा, ‘जहाँ चाहो जाओ। आज छुट्टी है। बाकी सबको बता दो कि आज खेत का काम नहीं है,’ और सबको भेज दिया। उसने उनसे कहा कि दोपहर में उनमें से एक को मवेशियों के लिए घास और पानी का इंतज़ाम करने आना होगा।

सबके चले जाने के बाद, जमाल ने पुण्यकोटी नस्ल की एक गाय को उसके चारे से खोला और उसे बाहर ले गया। वह पहली बार माँ बनी थी, नई माँ - उसे बच्चे को जन्म दिए हुए केवल चार महीने ही बीते थे। उसकी मादा बछिया को अलग से एक खूंटी से बांधा गया था, जिसके पास वह लेटी हुई अपनी माँ को जाते हुए देख रही थी। अपने बच्चे की दिशा में देखते हुए, माँ रंभाते हुए जमाल के पीछे-पीछे चली।

जब तक वह गाय लेकर आया, हिल्डा पहले से ही बेचैन और घबराई हुई उसका इंतज़ार कर रही थी। सुबह के आठ बज चुके थे। जमाल के शेड में एक पत्थर की पटिया थी। अतीत में कई बार उसने वहाँ कोमल भेड़, बकरी और मुर्गी का वध किया था और उनका मांस छाँटने के बाद उसे एक थाली में निकालकर हिल्डा की रसोई की मेज पर रख दिया था। आज भी, उसने गाय को सीधे अपने शेड के अंदर घसीटा। यह जगह न केवल गाय के लिए नई थी, बल्कि वहाँ कोई भी नहीं था। वह अब तक कभी अकेली नहीं रही थी। जमाल ने उसे ज़बरदस्ती अंदर खींच लिया। किसी भी चीज़ का विरोध न करने की आदी, वह विनम्रतापूर्वक उसके दबाव के आगे झुक गई। हिल्डा वहीं खड़ी थी। उसका ढाई साल का बेटा जैक उसके ठीक पीछे खड़ा था। जमाल की पत्नी अपनी रसोई के दरवाजे पर खड़ी थी।

जमाल ने गाय से बंधी रस्सी खोली और उसी से उसके चारों पैरों में एक फंदा बनाया, फिर उसे हिल्डा की ओर फेंका और उसे खींचने को कहा। जब हिल्डा ने

रस्सी खींची, तो उसने उसके दोनों सींग पकड़कर घुमा दिए। गाय, जो विरोध भी नहीं कर पा रही थी, लुढ़क कर गिर पड़ी। उसने उसके चारों पैरों को एक साथ जोड़ा और खुरों को लोहार की तरह कसकर बांध दिया। अंबाह की कराह के साथ गिरी हुई गाय अब अपनी आँखें चारों ओर घुमा रही थी, मानो पूरी तरह से बेबस हो। जमाल की पत्नी अंदर गई और एक एल्युमिनियम के बर्तन में पानी और एक तेज चाकू लेकर लौटी। जमाल ने गाय की गर्दन पर पानी डाला और अपनी पत्नी से कहा, 'एक बेसिन लाओ।' जब उसने बेसिन को उसकी गर्दन के नीचे रखा, तो वह जोर से चीखी। जमाल ने अपनी पत्नी को उसके सींग पकड़ने को कहा। उसने सींग पकड़े और उस पर पैर रख दिया। 'बिस्मिल्लाह' कहते हुए, उसने अपने दाहिने हाथ में चाकू उसकी गर्दन के नीचे रखा और एक ही झटके में नस को काट दिया। ठीक उसी क्षण, उन्हें पहाड़ी की चोटी पर स्थित मंदिर से विशाल घंटी बजने की आवाज़ सुनाई दी। जमाल के हाथ कांपने लगे और उसका चेहरा पसीने से तर हो गया।

गाय की गर्दन की नस कट गई थी और खून तेजी से बहकर बर्तन में गिर रहा था। मंदिर की घंटी की तेज आवाज के साथ ही गाय ने एक बार तीखी चीख मारी। लेकिन उसकी बाहर निकली हुई जीभ लटकी ही रही। अपने बंधे हुए पैरों को दो बार हिलाने की नाकाम कोशिश के बाद वह शांत हो गई। तब तक बर्तन खून से भर चुका था और छलक रहा था; गाय की आंखें स्थिर हो गई थीं और उसकी लटकी हुई जीभ भी हिलना बंद हो गई थी।

जमाल ने बेहद डरते हुए कहा, “महोदया, घंटी की आवाज सुनकर ही मुझे डर लग रहा है। अगर वो पुजारी इधर आ गया तो हमारा क्या हाल होगा?”

‘वह अब कभी इस घर में नहीं आएगा। चिंता मत करो।’ हिल्डा के ऐसा कहते ही उसकी नज़र स्वाभाविक रूप से उसके बगल में खड़े जैक की ओर मुड़ गई। जैक रो नहीं रहा था, लेकिन डर से कांप रहा था। उसने तुरंत उसे गोद में उठा लिया और अपनी मातृभाषा में कहा, ‘मेरे बच्चे, तुम ऐसे क्यों कांप रहे हो? डरने की कोई बात नहीं है। चुप रहो... मेरे बच्चे, अब शांत हो जाओ,’ उसने उसे कसकर गले लगा लिया। लेकिन वह फिर भी कांपना बंद नहीं कर रहा था। वह उसे गोद में लेकर बाहर आई। आसपास कोई नहीं था। उसने मंदिर की ओर देखा। उसे कोई नहीं दिखा। उसने सोचा कि वह पुजारी अंदर खड़ा होकर उस पत्थर की मूर्ति पर फूल चढ़ा रहा होगा।

तभी जमाल की पत्नी बाहर आई और बोली: 'खून पूरी तरह से निकल गया है। वह पूछ रहा है कि क्या उसे मांस काटना चाहिए।'

'तुम इसे उठाओ,' उसने कहा और जैक को हिल्डा को सौंप दिया। जमाल के शेड में प्रवेश करते हुए, हिल्डा ने दरवाजा बंद कर दिया ताकि कोई अंदर न आ सके। खून पूरी तरह सूख चुका था, केवल गाय का मृत शरीर वहाँ पड़ा हुआ था। जमाल ने उसके पैरों की रस्सी खोल दी थी। उसने हिल्डा के चेहरे को देखा।

उसने पूछा: 'जमाल, पुजारी ने मुझे कल बताया, क्या तुमने सुना? ऐसा लगता है कि सूर्य और चंद्रमा गाय की आँखों में हैं। ऐसा लगता है कि चारों समुद्र उसके थनों में समाए हुए हैं। ऐसा लगता है कि उसके शरीर के विभिन्न भागों में तैंतीस करोड़ देवी-देवता विद्यमान हैं।'

'जी मैडम, हिंदू ऐसा कहते हैं।'

'लो, वो चाकू लो और उसकी आंखें निकाल दो, उसके स्तन काट दो। एक-एक करके हर अंग को काटो। चलो देखते हैं कि कौन से देवता कहाँ निवास करते हैं!'

जमाल ने गर्दन उठाकर उसके चेहरे की ओर देखा, यह जानने के लिए कि वह मज़ाक कर रही है या गंभीर। उसका चेहरा गंभीर लग रहा था। 'चुप क्यों हो? मेरे चेहरे को क्यों देख रहे हो? बस वही करो जो मैंने कहा है। या मुझे चाकू दो। मैं काटकर देख लूँगी,' उसने कहा और अगले ही पल पास पड़ी पत्थर की पटिया से चाकू छीनकर गाय की आँखों में घोंप दिया। फिर उसने उसके थनों को कुरेदा और उन पर वार किया जिससे उसका थन फट गया। उसने उसके पेट में भी चाकू घोंपकर देखा। एक मिनट के लिए उसके चेहरे पर व्यंग्य के भाव आए और फिर उसने अपनी मातृभाषा में मन ही मन कहा: 'बेवकूफ। असभ्य, अवैज्ञानिक बेवकूफ! उनके विश्वासों का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।'

जमाल को उसकी बात समझ नहीं आई। उसने अपने हाथ में मौजूद चाकू गाय के शरीर पर फेंक दिया, दरवाजा खोला और बाहर चली गई।

जमाल की पत्नी जैक को गोद में लिए इधर-उधर टहल रही थी। जैक अब शांत हो गया था। उसे अपने साथ लेकर हिल्डा अपने घर के अंदर गई और सोफे पर लेट गई। वह पूरी तरह थक चुकी थी। उसने नाश्ता या कॉफी नहीं पी थी; और न ही अब उसका मन था। जब जमाल की पत्नी आधे घंटे बाद वहाँ आई, तो उसने कहा: 'देखो,

मैं आज खाना नहीं बना सकती। तुम ये सब यहाँ से ले आओ और खाना बना लो। लेकिन मैं तुम्हें तरीका सिखा दूँगी। खाना बनाते समय मसाले मत डालना।'

'ठीक है अम्मा जी। लेकिन यहाँ तो बहुत सारा गोश्त, गोमांस है। हम यह सब नहीं खा सकते। बाकी का क्या करें?'

'उसे कहो कि वह हम सबके लिए जितना काफी हो उतना रख ले और बाकी किसी को दे दे', उसने कहा, फिर एक मिनट सोचकर बोली: 'देखो, जमाल वैसे भी साइकिल से करीम की दुकान से अंडे खरीदने जाता है। इतने दिनों से करीम हमें मांस दे रहा था। जमाल से कहो कि आज उसे मांस दे दे। उसके परिवार में सब खा सकें—उसकी पत्नी, बच्चे, पोते-पोतियां। अगर वह इसे बेचकर पैसे कमाना चाहता है, तो उसे कमाने दो।'

दोपहर तक, जमाल की पत्नी ने गाय के मांस से बना भोजन तैयार कर लिया था। तब तक जमाल भी घर लौट चुका था। उसकी पत्नी ने दोनों के लिए पर्याप्त भोजन लिया, बर्तन बंद किए और घर चली गई। बाद में, हिल्डा जैक के साथ अंदर गई और दोपहर का भोजन करने बैठ गई। लेकिन वह खा नहीं सकी। खाना बनाने की विधि में कोई गलती नहीं थी। जमाल की पत्नी ने हिल्डा के निर्देशों का ठीक-ठीक पालन किया था। लेकिन दो-तीन चम्मच खाते-खाते ही हिल्डा को लगा कि उसका पेट भर गया है। अमेरिका से हवाई जहाज से मुंबई आने और ट्रेन से यहाँ पहुँचने के बाद से उसे एक बार भी गोमांस खाने का मौका नहीं मिला था। आज, उसे किसी अज्ञात कारण से इतना गोमांस खाने की इच्छा हो रही थी कि उसका पेट फट जाए। उसने आधा घंटा पहले थोड़ी सी शराब भी पी ली थी ताकि वह और खा सके। लेकिन ऐसा कैसे हुआ?

जैक ने खाना खाया और उठ गया। वह भी उठी, बर्तनों पर ढक्कन लगाया और मेज पोंछी। अचानक उसे असहनीय अकेलापन महसूस हुआ। कलिंगा आज शाम या शायद कल लौट जाएगा। इतने दिन यहाँ रहने के बाद भी, इस देश में उसका एक भी दोस्त नहीं है। वह अंदर गई और बिस्तर पर लेट गई। जैक उसके बगल में सो गया।

लेकिन कलिंगा उसी दोपहर दो बजे घर लौट आया। उसने अपनी पसंद की वैन का ऑर्डर दे दिया था। डीलर ने उसे बताया था कि वह एक साल के भीतर वैन पहुंचा देगा। इस देश में तो एक वाहन मिलना भी मुश्किल था।

दोपहर के भोजन के समय, कलिंगा ने पूछा: 'यह क्या है, आज खाने का स्वाद अलग क्यों है?'

'आप मुझे बताइए कि यह क्या हो सकता है।'

उसने मांस के टुकड़े को अपने मुंह में कई बार घुमाया और पूछा: 'बीफ। यह कहाँ से आया?'

'करीम ने इसे भेजा है।'

'यह एक बेहद साहसी कारनामा है। अगर किसी को पता चल गया तो वह बच नहीं पाएगा। उसे एक संदेश भेजकर कहें कि वह इसे दोबारा कभी न भेजे।'

'प्रिय, क्या तुमने भी इस देश में लौटने के बाद धर्म के ये प्रतिबंध विकसित किए?'

'यह धर्म का सवाल नहीं है। हाँ, यह बहुत स्वादिष्ट है। लेकिन अगर उन्हें पता चल गया कि हम इसे खा रहे हैं, तो आस-पास के गांवों के लोग भड़क उठेंगे और कुछ कर सकते हैं। व्यापार के लिहाज से यह कोई समझदारी वाली बात नहीं है।'

हिल्डा चुप हो गई। एक बार फिर, उसे अकेलेपन का एहसास होने लगा। कलिंग ने उसका उदास चेहरा देखा और पूछा: 'प्यारी, तुम इतनी उदास क्यों हो? ऐसा लगता है जैसे तुमने खाना भी नहीं खाया है। है ना?'

'हम्म। मैं नहीं कर सका।'

'आओ, मेरे साथ खाना खाओ', उसने उसके कंधे पकड़कर उसे अपने बगल वाली कुर्सी पर बिठा दिया। उसने उसे चम्मच-कांटा दिया और अपनी थाली उन दोनों के बीच रख दी। दोनों एक ही थाली से खाने लगे। अब वह खा सकती थी। उसने कहा: 'अगर तुम अभी नहीं आते, तो मैं भूखी ही रहती, मेरे प्रिय। मैं तुम्हारे लौटने के बाद ही खा सकती हूँ।'

'यह तो स्वाभाविक है। इस देश की महिलाएं तब तक भोजन नहीं करतीं जब तक उनके पति भोजन न कर लें। आपके साथ भी ऐसा ही हुआ।'

'क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं इस देश का हूं, मेरी प्यारी?'

'आपको इस पर संदेह क्यों है?'

'कुछ नहीं। धन्यवाद। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद', उसने कहा और थाली में एक बार फिर खाना परोस दिया।

जमाल चाहे कितनी भी छुपकर अपना काम करता, शाम होते-होते खबर कलेनहल्ली पहुँच गई। जिस क्षण कलिंग ने नया गौशाला बनवाया और मवेशियों को वहाँ से हटाया, गाँव के कई लोगों को शक होने लगा कि वह गौहत्या कर रहा है। उन्होंने यह शक उसके अधीन काम करने वाले हर नौकर को बता दिया और उन्हें उस पर नज़र रखने का निर्देश दिया। यह निर्देश मुख्य रूप से स्वयं तैयव्वा ने दिया था। नौकर गौशाला में गायों की कुल संख्या, उनके द्वारा दिए गए बछड़ों की संख्या और अन्य ऐसी ही जानकारियों का हिसाब रखते थे।

दोपहर में जब नौकर गायों को घास और नया पौष्टिक चारा देने आया, तो उसने देखा कि एक गाय गायब है। उसने दूसरे नौकर को सूचना दी। जब वह दौड़कर हिल्डा को यह बात बताने गया, तो उसने कहा, 'वह कहीं भटक गई होगी, जाकर ढूंढो।' जब वही नौकर जमाल के बाड़े में गया और उससे पूछताछ की, तो उसने कहा, 'हमने उसे बेच दिया है।' लेकिन जब उसने पूछा, 'लेकिन उसका बछड़ा तो यहीं है,' तो जमाल ने गुस्से में कहा, 'तुम्हें यह सब क्यों जानना है? बकवास बंद करो और चले जाओ।' नौकर को अब शक हो गया था। साथ ही, उसकी नाक को ताजे खून और कच्चे मांस की बदबू भी आ रही थी। जमाल की पत्नी ने कल के लिए रसोई में काफी मात्रा में मांस रखा हुआ था। नौकर बिना कुछ कहे बाहर चला गया। जमाल दोपहर के भोजन के लिए अपने बाड़े के अंदर चला गया।

इसी बीच, एक अन्य सेवक ने देखा कि खेत में एक जगह पर एक बड़ी खाई खोदी गई है और उसमें कुछ दबा हुआ है। ढकी हुई खाई के ऊपर की ज़मीन पर टीले से काटी गई घास बिखरी हुई थी। सेवक ने यह सुनिश्चित किया कि उसे उस दिशा में जाते हुए किसी ने न देखा हो और सावधानी से कदम बढ़ाते हुए कल्याणी की ढलान पर चढ़कर सड़क तक पहुँच गया। फिर वह बाईं ओर मुड़ा, गौशाला में गया और वहाँ मौजूद दूसरे सेवक को अपनी देखी हुई बात बताई। बाकी गायों को घास और बोरी में रखा आटा खिलाने के बाद, वे दोनों गाँव की ओर दौड़ पड़े। उन्होंने अब तक गाय की हत्या जैसी बात कभी सोची भी नहीं थी। अब यह घटना एल्डर कलिंग गौड़ा की अपनी गौशाला में घटित हुई थी। उन्होंने पुण्यकोटी गाय को मारकर खा लिया था, जो एल्डर गौड़ा के वंश की विशेष धरोहर थी।

तयव्वा ने दोपहर का रागी मुड्डे अभी तक नहीं खाया था। जब उन दोनों ने उसे सारी बात बताई, तो उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसने उन्हें यांगता गौड़ा को बुलाने का इशारा किया। वह खेतों में गए हुए थे। नौकर वहाँ गए, उन्हें सारी बात बताई और उन्हें वापस ले आए। गौड़ा ने गाँव के दस प्रमुख लोगों को बुलाया। जब गाँव की औरतें और बच्चे भी उनके साथ शामिल हो गए, तो वह सभा एक विशाल जनसमूह में बदल गई। होन्ना, जो किसी काम से कलेनहल्ली आया था, उसे इस बात का पता चला। वह अग्रहारा में अपने गुरु वेंकटरमण के विद्यालय गया और उन्हें सूचना दी। वेंकटरमण ने आखिरी पीरियड बीच में ही छोड़ दिया और दौड़ते हुए कलेनहल्ली आ गए।

जब वह वहाँ पहुँचे, तो सभा चल रही थी और उसमें काफी हलचल थी। कई लोग इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर चर्चा कर रहे थे कि गाय की हत्या करने वाले को क्या दंड दिया जाना चाहिए। उनमें से एक ने कहा कि पूरे गाँव के सामने एक हजार रुपये का जुर्माना अदा किया जाना चाहिए। दूसरे ने कहा, 'उन कमीनों के लिए एक हजार रुपये क्या हैं, मेरे दोस्त? वो अपना मुँह बंद कर लेंगे और हम जो भी मांगेंगे, दे देंगे। हमें कुछ और सख्त करना होगा।' जब उन्होंने देखा कि वेंकटरमण आ गए हैं, तो सदस्यों ने उन्हें अपना मुखिया नियुक्त किया, उन्हें बैठने के लिए कहा और उनसे पूछा कि गाय की हत्या करने वाले को क्या दंड दिया जाना चाहिए। यांगता गौड़ा के पुत्र माता ने कहा, 'पूजनीय जोइस से पूछने की क्या बात है? क्या 'देवी महात्मे' नाटक में यह नहीं कहा गया है कि गाय को मारने वाले को मार डाला जाना चाहिए? यही दंड है।'

लेकिन यह सज़ा लागू नहीं हो सकी। देश की सरकार, पुलिस और अदालत के नियम अब अलग हैं। इसी बीच, एक और आदमी ने कहा: 'आप उनका कुछ नहीं कर सकते। उनके पास बंदूक है। खुद वह लाल महिला बंदूक चलाती है। और सावधान रहो, उस मुसलमान के पास चाकू, खंजर और भी बहुत कुछ है।'

इस क्षण, उपस्थित लोगों के दिलों में उमड़ रही तीव्र उत्तेजना थोड़ी कम हो गई। माता ने सीना पीटते हुए कहा, 'देखते हैं वो उस बंदूक से मुझसे क्या छीन सकती है।' तब तक चुप रही तैयव्वा ने माता की ओर हाथ हिलाकर उसकी सराहना की।

अब वेंकटरमण बोलने लगे। सब चुपचाप उनकी बात सुनने लगे: 'हमें यह ठीक से समझना होगा कि क्या हुआ होगा। यह सच है कि वहाँ से एक गाय गायब है। हो सकता है उन्होंने उसे बेच दिया हो। चलो जाकर पूछते हैं, "किसे बेचा है?" गाय

दिखाना उनकी ज़िम्मेदारी है। अगर वे नहीं दिखाते, तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उन्होंने उसे मार डाला है। चलो उस जगह को भी खोदते हैं जहाँ उन्होंने उसे दफनाया है। एक और बात: कलिंग शहर में नहीं हैं। इसका मतलब है कि यह उनकी पत्नी ने करवाया है।' ये शब्द कहते हुए उन्हें कल अपनी पत्नी के साथ हुई लंबी और कड़वी बातचीत याद आ गई। लेकिन उन्होंने घटना का खुलासा नहीं किया और आगे कहा: 'कलिंग की अनुपस्थिति में हम वहाँ जाकर क्या कर सकते हैं?'

'नहीं। वह दोपहर की मोटरगाड़ी से आया था। मैंने देखा था,' उनमें से एक ने कहा।

तो चलिए, हम सब चलते हैं। हम उससे न्याय मांगेंगे और उसकी पत्नी से उसका गुनाह कबूल करवाएंगे और उसे पंचगव्य का सेवन करवाकर प्रायश्चित करवाएंगे। उन्हें गांव को एक हजार रुपये का जुर्माना देना होगा। एक और बात। वे पुण्यकोटी मंदिर की कल्याणी का पानी अपने तंबाकू के खेत में इस्तेमाल करते हैं। पति-पत्नी दोनों कल्याणी में नहाते हैं। मैंने उन्हें पहले भी ऐसा न करने के लिए कहा था। वे सुनते ही नहीं। वे कल्याणी को अपनी निजी संपत्ति समझते हैं। हम इस मामले पर भी चर्चा करेंगे और उनका पानी का पंप हटवाएंगे। देवता की पूजा के लिए रखे गए पानी में किसी को अपने पैर तक नहीं डालने चाहिए। ऐसे में क्या वे उसमें तैर सकते हैं?

'यह सही है,' सभी ने एक स्वर में कहा और खड़े हो गए।

'और अगर वे नहीं सुनते हैं, तो हमें उन व्यभिचारी माताजी के औलादों को लाठी से पीट-पीट कर सबक सिखाना होगा,' माता ने वीरता से गरजते हुए कहा।

'बेवजह झगड़ा शुरू मत करो,' वेंकटरमण ने ज़ोर से कहा और उनके साथ शामिल हो गया। हालाँकि किसी ने ज़बान से कुछ नहीं कहा, फिर भी उन्होंने वेंकटरमण और यांगता गौड़ा को आगे बढ़ने दिया। गाँव की औरतें और बच्चे उन आदमियों के पीछे-पीछे चल दिए। तैयव्वा, जो औरतों के समूह में थी, इशारों से उनसे बात कर रही थी। वह बीच-बीच में रोती रही और अपनी साड़ी के किनारे से अपने आँसू पोंछती रही।

2

जब तक वे सब पहाड़ी से नीचे उतरकर फार्महाउस के पास पहुँचे, तब तक शाम की रोशनी बाकी थी। जमाल की पत्नी ने जब इतने सारे लोगों को एक साथ देखा, तो उसने

हिल्डा को सूचना दी। हिल्डा बाहर आई और देखने लगी: दो सौ से अधिक पुरुष, महिलाएं और बच्चे समूहों में नीचे उतर रहे थे। उसके अवचेतन मन ने तुरंत समझ लिया कि ग्रामीणों को पता चल गया था कि उसने गाय की बलि का आदेश दिया था। लेकिन बिना कुछ जताए, उसने आगे चल रहे वेंकटरमण से अंग्रेजी में पूछा: 'क्या ये लोग होश में हैं? ये तंबाकू के पौधों के ऊपर से चल रहे हैं।'

लेकिन, यांगता गौड़ा ने इसके बजाय जवाब दिया: 'तुमने गाय को मार डाला है। हम तुम्हें न्याय के कटघरे में लाने आए हैं। तुम्हारा पति कहाँ है? उसे बुलाओ।'

हिल्डा यह बात समझ गई। उसने कन्नड़ में जवाब दिया: 'आपको हमारे खेत में प्रवेश करने का अधिकार किसने दिया?'

अपने पिता के ठीक पीछे खड़ी वीर माता चिल्लाई: 'अरे कमीनी, न्याय की मांग करने पर तुम गधे जैसा जवाब देने की हिम्मत कैसे करती हो? अपने पति को बुलाओ!'

वेंकटरमण ने माता की ओर मुड़कर कहा, “माता, तुम्हें अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। चुप रहो।” लेकिन माता ने उनकी बात नहीं मानी। उन्होंने पूछा, “तुम्हें लगता है कि ऐसी बदचलन औरतों से सभ्य भाषा में बात करने से कुछ होगा?”

हालाँकि हिल्डा इसे पूरी तरह समझ नहीं पाई, लेकिन वह समझ गई कि उसने गंदी गालियाँ दी हैं। वह एकदम सीधी खड़ी हो गई और दृढ़ता से बोली: 'तुम सबको अभी यहाँ से निकल जाना होगा। वरना मुझे अपनी बंदूक निकालनी पड़ेगी और गोली चलानी पड़ेगी।'

‘देखो, वह अभी भी एक नौजवान लड़का है, और जल्दबाज़ है। यह महत्वपूर्ण नहीं है। अब बातचीत के लिए बैठो। कलिंग कहाँ है? उसे बुलाओ,’ वेंकटरमण ने कहा।

‘उसे बुलाने की कोई जरूरत नहीं है। मैंने गाय का वध करवा दिया है। आपको इस पर सवाल उठाने का कोई अधिकार नहीं है।’

इन शब्दों ने तुरंत ही पूरी भीड़ को भड़का दिया। पीछे खड़े कुछ लोगों ने घर की ओर मिट्टी के ढेले फेंके। एक ढेला ज़ोर से हिल्डा के कंधे पर लगा। वेंकटरमण और यांगता गौड़ा भीड़ को शांत करने के लिए मुड़े। इसी बीच हिल्डा अंदर चली गई थी। कलिंगा घर पर नहीं था। एक पल के लिए उसे रोने का मन हुआ। लेकिन उसने तुरंत खुद को संभाला, बेडरूम में गई और वहाँ टंगी बंदूक उठा ली। उसने जाँच की कि

बंदूक भरी हुई है या नहीं, बाहर आई और भीड़ पर निशाना साधते हुए बोली: 'तुम सब अभी तितर-बितर हो जाओ। वरना मैं ट्रिगर दबा दूंगी।'

बंदूक देखते ही कई लोग घबराकर भागने लगे। लेकिन जो लोग ठीक आगे खड़े थे, वे वहीं खड़े रहे। महिलाओं के समूह के साथ पीछे खड़ी तैयव्वा अब आगे आई और वेंकटरमण के बगल में खड़ी हो गई, जिसने चिल्लाते हुए कहा, 'हमें बंदूक से मत डराओ। क्या तुम्हें इसके अंजाम का वाकिफ है?'

हिल्डा ने बंदूक आसमान की ओर तानकर गोली चलाई। जो लोग पहले ही इधर-उधर भाग चुके थे, वे अब बुरी तरह डर गए। सामने खड़े लोग भी कांपने लगे। पलक झपकते ही वेंकटरमण ने हिलकर हिल्डा के हाथ पकड़े और माता को पुकारा। माता, उसके पिता, तैयव्वा और अन्य लोग दौड़कर आए और हिल्डा को थाम लिया। तभी घर के किनारे से दौड़ता हुआ आया कलिंग, भीड़ को चीरता हुआ अंदर घुसा और बंदूक छीन ली। जमाल उसके पीछे आया। कलिंग खलिहान में गया था। दूर से लोगों की इस भीड़ को पहाड़ी से खेत की ओर उतरते देख वह बड़ी जल्दी में यहाँ पहुँचा था। हिल्डा की पहली गोली चलने तक वह घर के किनारे तक पहुँच चुका था।

उन्हें किसी बात की जानकारी नहीं थी, उन्होंने कहा: 'यह सब वेंकटरमण क्या है?'

यांगता गौड़ा ने कहा: 'यही कमीना अब यह सवाल पूछ रहा है! इसे पूरी दुनिया को साफ करना आता है, लेकिन यह दिखावा करता है कि उसे अपने घर के आंगन में क्या हो रहा है, इसकी कोई जानकारी नहीं है! तुम पूछ रहे हो कि यह क्या है, अय्याश की औलाद?'

हालांकि देहाती बोलचाल में इस तरह की भाषा आम थी, लेकिन किसी ने भी उसके सामने इस तरह सीधे तौर पर इसका इस्तेमाल नहीं किया था। उसे बहुत अपमान महसूस हुआ। लेकिन धैर्य जुटाकर उसने पूछा: 'सच कहूं तो मुझे कुछ नहीं पता। पहले मुझे बताओ कि यह क्या है।'

वेंकटरमण ने कहा: 'आज सुबह तुमने अपने गौशाला में एक गाय का वध किया और उसे खा लिया। अब सारे गांववाले न्याय की मांग करने के लिए आ गए हैं।'

कलिंगा को दोपहर में परोसा गया गोमांस का भोजन तुरंत याद आ गया। उसी से उसने उन सभी संभावित परिणामों का अनुमान लगाया जो घटित हो सकते थे। उसने

अपनी पत्नी के हाथ और कंधे पकड़कर पूछा: 'हिल्डा, सच बताओ। जो कुछ भी हुआ, सब बताओ। झूठ मत बोलो।'

अपमान से पहले से ही उबल रही उसकी आँखों से अब आँसू बहने लगे। लेकिन वह सीधी खड़ी हुई और चुनौती भरे लहजे में बोली: 'हाँ, मैंने ही उसे ज़बह करवाया था। उनमें से किसी को भी मेरे गौशाला की गायों को ज़बह करने या उसे खाने पर सवाल उठाने का अधिकार नहीं है। मैंने जमाल को उसे ज़बह करने का आदेश दिया था और उसे पकवाया था।'

उसने इतना ही कहा और घर के अंदर चली गई। अब भीड़ का ध्यान जमाल की ओर गया। लेकिन तभी वह मैदान के ऊपर से दौड़ता हुआ निकल गया। कलिंगा ने एक मिनट तक मन ही मन सोचा और फिर सामने खड़े गाँव के बुजुर्गों से कहा, 'सच कहूँ तो मुझे इसकी जानकारी नहीं थी। अब जो होना है, हो गया। आप ही बताइए कि अब क्या करना चाहिए।'

इसी बीच, गोली चलने की आवाज सुनकर जो लोग इधर-उधर भाग गए थे, वे वापस लौट आए और एक समूह बना लिया। माता और दो अन्य बलवान लोग जमाल का पीछा कर रहे थे। मुखिया यांगता गौड़ा ने सबको बैठने को कहा। कलिंग के भी उनके सामने बैठ जाने के बाद, यांगता गौड़ा ने कहा: 'तुम और तुम्हारी पत्नी, दोनों को पंचगव्य लेना होगा। तुम्हें पूरे गाँव के सामने एक हजार रुपये का जुर्माना भरना होगा। तुम्हें वह पंप मशीन हटानी होगी जो तुमने मंदिर के कल्याणी में लगाई है।'

'मैं तुम्हें एक हजार रुपये दे दूँगा। पंचगव्य प्रत्येक व्यक्ति की आस्था प्रणाली से संबंधित है। मैं इसे ले सकता हूँ। लेकिन तुम इसे उस पर कैसे थोप सकते हो? वह एक अलग जाति की है।'

'तुम्हारे साथ शादी करने के बाद उसकी जाति कैसे बदल सकती है?' यांगता गौड़ा ने पूछा।

'अभी जाति के मुद्दे पर चर्चा न करें। वह इसके लिए राजी नहीं होगी।'

अगर वो नहीं मानती, तो उसे ठीक से मना लो और राजी कर लो। आखिर तुम किसी मर्द की ही संतान हो, है ना?

कलिंग ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उन्होंने पूछा: 'मुझे कल्याणी से पंप क्यों हटाना चाहिए? इसका इससे क्या संबंध है?'

‘वह कल्याणी देवता की पूजा के लिए बनाई गई थी। आप उसका पानी अपने निजी उपयोग के लिए कैसे ले सकते हैं?’

'मुझे अपने दादा द्वारा निर्मित कल्याणी के पानी का उपयोग करने का पूरा अधिकार है। यह मेरी अपनी जमीन पर बना कुआँ है।'

अब वेंकटरमण ने कहा: ‘तुम्हारे दादाजी की स्वयं अर्जित संपत्ति पर तुम्हारा अधिकार है। परन्तु जो उन्होंने धर्म के रूप में दान दिया है, उस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। यदि तुम्हारे दादाजी जीवित होते, तब भी उनका इस पर कोई अधिकार नहीं होता। शास्त्रों में यही कहा गया है।’

इस कथन का समर्थन करते हुए तैयव्वा ने अपने दाहिने हाथ से मुट्ठी बनाई और उसे अपने बाएं हाथ की हथेली पर पटका। यांगता गौड़ा ने आगे कहा, 'तुम्हारे दादाजी ने केवल पत्थर का काम करने वालों को ही पैसे दिए थे। क्या तुमने कभी यह जानने की जहमत उठाई है कि बैलगाड़ी और बैलगाड़ी किसने-किस को दिलवाई, इस इमारत को बनाने में किसने-किस ने मेहनत की? यह काम पूरे गांव ने मिलकर किया था।'

‘कल्याणी से पानी लेने से मंदिर को क्या हानि होगी?’

वेंकटरमण ने कहा: ‘देखो, तुम पहले भी कई बार इस विषय पर मुझसे बहस कर चुके हो। और मैंने शास्त्रों के प्रमाणों के आधार पर न्यायसंगत उत्तर दिया है। बार-बार वही बात मत पूछो।’

फिर जमाल को पकड़ने गए तीनों लोग लौट आए। उनमें से एक के कंधे से खून बह रहा था। हाथ में खंजर लिए माता पास आया और बोला: ‘हमने उस कमीने का पीछा किया। सड़क के ठीक बाहर हम उसे लगभग पकड़ने ही वाले थे। उस बदमाश ने अपनी अंडरवियर की जेब से खंजर निकाला और हम पर वार किया। वह पुट्टा के कंधे पर लगा। वह अय्याय्यय्यू चिल्लाने लगा। तो हम इधर मुड़े और वह भाग गया। अंधेरे में हम उसे देख नहीं पाए।’

कलिंग अंदर गया और पानी, बोरिक पाउडर, टिंचर और सूती पट्टियाँ लेकर लौटा। उसने घाव को धोया, दवा लगाई और पट्टी बाँध दी। घाव ज़्यादा गहरा नहीं था। अब वे तीनों पंचायत के पास बैठ गए। वेंकटरमण ने कलिंग से कहा, “देखो, इस मामले में बहस मत करो। बस कल्याणी से पंप निकाल दो।”

दस मिनट सोचने के बाद कलिंगा ने कहा: 'ठीक है, मैं इसे निकाल देता हूँ। नया कुआँ खुदवाने में लगभग दस हजार रुपये का खर्च आएगा। मेरे लिए यह कोई बड़ी रकम नहीं है। लेकिन जब तक नया कुआँ तैयार नहीं हो जाता, इस तंबाकू की फसल का क्या होगा? इसलिए, मैं इसे नया कुआँ तैयार होने के बाद ही निकालूँगा।'

वेंकटारमणा को लगा कि यह एक स्वीकार्य समाधान है। वह हाँ कहने ही वाला था कि यांगता गौड़ा ने कहा: 'यह इस तरह से काम नहीं करेगा। आपको इसे तुरंत हटाना होगा। अगर आपको पानी चाहिए, तो अपने खलिहान में स्थित कुएँ से ले लें।'

लेकिन खलिहान में स्थित कुआँ खेत की तुलना में थोड़ी कम ऊँचाई पर था। ऊपर बने टैंक की ऊँचाई का आकलन करते समय, उन्होंने खेत तक पानी पंप करने की संभावना पर विचार नहीं किया था। फिर भी, कलिंगा ने एक निर्णय लिया। खलिहान में स्थित टैंक लोहे का था। यदि वे नीचे की संरचना की ऊँचाई बढ़ा देते, तो उसकी ऊँचाई स्वतः बढ़ जाती और फिर खेत तक पानी पंप किया जा सकता था। लेकिन इसके लिए सड़क के नीचे से एक पाइप बिछाना आवश्यक था। यह काम अगले आठ-दस दिनों में पूरा हो सकता था।

जब उसने कहा, 'ठीक है। मैं इसे कल हटवा दूंगा', तो समूह में से कोई भी सहमत नहीं हुआ। 'अभी निकालो, चलो।'

कलिंग को अपमान और बेबसी का गहरा अहसास हुआ। लेकिन दूरदर्शिता और धैर्य के साथ, वह उठा, अपने घर के अंदर गया और औजारों का एक सेट और लोहे की छड़ लेकर लौटा और बोला: 'आओ, तुम्हें भी मेरी मदद करनी होगी।'

यांगता गौड़ा समेत कुछ बलवान लोग उसके पीछे-पीछे चले। खंभे पर लगी बिजली की बत्ती जल रही थी। उसने मशीन के हर नट और बोल्ट को खोलना शुरू किया। सभी नट और बोल्ट निकालने के बाद, बलवानों ने कलिंगा के निर्देशों के अनुसार मशीन के हर हिस्से को नीचे उतारा। इसके बाद, उन्होंने सारा सामान ट्रैक्टर शेड में रख दिया। फिर बलवानों ने लोहे की छड़ों से पंप के लिए बने सीमेंट के चबूतरे को तोड़ दिया।

यह सब खत्म होते-होते आधी रात बीत चुकी थी। चारों ओर अंधेरा छा गया था, मानो कोई गुफा हो। तब तक महिलाओं और बच्चों के समूह गांव लौट चुके थे।

कलिंगा अंदर गए और एक हजार रुपये के नोट लेकर लौटे और उन्हें यांगता गौड़ा के हाथ में रख दिया। समूह ने यांगता गौड़ा को यह बताकर विदा लिया कि पति-

पत्नी को कल सुबह मंदिर आकर पंचगव्य ग्रहण करना होगा।

3

झोपड़ी में अकेले रहने से डरकर, जमाल की पत्नी हिल्डा के घर के बरामदे में जागती हुई लेटी रही। हिल्डा भी बिस्तर पर जागती हुई लेटी थी और शर्म से लाल हो रही थी।

सबके चले जाने के बाद, जब उसका पति अंदर आया और दरवाजा बंद कर दिया, तो हिल्डा ने कहा: 'आज तुमने बिलकुल कायरों जैसा व्यवहार किया।'

मुझे और क्या करना चाहिए था?

'एक गोली हवा में चलाने के बाद आधी भीड़ तितर-बितर हो गई थी। दूसरी गोली की आवाज सुनते ही बाकी आधी भीड़ भी भाग जाती।'

'वे नहीं जाते। क्या वे तुम पर नहीं गिरे और तुम्हारे हाथ से बंदूक नहीं छीन ली?'

'अगर मैंने आत्मरक्षा में उस समूह पर गोली चला दी होती तो क्या होता?'

हम सभी फांसी पर चढ़ जाते। मुझे बताइए, क्या ऐसे मामलों में जल्दबाजी में कार्रवाई करना बुद्धिमानी है?

फिर भी, मेरे प्रिय, तुमने कायरों जैसा व्यवहार किया। क्या इस देश में कोई पुलिस या सरकार नहीं है? तुमने पंप और मोटर को सिर्फ इसलिए क्यों तोड़ दिया क्योंकि उन्होंने तुम्हें ऐसा करने के लिए कहा था?

क्या पुलिस चौबीसों घंटे, हर समय हमारी सुरक्षा करेगी? आपको यहाँ के गाँवों का तरीका समझ नहीं आता। अगर वे गुस्से में भड़क उठे, तो यहाँ आकर एक ही रात में हमारी साल भर की सारी फसल बर्बाद कर देंगे। कौन सी पुलिस यहाँ आकर साल भर हमारी सुरक्षा करेगी? उस कल्याणी को जाने देकर हमारा क्या नुकसान हुआ? शायद हमें दस-बारह हज़ार रुपये और खर्च करने पड़ेंगे। मैं कल वैन का ऑर्डर रद्द कर दूंगा। हम दूसरा तालाब या कुआँ खोद लेंगे। खैर, यह झंझट यहीं खत्म हुआ!

लेकिन तुमने मुझे निराश किया, मेरी प्रियतमा, तुमने मेरी इज्जत की रक्षा नहीं की।

इस आरोप से कलिंग को बहुत ठेस पहुंची। शाम से लेकर अब तक उसने धैर्यपूर्वक सभी हार सहन की थीं और व्यावहारिक दृष्टिकोण से व्यवहार किया था। अब पत्नी के इस आरोप से क्रोधित होकर उसने कहा, 'मैं आपकी इज्जत बचाने के

लिए क्या करता? क्या आपको इस जगह की स्थिति का पता नहीं था? और सब कुछ जानते हुए भी आपने उस गाय को क्यों कटवाया?'

'ओह, उस पुजारी ने मुझे उकसाया। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि कल शाम से मैंने किस तरह की यातनाएं झेली हैं!' वह लगातार रोने लगी।

उसने उसका सिर उठाया, उसे अपनी छाती पर रखा और उसे शांत करते हुए पूछा: 'क्यों, क्या हुआ?'

'वह कल किसी काम से यहाँ आया था। वह मेरे साथ गौशाला में आया। उसने देखा कि गायों का दुहरण मशीन से हो रहा है। उसने मुझसे पूछा, "बछड़ों के लिए दूध कहाँ है? एक औरत होकर क्या तुम इसकी अहमियत नहीं समझती?" मैंने उसे बताया कि हमारे देश में एंजाइम निकालने के लिए बछड़ों को मार दिया जाता है। उसने मुझे धिक्कारते हुए कहा कि मैं असभ्य हूँ, मेरी पूरी जाति बर्बर है और उसने और भी कई बुरी बातें कहीं। फिर उसने कहा कि गाय के शरीर के हर अंग में देवी-देवता होते हैं, और मुझे चेतावनी देकर चला गया। बताइए, इस तरह का अपमान कौन सह सकता है? मैंने आज सुबह एक गाय कटवाई और उसके अंगों की जाँच की।'

क्या तुम्हारा अपमान भी उसी के साथ गायब हो गया?

मैं ऐसा नहीं कह सकता। लेकिन मुझे एक तरह की राहत जरूर महसूस हुई।

कलिंगा कुछ नहीं बोले। उनका चेहरा मानो उनकी नियति के अनुसार सिकुड़ गया और उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं। हिल्डा ने भी अपनी आँखें बंद कर लीं और लेट गईं, उनका सिर अब उनकी गोद में था। उनका ध्यान अब अपने पेट पर चला गया जो भारी महसूस हो रहा था। फिर उन्होंने अचानक कहा: 'प्रिय, कृपया मेरी बातों का बुरा मत मानना। जब से मैं इस देश में आई हूँ, तब से मैंने अकेलेपन का सामना किया है। और कल से, यह अकेलापन मुझे जकड़ रहा है और मेरी पहचान को अंदर से खा रहा है। और आज शाम, जब आपने उन बर्बर, दुष्ट बदमाशों के गिरोह की गुंडागर्दी से डरकर मेरी इज्जत कुर्बान कर दी, तो मुझे सचमुच लगता है कि मेरे पास कोई सहारा नहीं है, कि मैं इस विशाल और अनजान देश में बस एक असहाय, अकेली औरत हूँ।'

ये शब्द सुनकर कलिंगा का दिल उसकी दुर्दशा पर पछता गया। उसने उसे एक बार गले लगाया, चूमा और कहा: 'ऐसा क्यों कह रही हो, प्रिय? जब तक मैं यहाँ हूँ,

तुम्हें कभी ऐसा महसूस नहीं होना चाहिए। हमें इस माहौल में थोड़ा समझदारी से काम लेना होगा।'

उसे कुछ हद तक तसल्ली मिली। उसे गले लगाते हुए उसने कहा: 'मैंने अपना देश सिर्फ तुम्हारे लिए छोड़ा। मैंने तुमसे इस रोमांटिक जोश में शादी की कि मैं दूसरे देश जाऊंगी और अपने सारे ज्ञान और विज्ञान का इस्तेमाल करके उस देश की बंजर भूमि में सोना उगाऊंगी। लेकिन जब मैं यहां आती हूं, तो देखती हूं कि धरती और पानी के अलावा यहां कोई मुझे पसंद नहीं करता।'

क्या मैं वहां नहीं हूँ?

“हाँ, तुम हो। मैं सिर्फ तुम्हारे लिए जी रही हूँ। मैं सिर्फ तुम्हारे लिए काम कर रही हूँ। इस खेत में, जो अनजान, वीरान गाँवों से घिरा है, हम दो दुखी आत्माएँ ही हैं जो एक-दूसरे से सच्चा प्यार करती हैं,” उसने उठते हुए कहा और बिस्तर पर टंगी मच्छरदानी के बाहर चली गई। वह उसके लिए भी पानी लेकर लौटी। उन्होंने मच्छरदानी को सीधा किया और फिर एक-दूसरे की बाहों में सो गए। जैक दूसरे कमरे में सो रहा था। कुछ ही मिनटों में हिल्डा को नींद आ गई। लेकिन कलिंगा की आँखें बंद ही नहीं हो रही थीं। तरह-तरह के विचार और यादें उसके मन को धीरे-धीरे कुरेद रही थीं। उसके दादाजी के समय के गाँव के जीवन की यादें उमड़ पड़ीं। संक्रांति के दौरान गोपूजा, कारू उत्सव के दौरान बैल दौड़, शुक्रवार की पूजा... ये सभी और अन्य त्योहार सतह पर आ गए। उसके दादा, दादी और माताजी का गाय के प्रति आदर उसकी आँखों के सामने एक ठोस, सजीव छवि की तरह खड़ा था। उस शाम उनकी मां भी समूह के साथ आई थीं। और जब यांगता गौड़ा बोल रही थीं, तो वह ज़ोर-ज़ोर से अपना सिर हिला रही थीं और अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी को बाएं हाथ की हथेली पर ऐसे पटक रही थीं मानो वे उनके ही शब्द हों। वह तब तक पुरुषों के साथ खड़ी रहीं जब तक कि देवता के कल्याणी में लगा पंप उखाड़कर वापस यहां नहीं लाया गया।

अचानक कलिंगा के मन में यह अहसास जागा कि वह इस दुनिया में बिलकुल अकेला है। अपने दादा, जो ग्राम गौड़ा—मुखिया—के पोते होने के नाते, वह ग्राम गौड़ा का ताज पहन सकता था। लेकिन आज, सारे गाँव वाले यहाँ आ गए थे और उससे जुर्माने की वसूली कर ली थी। कल सुबह, वे उसे पूजा के समय बुलाएँगे और उसे पंचगव्य पिलाएँगे। मैं हिल्डा के अकेलेपन की दवा हूँ। लेकिन मेरे अकेलेपन का

सहारा कौन है? न हिल्डा, न जैक। उसकी नज़र हिल्डा के बढ़ते हुए पेट पर पड़ी। उसके मन को वहाँ भी कोई जवाब नहीं मिला।

सोच में डूबे हुए वह कई बार करवटें बदल रहा था, तभी उसे बाहर कौवों के कांव-कांव करने की आवाज़ सुनाई दी। उसने पास रखी टॉर्च जलाई और घड़ी देखी —सुबह के साढ़े पाँच बज चुके थे। हिल्डा को जगाए बिना, वह धीरे से उठा, मच्छरदानी से बाहर निकला, बिस्तर से नीचे उतरा और घर से बाहर निकल गया। बाहर लगभग भोर हो चुकी थी। उसकी नज़र मंदिर के कल्याणी की ओर पड़ी। उसके पास लकड़ी के खंभे पर लगा बिजली का दीपक अभी भी जल रहा था। अब उस खंभे को भी हटाना पड़ेगा। उसे नए कुएँ की खुदाई के लिए जगह ढूंढनी होगी, वह खलिहान की ओर चलते हुए सोचने लगा। तब तक सुबह की रोशनी पूरी तरह से फैल चुकी थी। और जो नज़ारा उसने देखा, उससे वह दंग रह गया: पूरे खेत में तंबाकू के सारे पौधे उखाड़ दिए गए थे, रौंदे गए थे और इधर-उधर बिखेर दिए गए थे।

पूरी तरह से थका हुआ, वह टीलों पर धीरे-धीरे कदम घसीटता हुआ चल रहा था। सुबह की हल्की रोशनी में कुछ पौधे दिखाई नहीं दे रहे थे, उनके अलावा तंबाकू की पूरी फसल नष्ट हो चुकी थी। लगभग पचास हजार रुपये का नुकसान हुआ था।

उन्होंने यह कब किया? हमारे सोने के बाद? या फिर जब पंप हटाया जा रहा था, तब दूसरे लोग इस काम में लगे हुए थे? जुर्माना भरने, पंचगव्य स्वीकार करने और पंप हटाने के बाद भी उन्होंने यह सब क्यों किया? क्या उन्होंने पहले से ही यह तय कर रखा था? या फिर यह अचानक आए आवेग का नतीजा था? उन्होंने पैरों के निशान देखे। यह स्पष्ट था कि इसमें महिलाओं और बच्चों ने भी भाग लिया था।

हिल्डा की बात मानकर, उसके मन में पुलिस में शिकायत करने का ख्याल आया। लेकिन इससे क्या फायदा होता? वह कुछ लोगों को पकड़ सकता था और उन्हें हथकड़ी पहनाकर सबक ले सकता था ताकि गांव के दूसरे लोग भविष्य में ऐसा करने की हिम्मत न करें। लेकिन फिर इसके लिए उसे किन-किन लोगों को पकड़ना पड़ता? वह यही सोचते हुए खलिहान की ओर चल पड़ा।

गौशाला में उसका नजारा बिल्कुल अलग था। मुख्य दरवाजा टूटा हुआ था। गायें वहीं बंधी थीं जहाँ उन्हें कल शाम बांधा गया था। पाँच गायें और छह बछड़े गायब थे। कोई नौकर भी नहीं था। इस समय तक गायों को उनके चारे से खोलकर दूध निकालना शुरू हो जाना चाहिए था। लेकिन दूध निकालने की मशीन का इंचार्ज

जमाल गायब था। कोई नौकर भी आसपास नहीं था। कलिंगा ने गायब गायों की संख्या नोट की। वे किसी क्रम में नहीं गई थीं। तभी अचानक उसे एक बात समझ में आई। गायब हुई सभी गायें पुण्यकोटी नस्ल की थीं। गौशाला में उस नस्ल की कुल छह गायें थीं। और हिल्डा और जमाल द्वारा काटी गई गाय को मिलाकर, सभी छह पुण्यकोटी गायें गायब थीं। इसका मतलब है कि उन्होंने पुण्यकोटी गाय को कल ही मार डाला था। पाँच गायों और उनके बछड़ों के अलावा, वे कल मरी हुई गाय के बछड़े को भी ले गए थे। लेकिन यह चोरी नहीं थी। कल रात पंप हटाए जाने के बाद, उसकी अपनी माँ यहाँ आई और उसने गायों के बंधन खोले। उसके मन में यह विचार आया कि पुण्यकोटी वंश उसकी कुलदेवी के समान है।

दुहने में मदद करने के लिए कोई नौकर नहीं था। और उसे लगा कि हर थन को धोना और साफ करना और फिर मशीन से अकेले दुहना बहुत थका देने वाला काम है। इसलिए उसने फैसला किया कि उस दिन दूध नहीं निकलेगा। एक बार दूध न निकालने से हुआ नुकसान पिछली रात फसल के बर्बाद होने से हुए पचास हजार के नुकसान के मुकाबले कुछ भी नहीं था। यह सोचकर उसने चार-पाँच बछड़ों को खोल दिया और बाकी को खोलने लगा। लेकिन जब बछड़े अपनी माँओं के थनों से दूध पीने के लिए दौड़े, तो गायें इसे सहन न कर पाने के कारण बेतहाशा लात मारने लगीं। उसने जिन बछड़ों को खोला था, वे सभी अपनी-अपनी माताओं के पहले बच्चे थे। जन्म देने के बाद, इन युवा गायों को उनके बछड़ों ने कभी दूध नहीं पिलाया था। वे केवल अपने सामने वाले बछड़े को चाटने और दूध निकालने की आदी थीं, जिसे रबर की नलियाँ पेशाब की तरह चूस लेती थीं। लेकिन बछड़ों ने दूध पीने की अपनी सहज प्रवृत्ति नहीं खोई थी।

कलिंग ने बछड़ों को फिर से बांध दिया। वह एक-एक करके गायों को लाया और जल्दी से मशीन की नलियाँ लगाकर सभी गायों से दूध निकाला। उसने धुले और तैयार रखे डिब्बों को भरा, तीन चक्करों में उन्हें सड़क तक ले गया और तय समय पर मोटर को सौंप दिया। उसने गायों को उनके स्थान पर छोड़ दिया, गौशाला का सामने का दरवाजा बंद कर दिया और सड़क पार कर गया। सुबह साढ़े आठ बजे वह घर पहुँचा, रास्ते में उसे तंबाकू के सूखे पौधे दिखाई दिए।

जमाल की पत्नी जागने के बाद अपनी झोपड़ी में लौट आई थी। जैक उसकी झोपड़ी के सामने खेल रहा था। हिल्डा अभी तक नहीं उठी थी। कलिंगा की आँखें रात

भर न सोने के कारण कोयले की तरह जल रही थीं। उसके हाथ-पैर बेकाबू हो रहे थे। जब वह चेहरा धोने के लिए स्नानघर गया, तो उसे याद आया: घर के पानी की आपूर्ति के लिए बनाया गया टैंक भरा हुआ था। लेकिन शाम तक जब वह खाली हो जाएगा, तो उन्हें कल्याणी या खलिहान से पानी लाना पड़ेगा। उसने पिछली रात फसल बर्बाद होने के बारे में पुलिस में शिकायत करने का विचार छोड़ दिया। और खलिहान के अलावा, खेत में काम करने के लिए कोई नौकर भी नहीं था। जब तक वह ग्रामीणों के सामने गिड़गिड़ाएगा नहीं, उसे एक भी नौकर नहीं मिलेगा। अब मैं इस खेत का क्या करूँ?

चेहरा धोने के बाद जब वह बाहर आया, तो उसने मंदिर में घंटी बजने की आवाज़ सुनी। घर के सामने खड़ा एक लड़का बोला: 'लोग कह रहे हैं कि सब लोग मंदिर आए हैं, और आप दोनों पति-पत्नी को साथ आना चाहिए।'

उसने लड़के को यह कहकर विदा कर दिया कि वे लोग आ जाएँगे। हिल्डा अभी तक नहीं जागी थी। उसके मन में यह बात थी कि चाहे वह कितना भी अनुरोध करे, वह नहीं आएगी। वह यही कहेगी कि वह इस अपमानजनक प्रायश्चित को स्वीकार नहीं करेगी, चाहे इसके लिए उसे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े। उसने सामने का दरवाजा बंद किया, जैक को अपने साथ लिया और कल्याणी के किनारे से मंदिर की ओर बढ़ा। जब उसने वह जगह देखी जहाँ पानी का पंप लगा था, तो उसका मन दुख से भर गया।

वेंकटरमण मंदिर के भीतरी प्रांगण की सफाई कर रहे थे। बाहर, यांगता गौड़ा, माता और अन्य लोगों सहित दस लोग मौजूद थे। जैसे ही यांगता गौड़ा ने उन्हें देखा, उन्होंने पूछा, 'आप अकेले आए हैं, आपकी पत्नी कहाँ हैं?'

‘वह सो रही है, उसे रात भर ठंड लग रही थी और बुखार था। मुझे दे दो। मैं इसे ले लूंगा और उसे पिला दूंगा।’

वेंकटारमण कलिंग के उत्तर का अर्थ तुरंत समझ गए। लेकिन वे चुप रहे। गौड़ा ने भी इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई। वेंकटारमण ने पूजा शुरू की। यांगता गौड़ा ने कलिंग से पूछा, 'क्या आपने अपने शरीर को धोया है?' उनके 'नहीं' कहने पर, यांगता गौड़ा ने मंदिर का एक बर्तन मंगवाया और कलिंग और उनके बेटे को कल्याणी नदी के किनारे ले गए। कलिंग ने अपनी खाकी पैंट और बेटे का नाइटसूट उतार दिया, जिसके बाद यांगता गौड़ा ने उनके सिर पर एक के बाद एक तीन घड़े पानी उंडेल

दिया। केवल भीगे हुए अंडरवियर पहने हुए कलिंग अपने बेटे के साथ ऊपर गए, उनका नंगा शरीर कांप रहा था और उन्होंने अपने हाथ सामने की ओर बांध रखे थे। वे मंदिर के द्वार पर खड़े हो गए। यांगता गौड़ा ने भीतरी द्वार के ऊपर रखी विभूति का एक टुकड़ा उठाया और अपनी तीन उंगलियों पर उसे मल लिया। फिर उन्होंने उसे पिता और पुत्र दोनों के माथे पर लगाया। जैक के लाल माथे पर सफेद विभूति फीकी राख के रंग जैसी लग रही थी।

पूजा तीस मिनट में समाप्त हो गई। फिर वेंकटरमण मंत्रोच्चार करते हुए प्रकट हुए। उन्होंने सबसे पहले कलिंग को तीन चम्मच पंचगव्य दिया। कलिंग ने जब उसे अपनी आँखों पर लगाया और पी लिया, तो उन्होंने तीन और चम्मच पंचगव्य अपनी हथेली पर डलवाकर जैक को पिलाया। जैक ने उसे ऐसे गटक लिया मानो वह कोई दवा पी रहा हो। इसके बाद, वेंकटरमण ने पलाश के पत्ते से बने एक प्याले में तीन और चम्मच पंचगव्य डाला और हिल्डा का हिस्सा कलिंग को दे दिया। फिर वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने पंचगव्य पी लिया।

देवता की भव्य आरती की गई, जिसे तीर्थ के साथ सभी को दिया गया। इसके बाद, उन्होंने पलाश के पत्ते में प्रसाद (केले के सलाद का मीठा व्यंजन) वितरित किया। वेंकटरमण ने भी प्रसाद ग्रहण किया, बाहर आए और बैठ गए। तब कलिंग ने यांगता गौड़ा से पूछा: 'क्या मैंने कल आपने जो कुछ भी कहा था, उसका पालन नहीं किया? और मानो इतना ही काफी नहीं था, आपने मेरी पूरी तंबाकू की फसल क्यों उखाड़ दी?'

'कौन सी तंबाकू की फसल, मेरे साहब?' गौड़ा ने पूछा, उसे बिल्कुल भी पता नहीं था कि क्या हुआ था।

“खेत में एक भी पौधा नहीं बचा। सब कुछ काटकर इधर-उधर फेंक दिया। पचास हजार रुपये बर्बाद हो गए। मैंने बीज, खाद, पानी, बिजली पर कितना खर्च किया था! तुम्हें इससे क्या मिला?” यह कहते हुए कलिंग की आवाज भारी हो गई थी।

‘वो कौन सा चोर है जिसने उन कोमल हरे पौधों को उखाड़ दिया? लेई, तुम देवता के मंदिर में बैठे हो, बेहतर होगा कि तुम सच बोलो,’ यांगता गौड़ा ने सबकी ओर देखते हुए कहा।

कलिंगा को लाने गया बारह वर्षीय लड़का बोला: 'जब आप सब रात में उस मशीन को हटा रहे थे, तब हम सभी लड़कों और महिलाओं ने मिलकर उसे उखाड़

दिया था।'

'तू! तेरे घर सड़ जाएं, हरामखोरों!' यांगता गौड़ा ने लगातार शाप देते हुए कहा: 'तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने कहा था?'

'कोई नहीं। लड़कों ने फल तोड़ना शुरू किया, फिर बड़े-बुजुर्ग भी उनके साथ शामिल हो गए।'

कलिंग ने पूछा: 'मेरे गौशाला से गायें कौन ले गया?'

'कितने लोग चले गए?'

'पांच गायें। छह बछड़े।'

'तुम्हारी अपनी माँ। कल तुम्हारी पत्नी ने एक पुण्यकोटी गाय को मारकर खा लिया। इसीलिए तुम्हारी माँ ने फैसला किया कि उस नस्ल की गायों को तुम्हारे भरोसे छोड़ना सुरक्षित नहीं है, और कल यहाँ से लौटते समय वह गौशाला गई और उन्हें खोल दिया। हम उसके साथ थे।'

कलिंग ने फिर कुछ नहीं कहा। जब सबने प्रसाद खा लिया, तो उसने यांगता गौड़ा से पूछा: "सारे नौकर भाग गए हैं। अब मैं खेती कैसे करूँ? मैंने आपको वो हज़ार रुपये दे दिए जो आपने मांगे थे। मैंने कल्याणी पंप मशीन निकाल ली। मैंने अभी पंचगव्य भी ले लिया। मानो इतना ही काफी नहीं था, पचास हज़ार की फसल बर्बाद हो गई। क्या नौकर भी मुझे छोड़ दें?"

'अब चिंता मत करो। तुमने पंचगव्य ले लिया है। हम उन्हें बुलवा लेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि वे काम पर आएं,' यांगता गौड़ा ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा। वेंकटरमण द्वारा मंदिर का द्वार बंद करने और आंगन में घंटी बजाने के बाद, सभी अपने-अपने घरों के लिए रवाना हो गए।

जब हिल्डा ने लगभग ग्यारह बजे घर लौटे अपने पति और बेटे के माथे देखे, तो उसने उपहासपूर्वक कहा: 'क्या, तुम वहाँ बेशर्मी से अपनी गलती स्वीकार करने गए थे? तुम्हारे हाथ में यह क्या है? क्या तुमने इसे मेरे लिए लिया है?'

'हम्म।'

'क्या आपको पता है यहाँ क्या हुआ है? जमाल ने किसी को अपनी पत्नी को लाने के लिए भेजा क्योंकि उसके लिए यहाँ रहना खतरनाक था। वह चली गई। उसने एक शब्द भी नहीं बताया कि वह कहाँ जा रही है। पूरे खेत में तंबाकू का एक भी पौधा नहीं बचा है।'

मुझे यह सब पता है। यहाँ एक भी नौकर नहीं है।

‘मेरी बात सुनो, मेरे प्यारे,’ उसने अपनी बाहों को उसकी गर्दन के चारों ओर लपेटते हुए और उन्हें वहीं जकड़ते हुए कहा: ‘इस देश में हमारा कोई ख्याल रखने वाला नहीं है। चलो यह सब बेच देते हैं। चलो, मेरे देश चलते हैं। हम वहाँ ज़मीन खरीदेंगे और खेती करेंगे। नहीं तो, चलो नौकरी कर लेते हैं।’

नहीं। ग्रामीणों का गुस्सा अब शांत हो गया है। वे मजदूर भेज देंगे। हमें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। यह फसल तो बर्बाद हो गई। चलो एक नया कुआँ खोदकर नई फसल बोते हैं। हमें इन लोगों के साथ थोड़ा संयम से पेश आना चाहिए। अगर आप एक बार मंदिर चले जाएँगे, तो सब कुछ सामान्य हो जाएगा।

'तुम्हारी चतुराई मुझे और भी अकेला कर देगी, प्रिय। तुम इन लोगों के साथ चतुराई से या किसी अन्य कारण से भी खेल सकती हो। लेकिन मैं सचमुच इस अकेलेपन को बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

'हिल्डा, तुम्हें इसे सहन करना होगा। तुम्हें इस माहौल में थोड़ा ढलना होगा।'

नहीं, नहीं, नहीं। मैं तो सिर्फ मौत को ही स्वीकार कर सकता हूँ। तुमने जो किया है, उसकी वजह से गाँव वालों को लग रहा है कि उन्होंने जीत हासिल कर ली है। आगे चलकर वे मामूली बात पर भी इस तरह की हरकतें करने से नहीं हिचकिचाएँगे। तुम्हें अभी पुलिस में शिकायत दर्ज करानी चाहिए। जब तक हम उनमें डर नहीं पैदा करेंगे, तब तक हम जी नहीं पाएँगे।

कलिंग ने कुछ देर तक मन ही मन सोचा। उसे लगा कि उसकी बातों में सच्चाई है।

खंड 15

1

शाम के पाँच बज चुके थे जब वेंकटरमण को तालुक के खजाने से अपना वेतन मिला। तब तक आखिरी मोटरगाड़ी भी जा चुकी थी। चूंकि उस दिन बाजार भी था, इसलिए

अग्रहारा से तीन-चार बैलगाड़ियाँ वहाँ आई हुई थीं। जब उन्होंने पूछताछ की तो पता चला कि वे सभी रात नौ बजे के बाद रवाना होंगी। बैलगाड़ी चालकों ने खाना बना लिया था और खा भी लिया था और अब वे बैलगाड़ी तैयार कर रहे थे। तब तक करने को कुछ न होने के कारण वेंकटरमण टहलने निकल गए।

तालुक के सार्वजनिक मैदान में एक भाषण चल रहा था। लाउडस्पीकर से प्रसारित हो रहे भाषण को सुनने के लिए लगभग पाँच हज़ार लोग एकत्रित हुए थे। वे वहाँ गए और एक जगह बैठ गए। वक्ता उत्तर हिंदुस्तान से थे। उनके हिंदी शब्दों का अनुवाद उनके बगल में खड़े एक व्यक्ति द्वारा शुद्ध कन्नड़ में किया जा रहा था। विषय था, 'भारत में गाय की परंपरा और वर्तमान स्थिति'। उन्होंने वेदों, उपनिषदों, पुराणों और अन्य ग्रंथों से उद्धरण देते हुए विद्वतापूर्ण ढंग से वर्णन किया कि हमारे लोग गाय को किस प्रकार देखते हैं। वेंकटारमण को अपने व्याख्यानों और उद्धृत श्लोकों के बारे में लगभग सब कुछ ज्ञात था। लेकिन जब उन्होंने आधुनिक समय में भारत में गायों की स्थिति का वर्णन करना शुरू किया, तो वेंकटारमण के सामने एक बिल्कुल नया संसार प्रकट हुआ, जिससे वे अब तक अपरिचित थे।

वह कह रहा था: 'जनसंख्या बढ़ने के कारण सरकार ने सभी चरागाहों को कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि गायों के लिए घास उपलब्ध नहीं थी। इस प्रकार, घास और पानी के लिए पैसे चुकाने की स्थिति का सामना करते हुए, लोगों ने दूध और मक्खन को आर्थिक दृष्टिकोण से देखने की मानसिकता विकसित कर ली।'

कुछ मुस्लिम शासकों में भी गाय का मांस न खाने की परंपरा थी। लेकिन ब्रिटिश शासन के आगमन के बाद ही गोमांस की खपत में वृद्धि हुई। अपने देश में खाद्य पदार्थों की कमी के कारण, उन्होंने अपने देश से सूखा गोमांस मंगवाना शुरू कर दिया। कुछ क्षेत्रों में जब भी घास की कमी होती थी, किसान मजबूरी में अपने मवेशी बेच देते थे। फिर, जो एजेंट गोमांस इकट्ठा करके विदेशों में निर्यात करते थे, वे मवेशियों के लिए अधिक कीमत देने लगे। अज्ञानी किसानों ने तो अपने घर में रखी गोमाता को भी कसाइयों को बेच दिया। हालांकि कुछ शहरों में बूचड़खानों में गायों को मारना प्रतिबंधित है, फिर भी नगर निगम के कुछ हिंदू सदस्य गोमांस व्यापारियों से रिश्वत लेकर कानून में ढील देते हैं। यह सिलसिला आज भी जारी है।

‘मेरे प्यारे गोमाता के पुत्रों और पुत्रियों, आपके गाँव या कस्बे में शायद गायों की हत्या न होती हो। लेकिन आपके गाँव की गायों की हत्या किसी दूसरे शहर में होती है। अकेले मुंबई शहर के बूचड़खाने में प्रतिदिन दो हज़ार गायों का वध करके उनका मांस बेचा जाता है। कलकत्ता में ढाई हज़ार गायों का वध होता है। कानपुर में प्रतिदिन पंद्रह सौ गायों का गला काटकर उन्हें मार डाला जाता है। यह दैनिक नरसंहार कई अन्य शहरों में भी होता है। पहले, ब्रिटिश काल में, कुछ हिंदू राजाओं ने अपने राज्यों में गायों की हत्या पर प्रतिबंध लगा रखा था। लेकिन अब, स्वतंत्रता के बाद, प्रांतों के स्तर पर वह कानून भी कमजोर पड़ गया है।’

वेंकटारमणा के मन में चार दिन पहले कलिंगा के फार्म में हुई गौहत्या की घटना याद आ गई। जब उन्हें कलेनाहल्ली में इस मामले की जानकारी मिली, तो उन्होंने कलिंगा के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराने का सोचा था। लेकिन उन्हें कानून के इस पहलू की जानकारी नहीं थी। सरकार कलिंगा का पक्ष ले रही है। ये कैसी सरकार है? ये कैसा कानून है? वेंकटारमणा का मन अब गुस्से से उबल रहा था।

वक्ता कह रहे थे: ‘धर्म के घोर विरुद्ध इस धंधे को रोकने के लिए हमने अखिल भारतीय गौ संरक्षण समिति नामक एक विशाल संगठन की स्थापना की है। हम पूरे देश के लोगों से, यानी कम से कम बीस करोड़ लोगों से, गौहत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए हस्ताक्षर एकत्र करने की योजना बना रहे हैं। फिर भगवान कृष्ण के जन्मदिन, गोकुलाष्टमी के दिन, हम दिल्ली में एक जुलूस निकालेंगे और इन हस्ताक्षरों को राष्ट्रपति को सौंपेंगे। यदि इसके बाद भी सरकार गौहत्या पर प्रतिबंध नहीं लगाती है, तो हम एक कड़ा आंदोलन शुरू करेंगे। हमारे स्वयंसेवक जल्द ही आपके घरों में आएंगे। वे अपने साथ जो पुस्तिका लाएंगे, उसमें अपना और अपने परिवार के सदस्यों का नाम लिखने के अलावा, मैं आप सभी से निवेदन करता हूं कि आप अपनी गली, गांव और आसपास के गांवों के सभी वयस्कों के हस्ताक्षर भी प्राप्त करें। जो लोग हमारी सहायता करना चाहते हैं, वे कृपया इस सभा में उपस्थित किसी भी स्वयंसेवक को अपना नाम और पता प्रदान करें। जय भारत माता—जय जय गोमाता!’

उनका भाषण समाप्त होने के बाद भी सभा शांत भाव से बैठी रही। वेंकटरमण ने सभा पर ध्यानपूर्वक नज़र डाली। वहाँ एकत्रित लोगों के बीच कुछ राष्ट्रीय स्वयंसेवक व्यवस्थित ढंग से बैठे थे। खाकी निकर, सफेद कमीज और सिर पर काली टोपी पहने हुए, उनमें लड़के और युवक दोनों शामिल थे। वेंकटरमण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से

परिचित नहीं थे। लेकिन जब वे मैसूर में थे, तब उन्होंने उन्हें कुछ सार्वजनिक मैदानों में शाम के समय अभ्यास करते और देशभक्ति गीत गाते देखा था। उन्होंने समूह में संस्कृत श्लोकों के त्रुटिहीन पाठ की उनकी क्षमता की बहुत प्रशंसा की थी। वे जो अंग्रेजी अखबार पढ़ते थे, उससे उन्होंने संघ के संस्थापकों के नाम और समाचारों और अन्य लेखों में जब भी उनका नाम आता था, तब उसके प्रमुख व्यक्तियों के नाम जान लिए थे।

वह मुड़ा। सभा के बाहरी घेरे में भी कुछ स्वयंसेवक अनुशासित ढंग से खड़े थे। गाड़ी के आने में देर हो रही थी। वह झुककर चुपचाप चला, सभा से बाहर निकला और एक स्वयंसेवक के पास मौजूद पुस्तिका में अपना नाम और पता लिख दिया। फिर उसने कहा, 'जब आप हस्ताक्षर लेने हमारे गाँव आएँ, तो कृपया हमारे घर ज़रूर आइएगा,' और फिर बाज़ार की ओर चल पड़ा।

2

इसके ठीक दो दिन बाद, दो लोग उनके घर आए। जाहिर तौर पर, वे दोनों अभी भी हाई स्कूल के छात्र थे। खाकी निकर, सफेद कमीज और कमर पर बेल्ट पहने हुए, वे तालुक से पैदल चलकर यहाँ आए थे। जब वेंकटरमण ने पूछा, 'लेकिन यहाँ तो मोटर है?' तो उन्होंने कहा, 'महोदय, हमारी गौ संरक्षण समिति के पास पैसे नहीं हैं। समिति ये किताबें मुफ्त में देती है। स्वयंसेवकों को यात्रा का खर्च स्वयं वहन करना पड़ता है।'

क्या आप गरीब छात्र हैं?

'हम बिलकुल भी गरीब नहीं हैं महोदय। हमारे पिता के पास एक खेत, जलसंधि और एक घर है। लेकिन हमारी समिति के लोगों ने हमें बताया है कि इस तरह का काम जितना संभव हो उतना शारीरिक मेहनत से ही करना होगा।'

यह सुनकर वेंकटारमणा प्रसन्न हुए। उनकी माता ने लड़कों को भोजन परोसा। उनके मन में यह इच्छा थी कि पुस्तक पर पहला हस्ताक्षर कलेनहल्ली के नाम से हो, और सबसे पहला हस्ताक्षर तैव्वा का हो। वे लड़कों के साथ कलेनहल्ली चले गए।

तैयव्वा घर पर थी। जब वे अंदर गए, तो वह घर के आगे वाले हिस्से की छत के नीचे बैठी एक बड़े बर्तन को चमका रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हो। छह दिन पहले जब उसने उसे कलिंग के घर में गौ वध की

घटना के दौरान देखा था, तब वह बिल्कुल स्वस्थ लग रही थी। अब वह ऐसी क्यों हो गई थी?

'माँ, क्या आप अस्वस्थ हैं?'

उसने उन्हें अंदर बुलाया और तीनों के लिए एक-एक लकड़ी का तख्ता रख दिया। वह अंदर गई, दूध गर्म किया, उसमें घी और गुड़ मिलाया और प्रत्येक के सामने एक लंबा गिलास रखकर वहीं खड़ी हो गई।

'तुम ऐसे क्यों हो?' वेंकटरमण ने फिर पूछा। उसने अपने हाथ ऐसे हिलाए जैसे कुछ हुआ ही न हो।

"इस घर में जो नहीं होना चाहिए था, वो हो गया है। फिर भी, आपको खुद को तसल्ली देनी चाहिए। ऐसा दोबारा नहीं होगा। ये लड़के ये किताब लाए हैं जो सरकार को गायों की हत्या पर रोक लगाने वाला कानून बनाने में मदद करेगी। अपने बाएं हाथ के अंगूठे को इस पर दबाएँ।"

वेंकटरमण ने उनके बाएं अंगूठे पर स्याही लगाई और उसे किताब में दबाने को कहा। उन्होंने लिखा, 'यह कलेनहल्ली स्थित गौशाला के स्वामी, बड़े कलिंग गौड़ा की बहू तैयव्वा के बाएं हाथ के अंगूठे का निशान है, जिस पर विद्यालय के शिक्षक वेंकटरमण शास्त्री ने हस्ताक्षर किए हैं।' वहां से वे लड़कों के साथ गांव के सभी घरों में गए। उन्होंने उन्हें तालुक में सुनी हुई बात समझाई। गांववाले अब विजय के उल्लास में थे। जाहिर है, वे खुद वेंकटरमण को बुलवाना चाहते थे। कलिंग से वसूला गया एक हजार रुपये का जुर्माना यांगता गौड़ा के पास था। उस जुर्माने का क्या करना है, यह पूरे गांव की उपस्थिति में तय किया जाना था। चर्चा हुई कि मंदिर बनने के बाद आयोजित होने वाले पशु मेले के अलावा अब तक कोई मेला नहीं हुआ था। कल्याणी अब वैसे भी खाली थी। अगली संक्रांति के दौरान कलिंग के खेत की बाड़ के पास ढलान पर खाली जगह में पशु मेला आयोजित किया जाना था। इसलिए, कलिंग से एकत्रित एक हजार रुपये के अलावा और अधिक धन जुटाने का निर्णय लिया गया। तब तक, प्रत्येक वयस्क - पुरुष और महिला - ने या तो अपने अंगूठे का निशान लगाया था या पुस्तिका में हस्ताक्षर किए थे।

वेंकटरमण ने दोनों लड़कों को आठ दिनों तक अपने घर में ठहराया। उन्होंने स्कूल से छुट्टी ले ली। उनके पास वैसे भी एक साइकिल थी। उन्होंने एक शिक्षक से दूसरी साइकिल उधार ली ताकि लड़के उसका इस्तेमाल कर सकें। दोनों उस पर

सवार होकर घूमने लगे। हर सुबह पूजा समाप्त होने के बाद, वे गांवों का दौरा करने जाते थे। आठ दिनों में उन्होंने मिलकर साठ गांवों का दौरा किया और कुल 23,500 हस्ताक्षर एकत्र किए। ये सभी वे गांव थे जिनके वे पुरोहित थे। पिछले पांच वर्षों से वे नियमित रूप से इन गांवों का दौरा नहीं कर रहे थे। फिर भी, वे सभी गांवों के लोगों के परिचित थे। कुछ लोग उनके कहने पर तुरंत हस्ताक्षर कर देते थे। कुछ लोग हस्ताक्षर शब्द से डरते थे। उन्हें वे हस्ताक्षरों के पीछे का उद्देश्य समझाते हुए कहते, 'देखो, डरने की कोई जरूरत नहीं है। इन सभी ने हस्ताक्षर कर दिए हैं।' लेकिन कांग्रेस पार्टी के प्रभाव में रहने वाले कुछ ग्रामीणों ने हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। वे पूछते, 'क्या नेहरू ने आपको हस्ताक्षर करवाने के लिए कहा था?'

'अगर नेहरू खुद गायों की हत्या पर रोक लगाने का दृढ़ निश्चय रखते, तो वे इस संबंध में कानून बना सकते थे। चूंकि उन्होंने अभी तक ऐसा नहीं किया है, इसलिए हम ये हस्ताक्षर एकत्र कर रहे हैं,' लड़के जवाब देते।

'इसका मतलब है कि आप नेहरू की सरकार के खिलाफ काम कर रहे हैं।'

'जब हम केवल गौहत्या रोकने की मांग कर रहे हैं, तो इसका क्या मतलब है कि हम सरकार के खिलाफ काम कर रहे हैं? यही बहुमत की इच्छा है, इसलिए कृपया उसी के अनुसार करें—हम यह सिर्फ सरकार को जनता की इच्छा दिखाने के लिए कर रहे हैं। यह किसी के खिलाफ नहीं है,' वेंकटरमण कहते थे। कुछ लोग उनकी बात मानकर हस्ताक्षर कर देते थे। वहीं कुछ लोग उनके सामने अपमानजनक शब्द बोलकर उन्हें भगा देते थे।

लेकिन कुल मिलाकर, उनकी आठ दिन की यात्रा व्यर्थ नहीं गई। नोटबुक हस्ताक्षरों से भरी हुई थीं। जब वेंकटरमण ने उन्हें मोटरबाइक का किराया देने की पेशकश की, तो लड़कों ने इनकार कर दिया और पैदल ही तालुक चले गए।

3

लड़कों के जाने के चार दिन बाद, वेंकटरमण को निरीक्षक कार्यालय से एक नोटिस मिला: 'हमें पता चला है कि आपने निजी काम का बहाना बनाकर छुट्टी ली है और इस गतिविधि में राजनीतिक दलों से जुड़े किसी काम में हिस्सा लिया है। सरकारी कर्मचारी होने के नाते, आपने इस गतिविधि में भाग लिया है जो कानून के खिलाफ है।

आपको यह नोटिस मिलते ही लिखित में कारण बताना होगा कि आपको उचित दंड क्यों नहीं दिया जाना चाहिए।'

यह नोटिस प्रधानाध्यापक के माध्यम से आया था। लेकिन प्रधानाध्यापक ने इस मामले में कोई गड़बड़ी नहीं की थी। एक सनातन हिंदू होने के नाते, उन्होंने वेंकटरमण के काम की सराहना की थी। अब उन्होंने कहा: 'हस्ताक्षर एकत्र करने के प्रयास में मदद करना एक सामान्य बात है, जो हर कोई करता है। यह इस वजह से नहीं हुआ है। किसी ने जानबूझकर यह गड़बड़ी फैलाई है।'

मुझे निरीक्षक को क्या जवाब देना चाहिए?

'लिखें: मैंने कोई गलती नहीं की है। अगर यह अनजाने में हुआ है, तो कृपया मुझे क्षमा करें।'

वेंकटरमण ने सोचा कि यही कहना सही है और लिखने बैठ गए। लेकिन कलम अनजाने में उन्हें दूसरी दिशा में ले गई। 'यह सच है कि मैंने निजी काम के लिए छुट्टी ली थी। मैंने गौहत्या पर प्रतिबंध के समर्थन में हस्ताक्षर एकत्र करने के प्रयास में मदद की। लेकिन यह किसी राजनीतिक दल का काम नहीं है। यह इस पवित्र भूमि के प्रत्येक पुत्र का कर्तव्य है। मैंने कोई गलती नहीं की है। इसलिए, मुझे दंड देने का सवाल ही नहीं उठता।' जब प्रधानाध्यापक ने उनका लिखा हुआ देखा, तो उन्होंने कहा, 'यह लहजा ठीक नहीं है। लिखो कि तुमने कुछ भी नहीं किया है; कि तुम्हारे घर में कोई मृत्यु संस्कार या कोई अन्य समारोह था, और इसीलिए तुमने छुट्टी ली थी। अगर तुम चाहो, तो मैं गवाह बनूंगा।'

वेंकटरमण ने आधे घंटे तक सोचा। आठ दिनों तक गांवों में घूम-घूमकर उसने जो काम किया था, उससे उसे नैतिक संतुष्टि मिली थी। उसका अंतरात्मा इस बात को मानने से इनकार करने और यह दावा करने के लिए तैयार नहीं था कि उसने ऐसा कुछ किया ही नहीं। 'जी महोदय, मैंने जो लिखा है, मैं उसे अपने पास रखूंगा,' उसने प्रधानाध्यापक से कहा और प्रधानाध्यापक के माध्यम से उसे उच्च अधिकारियों को भेज दिया।

छठे दिन उन्हें एक आदेश मिला। उच्च अधिकारियों ने उन्हें ऐसी राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए कड़ी चेतावनी दी थी। यह चेतावनी उनके सेवा रजिस्टर में दर्ज कर ली गई। इसके अलावा, इस गलती के लिए उनका तबादला एक ऐसे जिले के विद्यालय में कर दिया गया जो सौ मील दूर था। इतना ही नहीं: आदेश

मिलते ही उन्हें कार्यभार सौंपना था, कार्यमुक्त होना था और तुरंत नए विद्यालय में कार्यभार ग्रहण करना था। प्रधानाध्यापक को भी लिखित रूप में निर्देश दिया गया था कि उन्हें तुरंत कार्यमुक्त कर दिया जाए।

क्योंकि उन्हें तुरंत बस नहीं मिली, इसलिए वेंकटारमणा साइकिल से तालुक तक गए। निरीक्षक ने उन्हें देखते ही आग बबूला हो गए और चिल्लाते हुए बोले, 'सिर्फ इसलिए कि आप स्थानीय निवासी हैं, मैंने आपकी पोस्टिंग आपके ही गाँव में बरकरार रखी, तो आप राजनीति में क्यों पड़ गए? क्या आप एक बेचारे आदमी की तरह अपने काम से काम नहीं रख सकते थे?'

वेंकटरमण ने धैर्यपूर्वक उन्हें पूरी बात समझाई। उन्होंने गाय की पवित्रता का वर्णन करने वाले कई मंत्र सुनाए और तर्क दिया कि उन्होंने किसी भी राजनीतिक गतिविधि में भाग नहीं लिया है। जब निरीक्षक को वेंकटरमण के संस्कृत के गहन ज्ञान का पता चला, तो वह न केवल आश्चर्यचकित हुआ बल्कि उनके प्रति सम्मान भी विकसित हुआ। उन्होंने सहानुभूतिपूर्वक कहा: 'देखिए, यह आदेश केवल जिला स्तर से नहीं आया है। यह बहुत उच्च स्तर से आया है। हम चाहे कुछ भी कर लें, तबादला रद्द नहीं होगा। आप नए स्थान पर जाइए और वहां कुछ वर्षों तक रहिए। तब तक यह सब पुराना हो जाएगा। उसके बाद, आप अपना तबादला यहाँ फिर से करवा सकते हैं।'

इतना कहकर वह घर चला गया। वेंकटरमण अपनी साइकिल पर सवार होकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा। इसके पीछे कौन हो सकता है? कलिंग? उसका मन संदेह से भर गया। लेकिन किसी कारणवश उसका अंतर्मन इस बात पर यकीन नहीं कर पा रहा था। यह उन कांग्रेसियों का भी काम हो सकता था जिन्होंने गाँवों के दौरे के दौरान उससे बहस की थी। लेकिन उसके पास यह साबित करने का कोई सबूत नहीं था कि यह उन्हीं का काम था। अब उसका ध्यान इस समस्या को सुलझाने पर केंद्रित हो गया, बजाय इसके कि किसने इसे उकसाया था। अगर वह दो साल के लिए चला गया तो मंदिर की पूजा का क्या होगा? बड़े गौड़ा ने उस पर पूरा भरोसा जताया था और उसे पूजा करने की जिम्मेदारी सौंपी थी। इतना ही नहीं, जाने से पहले उन्होंने उसे जमीन और गायें भी दी थीं ताकि उसकी रोजी-रोटी चलती रहे और उसका पेट भर सके। अब तो पूजा ही खतरे में थी!

अचानक उसके मन में एक विचार आया: इस नौकरी में आना ही मेरी गलती थी। मनुष्य के लालच की कोई सीमा नहीं होती। चाहे पैसा कितनी भी दिशाओं से आए, हमें और अधिक पाने की चाह बनी रहती है। मेरा काम पूजा करना है। मेरे परिवार के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी तो उस महान आत्मा ने पहले ही निभा दी है जिसने मंदिर बनवाया था। अब से मैं स्कूल जाने की जल्दी में रहने के बजाय, सहस्रनाम (देवता के हज़ार नाम) का जाप करते हुए, पूरी श्रद्धा से पूजा करूँगा। मैं इस घटिया नौकरी से इस्तीफा दे दूँगा।

यह निर्णय पक्का हो गया। जब वह घर आकर अपने परिवार को इस बारे में बताया, तो उसकी माँ ने कहा कि यह सही फैसला था। लेकिन उसकी पत्नी मीनाक्षी ने समझदारी भरी बात कहते हुए कहा, 'क्या अगले दो वर्षों के लिए किसी को पूजा-पाठ करने के लिए नियुक्त करना बेहतर नहीं होगा?'

लेकिन उन्होंने उसकी व्यावहारिक सलाह पर ध्यान नहीं दिया। अगली सुबह उठकर उन्होंने अपना त्यागपत्र लिख डाला। उसी पत्र में उन्होंने एक बार फिर अपने किए गए काम का औचित्य सिद्ध किया। उन्होंने सरकार की निंदा की जिसने ऐसे पवित्र कार्य में बाधा डाली और उनसे अपना त्यागपत्र स्वीकार करने का अनुरोध करते हुए पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। उस दिन जब वे पूजा के लिए गए, तो उन्होंने पत्र को देवता के चरणों में रख दिया और बाद में प्रधानाध्यापक को सौंप दिया। बार-बार पुनर्विचार करने की अपील करने के बावजूद प्रधानाध्यापक ने पत्र वापस नहीं लिया।

4

अगले दिन से, जब वेंकटारमण पूजा करने मंदिर जाते, तो वहाँ दो घंटे से अधिक समय बिताने लगे। कुछ दिनों वे पूजा समाप्त होने के बाद कोई उपनिषद या वैदिक सूक्त उठाते और उसका ज़ोर-ज़ोर से पाठ करते। अब कल्याणी के पास पंप की आवाज़ नहीं आती थी। नीचे खेत में ट्रैक्टर का शोर भी नहीं था। गौरैया, कबूतर और तोते पेड़ों पर चहचहाते और आपस में बातें करते नज़र आते थे। अगर इस वातावरण में उन्हें अधिक समय तक अध्ययन करने का मन करता, तो वे उन्हीं मंत्रों का बार-बार ज़ोर-ज़ोर से जाप करते। विद्यालय में प्रवेश करने के बाद उन्होंने मंत्रों का ज़ोर-ज़ोर से जाप करके स्वयं अध्ययन करने का आनंद नहीं लिया था। अब उन्हें अपने भीतर आत्मिक संतुष्टि का एक नया अनुभव प्राप्त हुआ।

दोपहर में अगर उन्हें घर पर ऊब महसूस होती, तो वे अकेले ही गायों को लेकर दलदली इलाके की ओर निकल जाते। वे मेड़ पर एक खूंटी गाड़ते, गायों को एक लंबी रस्सी से उससे बांधते और उन्हें चरने देते। फिर जब वे मधुरता से श्लोकों का जाप करने लगते, तो गायें भी ध्यान से सुनतीं। खेत में काम कर रहे दूसरे किसान भी दूर से ही उनकी बात सुनते। अब कलिंग, उनका खेत और यहाँ तक कि कलेंहल्ली भी उनकी यादों में नहीं रह गए थे।

लेकिन एक दिन दोपहर ढलते ही जब वह दलदली इलाके की मेड़ पर बैठकर गायों को चरा रहा था, तभी यांगता गौड़ा और गांव के तीन अन्य प्रमुख लोग उसे ढूंढते हुए आए। उनके चेहरे उदास थे। जब वे सब अपना सिर ढकने वाला कपड़ा ज़मीन पर रखकर बैठ गए, तब यांगता गौड़ा ने बातचीत शुरू की। 'क्या तुमने कल रात की खबर सुनी?'

'क्या?'

'पुलिस हमारे गांव में आई थी।'

'क्यों?'

मैं आपको बाद में इसका कारण बताऊंगा। कुल मिलाकर, वे चार हजार रुपये ले गए।

वेंकटारमणा चकित रह गया। हालाँकि उसे मामले की कोई जानकारी नहीं थी, फिर भी उसकी पृष्ठभूमि तुरंत उसके अवचेतन में कौंध गई। यांगता गौड़ा ने अब इसका वर्णन किया। पिछली रात पुलिस की गाड़ी खुद आई थी। इंस्पेक्टर के अलावा दस हथियारबंद कांस्टेबल भी साथ आए थे। उन्होंने गाँव के प्रमुख लोगों के नाम पूछे, उन्हें एक साथ पकड़ा और पूछा, 'गाँव के सभी लोगों ने मिलकर कलिंगा गौड़ा के खेत पर हमला किया और उसकी तंबाकू की फसल बर्बाद कर दी। वे तंबाकू की फसल पर विशेष कर देते हैं। इस साल सरकार को जो राजस्व मिलना था, वह बर्बाद हो गया है। आपके खिलाफ ऊपर से जाँच का आदेश आया है। क्या आप सरकार का पैसा लौटाएँगे या गुंडागर्दी में लिप्त रहेंगे?'

उन्होंने पूछा, 'क्या उस कलिंग ने शिकायत की थी?'

'उसने हमें कुछ नहीं बताया। लेकिन उसकी गिरवी रखी संपत्ति की सुरक्षा सरकार की ज़िम्मेदारी है। वह सरकारी विभाग के साथ व्यापार करता है। इसे कोई खेल मत समझो।' उन्होंने हथकड़ी निकाली और हमें जेल भेजने की धमकी दी। गांव

वालों के पास कोई और चारा नहीं था। उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए कहा कि वे सिर्फ दो हज़ार ही दे सकते हैं और माफ़ी मांग ली। पुलिस नहीं मानी। आखिरकार, उन्होंने कड़ी बातचीत की और चार हज़ार पर सहमति बनी। इसमें से एक हज़ार उन्होंने कलिंगा से जुर्माने के तौर पर लिए थे। बाकी तीन हज़ार के लिए उन्होंने वहीं चंदा इकट्ठा किया, पुलिस को सौंप दिया और भाग गए।

‘अगर तुमने दोबारा अपनी पूंछ हिलाई तो हम तुम्हारी खाल उतार देंगे। सावधान रहो,’ पुलिस ने चेतावनी दी और उसी रात अपनी गाड़ी में बैठकर चले गए।

वेंकटरमण ने कहा, 'कलिंग का काम।'

‘क्या हमें इसे स्पष्ट रूप से कहने की भी आवश्यकता है? ऐसा लगता है कि वह आज सुबह मोटरगाड़ी से तालुक गया था। उसके खलिहान के नौकर पुट्टा ने ऐसा कहा था,’ यांगता गौड़ा ने उत्तर दिया।

‘एक काम करो। मैं भी साथ आऊंगा। आज शाम या कल सुबह हम सब जाकर उससे इस मामले में पूछताछ करेंगे।’

‘नहीं। उस धूर्त के बेटे के पास भी नहीं जाना है,’ उनमें से चार ने हाथ हिलाते हुए कहा। कलिंग के कारण उनमें जो भय बैठा था, वह अब उनके मन में गहराई से बैठ गया था। चाहे उसने उन्हें समझाने की कितनी भी कोशिश की हो, उनका भय दूर नहीं हुआ। ‘उसका घर तबाह हो जाए। उसका वंश नष्ट हो जाए। वह धूर्त जो चाहे करे। अब से हमें उससे किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखना है। न ही हम उससे बात करेंगे। वह अपने पापों का फल भोगे और सड़ जाए,’ उनकी बातचीत इन अपशब्दों के साथ समाप्त हुई।

जब वे जाने लगे तो वेंकटरमण ने पूछा: 'तैयव्वा कैसी है?'

‘ओह, वो बुढ़िया मर जाएगी।’

‘क्यों? क्या हुआ?’

‘और क्या होना चाहिए? क्या आपको नहीं पता कि उसकी सास की मृत्यु क्यों हुई, बड़े गौड़ा की मृत्यु क्यों हुई? उसकी भी मृत्यु उसी तरह होगी।’

'जब मैं पंद्रह दिन पहले उससे मिलने गई थी, तो उसका चेहरा एकदम सफेद पड़ गया था, मानो उसे कोई बीमारी हो गई हो। मैं हाल ही में वहां नहीं गई हूं।'

अब तो वो मरणासन्न लग रही है। तुम खुद आकर देख लो।

मुझे कल दोपहर कलेनाहल्ली जाना है और तैयव्वा से मिलना है। मैं माँ को भी साथ ले जाऊँगा, वेंकटरमण ने फैसला किया।

5

अगले दिन जब वेंकटारमण मंदिर गए, तो उन्होंने कलिंग के खेत की ओर देखा। तब तक उन्होंने उस तरफ ठीक से देखा तक नहीं था। पिछली रात वे कलिंग से मिलने और उनसे बात करने के बारे में सोच रहे थे। छह-सात भक्त आ चुके थे। उन्होंने उन सभी को तीर्थ और प्रसाद दिया, फिर देवता को नारियल, केले और चावल अर्पित किए, और शेष प्रसाद मंदिर में छोड़कर, दरवाजा बंद कर दिया और कल्याणी के किनारे से नीचे उतर गए। उन्हें ऐसा लगा कि वे फार्महाउस के दाहिनी ओर एक नया कुआँ खोद रहे हैं। पूरे खेत में, कुछ छिटपुट पौधों को छोड़कर, उखाड़े गए कोमल तंबाकू के पौधे अब सूख चुके थे।

जब वह दरवाजे पर खड़ा हुआ, तो हिल्डा अंदर सोफे पर बैठी थी। लेकिन उसने उससे बात नहीं की। जब उसने खुद पूछा, 'क्या कलिंग घर पर नहीं है?', तो उसने कहा, 'तुम फिर से इस घर में क्यों आए हो? क्या तुम्हें जरा भी शर्म नहीं है?' ये शब्द सुनकर वेंकटारमणा एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। फिर वह जाने के लिए मुड़ा। इसी बीच, कलिंग अंदर के कमरे से बाहर आया और पुकारा, 'अंदर आओ। बैठो।'

'यह ठीक है,' वहां खड़े वेंकटरमण ने कहा।

‘नहीं, कोई बात नहीं, आओ। वह बस गुस्से में बोल रही है,’ कलिंगा ने कहा।

वेंकटरमण अंदर आ गए। हिल्डा उठीं, अंदर के कमरे में गईं और दरवाजा बंद कर लिया। कलिंग सोफे से टिककर बैठ गए। वेंकटरमण लकड़ी की कुर्सी पर बैठ गए। वे दोनों पांच मिनट तक वहीं बैठे रहे, दोनों को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। अंत में, कलिंग ने पूछा: 'क्या बात है?'

‘देखिए, मैं आपसे किसी बात पर चर्चा करने आया हूँ। मैं आपके शुभचिंतक के रूप में यह बात कहूँगा। आपको मुझसे बिना कुछ छिपाए बात करनी होगी।’

'मुझे बताओ।'

“लगता है, एक पुलिस इंस्पेक्टर और दस कांस्टेबल परसों रात को गांव में आए थे। ऐसा लगता है कि उन्होंने उन सभी को धमकाया और चार हजार रुपये छीन लिए। ये सब क्या है?”

‘क्यों? क्या बात है? मुझे तो यह पता ही नहीं था!’

'झूठ मत बोलो। मैं यह तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा हूँ। मुझे सच बताओ। तुम्हारे उकसावे के बिना उनका इस तरह प्रकट होना असंभव है।'

एक पल के लिए ऐसा लगा मानो कलिंग मन ही मन जवाब तैयार कर रहे हों। फिर उन्होंने कहा: ‘देखो, तुम्हें व्यापार की समझ नहीं है। शास्त्रों का ज्ञान होने मात्र से तुम व्यापार नहीं सीख जाओगे। सरकार तंबाकू पर विशेष कर लगाती है। जब मैंने तंबाकू बोया था, तब वह सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज था। अब मेरी पूरी फसल बर्बाद हो गई है। मैंने सरकार को सूचित किया कि मैं कर नहीं चुका सकता। तब स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि फसल क्यों बर्बाद हुई। तब हमें मजबूर होकर उन्हें सच बताना पड़ा।’

‘क्या आप उन्हें कोई दूसरा कारण नहीं बता सकते थे, क्या आप अपने ही गांव के लोगों को नहीं बचा सकते थे?’

‘क्या मैं अपने ही लोगों को नहीं बचा सकता था?’ कलिंग ने व्यंग्यपूर्ण लहजे में अपना सवाल दोहराया और कहा: ‘मुझे उन्हें बचाना होगा क्योंकि उन्होंने मुझे बचाया है, है ना? एक ही रात में पचास हज़ार लोगों को मार डालने के लिए, और उससे भी बढ़कर, मुझे इस हद तक अपमानित करने के लिए... इन सब के लिए, मुझे सरकार से झूठ बोलकर उन्हें बचाना पड़ा, है ना?’

“भीड़ के उन्माद के कारण ही आपकी फसल नष्ट हुई है। सभी बड़े-बुजुर्ग इस बात से सहमत हैं कि यह अन्यायपूर्ण था। लेकिन आपको किसने अपमानित किया? धर्मशास्त्रों में लिखा है कि गलती करने वाले को प्रायश्चित करना पड़ता है। इसी के अनुरूप, आपकी हैसियत के हिसाब से उन्होंने आपसे हज़ार रुपये लिए। वह पैसा भी किसी के निजी उपयोग में नहीं आया। वे उसे मंदिर के काम में लगाने वाले थे।”

‘वेंकटरमण, तुम तो बस एक नीरस, बंजर शास्त्री हो। तुम्हें आत्मसम्मान या आदर का कोई ज्ञान नहीं है। तुम धर्मशास्त्रों का बहाना बनाकर बेशर्मी से कुछ भी करते हो, कुछ भी सहन करते हो। लेकिन मुझमें आदर है, सम्मान है... सब कुछ है।’

‘तुम मेरे सामने इस भाषा का इस्तेमाल कर रहे हो... इस लहजे में। मैं तुम्हारे घर का गुलाम नहीं हूँ। जो खाना मैं खाता हूँ, वो तुम्हारी दी हुई भिक्षा नहीं है। मैंने हमेशा तुम्हारा भला किया है क्योंकि तुम बड़े कलिंग गौड़ा के पोते हो और मेरे दोस्त हो। मैं तुम्हें अभी भी बता रहा हूँ। मेरी बात सुनो। गाँव वालों का गुस्सा उसी रात शांत हो गया

था। तुम्हें तब बात वहीं खत्म कर देनी चाहिए थी। अब जब पुलिस आ गई है, तो गाँव वालों का तुम्हारे प्रति असंतोष फिर से भड़क उठा है। मैं तुम्हें तुम्हारी भलाई के लिए सलाह देने आया हूँ।'

'चुप रहो। अपनी बड़ी-बड़ी बातें मुझ पर मत थोपो,' कलिंगा सोफे पर तनाव से बैठते हुए बोला: 'अपनी छाती फुलाकर यह मत कहो कि तुम मुझसे भीख नहीं मांग रहे हो। ये जमीनें किसकी हैं जिनसे तुम्हारे घर को भोजन मिलता है? क्या ये तुम्हें मेरे दादाजी ने भीख में नहीं दी थीं?'

'यह भिक्षा नहीं है। यह देवता की पूजा करने के लिए छोड़ा गया दान है।'

'बिल्कुल! मेरे दादाजी ने तुम्हें वह अनुदान इसलिए दिया था क्योंकि तुम असाधारण रूप से उत्पादक कार्य करते हो। तुम्हारी तो जिंदगी भर की कमाई हो गई है, है ना? यह देखते हुए, यह देखते हुए कि तुम मेरे घर का खाना खाते हो, तुमने उस रात गांव वालों का साथ क्यों दिया? तुम्हें मेरे साथ खड़ा होना चाहिए था और उन्हें डांट कर भगा देना चाहिए था।'

जब गलती तुम्हारी है तो मैं तुम्हारा साथ कैसे दे सकता हूँ? तुमने देवी की कल्याणी का इस्तेमाल अपने निजी फायदे के लिए किया। मैंने तुम्हें हज़ार बार ऐसा न करने के लिए कहा था। पति-पत्नी, तुम दोनों ने वहाँ शरीर डुबोकर पानी में मस्ती की। हो सकता है उसे माहवारी हो या कुछ और। तुम्हारी पत्नी कल्याणी में तैरी। मुझे लगातार सारी खबरें मिलती रहीं। आखिर में उसने गाय की बलि दी। क्या मैं पुण्यकोटी मंदिर में पूजा इसलिए कर रहा हूँ ताकि यह सब छुपा सकूँ? क्या मैं पूजा इसलिए कर रहा हूँ ताकि तुम्हारा साथ दूँ और तुम दोनों के हर काम को सही ठहराऊँ? मुझसे सवाल करने के बजाय, अपनी पत्नी को समझाओ। अपनी पत्नी को सही व्यवहार करना सिखाओ। घर पर पहले पत्नी के लिए एक अच्छा आदमी बनो!

जब वेंकटरमण ने अंतिम पंक्तियाँ बोलीं, तो उनकी आवाज़ चरम पर पहुँच गई थी। उनकी गर्दन की उभरी हुई नसें साफ़ दिखाई दे रही थीं। उनकी आवाज़ इतनी ऊँची हो गई थी कि मानो छत ही उड़ जाएगी। कलिंग एकदम शांत हो गए। लगभग दस मिनट तक दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। कलिंग सोच रहे थे। वेंकटरमण ने कहा, 'मैं चलता हूँ,' और उठ खड़े हुए। लेकिन कलिंग ने कहा, 'बस एक मिनट रुकिए। बैठ जाइए।'

लेकिन अगले पांच मिनट तक वह चुप रहा। जब वेंकटरमण ने स्वयं पूछा, 'बताइए, क्या बात है?' तो उसने धीरे से कहा:

देखो, मेरा इरादा तुम्हें नुकसान पहुँचाने का नहीं है। लेकिन एक बात अच्छी तरह समझ लो। मेरे दादाजी के सारे कागज़ात और चिट्ठियाँ मुझे पता हैं। जब मेरे दादाजी ने मंदिर की पूजा के लिए ज़मीन दान में दी थी, तब मैं छब्बीस साल का था। उन्होंने मेरी सहमति नहीं ली थी। न ही उस दान पत्र पर मेरे हस्ताक्षर हैं। तुम्हारे नाम पर जो ज़मीन है, वह पुश्तैनी संपत्ति है। मेरे दादाजी ने एक एकड़ भी ज़मीन नहीं कमाई जिसे उनकी अपनी कहा जा सके। अगर मैं आज भी तुम्हारे खिलाफ मुकदमा दायर करूँ कि तुमने मेरे दादाजी को धोखा दिया और मेरी जानकारी के बिना, जब मैं विदेश में था, ज़मीन अपने नाम करवा ली, तो मैं जीत जाऊँगा। तुममें इतनी इज़्ज़त नहीं है कि तुम मेरे सामने बेइज्ज़ती से बात करो या मेरी पत्नी को डाँटो या सलाह दो। यह बात समझ लो।

जैसे-जैसे ये शब्द कहे जा रहे थे, वेंकटारमण को चक्कर आने लगे। जब कलिंग ने अपना अंतिम वाक्य समाप्त किया, तो उन्होंने अपना सिर कुर्सी के पीछे टिका दिया और एक मिनट तक बेसुध पड़े रहे। कलिंग ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। दो-तीन मिनट बाद, वेंकटारमण संभले, सीधे बैठे और कांपती हुई आवाज़ में बोले: “हे पुण्यवान पोते, क्या तुम अपने दादा द्वारा किए गए धर्म के कार्यों को चुराने के लिए पैदा हुए हो? अरे, तुमने ये सब शब्द कहे, है ना? इतना जान लो: तुम्हारा अपना जीवन साक्षी है। तुम्हारा नाश होगा। तुम्हारा वंश मिट जाएगा। यह केवल मेरा श्राप नहीं है, यह तुम्हारे दादा का श्राप है। यह तुम्हारे परदादा और उनके परदादा का श्राप है। तुम दरबार जाओगे? मैं भी देख लूँगा कि तुम दरबार में मुझसे क्या छीन सकते हो। जाओ! चले जाओ, तुम नालायक!”

इतना कहकर वह बिना कुछ कहे उठ खड़ा हुआ और बाहर आ गया। वहाँ से वह सीधे मंदिर गया, अंदर से प्रसाद का पात्र लिया, दरवाजा बंद किया, परिसर की घंटी बजाई, पहाड़ी से नीचे उतरा और सीधे कलेनाहल्ली की ओर चल दिया।

जब वेंगता गौड़ा के घर पहुँचे, तो उनके पुत्र माता ने कहा: “पिताजी तैयव्वा के घर गए हैं।” वेंकटारमण भी तैयव्वा के घर गए। वह पुआल की चटाई पर लेटी हुई थीं। लकड़ी के तख्ते से उनका सिर टिका हुआ था। यांगता गौड़ा के अलावा, दो-तीन अन्य ग्रामीण भी वहाँ दीवार से टेक लगाकर बैठे आपस में बातें कर रहे थे। जब तैयव्वा ने

वेंकटारमण को देखा, तो उन्होंने उठकर बैठने की कोशिश की, लेकिन बिना सहारे के नहीं बैठ सकीं। उनके वस्त्र देखकर सभी समझ गए कि वे सीधे मंदिर से आए हैं। “अपने हाथ धो लो। मैं तुम्हें प्रसाद दूँगा,” उन्होंने कहा। तीनों उठे और अपने हाथ धोए। वेंकटारमण ने तीनों को गुड़ का एक-एक टुकड़ा दिया। “तैयव्वा, अपना मुँह खोलो। मैं तुम्हें देवी का प्रसाद दूँगा,” उन्होंने कहा। जब तैयव्वा ने अपना मुँह खोला, तो वेंकटारमण ने प्रसाद के तीन छोटे टुकड़े उनके मुँह में डाल दिए।

लकड़ी के तख्ते पर बैठने के बाद, यांगता गौड़ा ने पूछा: 'आप सीधे मंदिर से ऐसे ही आ गए? क्या आप वहां गए थे?'

‘हम्म। हाँ। उसने बड़ी चालाकी से बात की। उसने मुझे चेतावनी भी दी। लगता है जब उसके दादा ने देवता की पूजा के लिए भूमि अनुदान विलेख लिखा था, तो उन्होंने कलिंग के हस्ताक्षर नहीं लिए थे। और अब अगर मैं उसकी बात नहीं मानता और उसकी मर्जी के मुताबिक उसका साथ नहीं देता, चाहे वह हर दिन एक गाय ही क्यों न मारे, तो लगता है वह मेरे खिलाफ अदालत में मुकदमा कर देगा और मेरी जमीन मुझसे छीन लेगा।’

‘उस नीच को जन्म देने वाली स्त्री का घर बर्बाद हो जाए! वह नेक महिला, उसकी माँ, अभी जीवित है। हम उसे साथ ले जा सकते हैं और गवाह के तौर पर उसका बयान ले सकते हैं। हम देखेंगे कि वह तुम्हारी ज़मीन कैसे छीनता है,’ तीनों ने एक साथ कहा। उन्होंने उसे यह भी आश्वासन दिया कि यदि आवश्यकता पड़ी तो गाँव के सभी लोग गवाह बनकर आएंगे।

वेंकटरमण को थोड़ी राहत मिली। उन्होंने तैयव्वा के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की।

जब उन्होंने पूछा कि उसकी बीमारी क्या है, तो यांगता गौड़ा ने कहा, 'और क्या? उस बेटे को जन्म देना ही उसके पेट में एक बीमारी है। वह वैसे भी जीवित नहीं रहेगी। याद है बड़े गौड़ा और उनकी पत्नी के साथ क्या हुआ था? उसके साथ भी वही होने वाला है।'

तैयव्वा का चेहरा एकदम सूखा और मुरझाया हुआ था। वह किसी अनजान दिशा में अजीबोगरीब निगाहों से देख रही थी, मानो उस पर किसी भूत या राक्षस का साया हो। उसके हाथ-पैर पतले सरकंडे जैसे लग रहे थे। भेड़ की ऊन से बने कंबल के नीचे उसका शरीर कपड़े के एक टुकड़े जैसा दिख रहा था। यांगता गौड़ा ने कहा: 'बड़े

गौड़ा और उनकी पत्नी की मृत्यु तब हुई जब मोटर रोड पुण्यकोटी गाय और कृष्ण की कब्रों पर बनाई गई, जिनकी मृत्यु लकड़बग्घे के हाथों हुई थी। हालांकि सड़क कब्रों पर बनी थी, तैयव्वा कृष्ण पक्ष की अमावस्या के दिन उस स्थान पर गईं और उन्हें दूध और घी चढ़ाया।'

जब कलिंगा ने बूढ़े मवेशियों को कसाई को बेचा, तो उसने अपने पेट का दर्द सहन किया। घर के मवेशियों को नए बाड़े में ले जाने के बाद, वह हर पल उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित रहती थी। जब नौकरों ने बताया कि मशीनों से दूध की आखिरी बूंद तक चूस ली जाती है, जिससे बछड़े अपनी माँ का दूध नहीं पी पाते, तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगते थे। लेकिन वह बेबस थी। उसे अपने बेटे को रोकने या अपनी बहू को समझाने का क्या हक था? फिर भी उसने किसी तरह यह सब धैर्य से सहा। वह अपने मौन मन में यही सोचती रही कि यह दुखमय जीवन क्यों खत्म नहीं हो रहा; वह यह सब देख नहीं सकती थी। फिर, उसके अपने बेटे और बहू के हाथों गाय की हत्या हो गई। जब उसने सुना कि पुण्यकोटी नस्ल की गाय, जो उनके वंश की समृद्धि का आधार थी, मार दी गई है, तो वह पागल हो गई। वह गांव के सभी लोगों के साथ गई, जिसने यह अपराध किया था उस पर जुर्माना लगाया और घर लौट आई। गांव के बाकी लोग इस घटना को भूल गए। लेकिन तैयव्वा कैसे भूल सकती थी? इसके अलावा, उसे यह भी खबर मिली कि पुलिस यहां आई थी और गांव वालों से चार हजार रुपये वसूल लिए थे।

यांगता गौड़ा ने कहा: 'उसमें अब जीने की इच्छा नहीं बची है, मेरे दोस्त। अब बस इतना ही बचा है कि वह मानव शरीर नामक बोझ को ढोए रखे। वह अपनी यात्रा की प्रतीक्षा कर रही है।'

तब तयव्वा ने हाथों से इशारा किया। कंधों में ताकत न होने के कारण उसके हाथों की हरकतें अस्थिर थीं। यहाँ तक कि उसके चेहरे के भाव भी उसके हाथों के इशारे से मेल नहीं खा रहे थे। लेकिन यांगता गौड़ा ने किसी तरह उसका संदेश समझ लिया और पूछा, 'देखते हैं वो ज़मीन कैसे छीनता है। चलो दरबार चलते हैं। ठीक है ना माँ?' उसने सिर हिलाकर 'हाँ' कहा।

‘तयव्वा, इसके लिए अपनी जान मत कुर्बान करो। हमें जीवित रहना है और हर चुनौती का सामना करना है। अगर तुम्हें यहाँ रहकर दुख हो, तो मेरे गाँव आ जाओ।

या फिर हर दिन मंदिर आओ, झाड़ू-पोछा करो और देवता की सेवा करो।' वेंकटरमण ने ये सांत्वना भरे शब्द कहे और अपने गाँव के लिए रवाना हो गए।

जब तक वह घर पहुँचा, दोपहर के एक बज चुके थे। उसकी माँ ने अभी तक कुछ नहीं खाया था। उसने प्रसाद का पात्र, जिसमें मुट्ठी भर प्रसाद बचा था, उसे दे दिया और दोपहर का भोजन करने की जहमत उठाए बिना सीधे शानुभोग के घर चला गया। उसे अब तक हुई सारी घटनाओं की जानकारी थी। जब वेंकटरमण ने दिन भर की घटनाएँ सुनाईं, तो उसने कहा: 'यह सच है कि उनके हस्ताक्षर की आवश्यकता थी। फिर भी, बड़े गौड़ा ने जो किया वह दान का कार्य था। दुरुपयोग के कारण उनकी कोई संपत्ति नष्ट नहीं हुई है। यदि वह अदालत जाते हैं, तो मैं भी गवाह के रूप में अपना बयान दूँगा। मैंने दस्तावेज़ बना लिया है और उसमें बी कॉलम लिख दिया है। उन्हें पहले अदालत जाना होगा। जब तक वह नहीं जाते, हम कुछ नहीं कर सकते। तब तक आप कुछ न करें।'

6

वेंकटारमणा ने दस-बारह दिनों तक अदालत से कोई सूचना आने की उम्मीद में अपने पत्रों की ट्रे जाँची। कुछ नहीं आया। उन्होंने लगातार यह भी पता लगाया कि क्या कलिंगा मोटरगाड़ी से गाँव छोड़कर गया था और यदि हाँ, तो किस दिशा में। उन्हें पता चला कि वह वास्तव में दो बार मोटरगाड़ी से तालुक गया था। लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं था कि वह भूमि अनुदान के विरुद्ध मुकदमा दायर करने के लिए अदालत गया था।

कलिंग के उन शब्दों के बाद से वेंकटरमण का मानसिक संतुलन बिगड़ गया था। अब तक उन्होंने मंदिर की पूजा के प्रति प्रेम और भक्ति का बंधन बना रखा था। काम में चाहे वे कितने भी व्यस्त क्यों न हों, उन्होंने एक दिन भी पूजा किए बिना अपने होठों पर पानी की एक बूँद नहीं डाली थी। एक बार जब उन्हें बुखार था, तो उनकी माताजी मंदिर गईं और उन्होंने केवल फूलों और फलों से पूजा की, मंत्रों और अनुष्ठानों का पालन नहीं किया। उन्होंने दवा तभी ली जब उनकी माताजी ने उन्हें एक पूरी तरह खिला हुआ फूल दिया। लेकिन अब, उनकी पूजा की जड़ पर ही कुल्हाड़ी चल पड़ी थी।

कभी-कभी उसके मन में यह सवाल उठता था कि क्या कालिंगा सचमुच अदालत में मुकदमा दायर करेगा। उसे कालिंगा के कहे शब्द याद आ गए: 'देखो, मेरा मुकदमा दायर करने का कोई इरादा नहीं है। क्योंकि तुम मेरे घर का खाना खाते हो, इसलिए मुश्किल समय में तुम्हें मेरा साथ देना चाहिए। तुममें इतनी इज्जत नहीं है कि तुम मेरे सामने अपमानजनक बातें करो या मेरी पत्नी को डांटो या सलाह दो।'

मैं उसे सलाह देने नहीं गया था। मेरा फर्ज था कि मैं स्नेहवश उसे कुछ अच्छे शब्द कहूँ, क्योंकि वह बड़े गौड़ा का पोता है। इसका क्या मतलब है... 'मुश्किल समय में मेरा साथ दो, क्योंकि तुम मेरे घर का खाना खा रहे हो?' आखिर उसे क्या मुसीबत आएगी? जब वह बूढ़े मवेशियों को कसाई को बेच देगा, जब वह और उसकी पत्नी सिर्फ अपनी जीभ की भूख मिटाने के लिए गाय मारेंगे, तो क्या मुझे उसके इस काम को सही ठहराना चाहिए? क्या मंदिर की पूजा तभी मेरे पास रहेगी जब मैं उसके इस काम को सही ठहराऊँगा? जिसका मतलब यह भी है कि फिर वह मुझे दी गई जमीन को छू भी नहीं पाएगा। इसलिए मुझे मंदिर में उस पत्थर की मूर्ति की पूजा करनी होगी, और मुझे असली, जीवित गोमाता के वध में भी मदद करनी होगी। इनमें से कौन सा काम बेहतर है? पत्थर की मूर्ति की पूजा रुकने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन अगर असली, जीवित गोमाता का वध फिर से किया गया, तो पिछली बार से भी ज्यादा हंगामा होगा। उसका घर ही जला देना चाहिए। इन लोगों को डर और दर्द का भरपूर अनुभव कराए बिना अक्ल नहीं आएगी।

लेकिन उनका मन पत्थर की मूर्ति की पूजा को छोड़ना नहीं चाहता था। उनके लिए यह स्वीकार करना असंभव था कि मंदिर के भीतर की मूर्ति मात्र पत्थर की है। जब बड़े गौड़ा मंदिर का निर्माण करवा रहे थे, तब वेंकटरमण ने भी निर्माण कार्य में भाग लिया था। वे नियमित रूप से स्थल पर आते थे और मंदिर और कल्याणी के आयामों की गणना और निर्धारण जैसे विभिन्न कार्यों में निर्माण पूर्ण होने तक सहायता करते थे। वे पुराणों से गाय की महिमा का बखान करते हुए कई कथाएँ सुनाते थे। शास्त्रों से वे पुरुष और महिला स्वयंसेवकों, पत्थर के कारीगरों, शिवलिंगाचारी और बड़े गौड़ा को गाय की पूजा के महत्व के बारे में श्लोक सुनाते थे और इस प्रकार उनकी भक्ति और उत्साह को बढ़ाते थे। मूर्ति की स्थापना के समय उन्होंने मंत्र और तंत्र से संबंधित सभी अनुष्ठानों में पूर्णतया भाग लिया था। तब से लेकर अब तक, उन्होंने पुण्यकोटी मूर्ति को दिव्य गाय के रूप में और अन्य तीन मूर्तियों को क्रमशः

ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप में अभिषेक करने का न्यास अनुष्ठान किया था। वास्तव में, अब न्यास अनुष्ठान को दोबारा करने की आवश्यकता नहीं थी। वेंकटरमण ने तब से इसी भक्ति भाव से पूजा की थी। और अब, वे मात्र पत्थर की मूर्तियाँ कैसे रह सकती थीं? यह सत्य था कि कलिंग के फार्म में वध की गई गाय और भविष्य में वध की जाने वाली गायें सभी सजीव देवता थीं, लेकिन मंदिर के भीतर की मूर्ति उसी देवता के इन रूपों का प्रतीक थी। तो कोई उस प्रतीक को मात्र पत्थर कैसे मान सकता है?

वेंकटरमण और मंदिर के बीच एक अटूट बंधन बन चुका था। उनके लिए इसे छोड़ना नामुमकिन था। कलिंग ने पूजा के लिए दी गई अनुदान राशि छीनने की धमकी दी थी, न कि स्वयं पूजा। इसलिए, अनुदान भले ही चला जाए, पूजा तो उनके साथ ही रहेगी। जी हाँ! जैसे ही उन्हें यह बात समझ आई, उनका मन मानो अंधकार में प्रकाश पा गया हो। चाहे वह अपनी ज़मीन ले लें, मैं अपनी पूजा तो हर हाल में करूँगा। उन्होंने यही निर्णय लिया।

लेकिन खाने का क्या? माँ, मैं, मेरी पत्नी, मेरे दो बच्चे... मैं अपने परिवार का भरण-पोषण कैसे करूँ? मुझसे गलती हो गई। क्या मुझे सरकार से विनती करनी चाहिए कि वे मेरी माफी स्वीकार कर लें और मेरा इस्तीफा वापस ले लें? लेकिन अगले ही पल उन्होंने सोचा, उन्होंने मेरा तबादला सिर्फ इसलिए किया क्योंकि मैंने गौहत्या पर रोक लगाने वाले आंदोलन में भाग लिया था। इसका मतलब है कि अगर मैं उनसे अपना इस्तीफा वापस लेने की विनती करता हूँ, तो मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने गलती की है। कलिंग भी मुझसे भूमि अनुदान पाने के लिए इसी तरह की गलती स्वीकार करने की मांग कर रहा है। सरकार और कलिंग दोनों एक ही तरह की आज्ञाकारिता की मांग कर रहे हैं। और कलिंग के चंगुल से खुद को छुड़ाने की जल्दबाजी में, मैं सरकार के भंवर में फंस जाऊँगा। अगर मुझे सचमुच खुद को मुक्त करना है, तो मुझे दोनों से मुक्त होना होगा। अब वह दृढ़ निश्चयी हो गया था।

उनकी मां और पत्नी दोनों ही उनके अंदर चल रही उथल-पुथल से वाकिफ थीं। जब उन्होंने पूछा कि अब क्या करना चाहिए, तो उनकी पत्नी ने कहा: 'आप अभी भी किसी उच्च अधिकारी से संपर्क कर माफी मांग सकते हैं। आपकी अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी बनी रहेगी। बुढ़ापे में आपको पेंशन भी मिलेगी। आपको ये सब झंझट क्यों झेलने पड़ रहे हैं?'

लेकिन उसकी माँ ने कहा: 'बेटा, हमें अपने पूर्वजों से विरासत में मिले घर को छोड़कर कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं है। मैंने कलिंग को चार साल तक भोजन कराया है। देखते हैं कि वह मेरी सलाह मानता है या नहीं। अदालत मत जाओ। मैं उसे बता दूँगी कि वह हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित धर्म को न छीने। अब से तुम उसका विरोध मत करना। समझदारी से काम लो।'

'मां, मुझे बेवजह उसका विरोध क्यों करना चाहिए? अगर वह गाय को मार डाले तो क्या मुझे चुप रहना चाहिए?'

उनकी मां को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। उन्होंने कहा, 'दुनिया पर बुरा समय आ गया है,' और बात वहीं खत्म कर दी।

एक सुबह पूजा समाप्त करने के बाद, वेंकटरमण मंदिर के बरामदे में बैठे हुए थे और पूरे मन से कठोपनिषद का पाठ कर रहे थे।

पेतोदका जगधातृणां दुग्धदोहा निरिन्द्रियः |
आनंद नामते लोकास्तां स गच्छति ता ददात् ||

जो लोग ऐसी गायें दान करते हैं जो बुढ़ापे के कारण इतनी कमजोर हो गई हैं कि वे पानी नहीं पी सकतीं, घास नहीं खा सकतीं और दूध नहीं दे सकतीं, ऐसे लोग आनंदहीन लोकों में जाएंगे।

उपनिषद में वर्णित बालक नचिकेता ने अपने पिता से पूछा, "ये गायें कौन दान कर रहा है?" (तता कसमै माम दासस्यि)—आप मुझे किसे दान करेंगे? जब उसके पिता ने क्रोधित होकर उत्तर दिया, "मृत्यु को", तो बालक आज्ञाकारी होकर मृत्यु के देवता यम के निवास स्थान यमपुरी की यात्रा पर निकल पड़ा। यम के घर जाने से पहले उसने अपने पिता को यह कहकर सांत्वना दी:

Anupashya yathaa poorve pratipashya tathaapare |
sassyamiva martyah pachyate sassyamivaajaayate punah ||

देखो अतीत में मनुष्य कैसे रहते थे और भविष्य में कैसे रहेंगे, वे वनस्पति की तरह सड़ते हैं और सब्जियों की तरह फिर से जन्म लेंगे।

और फिर वह शांतिपूर्वक मृत्यु के देवता यमराज के निवास स्थान पर चले गए।

अहा, नचिकेता की दृढ़ता! वेंकटरमण ने सोचा।

मंत्रोच्चार करने के बजाय, वेंकटरमण का मन लगभग आधे घंटे तक गहन चिंतन में लीन रहा। फिर, मानो उन्होंने कोई निर्णय ले लिया हो, वे उठे, प्रसाद का पात्र उठाया, दरवाजा बंद किया, परिसर की घंटी बजाई, बाहर आए, शिखर पर खड़े होकर सब कुछ देखने लगे। खेत के बीचोंबीच कलिंग के घर के पास स्थित कुएँ का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा था। बीस-तीस मजदूर कुल्हाड़ी और कड़ाही लेकर काम कर रहे थे। कलिंग कुएँ के किनारे खड़े होकर काम की देखरेख कर रहे थे।

वेंकटरमण सीधे घर चले गए। उन्होंने प्रसाद का पात्र अपनी माता को दिया, जो अभी भी अपने पवित्र वस्त्र पहने हुए थीं, और भीतरी कमरे में लकड़ी का संदूक खोला। उन्होंने उसमें से एक मोटा लिफाफा निकाला और उसे हाथ में पकड़े हुए बाहर आ गए। फिर वे पहाड़ी की ओर चल पड़े और मंदिर पहुँच गए। उन्होंने लिफाफे को मंदिर की दहलीज पर रखा, तीन बार परिक्रमा की और द्वार पर प्रणाम किया। फिर उन्होंने उसे हाथ में पकड़े रखा और कल्याणी की दिशा से नीचे उतरते हुए कलिंग के खेत तक पहुँचे। कुएँ का काम अभी भी चल रहा था। कलिंग अभी भी वहीं खड़े थे।

जब मजदूरों ने मंदिर के उस पुजारी को देखा, जो अपने पवित्र पूजा वस्त्र पहने हुए था, जिसके सिर पर गांठ बांधकर बाल नीचे लटक रहे थे और माथे, बांहों, छाती और कंधों पर विभूति लगी हुई थी, तो वे बस उसे देखते रह गए। हालांकि कलिंग ने यह जताने की कोशिश की कि उसने उसे नहीं देखा, पर ऐसा करना उसके लिए असंभव था और वह उसकी ओर मुड़ गया। केवल हिल्डा ही कुएं के पास खड़ी होकर काम की देखरेख कर रही थी, जिसने उसकी उपस्थिति को नजरअंदाज किया और वहीं खड़ी रही जैसे कि वह कुएं में झांक रही हो। वेंकटरमण कलिंग के पास पहुंचा और अपने हाथ में रखा लिफाफा उसे सौंप दिया। यह सोचकर कि यह कोई पत्र है, कलिंग ने उसे ले लिया और पूछा, 'यह क्या है, वेंकटरमण?'

'यह भूमि अनुदान विलेख है जो आपके दादाजी ने मंदिर की पूजा करने के लिए लिखा था। याद है आपने उस दिन मुझसे कहा था कि अगर मैंने आपकी बात नहीं मानी तो आप मुझ पर मुकदमा कर देंगे और जमीन छीन लेंगे? मैं आपकी बात नहीं मानूंगा। अगर आप अपने घर में गायों को मारेंगे तो भी मैं चुप नहीं रहूंगा। आपको अदालत जाने और वकीलों पर पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं है। ये कागजात ले

लीजिए। आज से उस जमीन से मेरा रिश्ता खत्म हो गया है। मैं यह बात होन्ना को बता दूंगा, जो बटाईदारी के तहत उस जमीन पर खेती कर रहा है। आप उसके साथ जो चाहें कर सकते हैं।'

यह कार्य और इसके साथ कहे गए शब्द न केवल अप्रत्याशित थे, बल्कि उन्होंने कलिंग को आश्चर्यचकित भी कर दिया। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाते, वेंकटरमण ने स्वयं सशक्त स्वर में कहा: 'देखो, मुझे पता है कि तुमने वह भूमि भी अपने नाम कर ली है जिस पर मंदिर बना है। यद्यपि मैंने अनुदान के रूप में दी गई यह भूमि त्याग दी है, मैं मंदिर की पूजा करना बंद नहीं करूँगा। अब तक मैं पूजा करता था और उससे प्राप्त भोजन ग्रहण करता था। आज मैंने उस अपवित्र भोजन से सभी संबंध तोड़ लिए हैं। अब मैं केवल पूजा से ही संबंध रखूँगा। तुम मुझे पूजा से वंचित करने का प्रयास भी कर सकते हो क्योंकि मंदिर की भूमि तुम्हारे नाम पर है। या तुम पूरे मंदिर पर ही कब्ज़ा कर सकते हो। और अब से, यदि तुम्हें गाय का मांस खाने की इच्छा हो, तो तुम मंदिर के भीतर, पुण्यकोटी देवता के ठीक सामने गाय का वध कर सकते हो, उसे वहीं पकाकर खा सकते हो।' उसके बाद, आप दोनों पति-पत्नी कल्याणी में तब तक मौज-मस्ती कर सकते हैं जब तक कि आपके द्वारा खाया गया सारा वसा पिघल न जाए!

इतना कहकर वेंकटारमणा मुड़े। मजदूर एकदम स्थिर खड़े उनकी बात सुन रहे थे। अब तो हिल्डा भी उन्हें टकटकी लगाकर देख रही थी। कुछ कदम आगे बढ़ चुके वेंकटारमणा अचानक रुक गए, उन्हें कुछ कहना याद आया। लौटकर वे गरजते हुए बोले, 'देखो, मंदिर और कल्याणी की ज़मीन तुम्हारे नाम पर है। यह भी सच है कि बड़े गौड़ा ने इसे बनवाने में पैसा खर्च किया। लेकिन, जिस तरह कल्याणी जल से भर जाती है और उफान मारती है, उसी तरह कलेनहल्ली के स्त्रियों और पुरुषों ने इन दोनों को बनवाने में पसीना बहाया है और मेहनत की है। अब यह मंदिर आसपास के सौ मील के दायरे में पुण्यक्षेत्र, एक पवित्र तीर्थस्थल बन गया है और श्रद्धालु यहाँ आ रहे हैं। तो यह बात अच्छी तरह समझ लो: अगर तुमने ज़मीन के अनुदान की तरह मंदिर पर भी कब्ज़ा करने की कोशिश की, तो तुम्हारी खोपड़ी नहीं बचेगी। कल मैं कलेनहल्ली के लोगों से कहूंगा कि वे पहाड़ी के इस तरफ और तुम्हारे खेत के बीच और मंदिर के चारों ओर, कल्याणी सहित, एक मज़बूत बाड़ लगा दें।' और अगर तुमने पुलिस को बुलाकर... या किसी को भी बुलाकर हमें डराने की कोशिश की, तो तुम्हें बेंत से मार

पड़ेगी। मैं खुद बेंत लेकर सबसे आगे खड़ा हो जाऊंगा। तब हमें तुम्हारी मर्दानगी का असली अंदाज़ा लगेगा।' वह मुड़ा और गुस्से में चला गया। बीस कदम चलने के बाद ही कलिंग ने पीछे से आवाज़ दी, 'वेंकटरमण, ज़रा रुक जाओ।' लेकिन वह नहीं रुका। पीछे मुड़े बिना ही वह चिल्लाया, 'तुम्हारे जैसे नीच का चेहरा भी देख लिया तो एक ऐसा पाप लग जाएगा जो है ही नहीं। दूर रहो।' उसने अपने कदमों की गति दोगुनी कर दी और चल पड़ा।

घर पर उन्होंने किसी को नहीं बताया कि उस दिन उन्होंने क्या किया। भरपेट भोजन करने के बाद, उन्होंने अपने घर की गायों को भूसा खिलाया, कंबल ओढ़कर सो गए। शाम को, उन्होंने झील के किनारे सुखद सैर की और लौट आए। उस रात जब सब सो गए, तो उनके मन में विचार आने लगे: इतने दिनों से मैंने ज्योतिष को नज़रअंदाज़ किया है। धर्म और कर्म में लोगों की आस्था भले ही कम हो गई हो, लेकिन कुंडली पढ़वाने और भविष्य के बारे में जानने वालों की संख्या हर जगह बढ़ रही है। अगर मैं अच्छी तरह से अध्ययन करके कुंडली लिखूँ तो मुझे दस रुपये मिलेंगे। अगर मैं कुंडली की पूरी भविष्यवाणी लिखूँ तो कोई भी सौ रुपये देगा। एक ज्योतिषी को किसी देवता की पूजा अवश्य करनी चाहिए। मुझे किसी और देवता की आवश्यकता नहीं है। हर सुबह, अगर मैं उठकर पुण्यकोटी मंदिर में पूजा करूँ, तो कुंडली बनाने और उसका विश्लेषण करने के लिए मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए बस इतना ही काफी है। पेट भरने का कोई न कोई रास्ता तो हमेशा होता ही है। अब तो गायों के चरने की कोई जगह ही नहीं बची है। अगर मैं कलेनहल्ली के यांगता गौड़ा से पूछूँ, तो वे उनके चरागाह में या हमारे गाँव के पास खेत में एक छोटी पहाड़ी पर चर सकती हैं। उगादी के महीने में, जब मैं वर्षफल सुनाता हूँ—वर्षा और ऋतुओं, फसल और कटाई की भविष्यवाणी—तो मैं लोगों से अतिरिक्त अनाज और दालें माँग सकता हूँ। कलेनहल्ली के लोग तो मान ही जाते हैं, लेकिन अगर दूसरे गाँवों के लोग भी हर घर से पाँच किलो अनाज दे दें, तो भी काफ़ी होगा।

इसी विचार के साथ उसने अपने घर के भंडार में मौजूद धन का हिसाब लगाया। उसने अब तक की कमाई से ढाई हजार रुपये बचाए थे। उसकी माँ समय-समय पर घर में आने वाले अतिरिक्त अनाज को बेच देती थी और अपनी बहू को हार, चूड़ियाँ और अन्य गहने दे देती थी। इनकी कीमत एक हजार रुपये थी। घर में रागी और

चावल पूरे साल के लिए पर्याप्त थे। और क्या चाहिए? मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित हैं। इस सांत्वना के साथ उसने सोने की तैयारी शुरू की।

लेकिन फिर उसे दोपहर में कलिंग से कही हुई बातें याद आ गईं। सब ठीक है, लेकिन मैंने उससे इतने कठोर शब्द क्यों कहे? मैं कागज़ात सौंपकर धैर्यपूर्वक, विनम्रता से अपनी बात कह सकता था। एक विचार ने उसे ऐसा करने की सलाह दी। लेकिन दूसरा विचार उसके क्रोध को जायज़ ठहरा रहा था: क्या वह नीच व्यक्ति कोमल भाषा समझता है? मेरे क्रोध दिखाने से क्या हुआ? वह मुझसे क्या छीन सकता है? मुझे उससे डरने की क्या ज़रूरत है? जब तक मुझे उस भूमि से आने वाले भोजन की लालसा है, तब तक डर लगना स्वाभाविक है। जिस व्यक्ति को किसी भी प्रकार की कोई लालसा नहीं है, उसे क्यों डरना चाहिए?

और इस तरह, आधी रात के काफी देर बाद आखिरकार उसे नींद आ गई।

7

अगले दिन जब वेंकटरमण देर से उठे, तो उन्होंने जल्दी से स्नान किया, प्रसाद का पात्र लिया और मंदिर चले गए। उनका मन शांत था। उन्होंने जोर-जोर से मंत्रों का उच्चारण करते हुए पूजा की और जब आरती का समय आया, तो उन्हें बाहर से किसी के दौड़ने की आहट सुनाई दी। लेकिन उन्होंने उस दिशा में देखे बिना ही आरती पूरी की।

यह यांगता गौड़ा का पुत्र माता था। हाँफते हुए उसने कहा: 'अय्या, लगता है आज तयाव्वा की मृत्यु हो जाएगी। आप आइए।'

‘आपको कैसे पता कि उसकी मृत्यु आज ही होगी?’

‘मेरे पिता ने ऐसा कहा था। लगता है उसने मरने से पहले गोदाना करने की इच्छा जताई थी। एक आदमी तुम्हें ढूंढते हुए तुम्हारे घर गया था। मैं यहाँ आ गया। आओ। चलो चलते हैं।’

वेंकटारमण ने तीर्थ पात्र और प्रसाद का पात्र लिया, मंदिर का दरवाजा बंद किया, परिसर में लगी बड़ी घंटी बजाई और पवित्र वस्त्र पहने ही माता के साथ कलेनहल्ली के लिए निकल पड़े। तयव्वा का समय निकट आ रहा था। उनका मन सांसारिक चिंताओं से भरा हुआ था। वेंकटारमण पिछले तेरह-चौदह दिनों से कलेनहल्ली नहीं गए थे। कल ही तो उनके मन को शांति मिली थी। वे वैसे भी आज या कल उस बुढ़िया

से मिलने जाते। लेकिन क्या उनका समय इतनी जल्दी आ गया? जब वे इन विचारों के साथ वहाँ पहुँचे, तो लगभग पचास-साठ लोग पहले से ही उनके घर के सामने जमा थे। उनके आते ही सभी ने उनके लिए रास्ता बना दिया। अंदर, उस बुढ़िया का कमजोर शरीर एक कंबल पर लेटा हुआ था। हालाँकि उनमें अपने अंगों को हिलाने की शक्ति नहीं थी, फिर भी उनकी आँखें चमक रही थीं। उन्होंने वेंकटारमण के आने का आभास कर लिया था। क्योंकि उनमें उठकर बैठने की शक्ति नहीं थी, इसलिए उन्होंने कोशिश भी नहीं की। गांव की चार महिलाएं उनके सिर के पास बैठी थीं। यांगता गौड़ा खंभे से टेक लगाकर बैठी थीं, जबकि गांव के छह-सात प्रतिष्ठित लोग दीवार के पास जमा थे। एक महिला ने वेंकटारमणा के लिए लकड़ी का तख्ता रखा।

यांगता गौड़ा ने कहा: 'स्वामी जी, आपने कल ऐसा क्यों किया?'

'मैंने क्या किया, मेरे दोस्त?'

कुआँ खोदने गए नौकरों ने मुझे बताया। आपने उसे भूमि अनुदान के कागजात क्यों लौटा दिए? अगर वह अदालत जाता, तो हम सभी गाँववाले गवाह बनकर आते।

'अय्या, गाँव के सभी लोगों के वहाँ साक्षी बनकर आने और खुद को थकाने के बजाय, अगर आप में से हर एक इस पुजारी को एक टोकरी भर रागी दे दे, तो क्या मेरा पेट नहीं भर जाएगा? क्या मैंने उस ज़मीन को त्यागने के कारण पूजा भी छोड़ दी है? देखिए, मैं सीधे मंदिर से तीर्थ और प्रसाद लेकर आ रहा हूँ। पूजा में कोई बाधा नहीं आएगी। आप चिंता न करें।'

'मुझे पता है। कल जब तैयव्वा ने नौकरों से यह सुना, तो उसका दुख और गहरा गया। कल रात उसने हाथ के इशारे से कहा कि अब वह मर जाएगी। मैं सुबह उठा और यहाँ आया। फिर उसने हाथ के इशारे से कहा कि वह अपने घर की सारी गायें दान कर देगी और मैं तुम्हें बुला लूँ, अय्या।'

वेंकटरमण ने एक मिनट सोचा और कहा: 'देखो, अगर कोई गोदाना करना चाहता है, तो बिना कारण के मना नहीं करना चाहिए। मना तभी करना चाहिए जब दान देने वाला कंजूस हो या शुद्ध मन से दान न दे रहा हो। तैयव्वा शुद्ध हृदय से दान देगा। लेकिन परिवार के मुखिया की मानसिकता तो आप जानते ही हैं। इसीलिए मैं यह दान स्वीकार नहीं करूंगा।'

ये शब्द सुनते ही मुरझाए हुए तैयव्वा की आँखों में आँसू भर आए। उसके आस-पास मौजूद सभी लोगों ने इसे देखा। यांगता गौड़ा ने कहा: 'हे विद्वान, वह परिवार का

मुखिया कैसे बन सकता है? उसे सारी संपत्ति, सोना... जो कुछ भी मिले, ले जाने दो और यूँ ही बर्बाद हो जाने दो। लेकिन पुण्यकोटी वंश? वह तो बड़े कलिंग के पूर्वजों का है। यदि इस घर के लोग उसकी देखभाल श्रद्धापूर्वक नहीं कर सकते, तो उसे दान में दे देना चाहिए। घर की मालकिन को यह अधिकार है। आपको इसे ले लेना चाहिए।'

तैयव्वा ने अपने चेहरे पर ऐसा भाव बनाया जिससे पता चलता था कि ये शब्द उसी के हैं। वेंकटरमण ने कहा: "तो फिर, पूजा की सामग्री ला दो। फूल, चंदन, दूध, घी, थोड़ा सा सोना, ये सब। अगर तैयव्वा स्नान नहीं कर सकतीं, तो लेटे हुए ही उनके शरीर को गीले कपड़े से पोंछ दो। इस आंगन को भी पोंछ दो और रंगोली से सजा दो। यहाँ पहले से ही बहुत सारे लोग इकट्ठा हो चुके हैं। हम प्रसाद बना सकते हैं। सात-आठ नारियल कद्दूकस कर लो, उसमें कुटी हुई गुड़ मिला दो, और अगर केले हों तो उन्हें मसल भी दो।"

महिलाएं तैयव्वा को स्नान कराने के लिए खड़ी हो गईं। पुरुष बाहर चले गए। दो लड़के फूल और पत्ते लेने दौड़ पड़े। माता अपने घर की अटारी पर चढ़े, आठ नारियल तोड़े और उन्हें छीलने लगे। यह सब चल रहा था, तभी वेंकटरमण घर के सामने पीपल के पेड़ के चारों ओर बने चबूतरे पर बैठ गए।

एक घंटे में सारी तैयारियाँ पूरी हो गईं। सात पुण्यकोटी गायों, दो बछड़ों, एक बछड़े (जिसने दूध पीना छोड़ दिया था), छह बछड़ों (जिन्होंने नहीं छोड़ा था) और वध की गई गाय के अनाथ बछड़े को नहलाकर उनके माथे पर कुमकुम लगाया गया। उन्हें भीतरी आँगन में लाया गया, जो अब साफ-सुथरा था और रंगोली से सजा हुआ था। गाय और दोनों बछड़ों को बाँध दिया गया। आँगन के दूसरे हिस्से में, थोड़ी ऊँचाई पर एक पलंग बनाया गया और बोरी के थैलों को मोड़कर सिर के एक तरफ रख दिया गया। तैयव्वा को नहलाया गया और उस पर लिटाया गया। वेंकटरमण अंदर आए। यांगता गौड़ा और गाँव के अन्य प्रमुख लोग भी आए और जहाँ भी जगह मिली, बैठ गए। पूजा की सामग्री की जाँच करने के बाद, वेंकटरमण चंदन के ठूंठ को टाइल पर रगड़कर उसका पेस्ट निकालने लगे। अपनी माँ के थनों से एक बार दूध पीने के बाद, बछड़े दूसरी गायों के पेट के नीचे रेंगने लगे। एक मिनट तक उन्हें देखने के बाद, यांगता गौड़ा ने तैयव्वा से पूछा: 'वह भूरा बछड़ा? क्या वह वही अनाथ बछड़ा नहीं है?'

तैयव्वा ने सिर हिलाकर हां कहा। तब यांगता गौड़ा ने कहा: 'देखो? इसे अब भी अपनी मां की मौत का एहसास नहीं है। चाहे यह किसी भी दूसरी मां के थन से अपना

मुंह लगाए, कोई भी इसे लात नहीं मारती। यह उसे अपना बच्चा मानती है और उसके शरीर को चाटती है और उसे दूध पिलाती है।'

चंदन मलते हुए वेंकटारमण ने कहा: 'गौड़ा, क्या इसीलिए गाय को सबकी माँ कहा जाता है? तुम्हें पता है ना? उस समय, पुण्यकोटी गाय के बाघ के पास जाने से पहले, उसने गौशाला में मौजूद सभी गायों से कहा: "मेरी माताओं, मेरी बड़ी बहनों, मेरे भाई-बहनों, इस अनाथ को अपना बच्चा समझो।" तब सभी गायों ने कहा, "सुनो, हे माता पुण्यकोटी। तुम्हारा बच्चा हमारा बच्चा है, तुम्हारे हृदय में उदासी क्यों है? शांत रहो, माता।" है ना? यह कहाँ हुआ था? गौशाला में, इसी घर के पिछवाड़े में। फिर पुण्यकोटी स्वयं को बाघ को अर्पित करने गई। जब पर्वत की ढलान पर बैठे बाघ ने गाय की सत्यनिष्ठा को देखा, तो उसने अपने ही क्षीण पेट की भूख को कोसते हुए प्राण त्याग दिए। लेकिन अब, उसी पर्वत की तलहटी में घर बनाकर बसे बाघों ने इस घर की पुण्यकोटी गाय को मारकर अपना पेट भर लिया है।' लेकिन देखो, गायें अपने पूर्वजों द्वारा किए गए वादे को याद रखती हैं। अगर उनके बाड़े में कोई बछड़ा अनाथ हो जाता है, तो वे उसे अपना बच्चा मानती हैं। लेकिन केवल मनुष्य ही अपने पूर्वजों के अच्छे कर्मों और उनके द्वारा किए गए वादों को भूल जाते हैं, भले ही वे इसके बारे में पूरी तरह से जानते हों। क्या यही मनुष्य और गायों के बीच एकमात्र अंतर नहीं है?

वेंकटारमण बोलते समय अपना सिर झुकाए चंदन मल रहे थे। उनकी बातें सुनते हुए सभी लोग उस अनाथ बछड़े को देख रहे थे। यांगता गौड़ा ने कहा, 'पापी हरामखोरों, स्वामी जी! नीच व्यभिचारी!' तभी वेंकटारमण ने अपने दाहिने अंगूठे से चंदन का पेस्ट उठाया और स्वाभाविक रूप से दाईं ओर मुड़े। वे आश्चर्यचकित रह गए: कलिंग वहाँ खड़ा था, पिछले दरवाजे से—अर्थात गौशाला के दरवाजे से—प्रवेश कर रहा था। किसी ने उसे नहीं देखा था। अब सब उसे देख रहे थे। वेंकटारमण का भाषण यहीं रुक गया।

जब कलिंग ने नौकरों से सुना कि उसकी माताजी का आज निधन हो जाएगा, तो वह अपने आप को रोक नहीं पाया। उसने अनुमान लगाया था कि गाँव के सभी पुरुष और महिलाएं उसके घर पर इकट्ठा होंगे। उन सबके सामने वहाँ जाने में उसे शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। लेकिन जब उसकी जन्मदात्री माता अपनी प्राण शक्ति त्याग रही थी, तो उसे लगा कि उसे उसके पास रहना चाहिए और किसी न किसी तरह उसकी सेवा करनी चाहिए, या डॉक्टर को बुलाकर उसकी जान बचानी चाहिए। इसी

निर्णय के साथ वह अपना खेत छोड़कर चला गया था। जब उसने दूर से अपने घर के बाहर इतने सारे लोगों को इकट्ठा देखा, तो उसने सोचा कि पीछे के दरवाजे से प्रवेश करना ही बेहतर होगा। उसने सोचा था कि इतनी भीड़ देखकर उसकी माताजी का जीवन समाप्त हो चुका होगा। लेकिन जब वह अंदर आया, तो वहाँ का दृश्य बिल्कुल अलग था। घर की सभी गायें और बछड़े साफ किए हुए और रंगोली से सजे फर्श पर खड़े थे। वेंकटरमण पूजा की सामग्री तैयार कर रहा था। माता दालों के ढेर के पास बैठी नारियल के टुकड़े कस रही थी। कलिंग को मृत्यु से पहले गोदाना करने की प्रथा का ज्ञान था। लेकिन उनकी माता ने घर की सारी गायें और बछड़े इस तरह क्यों दान कर दिए? इस प्रश्न के उठने से पहले ही उनके मन में इसका उत्तर आ गया था। यद्यपि उनके आत्मसम्मान ने उन्हें वहाँ से चले जाने और खेत लौट जाने के लिए कहा, फिर भी वे अपने कदम नहीं उठा पा रहे थे। कोई अथाह शक्ति उन्हें इस दृश्य से बांधे हुए थी।

'क्या हम शुरू करें?' वेंकटरमण ने पूछा, जिस पर यांगता गौड़ा ने कहा, 'हम्म, हाँ।' एक स्त्री गई और गाढ़े घी से भरा एक बड़ा जलता हुआ मिट्टी का दीपक लेकर लौटी। माता अभी भी नारियल घिस रही थीं। वेंकटरमण ने भगवान गणेश की पूजा में उच्चारित शुक्लंबरधरम विष्णुम मंत्र का जाप करने के बाद संकल्प लिया: उन्होंने यह गंभीर प्रतिज्ञा की कि वे वेदों और पुराणों में वर्णित धार्मिक पुण्य प्राप्त करने के लिए विभिन्न पवित्र ग्रंथों में वर्णित विधि से उस शुभ समय और दिन पर गायों की पूजा करने जा रहे हैं। फिर उन्होंने ध्यान, आह्वान और स्थापना के मंत्रों का जाप किया, पैर, हाथ धोने और पीने के लिए जल की व्यवस्था की और इन चरणों से संबंधित सभी अनुष्ठान किए। फिर उन्होंने स्नान के लिए जल अर्पित किया और वस्त्र प्रदान किए। फिर वे खड़े हुए और प्रत्येक गाय पर चंदन का लेप लगाते हुए उचित मंत्र का जाप किया। उन्होंने तैयव्वा की ओर मुड़कर कहा, 'माँ, अब मैं न्यास मंत्र का जाप करूँगा, जिसका अर्थ है गाय के शरीर के प्रत्येक अंग को मन ही मन एक देवता से जोड़ना। ध्यानपूर्वक सुनिए। मैं ब्रह्मा और विष्णु को सींगों के आधार पर, सभी पवित्र नदियों को सींगों के शीर्ष पर, और महादेव या शिव को माथे पर स्थापित करता हूँ।' उन्होंने साथ ही साथ अपने द्वारा जपे जा रहे मंत्रों का अर्थ समझाया और बताया कि गाय के किस अंग में कौन सा देवता या देवी निवास करते हैं। तैयव्वा आँखें फाड़कर प्रत्येक गाय को ऐसे

देख रही थीं मानो उसके शरीर में विराजमान देवता उन्हें प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे रहे हों।

फिर, धूप और दीपक जलाने के बाद, देवता को नैवेद्य अर्पित किया गया, जिसके बाद परिक्रमा और जल अर्पण किया गया। वेंकटरमण ने पूछा, 'गाय की पूजा सभी प्रकार से पूर्ण हो गई है। अब क्या हम दान शुरू करें?'

तयाव्वा ने अपनी आँखें ऐसे घुमाईं मानो कह रही हो, 'कृपया शुरू करो।' अत्यधिक कमजोरी से ग्रस्त होने के बावजूद, वह एक तरफ झुककर सब कुछ पैनी नज़र से देख रही थी। उसके चेहरे पर हमेशा दिखने वाली थकान और दर्द अब गायब हो गया था। कलिंगा पिछले दरवाजे के पास दीवार से टिककर सब कुछ देख रहा था।

Venkataramana chanting the mantra:

दुनिया बुराई से भरी हुई है और देवता भी दुनिया में मौजूद हैं।

गाय मेरी माता है, बैल मेरे पिता हैं, इस संसार में शुभता स्थापित हो।

फिर उसने एक गाय और उसके बछड़े को खोलकर इस प्रकार रखा कि उसकी पूंछ तैयव्वा के पास रहे। वह उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ गया, एक बर्तन में घी भरा और उसमें सोने का टुकड़ा डाल दिया। फिर उसने गाय की पूंछ को बर्तन के साथ पकड़कर तैयव्वा को उसे छूने के लिए कहा। पास खड़ी महिलाओं ने तैयव्वा को बिठाया, उसका हाथ ऊपर उठाया और तैयव्वा ने घी के बर्तन और गाय की पूंछ दोनों को छुआया।

यज्ञ की पवित्र अग्नि सबसे शक्तिशाली अग्नि होती है।
विश्वरूपः परूदेवः प्रियतामन्या गावा ||

यह जपते हुए वेंकटरमण ने जल से भरी चम्मच तैयव्वा के हाथ से छुई और फिर जल को अपनी हथेली पर डाला। फिर उन्होंने कहा, 'देखो। अब तुम्हें मन में ये शब्द सोचने हैं: गोमाता, तुम मेरा ही रूप हो। तुम और मुझमें कोई विच्छेद नहीं है। इसलिए, आज तुम्हें दान देकर मैंने स्वयं को दान दिया है। यावैयोयम सोहमदैव भावोयुष्मान्दत्वा चहमात्मा प्रदाता।' फिर उन्होंने तैयव्वा के हाथ से घी का पात्र और गाय की पूंछ लेकर उसे अपने हाथ में थामते हुए तैयव्वा से कहा, 'मैं गाय से कहता हूँ: तुम जो सौम्य और

उग्र दोनों रूप धारण कर सकती हो, अब इस दानदाता का मन तुम पर नहीं लगा है। इसका अर्थ है, आसक्ति का भाव समाप्त हो गया है। अब तुम मेरे स्नेह और आसक्ति का विषय बन गई हो। इसलिए, कृपया वांछित समृद्धि प्रदान करो और दानदाता और मुझ पर कृपा करो।'

गोदाना अब पूरा हो गया था। इसके बाद, बाकी गायों को एक-एक करके लाया गया। तैयव्वा अपना हाथ उनकी पूंछों को छूतीं, जिसके बाद वेंकटरमण उन्हें अपने हाथ में उठा लेते। सभी गायों को स्वीकार करने के बाद, उन्होंने कहा, 'माता गौड़ा, आप इन्हें बाहर ले जाकर खड़ी हो जाइए। मैं सभी को तीर्थ और प्रसाद दूंगा।' गायें अपने बछड़ों के साथ बाहर चली गईं। वेंकटरमण ने अपनी उंगली से तैयव्वा के माथे पर चंदन का पेस्ट लगाया और प्रसाद के रूप में उनके दाहिने कान पर एक कनेर का फूल रखा। फिर, उन्होंने एक चम्मच तीर्थ उनके मुंह में डाला। उन्होंने मंदिर से लाए गए प्रसाद को माता गौड़ा के नारियल और गुड़ के मिश्रण में मिलाया और तैयव्वा को एक चुटकी खिलाया। इसके बाद, वहां एकत्रित सभी लोग आगे आए और तीर्थ और चंदन का पेस्ट ग्रहण किया। वेंकटारमणा स्वयं उठे और सभी को प्रसाद बाँटा। उन्होंने दीवार से टिके हुए कलिंग की ओर देखा तक नहीं, न ही उन्हें प्रसाद दिया। कलिंग अभी भी हिल-डुल नहीं पा रहे थे और वहीं जड़वत खड़े रहे।

सब कुछ समाप्त होने के बाद, वेंकटरमण ने कहा, 'माँ, अब मैं चलता हूँ।' जहाँ वह सो रही थी, वहाँ से तैयव्वा ने सिर हिलाकर उन्हें नमस्कार करने का संकेत दिया। वह आगे बढ़े और उनके सिर के पास खड़े हो गए। उनके आसपास की महिलाओं ने उनके दोनों हाथ उठाकर उनके चरणों पर रख दिए। पतले सरकंडे के कंकाल जैसे उनके मुरझाए हुए सफेद हाथ जब उनके चरणों को छू रहे थे, तो तैयव्वा ने अपनी आँखें बंद कर लीं। वेंकटरमण को आशीर्वाद देने के लिए उपयुक्त मंत्र याद नहीं आ रहे थे। उन्होंने एक मिनट तक मंत्र याद करने की कोशिश की, लेकिन वह उनके स्मृति से ओझल हो गया। लेकिन जैसे उनके भीतर कुछ उमड़ आया हो, वे अचानक हँस पड़े। उनकी आँखों में आँसू भर आए थे।

'आप मेरी माँ के समान हैं, मैं आपको क्या आशीर्वाद दे सकता हूँ? आपने अपने पूरे जीवन में कभी कोई पाप नहीं किया। आप सचमुच गुणी हैं। गाय की तरह आप बोल नहीं सकतीं और गाय की तरह ही आपने पुण्यमय निष्कलंक जीवन व्यतीत किया है। फिर भी, क्योंकि आपने मुझे नमस्कार किया है, मुझे आशीर्वाद के कुछ

शब्द अवश्य कहने चाहिए। आपने अब और न जीने का निश्चय कर लिया है। अपने हृदय की इच्छा अनुसार आप इस दुनिया से विदा हो जाएँ। आपको शीघ्र और शांतिपूर्ण मृत्यु प्राप्त हो, जिसमें कोई कष्ट न हो। आपकी आत्मा गाय के गर्भ में प्रवेश करे।'

इतना कहकर वह नीचे झुका, उसके दोनों हाथ पकड़े और उसे आराम से पलंग पर लिटा दिया। कलिंग वहीं खड़ा रहा। वेंकटरमण ने उसकी ओर देखा तक नहीं। उसने प्रसाद का पात्र लिया और बाहर आ गया। उसने माता गौड़ा के हाथों में पकड़ी हुई गायों की सभी रस्सियों को एक साथ बांधा और गोमती मंत्र का जोर से जाप करते हुए चला गया।

गावः सुरभ्यो नित्यं गावो गुगुला गन्धिकाः |
गावः प्रतिष्ठित भूतानां गावः स्वास्थ्ययानं महत् ||
मुझे सर्वश्रेष्ठ दो
पावनं सर्व भूतानां रक्षन्ति च वहन्ति च ||

वेंकटरमण मंत्र का जाप करते हुए ऊंचे स्वर में आगे बढ़ते रहे और खुद को भूल गए।

गायों के खुरों से धूल उड़ती हुई उसके पीछे-पीछे चल रही थीं। छोटे बछड़े उनके पीछे दौड़ते हुए और अपनी माताओं के थनों से दूध पीते हुए, खुश और चंचल होकर चल रहे थे।

खंड 16

1

वेंकटरमण के चले जाने के बाद भी कलिंग खड़े रहे। किसी ने उनसे बात नहीं की। घर के बाहर जमा हुए लोगों ने प्रसाद खाया, हाथ धोए और अपने-अपने घर चले गए। तैयव्वा के पास बैठी महिलाओं से यांगता गौड़ा ने कहा, 'आप सब यहीं रुकिए। शायद आज शाम या कल सुबह इस शरीर से प्राण निकल जाएँगे। मैं थोड़ी देर के लिए घर

जा रहा हूँ, खाना खाकर वापस आ जाऊँगा। इसे थोड़ा दूध पिला दीजिए।' तैयव्वा को नींद आ रही थी। जब उन्होंने उसके कंधे हिलाकर पूछा, तो उसने कहा कि उसे कुछ खाने की इच्छा नहीं है।

कलिंग के दिल में एक अजीब सी बेचैनी उठी। वह अपनी माँ के पास बैठकर उनसे बातें करना चाहता था। लेकिन अगर माँ ने जवाब नहीं दिया, तो उसे अपमानित महसूस होगा। न ही वह इन सभी महिलाओं के सामने अपमानित होना चाहता था। न ही वे उठकर जाने का कोई संकेत दे रही थीं। उसने सोचा कि वह उनसे जाने के लिए कह दे और बताए कि वह अपनी माँ का ख्याल रखेगा। लेकिन अगर वे व्यंग्य से जवाब देतीं, 'तुम्हारे द्वारा इतने दिनों तक उनकी देखभाल करने के कारण ही तुम्हारी माँ की यह हालत हुई है', तो यह कहीं अधिक अपमानजनक होता।

अभी भी एक ही जगह पर जड़वत खड़ा, उसमें पीछे मुड़कर जाने की भी हिम्मत नहीं थी। उसे उस शक्ति का एहसास ही नहीं था जिसने पिछले तीन घंटों से उसे एक कैदी की तरह वहीं जकड़ रखा था। आखिरकार, उसने अपने पूरे साहस को इकट्ठा किया और ज़बरदस्ती अपने पैर उठाकर पिछले दरवाजे से बाहर निकल गया। घर के पीछे बना विशाल, पुराना खलिहान, जो उसके दादाजी के ज़माने से खड़ा था, उसमें एक भी गाय नहीं बची थी। बची हुई कुछ गायों में से आखिरी गाय भी आज दान में दे दी गई थी। बैल चरने के लिए बाहर गए हुए थे। एक मिनट तक वहीं खड़े रहकर उसने एक तीव्र भावना का अनुभव किया। लेकिन इससे पहले कि वह भावनाओं में बह जाता, उसने अपने सामान्य मन को संभाला और खुद पर काबू पाया। फिर उसने बाहर छोड़े हुए जूते पहने और गाँव के पिछले रास्ते से बाहर निकल गया। वह नाले को पार करके अपने नए खलिहान तक पहुँचा। लेकिन वहाँ रुकने की इच्छा न होने के कारण, वह अपने फार्महाउस की ओर चल पड़ा।

कुएँ पर काम चल रहा था। नौकर ऊपर आ रहे पानी को निकाल रहे थे और और भी गहरा खोद रहे थे। पास ही ईंटों का ढेर था जो उसी सुबह आया था। कलिंगा सीधे अंदर गया और पलंग पर लेट गया। हिल्डा अंदर आई और बोली: 'प्यारे, तुमने दोपहर का खाना भी नहीं खाया है। उठो।'

मुझे खाना नहीं चाहिए।

‘अरे, तुमने वहाँ कुछ खाया था क्या? तुम्हारी माँ अब कैसी हैं?’

वह आज या कल मर जाएगी।

‘हम उसे मरने क्यों दें? क्या हम डॉक्टर को नहीं बुला सकते? या क्या हम एम्बुलेंस बुलाकर उसे जिला अस्पताल में भर्ती नहीं करा सकते?’

‘नहीं, नहीं, तुम नहीं समझोगे। अब चुप रहो,’ उसने यह इशारा करते हुए कहा कि वह बात नहीं करना चाहता।

‘माफ़ कीजिए, कृपया शांत हो जाइए,’ उसने कहा और वहां से चली गई।

वह शाम को भी नहीं उठा; न ही उसने कुछ खाया। उसे हार का गहरा एहसास हो रहा था। उसकी इच्छाशक्ति खत्म हो चुकी थी। जब वेंकटरमण दान ग्रहण कर रहे थे, तब उसके मन में एक विचार आया: आगे बढ़कर गाय की पूंछ पकड़ लेना और दान की रस्म में शामिल हो जाना। लेकिन अगर उसने ऐसा किया होता और वेंकटरमण ने चिल्लाकर कहा होता, 'मैं उस गाय को नहीं लूंगा जिसे इस नीच ने छुआ है,' तो उसका क्या हश्र होता? डर के मारे वह रुक गया। पूजा के दौरान उसने कई बार वापस लौटने का भी सोचा। लेकिन ऐसा करने की हिम्मत उसमें नहीं थी। अंततः, वह एक शक्तिहीन, सुस्त अपाहिज की तरह था जो रस्म में भाग लेने में असमर्थ था—न सहायता करने में और न ही विरोध करने में। वह बस दूर से देखता रहा और उस जगह से निकलने के लिए भी उसे संघर्ष करना पड़ा। क्या मुझे फिर से वहाँ जाना चाहिए? उसने सोचा। वह जगह, वह वातावरण, और उसकी माँ अपनी मृत्युशय्या पर। उन्हें उनके प्रति एक विचित्र आकर्षण महसूस हुआ, लेकिन उनमें उठकर गांव की ओर चलने का मानसिक संतुलन नहीं था।

पहले तो उसने खाने के लिए मना कर दिया। लेकिन यह सोचकर कि हिल्डा नाराज़ हो जाएगी, वह उठकर खाने की मेज़ पर बैठ गया। जब हिल्डा ने देखा कि उसका बात करने का मन नहीं है, तो वह भी चुप हो गई। जब जैक ने अपने पिता से बात करने की कोशिश की, तो हिल्डा ने उसे चुप करा दिया।

कलिंग को रात में नींद तो आई। लेकिन वह समझ नहीं पा रहा था कि यह सचमुच नींद थी या बेहोशी की अवस्था। शांति से सोने के लिए मानसिक स्थिरता और दृढ़ इच्छाशक्ति का होना ज़रूरी है। उसके मामले में, ये दोनों ही कमज़ोर पड़ गए थे। फिर भी, उसने जागते समय होने वाली चिंताओं के बिना रात गुज़ारी।

वह सुबह उठा, चेहरा धोया, कॉफी पी और खलिहान चला गया। उसने जमाल का काम करने के लिए एक और व्यक्ति को ढूंढ लिया था, जो लगभग पच्चीस वर्ष का एक लिंगायत युवक था। मल्लेशी तालुक में मोटर सर्विस बस में सफाईकर्मी का काम

करता था। उसके माता-पिता नहीं थे। उसने मोटर चलाना सीखा था और ट्रैक्टर चलाना जानता था। जब कलिंग ने उसे पचहत्तर रुपये मासिक वेतन, मुफ्त भोजन, नाश्ता और रहने की जगह की पेशकश की, तो मल्लेशी उसके साथ चला गया। शुद्ध शाकाहारी होने के कारण वह अपना खाना खुद बनाता था। वह कभी-कभी होटल में खाना खाता था, लेकिन उसने कलिंग के घर में कॉफी को कभी छुआ तक नहीं।

जब कलिंग वहाँ पहुँचे, तब तक मल्लेशी मशीन से गायों का दुहना देख रहे थे। वे नौकरों को डिब्बों में दूध भरकर सड़क पर ले जाते हुए देख रहे थे। मल्लेशी दुहने वाली मशीन की नलियाँ धो रहे थे। आठ बजे पहाड़ी पर स्थित मंदिर की बड़ी घंटी बजी। अपना काम रोककर मल्लेशी पहाड़ी की ओर मुड़े, आँखें बंद कीं, हाथ जोड़े और वहीं खड़े रहे। वे तब तक खड़े रहे जब तक घंटी की आवाज़ धीमी होकर सुनाई देना बंद नहीं हो गई। फिर उन्होंने अपना काम फिर से शुरू किया। कलिंग मल्लेशी के बारे में जानने के लिए उत्सुक हो गए। उन्होंने खाकी रंग की निकर और आधी बाँह की चेक शर्ट पहनी थी, कमर पर बेल्ट बाँधी थी। वे मोटरबाइक चला सकते थे। बस सेवा में काम करने के कारण वे उर्दू भी बोलते थे। वे बीड़ी पीते थे। लेकिन कलिंग को यह नहीं पता था कि मल्लेशी में इतनी गहरी धार्मिक आस्था है।

उससे एक शब्द भी बोले बिना कलिंग घर चला गया। नौकर कुएँ पर काम कर रहे थे। हिल्डा उनके काम की देखरेख कर रही थी। वहाँ खड़े-खड़े ऊबकर कलिंग अंदर गया और लेट गया। अकेलापन और उसका परिणाम, उदासी, उसे घेर लिया।

सुबह दस बजे तक हिल्डा अंदर आई और बोली: 'देखो, आज तो बहुत सारे लोग मंदिर जा रहे हैं। क्या आज कोई विशेष पूजा है? मैंने पुजारी को अपना काम खत्म करके काफी देर पहले लौटते देखा था।'

कलिंगा उठा और बाहर आया। दो सौ से अधिक लोग—पुरुष, महिलाएं, बूढ़े—बाहरी रास्ते से कल्याणी की ढलान पर चढ़ रहे थे। वे सभी उसके गाँव के थे। आज क्या खास था? उसने अपनी नज़र आगे की ओर घुमाई। चार लोग एक शव को अर्थी पर ले जा रहे थे। अब सब स्पष्ट हो गया था। माँ का निधन हो गया है। शायद उनकी इच्छा थी कि उन्हें मंदिर के पास दफनाया जाए, न कि उनके खेतों में! इसीलिए वे उसे वहाँ ले जा रहे हैं। लेकिन उनके मुँह में मिट्टी कौन डालेगा और कब्र कौन भरेगा? क्या गाँव वाले कम से कम इस रस्म के लिए उसे नहीं बुला सकते थे? क्या उन्हें पता नहीं है

कि मैं यहीं हूँ? या मुझे खुद वहाँ जाना चाहिए? उसने सोचा। लेकिन फिर उसे कल का अनुभव याद आया और वह वहीं खड़ा रहा।

इसी बीच, उसके कुएँ पर काम कर रहे लगभग बीस नौकर दौड़ते हुए उसके पास से गुज़रे और शव ले जा रहे लोगों के साथ शामिल हो गए। उनमें से कोई भी कलेनहल्ली का नहीं था। वे आस-पास के अन्य गाँवों से थे। वे तैयव्वा को सीधे तौर पर नहीं जानते थे। लेकिन क्योंकि वह बड़े गौड़ा की बहू थी, या एक नेक बुज़ुर्ग महिला थी, या उस घर की मालकिन थी जिसने वह मंदिर बनवाया था, इसलिए वे सभी बिना बुलाए भी अपनी मर्ज़ी से चले गए। और शव के प्रति सम्मान के प्रतीक के रूप में, उन्होंने उस पर मुट्ठी भर मिट्टी डाली। तब तक समूह चोटी पर पहुँच चुका था। अकेला मल्लेशी पीछे से दौड़कर समूह में शामिल हो गया। मल्लेशी को यहाँ आए और काम पर लगे हुए केवल बीस दिन ही हुए थे। उसका कलेनहल्ली से कोई संबंध नहीं था। उसकी जाति अलग थी, उसका ज़िला अलग था। क्या वह केवल अंतिम संस्कार देखने गया था? या वह वहाँ कुछ मिट्टी डालकर शव के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करने गया था?

कलिंग वहाँ खड़े नहीं रह सके। वे घर आकर लेट गए। हिल्डा अंदर आईं और बोलीं, “नौकरों ने मुझे बताया कि आपकी माँ का निधन हो गया है। क्या यह सच है?”

'हाँ।'

‘गांव वालों को तुम्हें फोन करना था, है ना?’

उन्होंने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

‘प्रिय, आपको बुलाए बिना शव का अंतिम संस्कार करने का उन्हें क्या अधिकार है? आप इसके लिए उनके खिलाफ कार्रवाई कर सकते हैं।’

‘हिल्डा, तुम यह नहीं समझोगी। बस चुप रहो।’

‘तुम सिर्फ इतना कहते हो कि मुझे समझ नहीं आ रहा, पर मुझे समझाओगे नहीं। बताओ, बात क्या है?’

‘अभी मेरा बात करने का मन नहीं है। बस चुप रहो।’

'मुझे माफ कर दीजिए', उसने कहा और जैक को साथ लेकर रसोई में चली गई।

दोपहर लगभग साढ़े बारह बजे, मल्लेशी ने अपनी झोपड़ी का दरवाजा खोला और अंदर चले गए, शायद खाना बनाने के लिए। टिन का दरवाजा हर बार खुलने और बंद होने पर ज़ोरदार आवाज़ करता था। पहले गाय के गोबर और मूत्र से शुद्ध

करने के बाद, मल्लेशी उसी झोपड़ी में रहने लगे जिसमें पहले जमाल रहता था। उनका भोजन तय नहीं था। अगर सिर्फ दही और चावल होते, तो ठीक था। अगर उनका मन होता, तो वे सब्जी का शोरबा बनाकर रागी के साथ खाते। अन्यथा, वे चावल के आटे की रोटियाँ बनाकर नारियल की चटनी के साथ खाते। लेकिन चाहे उन्हें कितनी भी भूख लगी हो, उन्होंने कलिंग के घर का बना एक निवाला भी नहीं खाया।

कलिंग अपनी झोपड़ी में गया और पूछा: 'तुम वहाँ क्यों गए थे?'

ऐसा प्रतीत हुआ कि मल्लेशी इस प्रश्न से भयभीत हो गए। उन्होंने कहा, 'यह एक गलती थी, क्षमा करें महोदय।'

मैंने आपसे इसलिए नहीं पूछा क्योंकि यह एक गलती थी। मुझे बताओ कि उन्होंने वहां क्या-क्या किया।

हाथ में चावल का बर्तन नीचे रखते हुए उन्होंने कहा: "उन्होंने कुछ नहीं किया, महोदय। उन्होंने शव को एक बार मंदिर के सामने उतारा। फिर पूज्य पुजारी आए और दरवाजा खोला। ऐसा लग रहा था कि वे पहले ही यहाँ आकर पूजा कर चुके थे। उन्होंने शव पर एक चम्मच तीर्थ डाला और प्रसाद का फूल रखा। फिर सबने शव को उठाया और दफना दिया।"

'उन्होंने इसे ठीक कहाँ दफनाया था?'

'मंदिर के पीछे बाघ की गुफा है। उन्होंने उसके आगे एक गड्ढा खोदा और उसमें दफना दिया। क्या यह वही जगह नहीं है जहाँ बाघ ने गाय को रोककर कहा था कि मैं तुम्हें खा जाऊंगा? क्या यह वही जगह नहीं है जहाँ गाय ने वचन दिया था कि वह गौशाला जाएगी, अपने बच्चे को दूध पिलाएगी और वापस आ जाएगी?'

"लाश को दफनाने के बाद उन्होंने क्या किया?"

"पूजनीय पुजारी ने स्नान किया और फिर घी की बत्तियों से आरती की। दो बलवान पुरुषों ने कल्याणी नदी से दो-दो घड़े जल से भर लिए। फिर, सभी पुरुषों को कल्याणी नदी के किनारे बिठाकर, उन्होंने वह जल उनके सिर पर डाल दिया।"

मल्लेशी का सिर भी गीला था। उसकी खाकी निकर और चेक वाली कमीज़ झोपड़ी के सामने रस्सी पर सूखने के लिए फैलाई गई थी। अब उसने धोती का एक टुकड़ा और सफेद कमीज़ पहनी हुई थी। कलिंग ने आगे कुछ नहीं कहा। वह घर

लौट आया। जब उसने मंदिर की ओर मुड़ा, तो ऐसा लगा कि वहाँ आए सभी लोग जा चुके थे।

2

तैयव्वा की मृत्यु के ग्यारहवें दिन कुएँ पर काम करने कोई नहीं आया। कलिंग के लिए इसका कारण समझना मुश्किल नहीं था। यह अप्रत्याशित भी नहीं था। लेकिन कलिंग ने इस बारे में ज़रा भी नहीं सोचा था। उसी दिन उनकी माताजी का श्राद्ध होना था। गाँव के लोग खर्चे के लिए पैसे इकट्ठा करके स्वयं ही श्राद्ध करेंगे। या फिर वे अपने घरों में रखे अनाज और दालें निकालकर उनका उपयोग करेंगे। लेकिन कलिंग को किसी ने आमंत्रित नहीं किया। और अगर वह अकेले जाते, तो कोई उनसे बात तक नहीं करता।

उस सुबह करीब आठ बजे, लगभग दस-पंद्रह बैलगाड़ियाँ कलेनाहल्ली से पहाड़ी की ओर गईं। वे बड़े-बड़े बर्तनों, किराने के सामान से भरी बोरियों और लकड़ियों से लदी हुई थीं। कलिंग ने उन्हें अपने नए खलिहान की ओर जाते समय देखा। वह समझ गया कि वे मंदिर के पास अनुष्ठान करेंगे। जब उसने मल्लेशी को दूध के डिब्बे मोटर में रखकर लौटते देखा, तो उसने पूछा: 'आज मंदिर के पास क्या होगा?'

ऐसा लगता है कि सुबह से ही मंदिर में पूजा-अर्चना शुरू हो जाएगी। शाम को आसपास के गांवों से आने वाले सभी लोगों के लिए भव्य भोज का आयोजन होगा। सभी जातियों के लगभग पांच-छह हजार लोग वहां इकट्ठा होंगे। मेरी जाति के लोगों के लिए भी अलग से भोज तैयार किया जाएगा। मैं वहां भोजन करने जाऊंगा।

कलिंग ने उससे आगे कोई सवाल नहीं किया। वह घर चला गया। हिल्डा रसोई में थी। उसने उससे कहा: 'चलो। तालुक या किसी और जगह चलते हैं, सरकारी खानाबदोश बंगले में ठहरते हैं और कल लौट आते हैं।'

'यह अचानक से क्या हो गया?'

ऐसा लगता है कि वे मेरी मां के अंतिम संस्कार यहीं, मंदिर के पास करेंगे। शाम को लगभग छह हजार लोगों के लिए भोज है। न तो वे हमें आमंत्रित करेंगे और न ही अगर हम खुद वहां जाएं तो वे हमारे साथ घुलेंगे-मिलेंगे। किसी कारणवश, मुझे यहां रहना ठीक नहीं लग रहा है। यह हमारे लिए भी एक तरह का बदलाव होगा।

‘हमें डरकर यह जगह क्यों छोड़नी चाहिए? हमें अपने ही घर में रहने के लिए किसी से डरने की क्या जरूरत है?’

‘यह डर नहीं है। अगर मैं यहाँ रहूँगी तो मुझे शांति नहीं मिलेगी। बस आ जाओ।’

हिल्डा अब सात महीने की गर्भवती थी। लेकिन मोटरगाड़ी से यात्रा करने पर कोई प्रतिबंध नहीं था। जैक कुछ समय से उदास रहने लगा था। जमाल और उसकी पत्नी के चले जाने के बाद उसका कोई साथी नहीं बचा था। नवनिर्वाचित मल्लेशी जैक के प्रति स्नेह नहीं दिखाते थे।

दस बजे एक मोटरबाइक आई। दरवाजा बंद करके और मल्लेशी को घर की सावधानीपूर्वक रखवाली करने का निर्देश देकर वे सड़क पर पहुँचे। हिल्डा ने पूछा: ‘मुझे इन लोगों के तौर-तरीके बिल्कुल समझ नहीं आते। वे कहते हैं कि इस देश में खाने की बहुत कमी है। लेकिन यहाँ जो सामूहिक, सार्वजनिक भोज होते हैं, वैसे कहीं और नहीं होते। शादी में चार हज़ार लोग आते हैं। मृत्यु में भी चार हज़ार। अब आप कहते हैं कि आज छह हज़ार लोग इकट्ठा होंगे। हमारे यहाँ तो थाली, कांटे और चम्मच का भी इंतजाम करने की जरूरत नहीं पड़ती। वे जंगल के पत्ते पर खाना परोसते हैं। यह सच है, यह बहुत आसान है। लेकिन इतने सारे लोगों को खाना खिलाने की ज़रूरत ही क्या है?’

कलिंग को पता था कि लोग इस सवाल का क्या जवाब देंगे। लेकिन खुद उनमें उसे समझाने की हिम्मत नहीं थी। उसने पूछा, 'क्या यह सब व्यर्थ नहीं है?' इस पर उन्होंने न हां कहा, न ना। वह चुप हो गई, यह सोचकर कि शायद वह बात करने के मूड में नहीं हैं।

हिल्डा ने तालुक की महिला डॉक्टर से अपनी जांच करवाई। अब वहां एक सिनेमा हॉल खुल गया था। तीनों वहां गए। यह एक कन्नड़ फिल्म थी। इसमें भी देवी-देवताओं, ऋषियों, जानवरों के संवाद और हजारों लोगों के एक साथ भोजन करने के दृश्य थे।

उस रात और अगली दोपहर को ट्रैवलर्स बंगलो में बिताने के बाद, वे शाम की मोटरबाइक से अपने फार्महाउस लौट आए। जब मल्लेशी शाम का काम खत्म करके अपनी झोपड़ी में लौटा, तो कलिंग ने पूछा: 'कल सब कैसा रहा?'

“बहुत खूब। उन्होंने तो भव्य उत्सव का आयोजन किया था। धोती, तांबे के बर्तन, थालियाँ... हर तरह के उपहार। माताजी ने मरने से पहले ही गोदाना संस्कार कर लिया

था। पूज्य पुजारी ने कहा कि उन्हें वैतरणी नदी पार करके स्वर्ग जाने के लिए और कोई उपहार देने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने गाँव को एक बैल दान कर दिया।"

'बछड़ा किसने दिया?'

'कोई नहीं। जब माता ने सारी गायें दान कीं, तब एक अनाथ बछड़ा था।' अचानक मल्लेशी चुप हो गया। उसे दूसरे नौकरों से पता था कि यह वही बछड़ा है जिसकी माँ को उसके स्वामी के घर में मार डाला गया था। जब कलिंग ने खुद पूछा, 'ठीक है, बताओ,' तो उसने कहा: 'उन्होंने इसकी दोनों जांघों पर त्रिशूल का चिन्ह उकेरा। फिर उन्होंने इसे खोलकर आज़ाद कर दिया। फिर भी, यह अपने साथ वाली गाय का थन चूसता हुआ इधर-उधर घूमता रहा। पूज्य पुजारी ने कहा, "इसे एक साल तक ऐसे ही रहने दो। फिर हम इसे चरागाह में छोड़ देंगे। इसके बावजूद, लगता है कि वे इसके गले में रस्सी नहीं बाँधेंगे।"

'और क्या हुआ?'

'और कुछ नहीं।'

'क्या मेरे बारे में चर्चा हुई?'

मल्लेशी ने कोई जवाब नहीं दिया। कलिंग के दोबारा पूछने पर भी वह वैसे ही बने रहे। 'कोई बात नहीं, बताइए, मुझे आपसे कोई नाराज़गी नहीं होगी।' जब कलिंग ने तीसरी बार ज़ोर दिया, तो मल्लेशी ने कहा: '"वह कैसा खानदानी है? दादाजी ने गाय के लिए मंदिर बनवाया। यह नीच आदमी गाय को मारकर खा जाता है। जो मरी है वह एक नेक औरत है। उसे ज़रूर स्वर्ग मिलेगा। यह नीच आदमी और उसकी पत्नी... दोनों के मुँह में कीड़े गिरेंगे। खाते समय वे ये और भी बहुत सी बातें कह रहे थे।'

'कौन?'

'उन सभी को।'

फिर होन्ना वहाँ पहुँचा। अब तक वह उस ज़मीन पर खेती कर रहा था जो वेंकटरमण को बटाईदारी के तौर पर दी गई थी। अब ऐसा लग रहा था कि उसने कल ही अपना सिर मुंडवा लिया था। वह कलिंग से कुछ दूरी पर खड़ा होकर बोला: 'खेत में रागी और सेम हैं। हमें पुष्य माह के आसपास, लगभग दिसंबर तक, दलदली ज़मीन में बीज बोने हैं। खेत में नारियल पक गए हैं। हमें उन्हें काटना है। मैं उन्हें कहाँ रखूँ?'

'कौन सा आर्द्रभूमि, कौन सा खेत, यार?'

‘वेंकटरमण का। जोई ने मुझसे कहा, “मैंने ये सारी जमीनें उसे लौटा दी हैं, अब से तुम इस मामले में उससे बात करो।”’

उन्होंने यह कब कहा?

आज से बारह दिन पहले। फिर, माँ के निधन के बाद, मैं लकड़ियाँ काटने, सामान का इंतज़ाम करने और बहुत सारे दूसरे कामों में व्यस्त हो गया। मैं खेतों में कभी नहीं गया। आज सुबह जब मैं जोइस के घर गया, तो उन्होंने कहा, “क्या मैंने तुम्हें उस दिन नहीं बताया था, यार? मैंने वो ज़मीनें छोड़ दी हैं। तुम्हें जो भी पूछना हो, उस आदमी से पूछ लो।”

कलिंगा को समझ नहीं आ रहा था कि होन्ना को क्या जवाब दें। अचानक उन्हें चक्कर आने लगे और उन्हें एहसास हुआ कि अगर वे वहीं खड़े रहे तो गिर जाएंगे। वे जल्दी से घर गए और सोफे पर लेट गए। जब वे संभले, तो पाँच मिनट के भीतर होन्ना फिर उनके सामने आ गए। कलिंगा ने कहा, 'मैं तुम्हें बाद में बुला लूँगा। तुम अब जाओ,' और उन्हें गाँव भेज दिया। उनके जाने के बाद, कलिंगा उठे, मल्लेशी की झोपड़ी में गए और पूछा, 'इस होन्ना ने अपना सिर क्यों मुंडवा लिया है?'

‘उन्होंने कल माताजी के अंतिम संस्कार के लिए अपना सिर मुंडवाया था। यांगता गौड़ा ने पूछा कि पुत्र की जगह कौन लेगा और यह रस्म कौन निभाएगा। उन्होंने कहा, “मेरे प्रिय, माताजी ने मुझे दूध और घी पिलाकर पाला-पोसा है। मैं उनका पुत्र हूँ। मैं अपना सिर मुंडवा लूँगा।” पूज्य जोइस ने सहमति दे दी।’

कलिंगा को एक बार फिर अपने शरीर में गहरी बेचैनी महसूस हुई। उसे डर था कि कहीं उसे फिर से चक्कर न आ जाएं, इसलिए वह घर लौटकर सोफे पर लेट गया। जैक भी वहाँ आया और उसकी जांघों से टिक गया। वह अपने पिता के मन में उमड़ रहे दुख को समझ नहीं पा रहा था। खाने-पीने और खेलने के लिए कोई न होने के कारण वह चुपचाप उसके पास आ गया। उसके पिता ने कहा, 'मेरी तबीयत ठीक नहीं है। तुम अंदर जाओ और अपनी माँ के साथ रहो।'

फिर यांगता गौड़ा का पुत्र माता बाहरी द्वार पर आया और उसके सामने खड़ा हो गया। उसने घुटनों तक आने वाली शॉर्ट्स, हरी आस्तीन की कमीज और पैरों में मोटी चप्पलें पहन रखी थीं। उसने लाल बालियां पहन रखी थीं। उसकी दाहिनी कोहनी के ऊपर अंगूठे जितनी मोटाई का सोने का कंगन चमक रहा था। उसके मोटे होंठ कसे हुए थे और हाथ में एक लंबी बांस की छड़ी थी। उसके हावभाव से ऐसा लग रहा था

कि वह लड़ाई के लिए आया है। लेकिन उसने भड़काऊ भाषा का प्रयोग नहीं किया। उसने अपनी शॉर्ट्स की जेब से एक बड़ी चाबी निकाली, उसे कलिंग के सामने फेंका और कहा: 'तुम्हारा घर बंद है। जाओ, दरवाजा खोलो और जो कुछ भी अंदर है ले जाओ। इतने दिनों से तुम्हारे घर में बैल बंधे हुए थे। मेरे पिता ने कल तुम्हारे नौकरों से कहा था, "इन्हें गौशाला में बांध दो या इनके साथ जो चाहो करो। अगर तुम चाहो तो इन बैलों को काटकर खा भी सकते हो।'

माता आधे मिनट के लिए चुप हो गए। कलिंग ने कुछ नहीं कहा। फिर माता ने मानो कुछ याद आने पर बोलना शुरू किया: 'देखो, तुम्हारी माँ के मरने के बाद, तुम्हारे घर में सब कुछ वैसा ही है... धान, रागी, दालें, मिर्च, सब कुछ। मेरे किसी नाजायज बेटे ने इसे छुआ तक नहीं है। गाँव के सभी लोगों ने तुम्हारी माँ के अंतिम संस्कार के लिए दालें और राशन इकट्ठा किया था। अपनी श्रद्धा के प्रतीक के रूप में, होन्ना ने रागी की चार बोरियाँ, चावल की दो बोरियाँ और पचास रुपये भेंट किए। कल हम पर यह आरोप लगाने से सावधान रहना कि "मेरी माँ के मरने के बाद गाँव वाले मेरे घर से अनाज और राशन ले गए।" तुम खुद दरवाजा खोलकर सब कुछ देख लो। पूरा गाँव गवाह है कि मैंने तुम्हें यह चाबी दी है। जी हाँ!'

यह कहकर वह मुड़ा और अपना काम पूरा करने की भावना से चला गया। कलिंगा सोचने लगा कि वह बांस की लाठी क्यों लाया था। शायद उसे पहले से ही अंदाजा था कि मैं उससे झगड़ा करूंगा।

कलिंग ने पूरा दिन लेटे-लेटे बिताया, किसी से बात नहीं की। उसे ऐसा लग रहा था मानो सबने उसे छोड़ दिया हो। वेंकटरमण और गाँव के लोग ही नहीं, बल्कि यह पहाड़, इसकी तलहटी और यहाँ तक कि बहती हवा भी उसे अकेलेपन की ओर धकेल रही थी। सब उससे बहुत दूर चले गए थे। जो भी उससे मिलने आता, उसे ऐसा लगता कि वे सब बस यही कहने आते हैं कि अब उनका उससे कोई वास्ता नहीं है।

उस शाम, कोले बसवा मंडली के दो लोग उनके घर पहुँचे। उनमें से एक राम बैल और सीता गाय को लेकर चल रहा था, जो 23 या 24 वर्ष का एक युवक था। दूसरी 17 या 18 वर्ष की एक लड़की थी, जिसकी कमर पर एक बच्चा था। हिल्डा और जैक दोनों उनके अजीबोगरीब पहनावे और बैल व गाय के सजे-धजे रूप को देखते रह गए। यह सवाल सुनकर कलिंग अंदर से बाहर आए और बोले, 'क्या यह गुरु कलिंग

गोल्ला का घर है?' उन्होंने अपने बैल को संबोधित करने के अंदाज़ में पूछा, 'क्या तुम मरे हुए बूढ़े गौड़ा के पोते हो, नन्हे गौड़ा?'

'क्यों?'

“देखो, बूढ़े गौड़ा ने हमारी शादी के लिए पचास रुपये का कर्ज दिया था। हमने माता सीता की पूंछ पकड़कर उन्हें वचन दिया था। अब अपना पैसा वापस ले लो,” उसने अपनी धारीदार कोट की भीतरी जेब से नोटों का एक गट्ठा निकालते हुए कहा। फिर उसने कहा: “जब हमने पैसा लिया था, तब हमने माता सीता की पूंछ पकड़कर शपथ ली थी। अब तुम भी उनकी पूंछ पकड़कर कहो, “मैंने पैसा वापस ले लिया।””

कलिंगा चुपचाप खड़े रहे, कुछ नहीं बोले। बसवा युवक ने नोटों से भरा हाथ आगे बढ़ाते हुए पूछा, 'क्यों, छोटे गौड़ा? क्या तुम्हें पैसे नहीं चाहिए?'

मुझे कैसे पता चलेगा कि मेरे दादाजी ने आपको क्या दिया था?

‘हम आपको बिना किसी कारण के पैसे क्यों दें? ले लीजिए।’

कलिंग ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। दूसरे व्यक्ति ने जोर देकर कहा, 'पहले तुम गाय की पूंछ पकड़ो और कहो कि पैसा तुम तक पहुंच गया है।'

'अगर मैं पूंछ को न छूऊं और वो शब्द न बोलूं तो तुम क्या करोगे?'

मैं पैसे नहीं दूंगी। मैं इन पैसों से अपनी माता सीता के लिए एक धारीदार साड़ी खरीदूंगी और उन्हें पहनाऊंगी।

‘तुम्हें किसने बताया कि मैं यहाँ हूँ?’

‘हम गांव में आपके घर गए थे। गांव वालों ने हमें बताया था।’

उन्होंने और क्या कहा?

‘उन्होंने और क्या कहा, इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है। अपने पैसे ले लो।’

कलिंगा बेहद निराश हो गया। उसने सोचा, “यह कोले बसवा नाम का आदमी भी सब कुछ जानता है। गाँव वालों ने मेरे खिलाफ अपनी शिकायतें इस आदमी को भी बता दी हैं। अब ये लोग पूरे देश में ढोल पीटेंगे।” तभी हिल्डा ने कहा, “तुम उसी दिशा से आए हो, है ना? तुम ठीक कहाँ से आए हो?”

‘हम उस मंदिर में गए थे जिसे आपके पति के दादाजी ने बनवाया था। यह हमारी माता सीता का मंदिर है। हमने वहां दर्शन किए, उनके सामने प्रणाम किया और यहां आ गए।’

‘अब इसका दरवाजा किसने खोला?’

‘पूजनीय पुजारी वहीं पर हैं। वे मंदिर में बैठे मंत्रों का जाप कर रहे हैं।’

यह सुनकर कलिंग एक बार फिर निराश हो गया। उसने कहा, ‘देखो, मुझे यह पैसा नहीं चाहिए। इसे मंदिर के पुजारी को दे दो।’

‘अय्या, दादाजी का कर्ज पोते को सौंपना होगा। आप इसे ले लीजिए।’

मैं तुमसे कह रहा हूँ कि मुझे यह नहीं चाहिए।

‘भले ही तुम कहो कि तुम्हें यह नहीं चाहिए, हम नहीं मानेंगे। पुजारी ने तुम्हारे दादा द्वारा दी गई भूमि को ठुकरा दिया। क्या वह कभी इस पैसे को छुएगा?’ जैसे ही बसवा युवक ने यह कहा, उसकी पत्नी ने कहा, ‘तुम्हें इन सब बातों की चिंता क्यों है? चुप रहो।’

युवक ने कलिंग के सामने नोट रखते हुए कहा, ‘यद्यपि आपने यह नहीं कहा कि आपको धन प्राप्त हुआ है, फिर भी मैंने आपको दे दिया है। मेरी माता सीता स्वयं साक्षी हैं।’ फिर उसने बैल को इशारा करते हुए कहा, ‘आओ, राम,’ और चला गया। उसकी पत्नी माता सीता के पीछे-पीछे चली।

कलिंगा वहीं खड़े रह गए मानो उन पर बिजली गिर पड़ी हो। इस कोले बसवा को इतनी धृष्टता से बोलने का अधिकार किसने दिया? क्रोधित होकर उनका मन किया कि उसे एक थप्पड़ मार दें। लेकिन तब तक वे काफी दूर जा चुके थे। कलिंगा उनकी ओर बीस कदम चले। हिल्डा ने पूछा, 'आप कहाँ जा रहे हैं?' वे रुके और जवाब देने के लिए पीछे मुड़े। लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं सूझा। तब तक उन्हें थप्पड़ मारने का ख्याल गायब हो चुका था। वे चुपचाप घर के अंदर गए और पलंग पर लेट गए।

3

अपनी माँ की मृत्यु के बाद कलिंगा अनाथ जैसा महसूस करने लगा। माँ की मृत्यु के बाद बच्चे अनाथ हो जाते हैं; यानी, उन्हें प्यार और स्नेह से देखने वाला कोई नहीं होता। उसने ये शब्द बचपन से सुने थे। लेकिन अब उसे एहसास हुआ कि इनका अर्थ कहीं अधिक गहरा है।

वास्तव में, जब तक तैयव्वा जीवित थीं, माता-पिता के बीच कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था। पहले तो वह सोचते थे कि उस मूक स्त्री से उनकी कोई बात नहीं हो सकती। शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी उन्हें लगा कि उनसे बातचीत करने के लिए कोई विषय ही नहीं हैं। अमेरिका से लौटने और नया खेत बसाने के बाद, उनके काम के हर चरण

में उनकी माता ने विपक्ष का साथ दिया। मवेशियों को कसाई को बेचने से लेकर मंदिर के कल्याणी से पंप हटवाने तक, वह गांव वालों और वेंकटरमण के साथ खड़ी रहीं। उनके मन में उनके प्रति अनकहा क्रोध पनप रहा था। लेकिन फिर उनकी मृत्यु हो गई और उनकी मृत्यु के बाद भी गांव वालों ने उनसे दूरी बनाए रखी, उनका अंतिम संस्कार किया और आस-पास के गांवों में यह घोषणा कर दी कि अब उनका उस परिवार से कोई संबंध नहीं है।

कलिंग अपमान से जल रहा था। अगर यह महज़ एक अपमान होता, तो वह सह लेता। लेकिन वह इस भावना में डूब चुका था कि इस धरती पर, इस परिवेश में और वास्तव में, इस देश में भी उसका अपना कोई नहीं बचा है। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान, एक उत्कृष्ट खिलाड़ी के रूप में अपनी पहचान बनाने के बाद, उसने कई दोस्तों के साथ एक सक्रिय सामाजिक जीवन बिताया था। लेकिन अमेरिका से लौटने के बाद, वह घोर अकेलेपन से ग्रस्त हो गया। लेकिन जब तक उसकी माँ जीवित थी, उसका गाँव, उसका घर, गाँव के लोग, सब उसकी चेतना में बसे हुए थे। उसने दो-तीन बार सोचा था कि गाय काटने के जुर्माने की सूचना पुलिस को न दे। इससे मामला खत्म हो जाता और सब ठीक हो जाता। लेकिन फिर वह इस संदेह को दूर नहीं कर पाया कि अगर उसने ऐसा नहीं किया, तो गाँव वाले भविष्य में फिर से इसी तरह की गुंडागर्दी करने की हिम्मत जुटा लेंगे। फिर भी, इन सबके बावजूद, उसके मन में एक छिपा हुआ आत्मविश्वास था कि वह उन्हें शांत कर लेगा। लेकिन माँ की मृत्यु के साथ ही वह आत्मविश्वास भी टूट गया।

अब वह पूरी तरह से अकेला महसूस कर रहा था। नौकर उसके लिए केवल अपनी आजीविका के लिए काम करते थे। संस्कृति और विश्वास के दृष्टिकोण से वे कभी भी उसके प्रति स्नेह नहीं रख सकते थे। फिर वेंकटरमण थे। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके साथ शायद संबंध फिर से सुधर सकते थे। लेकिन अब यह संभावना भी असंभव थी। जब भी वह गांव वालों के बारे में सोचता, कलिंग को जरा भी डर नहीं लगता था। लेकिन वेंकटरमण के साथ, एक अथाह भय उसे घेर लेता था। इसी कारण उसने स्कूल की नौकरी छोड़ दी। इसी कारण उसने साहसपूर्वक भूमि अनुदान भी त्याग दिया। मैंने उसे छोड़ने के लिए नहीं कहा था। मैंने उसे केवल चेतावनी दी थी, 'यदि तुम गांव वालों का पक्ष लेते हो और मुझे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हो, तो तुम अपनी जमीन खो सकते हो,' और उसने स्वयं ही जमीन छोड़ने का निर्णय

लिया। जमीन चले जाने के बाद भी उसने पूजा-पाठ नहीं छोड़ा। वह शुरू से ही भक्ति, पूजा, परंपराओं और रीति-रिवाजों के प्रति समर्पित रहा है। हालांकि उसे खाने के लिए ज्यादा कुछ नहीं मिलता, फिर भी वह हर रोज डेढ़ मील पैदल चलकर यहां आता है और पूजा करता है। उसकी मां और पत्नी मेरे बारे में क्या सोचती होंगी!

एक दिन, कलिंग हमेशा की तरह मंदिर की ओर चल पड़े। कलेनाहल्ली के लगभग चालीस-पचास सेवक कुदाल और लोहे की छड़ें लिए किसी काम में लगे हुए थे। पास जाए बिना, कलिंग दूर से ही उन्हें देखते रहे। वे अगेव की बाड़ लगा रहे थे, जिससे खेत से कल्याणी (मंदिर) तक जाने का रास्ता बंद हो जाए और पहाड़ी के उस हिस्से को घेर लिया जाए। अब खेत से मंदिर तक कोई नहीं जा सकता था। खाइयाँ खोदने के बाद, वे उनमें अगेव के पौधे लगा रहे थे। मानो इतना ही काफी न हो, उन्होंने हर पौधे के बीच बबूल के सरकंडे लगाए थे और उनके चारों ओर बाँस के काँटों का जाल बाँध रहे थे। वेंकटरमण स्वयं इस काम की देखरेख कर रहे थे। कई महिलाएँ कल्याणी से पानी लाकर अगेव के पौधों को सींच रही थीं।

कलिंगा तुरंत समझ गया। उसे वेंकटरमण के शब्द याद आ गए: "इस तरफ आने की हिम्मत मत करना। अगर तुमने मंदिर और कल्याणी की भूमि पर कब्ज़ा करने की कोशिश की तो सावधान रहना। इसीलिए हम यह बाड़ लगा रहे हैं।" वहाँ और खड़े न रह पाने के कारण वह घर गया और पलंग पर लेट गया। अगर वह वहीं खड़ा रहता तो गाँव वाले या वेंकटरमण उसे देख लेते। लेकिन अगर वह देख लिया जाता तो क्या होता? वह इस सवाल के बारे में सोच भी नहीं पा रहा था।

वह एक घंटे से अधिक समय तक उसी स्थिति में लेटा रहा। फिर हिल्डा अंदर आई, मानो वह उसे ढूंढ रही हो, और बोली: 'तुम यहीं हो! मैंने तुम्हें हर जगह ढूंढा।'

वह चुपचाप लेटा रहा। वह उसके पास तकिए का सहारा लेकर बैठ गई और बोली: ‘देखो, मेरी डिलीवरी में सिर्फ सत्रह या अठारह दिन बचे हैं। इस दौरान यह तुम्हारा फर्ज है कि मुझे पर्याप्त आराम और मानसिक शांति मिले। तुम आजकल कुछ नहीं कर रहे हो। मैं अकेले सब कुछ कैसे संभाल पाऊंगी?’

फिर भी उसने कुछ नहीं कहा। वह बोलती रही: ‘कुएं का काम पूरा हो गया है। बस पंप लगाना बाकी है। मैं इस हालत में यह नहीं कर सकती। क्या आप सीमेंट के कामगारों को बुलाकर यह काम नहीं करवा सकते? आपके गांव वालों ने तंबाकू की फसल बर्बाद कर दी है, यानी पिछले चार महीनों से, पूरा खेत बेकार पड़ा है। इस तरह

की आर्थिक लापरवाही करने वाले किसी भी व्यक्ति का जीवन शर्मनाक है। अगर हमने पंप से पानी निकालकर खेत को गीला कर दिया होता, तो मल्लेशी ट्रैक्टर चला लेता। क्या आपने सोचा है कि इस बार हम क्या उगाएंगे?'

अब भी वह चुप था। हिल्डा ने फिर कहा: 'खैर, चिंता की कोई बात नहीं है। पिछली बार हमने खेत में खाद डाली थी, लेकिन फसल एक चौथाई उगने के बाद ही नष्ट हो गई। लेकिन खाद का सार अभी तक नष्ट नहीं हुआ है क्योंकि इन चार महीनों में मिट्टी अच्छी तरह से संरक्षित रही है। चलो इस बार भी तंबाकू बोते हैं। और भी बेहतर गुणवत्ता वाले बीज लाते हैं। अगर हमें पिछली बार के नुकसान की भरपाई करने लायक मुनाफा नहीं मिलता, तो मेरे यहां रहने का क्या फायदा?'

हिल्डा की बातें सुनते ही कलिंगा में नई ऊर्जा आ गई। वह उठ बैठा। लेकिन कुछ कहने से पहले ही उसकी ऊर्जा थम गई और वह खामोशी से बैठ गया, उसके चेहरे पर उदासी छा गई। हिल्डा ने पूछा, 'कलिंगा, मेरे प्यारे, तुम्हें क्या हुआ है, बताओ।'

वह चुप रहा। उसने उसका सिर गले लगाया और उसे अपने स्तनों के बीच रखकर फुसफुसाते हुए उसे दिलासा दिया: 'तुम कई दिनों से ऐसे ही हो। मुझे बताओ, मुझे बताओ मेरे प्यारे।'

इन शब्दों को सुनकर कलिंगा के भीतर गहरे दुःख का संचार हुआ। उसने अपना चेहरा कलिंगा की छाती में छिपाते हुए कहा, "अकेलापन। मैं इस पूरी दुनिया में, इस पूरे जीवन में बिल्कुल अकेला हूँ। सबने मुझे ठुकरा दिया है। मैंने जो भी हासिल किया है, उस पर खुश होने वाला कौन है?"

'तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? क्या मैं तुम्हारे जीवन का हिस्सा नहीं हूँ?'

'तुम हो। लेकिन तुम मेरे अकेलेपन को दूर नहीं कर सकते।'

यह सुनकर हिल्डा गंभीर हो गई। कलिंगा में छाए उदासी के बादल अब उस पर भी छा गए। लेकिन अपना संयम बनाए रखते हुए उसने कहा: 'मैं आपकी भावनाओं को समझती हूँ। क्या मैंने आपको पहले नहीं बताया था? यह देश ऐसा ही है। मैं भी यहाँ अकेलेपन से जूझ रही हूँ। बस, मैंने आपको बताया नहीं। न ही आपने इसे समझने की कोशिश की। चलिए, जैसा मैं कहती हूँ वैसा ही करें।'

'क्या?'

'चलो इसे जितना हो सके उतने अच्छे दाम पर बेचकर वहाँ ले चलते हैं। चलो, अमेरिका में एक नई शुरुआत करते हैं।'

कलिंग ने उसके चेहरे की ओर देखा और व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा। यह देखकर उसने पूछा, 'क्यों?'

मैंने इस बारे में भी सोचा है। मैं वहाँ भी अकेलापन महसूस करता हूँ। क्योंकि मैं अश्वेत हूँ, वे मुझे अपने समूह में पूरी तरह से शामिल नहीं करते। और बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। अगर मेरी माँ की मृत्यु से पहले की बात होती, तो शायद मैं वहाँ आ जाता। लेकिन अब, चाहे मैं कुछ भी कर लूँ, मेरे लिए यहाँ से निकलना नामुमकिन है। मुझे ऐसा लगता है जैसे किसी ने मुझे बाँध दिया हो।

हिल्डा ने उसकी बातों पर गौर किया और गंभीरता से विचार किया। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने कहा: 'कलिंग, तुम सरासर निरर्थक बातें कर रहे हो। तुम कहते हो कि तुम अकेले हो। तुम यह भी कहते हो कि तुम इस भूमि से बंधे हो। तुमने कहा कि मैं भी तुम्हारा अकेलापन दूर नहीं कर सकती। न ही तुम्हें मेरे बलिदानों की याद है जो मैंने तुम्हारे लिए किए हैं। मैंने अपनी जन्मभूमि, अपने सभी प्रियजनों को छोड़कर यहाँ आई हूँ। न मेरे कोई मित्र हैं, न कोई साथी। न कोई शौक। न ही मैं अपनी मातृभाषा सुन सकती हूँ। इन सबके बावजूद, मैं धैर्यवान बनी रही और यह सब काम कर रही हूँ। इसलिए, गैर-जिम्मेदार होने के अलावा, तुम मेरे सामने यह कह रहे हो कि "तुम भी मेरा अकेलापन दूर नहीं कर सकती" और मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचा रहे हो।'

कुछ भी न समझते हुए, कलिंगा उसका चेहरा देख रही थी। कुछ सोचने के बाद उसने कहा, 'यहाँ नहीं। चलो, वहाँ चलते हैं, अमेरिका। अगर तुम मेरे साथ नहीं आ सकतीं, तो मैं अकेले चली जाऊँगी।'

'क्या... क्या कह रहे हो?' कलिंग ने स्तब्ध होकर पूछा।

'यह तो बहुत आसान है। मैं तुम्हारी तरह शब्दों को चबा-चबाकर नहीं बोलती। उस मंदिर के पुजारी की बात? मैं उन्हीं की तरह सीधी-सीधी बात करती हूँ, जैसे किसी टहनी को तोड़कर दो टुकड़े कर देती हूँ। मैं जैक को अपने साथ लेकर अपने देश लौट जाऊँगी। तुम यहीं रहो; इस देश की कोई लड़की ढूँढ़ो, उससे शादी करो और खुश रहो। तुम्हारा अकेलापन दूर हो जाएगा। अलविदा,' उसने आदेश देते हुए उसकी ओर हाथ से इशारा किया। फिर वह दूसरे कमरे में गई, दरवाजा बंद किया और रोने लगी। कलिंगा हक्का-बक्का दरवाजे के बाहर चुपचाप खड़ा रहा।

मल्लेशी की झोपड़ी के पास मिट्टी में खेल रहा जैक अंदर आया। दो बार मम्मी को पुकारने पर भी मम्मी ने कोई जवाब नहीं दिया। कलिंगा उसे अपने साथ ले गया, उसके हाथ, पैर और चेहरा धोया और उसे मेज के सामने बैठाकर खाना परोसा। जब उसे बताया गया कि मम्मी ने खाना खा लिया है, तो जैक अपनी थाली से खाने लगा।

दो घंटे बीतने के बाद भी हिल्डा नहीं निकली। इंतज़ार करते-करते थककर कलिंगा जैक को साथ लेकर बेडरूम में चला गया और लेट गया। जैक आधे घंटे में सो गया। कलिंगा को जो सदमा लगा था, उसके साथ भूख भी जुड़ गई थी। उसे नींद नहीं आ रही थी। अपने ही देश में हर कोई उसके लिए अजनबी बन गया था। लेकिन आज तो उसकी पत्नी ने भी उसे छोड़ने की बात कह दी थी। उसने सोचा, अगर 'छोड़कर चले जाना' शब्द एक बार भी बोल दिया जाए, तो इसका मतलब है कि शादी टूट गई है। हिल्डा शायद चली जाए। तब उसका क्या होगा? और जैसा उसने कहा था, वह यहाँ किसी लड़की से शादी कर सकता है। इस संभावना का ख्याल भी उसके लिए असहनीय था। उसने हिल्डा से प्यार किया और उससे शादी की। उन्होंने सपना देखा था कि वे इस देश में आएंगे और साथ मिलकर खेती में हर तरह के चमत्कार करेंगे! अब वह उसे ठुकराकर चली जाएगी; और वह एक स्थानीय लड़की से शादी करेगा!

उनका मन हिल्डा की खुशियों और परेशानियों की ओर चला गया। जमाल के जाने के बाद, उसे नियमित रूप से मांस खाने को नहीं मिल रहा था। घर का कोई भी नौकर कसाई के पास मांस लाने नहीं जाता था। कभी-कभार जब वह तालुक जाता था, तो वहाँ से ले आता था। बस इतना ही मांस उसे मिलता था। यहाँ तक कि जब वह मांस पैक करवाकर गाड़ी में लाता था, तो अगर किसी को गंध आती थी, तो शिकायत कर देते थे। जब जमाल और उसकी पत्नी यहाँ थे, तो वे मुर्गियाँ पालते थे। लगभग हर दिन, उन्हें घर के लिए आवश्यक अंडे मिल जाते थे। अब, अन्य सभी कामों के साथ-साथ, हिल्डा के लिए मुर्गियों की देखभाल करना असंभव हो गया था, इसलिए उन्होंने मुर्गियाँ पालना बंद कर दिया था। नाश्ते या खाने के लिए अंडे नहीं मिलते थे। जन्म से जिस आहार की उसे आदत थी, उसके बिना, कोई रिश्तेदार या दोस्त न होने के कारण, वह भी अकेलेपन से पीड़ित थी। वास्तव में, दोनों ही अकेले थे। लेकिन आखिर क्यों वे दोनों एक-दूसरे के साथी नहीं बन सकते थे? जब यह विचार उनके मन में आया, तो वे उत्साहित हो गए, मानो उन्हें कोई नया प्रश्न मिल गया हो। लेकिन उन्हें इसका कोई जवाब नहीं मिला।

शाम होते-होते, उसे कुछ आवाज़ें सुनाई दीं जिनसे पता चला कि हिल्डा दर्द में है। जब कलिंगा कमरे के दरवाजे पर गया, तो कुंडी खुली हुई थी। अंदर जाकर उसने पूछा: 'क्या हुआ?'

प्रसव पीड़ा शुरू हो गई है।

‘आपने कहा था कि अभी भी 17 या 18 दिन बाकी हैं?’

'हाँ, मैंने किया। कभी-कभी मानसिक आघात के कारण समय से पहले प्रसव हो सकता है। आज मुझे जिस तरह का सदमा लगा, वह मामूली नहीं है।'

कुछ भी समझ न पाने पर, वह चुपचाप उसके पास गया और धीरे से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोला, 'खुद को संभालो, मेरी प्यारी।'

‘अगर इस घने जंगल में कम से कम एक वैन या कार होती, तो हम जल्दी से किसी अस्पताल जा सकते थे। अभी डॉक्टर का इंतजाम करो। भागो।’

कलिंगा उठे और कमरे से बाहर चले गए। हिल्डा ने उन्हें फिर से पुकारा और कहा: ‘देखो, इस स्थिति में पति का कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी की उचित सेवा करे। यह प्रेम का कर्तव्य है। लेकिन अब तुम्हारे लिए इस तरह का कर्तव्य निभाने का समय बीत चुका है। इसलिए एक आम नागरिक की तरह असहाय और संकट में फंसी महिला के प्रति सहानुभूति रखते हुए यह कर्तव्य निभाओ। अब मुझे तुम्हारी मदद की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है।’

कलिंगा ने कुछ नहीं कहा। उसका चेहरा दर्द से सिकुड़ा हुआ था। वह मल्लेशी की झोपड़ी में गया, साइकिल पर चढ़ा और सड़क पर पहुँच गया। उस सड़क से लगभग डेढ़ मील आगे बिजली विभाग का एक शिविर था। वहाँ से तालुक के बिजली कार्यालय से बात करना संभव था। उसने शिविर के पर्यवेक्षक से बात की और फिर तालुक कार्यालय से कहा: 'तुरंत कोई भी वाहन उपलब्ध कराएँ और एक डॉक्टर और नर्स को लाएँ। प्रसव पीड़ा हो रही है। गर्भवती महिला को वहाँ लाना असंभव है। डॉक्टर की फीस चाहे जो भी हो।'

तालुक के बिजली कार्यालय ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे डॉक्टर ज़रूर भेजेंगे। कलिंगा साइकिल चलाते हुए घर लौट आए। जब तक वे लौटे, हिल्डा का दर्द और बढ़ चुका था। जैक अवाक बैठा था, कुछ समझ नहीं पा रहा था। हिल्डा ने प्रसव के लिए ज़रूरी शुरुआती सामान का इंतज़ाम खुद कर लिया था। जब कलिंगा ने उन्हें अपनी

फ़ोन पर हुई बातचीत के बारे में बताया, तो उन्हें थोड़ी राहत मिली, लेकिन जैसे ही उन्होंने उनका चेहरा देखा, वे फिर से बेचैन हो गईं। 'यहाँ से चले जाओ। मुझे अपना चेहरा मत दिखाओ,' वह चीखी। डरा हुआ जैक कमरे के बाहर खड़ा रहा। अंदर, हिल्डा दर्द से तड़प रही थी।

आधे घंटे बाद उसने उसे अंदर बुलाया। उसका पूरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। उसने कहा: 'देखो, तुमने पशु चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई की है। तुम्हें पता है प्रसव कैसे होता है, है ना? मैं तुम्हें निर्देश देती रहूंगी, बस उसी के अनुसार करना। अगर मैं गलती से बेहोश हो जाऊं, तो जो तुम्हें उचित लगे वो करना। सारा सामान यहीं है। जैक डर सकता है। उसे मल्लेशी के शेड में भेज देना।'

तभी बिजली विभाग के शिविर से एक कर्मचारी ने बाहर से आवाज़ दी। जब कलिंगा बाहर निकले, तो उन्होंने उससे कहा: 'डॉक्टर और नर्स गाड़ी से आएंगे। लगता है वे अभी-अभी निकले हैं।'

कलिंगा वापस अंदर आया और हिल्डा को खबर सुनाई। लेकिन हिल्डा का दर्द चरम पर पहुँच चुका था। फिर भी, उसने अपना धैर्य नहीं खोया और उसे विस्तार से बताया कि उसे क्या-क्या करना है। जब समय आया, तो वह बेहोश नहीं हुई। कलिंगा ने सब कुछ कुशलता से अंजाम दिया। पूरी तरह थक चुकी हिल्डा सो गई। उसमें बच्चे का लिंग पूछने की भी हिम्मत नहीं थी। कलिंगा ने बच्ची को देखा। एक लड़की। लेकिन जैक के विपरीत, जिसका रंग लाल था, हिल्डा का रंग कलिंगा जैसा था।

जब तक कलिंगा ने रसोई में इलेक्ट्रिक हीटर पर पानी उबाला, तब तक डॉक्टर की गाड़ी आ चुकी थी। उसके बाद नर्स ने आगे का काम संभाला। नवमाता के रक्तचाप और अन्य मापदंडों की जांच करने के बाद, डॉक्टर ने कलिंगा से कहा, 'वह बहुत बेचैन है। पहले उसे कुछ तरल पदार्थ दें। फिर आपको उसे नींद की गोली देनी होगी।'

आधे घंटे बाद डॉक्टर उसी कार से वापस आ गए। नर्स कल सुबह मोटर से वापस आएगी। वह अपनी माँ के साथ रहती थी, जो उसी पेशे में काम कर चुकी थीं और सेवानिवृत्त हो चुकी थीं। नर्स ने डॉक्टर को बताया कि उसकी माँ पंद्रह दिनों के लिए यहाँ आकर रहने को तैयार हैं। उन्हें प्रतिदिन चार रुपये देने के अलावा, वापसी का मोटर किराया और भोजन व टिफिन भी देना होगा। कलिंगा मान गए। नर्स ने उन्हें

आश्वासन दिया कि अगले दिन घर लौटने के तुरंत बाद वह अपनी माँ को अगली मोटर से भेज देंगी।

शायद डॉक्टर ने नींद की दवा की ज़्यादा खुराक दे दी थी, क्योंकि अगले दिन सुबह करीब दस बजे हिल्डा की नींद खुली। तब तक नर्स जा चुकी थी। हिल्डा को अभी भी नींद आ रही थी, इसलिए कलिंग ने खुद उसके लिए रोटी और कॉफी बनाई। जब उसने बच्चे को दोबारा देखा, तो वह उसे आकर्षक नहीं लगा। हर नवजात शिशु की तरह, यह शिशु भी गोरा और लाल था। लेकिन तब यह स्पष्ट था कि भविष्य में, लाल लोगों की तरह बनने के बजाय, इस बच्चे का रंग हिंदुस्तान के लोगों की तरह काला होगा। लेकिन नींद की वजह से वह आगे कुछ सोच नहीं पा रही थी। उसने अपने शरीर को ढीला छोड़ा और आँखें बंद कर लीं।

रात हो चुकी थी जब वह दोबारा जागी। इसी बीच, नर्स की माँ, बूढ़ी नर्स आ चुकी थी। दूध से भरे होने के कारण हिल्डा के स्तन भारी लग रहे थे। लेकिन शिशु को पहली बार में दूध नहीं पिलाना चाहिए। हिल्डा ने नर्स द्वारा दिए गए ब्रेस्ट पंप की मदद से अपने दोनों स्तनों से दूध निकाला। खाना खाने के बाद जब वह लेटी तो फिर से सो गई।

अगले दिन जब वह सुबह उठी तो बच्चा बहुत जोर से रो रहा था। नर्स ने कहा: 'आपको स्तनपान कराना होगा। आप एक तरफ करवट लेकर लेट जाइए।'

नींद से भरी आँखों वाली हिल्डा बच्चे की ओर करवट लेकर लेट गई। बच्चे ने अपने कोमल जबड़ों के बीच निप्पल को पकड़ लिया। नर्स ने कहा, 'इसे धीरे से दबाएँ।' लेकिन इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। दूध बच्चे के मुँह में बहने लगा। पाँच मिनट में ही बच्चा ठीक से दूध पीने लगा। फिर उसने अपने मुँह से माँ के स्तन को ज़ोर से दबाया और खींचा। हिल्डा को एक सुखद दर्द महसूस हुआ, जिससे उसके मुँह से 'आह' की आवाज़ निकली, और उसने अपने बाएँ हाथ से बच्चे का सिर थाम लिया।

5

हिल्डा जानती थी कि उसे हुए मानसिक आघात के कारण प्रसव पीड़ा शुरू हो गई थी। लेकिन उसने उस दिन लिए गए अपने फैसले को नहीं बदला। उसने प्रसव के कुछ महीनों बाद जैक के साथ अपने वतन लौटने का पक्का इरादा कर लिया था।

जन्म के तुरंत बाद उसने बच्ची को ध्यान से नहीं देखा था। अगली सुबह जब वह उठी, तो उसका रंग देखकर उसे थोड़ी निराशा हुई। उसने सोचा, यह बच्ची आखिरकार काली हो जाएगी। अगर वह इसे अपने वतन ले जाए तो इसका क्या करेगी? अपने लोगों के बीच, यह बच्ची उसके पिछले जीवन की याद दिलाती रहेगी। यह विचार मन में आते ही उसे नींद आने लगी। रात को जब वह जागी और अपने स्तनों से दूध निकालने लगी, तब भी यह विचार उसके मन में आया। एक और अजीब सवाल उसके मन में आया: यह बच्ची मेरे गर्भ से क्यों पैदा हुई? ऐसा नहीं था कि कलिंग से शादी करते समय उसके मन में इस तरह का विचार नहीं आया था—दरअसल, यह संभव था कि उसका गर्भ ऐसे बच्चों को जन्म दे सकता था। लेकिन तब उत्साह बिल्कुल अलग था। तब, उसे छोड़कर अपने वतन लौटने और अलग रहने का ख्याल भी उसके मन में नहीं था। लेकिन अब, उसका मन उसे बता रहा था कि किसी तरह इस बच्ची के लिए वहां कोई जगह नहीं होगी। वह इस बच्चे के प्रति लगाव और प्यार नहीं जगा सकी। उसने लापरवाही से एक बार उस पर नजर डाली और अपनी आंखें बंद कर लीं।

लेकिन अगले दिन जब बच्चे ने माँ का दूध पीना शुरू किया, तो वह लापरवाही गायब हो गई। जब उसने पूरी ताकत से अपने मुँह से माँ के स्तन पर एक बार प्रहार किया और खींचा, तो न केवल लापरवाही का आखिरी अंश भी मिट गया, बल्कि माँ के स्तन से दूध के साथ-साथ बच्चे के प्रति प्रेम भी उमड़ पड़ा। जब उसने बच्चे को दोबारा प्रहार करके चोट पहुँचाने से रोकने के लिए उसका सिर अपने बाएँ हाथ में थाम लिया, तो उसने उसे कोमलता से गले भी लगाया।

नर्स पंद्रह दिन तक वहीं रही। तब तक हिल्डा अपने रोज़मर्रा के काम करने लगी थी। जिस शाम नर्स गई, जैक अपनी छोटी बहन के पालने के पास खड़ा होकर उसके साथ खेल रहा था। कलिंगा बाहर सोफे पर बैठा किसी सोच में डूबा हुआ था। जिस दिन हिल्डा ने उसे छोड़ने की बात कही थी, तब से कलिंगा उससे सीधे चेहरे की ओर देखकर बात नहीं करता था। डर, निराशा, उदासी, अरुचि या जो भी हो—वह लगातार सुस्त रहता था, अपने ही विचारों में खोया रहता था। 'पापा को बुलाओ,' हिल्डा ने जैक से कहा। मानो कर्तव्यवश, जब कलिंगा अंदर गया, तो उसने उसके कंधे पकड़े और उसे अपने बिस्तर पर बैठाकर पूछा: 'कुएं पर काम कितना आगे बढ़ा है?'

‘यह वहीं है’, उसने सिर झुकाते हुए कहा।

एक मिनट तक चुप रहने के बाद, हिल्डा ने कहा: 'आप इस तरह काम की उपेक्षा क्यों कर रहे हैं?'

उसने कुछ नहीं कहा। वह बोलती रही: 'देखो, तुम जितना ऐसे रहोगे, मुझे उतना ही बुरा लगेगा। पहले जैसी ही लगन से काम करो। इसमें मेरे साथी बनो। मेरी सलाह मानो। तब मुझे भी लगेगा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। और तुम्हें भी ऐसा ही लगेगा। हमारा आपसी अकेलापन दूर हो जाएगा।'

कलिंग ने अपना सिर घुमाकर उसके चेहरे की ओर देखा। वह बोली, “मेरे बारे में भी सोचो। अगर तुम इस तरह उदास बैठे रहोगे और यह सोचोगे कि तुम्हारा अकेलापन ज़्यादा है, तो मेरा अकेलापन कौन दूर करेगा? कल से ही काम शुरू कर दो और कुएँ के लिए पंप लगवा दो। ट्रैक्टर को जल्दी चलाओ। कम से कम उसकी आवाज़ तो इस सन्नाटे, इस बोरियत को दूर करने में मदद करेगी। वरना, इस जंगल में ज़िंदगी बहुत मुश्किल हो जाती है।”

कलिंग ने बच्ची का हाथ कसकर पकड़ लिया। दोनों दो मिनट तक उसी स्थिति में रहे। फिर बच्ची रोने लगी। पालने के पास बैठे कलिंग ने खुद बच्ची को उठाया और अपनी गोद में लिटा दिया।

हिल्डा ने पूछा: 'सत्रह दिन बीत चुके हैं। हम उसका क्या नाम रखें?'

'आप मुझे बताएं।'

‘जैक्लीन? एस्थर के बारे में क्या ख्याल है? क्या आस-पास कोई पादरी नहीं है? अगर नहीं, तो हम कुछ दिनों बाद तालुक के चर्च जा सकते हैं।’

कलिंगा ने इन शब्दों पर असहमति जताते हुए सिर हिलाया। 'क्यों?' हिल्डा ने पूछा।

‘क्या आपने बच्चे को ध्यान से देखा है? उसका चेहरा, आंखें, नाक, माथा। सब कुछ मेरी मां जैसा है।’

‘कलिंग, यह कैसे संभव है?’

‘क्यों नहीं?’ जब कलिंगा ने यह पूछा, तो हिल्डा ने कहा: ‘हाँ, मेरा दिमाग आजकल ठीक से काम नहीं कर रहा है। यह न केवल संभव है, बल्कि स्वाभाविक भी है।’

कलिंगा उसके चेहरे को निहार रहा था। फिर उसने कहा: 'चलो इसका नाम मेरी माँ के नाम पर रखते हैं।'

'उसका नाम क्या है?'

'Tayavva.'

'इसका मतलब मां है, है ना? बच्चे को मां कहना कितना उचित है?'

'मुझे भी नहीं पता। लेकिन जब मेरी माँ का जन्म हुआ, तो उनके माता-पिता ने उन्हें तैयव्वा नाम दिया। मुझे नहीं पता कि किस शिष्टाचारवश उन्होंने उन्हें यह नाम दिया। अगर हम वेंकटरमण जैसे लोगों से पूछें, तो शायद वे विस्तार से समझा सकें।'

'उससे पूछने की संभावना अब नहीं रही, है ना?'

कलिंगा चुप हो गया। बच्चा फिर रोने लगा। हिल्डा ने उठकर उसे दूध पिलाते हुए कहा, 'अगर यहाँ बच्चे का नाम रखना हो तो क्या करते हैं?'

वे वेंकटरमण को जन्म का दिन और समय बताते हैं। वे उसी के अनुसार गणना करते हैं, और यदि यह पहला लड़का है, तो दादा का नाम और यदि यह पहली लड़की है, तो दादी का नाम ध्यान में रखा जाता है और फिर वे एक उपयुक्त नाम सुझाते हैं। वही नाम अंतिम रूप ले लेता है।

'ऐसे में, अगर हम किसी को तारीख और समय बता दें, तो क्या वे कोई नाम सुझाएंगे?'

'शायद नहीं', उन्होंने एक बार हंसते हुए कहा।

उसने पूछा, 'तुम क्यों हँसे?'

"हमारी जो हालत है, उसमें हम अपने ही बच्चे का नाम तय नहीं कर पा रहे हैं। बच्चे का चेहरा उसकी दादी से मिलता-जुलता है। इसलिए, आपका सुझाया गया नाम ठीक नहीं रहेगा। लेकिन हमें यह अधिकार भी नहीं है कि हम उसका नाम सीधे उसकी दादी के नाम पर रख दें। नामकरण संस्कार करने और बच्चे को सामाजिक जीवन में स्थान दिलाने वाले पुरोहित हमारे कट्टर दुश्मन बन गए हैं। यह कैसी विकट स्थिति है!"

कुछ भी कहने में असमर्थ, हिल्डा उसे खाली निगाहों से देखती रही।

6

पंद्रह दिनों में उन्होंने पंप लगा दिया और खेत की सिंचाई कर दी। अब तक कोई कठिन काम न करने के कारण मल्लेशी ट्रैक्टर पर चढ़ गया। हिल्डा बाहर टहलने लगी, लेकिन उसे थोड़ी थकान महसूस हो रही थी। कलिंगा ने पूछा, 'हमारी औरतें छह

महीने आराम करती हैं। अगर तुम एक महीने बाद ही इस तरह काम करोगी तो क्या होगा?'

'मुझे इस जगह के रीति-रिवाजों की ज़रूरत नहीं है, प्रिय। जमाल के जाने के बाद से यहाँ नियमित रूप से मांस नहीं मिलता। तुम किसी दिन करीम से बात करके उसे बता देना। उसे कह देना कि वह एक डिलीवरी बॉय के ज़रिए रोज़ाना मांस यहाँ भेज दे। हम उस लड़के को हर महीने कुछ मज़दूरी देंगे। पर्याप्त प्रोटीन के बिना मैं काम कैसे कर सकती हूँ?'

कलिंगा ने बात मान ली। हिल्डा को रोज़ाना मिलने वाला नया खाना बहुत पसंद आया। कलिंगा में भी पहले जैसा उत्साह लौटने लगा। उसने कहा कि इस बार वह तंबाकू के पौधों की देखभाल और कटाई का काम करेगा। चूंकि इससे उसे सुबह और शाम दोनों समय चलने-फिरने का ज़रूरी मौका मिल जाता, इसलिए हिल्डा गौशाला के काम की देखरेख करने के लिए राज़ी हो गई। इसके अलावा, चूंकि मल्लेशी ने अब ट्रैक्टर चलाना शुरू कर दिया था, इसलिए वह गौशाला में दुहने वाली मशीन की निगरानी करती रही।

गौशाला अब पूरी तरह अस्त-व्यस्त थी। तैयव्वा की मृत्यु के बाद, उन्होंने पहले से बंधे हुए सभी बैलों को इस जगह पर ठूंस दिया था। यद्यपि कुछ नौकर गाँव की ज़मीनों की जुताई के लिए बैलों का उपयोग कर रहे थे, कलिंग ने कभी भी स्वयं उनके काम की निगरानी नहीं की थी। उन्हें गाँव वालों की उपस्थिति में गाँव की ज़मीनों का दौरा करना पसंद नहीं था। लेकिन अब हिल्डा इस गौशाला में नए आए मवेशियों की समस्या पर विचार करने लगी। जब उसने प्रतिदिन व्यर्थ में खाई जाने वाली घास की लागत का हिसाब लगाया, तो उसे लगा कि यह उनसे मिलने वाले लाभ के अनुपात में बिल्कुल भी नहीं है। इसके अलावा, गौशाला में चार गायें बांझ हो गई थीं। तीन बार कृत्रिम गर्भाधान कराने के बावजूद, वे गर्भवती नहीं हुईं। पूछने पर नौकरों ने बताया कि वे दोबारा गर्भवती होने की उम्र पार कर चुकी हैं। तो अब इनका क्या किया जाए? इन्हें कौन खरीदेगा?

दो महीने और बीत गए। फिर हिल्डा की तबीयत बिगड़ने लगी। शुरुआत में जब वह बच्चे को दूध पिला रही थी, तो उसके दोनों स्तनों में असहनीय दर्द होने लगा। अब ऐसा लग रहा था जैसे अंदर से कुछ सख्त हो रहा हो। यह सोचकर कि बच्चे को दूध पिलाना बंद करने से आराम मिलेगा, उसने ऐसा ही किया। लेकिन ठीक एक दिन में,

अंदर से जकड़न और बढ़ गई। बच्चा भी ज़िद करके रोने लगा। वह बोतल का दूध अपने होठों तक नहीं छूने दे रहा था। हिल्डा ने बच्चे को सिर्फ इसलिए स्तनपान कराया ताकि उसके स्तनों की जकड़न कम हो सके। बच्चा शांत हो गया और उसके स्तनों का दर्द भी थोड़ा कम हो गया, लेकिन पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ। उसने गर्म पानी की सिकाई की और उसे थोड़ा आराम मिला।

उसने कलिंगा को बताया, जो हर दिन दर्द के बारे में पूछताछ करती थी: 'जब जैक बच्चा था, तो मैंने उसे कभी इतना दूध नहीं पिलाया। वह बोतल के दूध और शिशु आहार पर पला-बढ़ा। यह बच्चा पूरी तरह से माँ के दूध से जुड़ा हुआ है।'

'यह हिंदुस्तान का बच्चा है; यह गाय के बछड़े के समान है।'

'मज़ाक मत करो प्रिये। लेकिन मुझे लगता है कि तुम जो कह रही हो वह सच है। जब यह दूध पीता है, तो यह ज़ोर से घूंसे मारता है, काटता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे एक बछड़ा गाय को काटता है! यह किसी और भोजन को छूता भी नहीं है। शायद लगातार दूध पीने से स्तन ग्रंथियों की तंत्रिकाएं थक गई हैं।'

लेकिन इस देश की महिलाएं अपने बच्चों को जितना चाहे उतना दूध पिलाती हैं। उनके साथ ऐसा क्यों नहीं होता?

'मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। मैं इस देश की नहीं हूँ। मैं बस इतना कह रही हूँ कि मुझे बच्चे को पिलाए जाने वाले दूध की मात्रा कम करनी होगी। लगता है इस बदहाल देश में दूध पिलाने वाली कोई सरोगेट नर्स भी नहीं है। यही बात मुझे उस नर्स ने बताई थी।'

कलिंग में सन्नाटा छा गया।

खेत में तंबाकू के पौधे लगाने का काम पूरा हो चुका था। कलिंगा अपना समय पौधों की सावधानीपूर्वक जांच करने और उन्हें उचित मात्रा में पानी देने में लगा रहा था। गौशाला की देखरेख अब पूरी तरह से हिल्डा के हाथों में थी। जाहिरा तौर पर, गांव में उनके घर के पीछे वाले इलाके में रागी घास थी। लेकिन क्योंकि उसकी देखरेख करने वाला कोई नहीं था, इसलिए उसे इधर-उधर से कोई भी ले गया। उनके गौशाला में, जिसे वैज्ञानिक तरीके से बनाया गया था, उसमें मौजूद घास इस साल नए पशुओं समेत बाकी पशुओं के लिए पर्याप्त नहीं थी। इस मौसम की फसल का समय भी नजदीक आ रहा है। अगले साल से गांव के खेतों की जुताई ट्रैक्टर से करनी होगी; नहीं तो, टुकड़ों में बंटी जमीनों को बेचकर ट्रैक्टर के लिए पर्याप्त जगह वाली एक नई

जमीन खरीदनी पड़ेगी, हिल्डा ने सोचा। अब इन अतिरिक्त पशुओं का क्या उपयोग? जब उसने बताया कि वह उन्हें बेचना चाहती है, तो नौकर खुद खरीदार ले आए। काम करने की ताकत रखने वाले बैलों को खरीद लिया गया। लेकिन बारह बूढ़े बैलों और चार बूढ़ी गायों को खरीदने के लिए कोई खरीदार आगे नहीं आया, जो किसी भी तरह के काम के लिए पूरी तरह से बेकार थे।

उसने उस लड़के से, जो रोज़ घर मांस लाने आता था, कहा कि वह करीम को उससे मिलने के लिए कहे। बारह बूढ़े बैलों और चार बूढ़ी गायों को खरीदने के उसके प्रस्ताव को ठुकराते हुए करीम ने कहा, "इन्हें खरीदने के बाद मैं क्या करूँगा? अगर कस्बे वालों को पता चल गया कि इन्हें काट दिया गया है, तो वे मेरा घर जला देंगे और होली मनाएँगे। आप ऐसा कीजिए: तालुक में एक पशु विक्रेता है। मैं उसे यहाँ भेज दूँगा। आप उन्हें उसे बेच दीजिए।"

वह क्या करेगा?

'वह उन्हें ट्रेन से मुंबई ले जाएगा। वहां बूचड़खाने में उनका वध किया जाएगा, मांस को बक्सों में पैक करके बेचा जाएगा।'

उसे भेजो।

चौथे दिन पशु विक्रेता आया। कलेनाहल्ली में किसी को नहीं पता था कि वह कसाई है। एक गाय के दस रुपये और एक बैल के पंद्रह रुपये। उसने पैसे गिने और उन्हें ले गया। गौशाला के बाहर मिले नौकरों से उसने कहा: 'मैं इन्हें गौशाला ले जा रहा हूँ। हम बूढ़ी गायों का अंतिम संस्कार नदी के किनारे करते हैं।'

नौकरों ने कुछ नहीं कहा।

खंड 17

1

उस दिन दोपहर तक हिल्डा के स्तनों में फिर से दर्द होने लगा। उसके दाहिने स्तन के अंदर एक सख्त गांठ सी महसूस हो रही थी, जबकि बाएं स्तन से पीला दूध बहने

लगा। दर्द सहन न कर पाने के कारण वह बेकाबू होकर छटपटाने लगी। इसका कारण उनकी समझ से परे था।

'किसी न किसी तरह से, मुझे लगता है कि इसे डॉक्टर को दिखाना अच्छा रहेगा,' कलिंगा ने कहा।

तुरंत ही दोनों अपने बच्चों को साथ लेकर सड़क पर पहुँच गए। वे मोटरबाइक में बैठे, तालुक पहुँचे और सरकारी अस्पताल गए जहाँ से डॉक्टर हिल्डा की डिलीवरी के लिए आए थे। पूरी यात्रा के दौरान हिल्डा ने बड़ी मुश्किल से अपने आँसू रोके और दर्द सहन किया। तब तक, भूख से बेहाल बच्चा भी रोने लगा।

मरीज की जांच करने के बाद डॉक्टर ने कहा: 'यह स्तन में फोड़ा हो सकता है। दाहिने स्तन में एक गांठ बन गई है। बाएं स्तन में कुछ भी नहीं दिख रहा है। अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते। फिलहाल इंजेक्शन लगा देंगे। यह स्तन कैंसर भी हो सकता है। बेहतर होगा कि किसी बड़े अस्पताल में परामर्श लें।'

हिल्डा स्तब्ध रह गई। कैंसर का कोई भी मरीज़ बच नहीं पाता। उसकी माँ की एक बड़ी बहन की इसी बीमारी से मृत्यु हो गई थी। शायद मुझे भी वही बीमारी हो गई है। अपने बच्चे को कसकर गले लगाते हुए उसने अब तक रोके हुए सारे आँसू बहा दिए। कलिंगा भी वहीं खड़ी रही, मानो उसकी सारी शक्ति खत्म हो गई हो। उसे इंजेक्शन लगाने वाले डॉक्टर ने कहा: 'मैं महिलाओं के रोगों का विशेषज्ञ नहीं हूँ। आप पहले ज़िला अस्पताल जाइए। वहाँ एक स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं। उनकी राय लीजिए और फिर किसी कैंसर उपचार संस्थान में जाइए।'

एक टैक्सी लेकर कलिंगा तुरंत हिल्डा और बच्चों के साथ जिला अस्पताल गईं। उन्होंने हिल्डा को भर्ती कराया। हालांकि, उन्हें बताया गया कि ऐसे रोगों की जांच करने वाले विशेषज्ञ छुट्टी पर हैं और उन्हें लौटने में तीन दिन लगेंगे। कलिंगा ने अस्पताल के पास एक होटल में ठहरने का इंतजाम किया। बच्चा भूख से रो रहा था। महिला डॉक्टर ने पहल करते हुए वहां मौजूद एक नर्स से बात की, जिसके पास छह महीने का बच्चा था। नर्स उस शिशु को दूध पिलाने के लिए तैयार हो गई। हिल्डा ने उसे आश्वासन दिया कि वह उसे अच्छे खासे पैसे देगी।

हिल्डा को इंजेक्शन लगने से उसका दर्द कुछ देर के लिए कम हो गया। लेकिन, विशेषज्ञ द्वारा जांच किए जाने तक न तो वह और न ही कलिंगा चिंता से मुक्त हो पाए। उसे पूरा यकीन था कि वह इस बीमारी से मर जाएगी। उसने प्राणी विज्ञान और पशु

चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई की थी। चिकित्सा विज्ञान को अभी तक यह पता नहीं था कि कैंसर कब, किसे और कैसे होता है। असाधारण विशेषज्ञ डॉक्टर कैंसर रोगियों की मृत्यु को कुछ दिनों या कुछ महीनों के लिए टाल सकते थे। लेकिन वे जान नहीं बचा सकते थे। मृत्यु टल भी जाए, तो भी पीड़ा, शारीरिक और मानसिक वेदना नरक समान थी। इसके बजाय, जल्दी मृत्यु ही स्वीकार्य थी। बस इतना ही काफी था कि विशेषज्ञ उसे बता दे कि उसे वाकई कैंसर है। मुझे तो इलाज कराने से मना करना होगा। घर में बंदूक है। मैं एक मिनट में जीवन को अलविदा कह सकती हूँ।

मृत्यु के इस विचार के साथ, हिल्डा ने अपने जीवन की शुरुआत से लेकर अब तक की यादें संजो लीं। उसका जन्मस्थान, उसका पालन-पोषण, शिक्षा, कलिंग से प्रेम, विवाह, इस अकेले देश में आगमन, ग्रामीणों द्वारा उसके खेतों में की गई तोड़फोड़, जैक और फिर इस अभी तक अनाम शिशु का जन्म—ये सभी विचार उसके मन में कौंध गए। यह शिशु किसी की मदद के बिना, उसके अपने पति द्वारा जन्म दिया गया था, जिसने नर्स का काम किया था। क्या यह इस बात का पूर्वाभास है कि भविष्य में यह अनाथ हो जाएगा? मेरे मरने के बाद यह कैसे जीवित रहेगा? इसे कौन दूध पिलाएगा? इसे कौन गोद में लेकर सुलाएगा? यह किसे अपना कहेगा? आधी रात में पूरा अस्पताल शांत था। विशेष वार्ड में, जहाँ वह सोने की कोशिश कर रही थी, एक बल्ब मंद जल रहा था। वह नर्स, जिसने शुल्क लेकर दूध पिलाने का वादा किया था, सुबह जल्दी लौटने की सूचना देकर घर चली गई थी। हिल्डा एक बार मुड़ी और शिशु को देखा। उसका रंग अब हिंदुस्तानियों जैसा हो रहा था। तीन महीने की गर्भावस्था में ही उसका चेहरा कलिंग की माता से स्पष्ट रूप से मिलता-जुलता था। हिल्डा के मन में यह प्रश्न उठा, "यह मेरे गर्भ में क्यों जन्म लिया?"

इस नन्हे बच्चे का क्या होगा? अनाथ बच्चों के पालन-पोषण के लिए संस्थाएँ तो होंगी। लेकिन चाहे कितनी भी अच्छी तरह से उनकी परवरिश की जाए, वे फिर भी अनाथ ही रहेंगे। इस नन्हे बच्चे का स्वभाव वाकई विचित्र है। जन्म से ही यह ज़िद करता है कि माँ के दूध के अलावा कुछ और नहीं खाएगा। इसे यह ज़िद कहाँ से मिली? अगर यह ऐसा बच्चा होता जो जो चाहे पी लेता, तो मैं बिना किसी चिंता के मर सकती थी। लेकिन इस बच्चे का स्वभाव मेरी मृत्यु को और भी कष्टदायक बना रहा है। मुझे मरना नहीं है। चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे जीना है। मुझे इसे अनाथ नहीं होने देना है, उसने ठान लिया। लेकिन चाहे कितना भी पैसा खर्च कर दिया जाए, कैंसर रोगियों

के निश्चित रूप से बचने की कोई दवा अभी तक नहीं खोजी गई थी। जब उसे यह बात समझ आई, तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसकी रोने की आवाज़ सुनकर बच्चा जाग गया। वह भी तुरंत रोने लगा। और अब, उसे शांत करने का एकमात्र उपाय था उसे अपना दूध पिलाना। दूसरे वार्डों में भी मरीज शिशु के रोने की आवाज सुनकर जाग गए। बाहर गलियारे में आरामकुर्सी पर सो रही ड्यूटी नर्स दौड़कर अंदर आई। उसने शिशु को उठाया और दौड़ते हुए हॉल में स्थित नर्सों के क्वार्टर की ओर भागी।

अगली सुबह तक, उसके स्तनों में दर्द असहनीय हो गया था। अन्य डॉक्टरों को इसका कारण नहीं पता था। एक्स-रे कराने के बाद भी उन्हें कुछ समझ नहीं आया। उन्होंने कहा, 'यह कैंसर हो सकता है। लेकिन कल शाम तक विशेषज्ञ के आने का इंतजार कीजिए।'

पीली पड़ी कालिंग वार्ड में बैठी थी। हिल्डा अपने दुख को भुलाने की कोशिश में अजीबोगरीब बातें कर रही थी। जैक को गले लगाते हुए वह रोने लगी, 'मेरे प्यारे, तुम अनाथ हो जाओगे। तुमने माँ का दूध नहीं पिया। फिर भी तुम कैसे जीवित रहोगे? यह निश्चित है। मैं तो निश्चित रूप से मर जाऊंगी।' यह सुनकर जैक भी रोने लगा। तब कालिंग ने कहा, 'ऐसे मत बोलो। लड़का बेवजह डर जाएगा।'

‘कलिंग, मेरे प्यारे, मैं सच कह रहा हूँ। मृत्यु केवल भविष्य की संभावना नहीं है। मेरे लिए, यह वर्तमान सत्य है। मैं वास्तव में पहले ही मर चुका हूँ। मुझे स्पष्ट-साफ़ बताओ। क्या तुम इस बच्चे की माँ बनोगे? क्या तुम बन सकते हो?’ उसने उसका चेहरा देखा। फिर उसने कहा, ‘नहीं, नहीं, इस दुनिया में कोई भी पिता कभी बच्चों की माँ नहीं बन सकता। लेकिन एक माँ पिता भी बन सकती है।’

इसी बीच, बाहर खड़ी नर्स अंदर आई और बोली, 'आपको इस तरह से हिस्टीरिया करके हंगामा नहीं करना चाहिए। कृपया शांत रहें।' फिर भी, हिल्डा ने बोलना बंद नहीं किया।

रात होते-होते उसकी पीड़ा असहनीय हो गई। डॉक्टर ने ब्रेस्ट पंप लगाया और उसकी पीड़ा को अनदेखा करते हुए दोनों स्तनों से सारा दूध निकाल लिया। कुछ देर के लिए आराम तो मिला, लेकिन दर्द फिर से उभर आया। कोई और उपाय न देखकर डॉक्टर ने उसे नींद की गोलियां दे दीं और हिल्डा रात करीब ग्यारह बजे सो गई।

अगली शाम तक वह मरते हुए मेंढक की तरह तड़पती रही। उसने कई बार मौत और आत्महत्या की बात की। शाम की ट्रेन से विशेषज्ञ के आने के बाद, कलिंगा तुरंत

उन्हें अस्पताल ले गए। बीमारी का पूरा इतिहास सुनने और मरीज की खुद जांच करने के बाद, और फिर दूध निकालकर उसकी भी जांच करने के बाद, उन्होंने कहा: 'मुझे नहीं लगता कि यह कैंसर है। मेरा निदान अलग है। मैं तुरंत आवश्यक दवा दूंगा। आपको दो दिनों में परिणाम दिख जाएंगे। अगर नहीं, तो हम भविष्य में क्या कर सकते हैं, इस पर विचार करेंगे।'

हिल्डा को एक और दिन तक तकलीफ सहनी पड़ी। फिर दर्द कम हो गया। विशेषज्ञ ने कहा: 'मेरा निदान बिल्कुल सही था। यह कैंसर नहीं है। मरीज को पूरी तरह ठीक होने तक अस्पताल में रहना होगा—यानी बीस दिन और। अगर आप चाहें तो अपने गांव वापस जा सकती हैं।'

कलिंगा चार दिन और वहीं रहीं। सर्जरी द्वारा गांठ निकालने के बाद उनका दर्द काफी कम हो गया। उनके दाहिने स्तन में गांठ काफी बढ़ गई थी। उनके बाएं स्तन में भी एक गांठ बढ़ रही थी। डॉक्टर ने कहा कि उसे भी सर्जरी द्वारा निकालना पड़ेगा। हिल्डा ने कलिंगा से घर लौटने का आग्रह किया। ‘नर्स बच्चे की देखभाल करेगी। तुम जैक को लेकर घर जाओ। कौन जाने तंबाकू का क्या हुआ? हर दो-तीन दिन में एक बार जैक को लेकर मुझसे मिलने आना,’ उन्होंने कहा। कलिंगा घर चली गईं।

2

कलिंग ने मल्लेशी को हिल्डा की अनुपस्थिति में अपने और जैक के लिए भोजन लाने का निर्देश दिया था। मल्लेशी ने व्यवस्थित रूप से चावल और सब्जी का शोरबा तैयार किया और उसे एल्युमिनियम के बर्तनों में दोनों को परोसा।

एक दिन जब कलिंगा और जैक शाम को मोटरगाड़ी से जिले से घर लौटे, तो किसी ने घर के सामने तेरह बोरी रखी हुई थीं। जब वह पास जाकर हर बोरी को देखने लगा, तो उसे पता चला: एक में सेम थे, दूसरे में दालें और बाकी रागी से भरे हुए थे। उसने मल्लेशी को पुकारा और पूछा, 'ये सारी बोरियां क्या हैं?'

अग्रहारा से होन्ना दो गाड़ियाँ लेकर आया, उन्हें यहाँ उतारा और चला गया। जाहिर है, यह बटाईदारी से प्राप्त उपज का आधा हिस्सा है। उसने पूछा कि रागी घास कहाँ पहुँचाई जाए। मैंने उसे बताया कि मुझे नहीं पता। मैंने उससे कहा कि जब गुरु, सावकार, आएँ तो वह पूछ ले।

‘सावकार से पूछे बिना आपने उसे यह सब सामान यहाँ फेंकने से मना क्यों नहीं किया?’

मैंने उसे यह बात बताई थी। लेकिन उसने कहा कि उसके घर में जगह नहीं है।

कलिंग ने मल्लेशी के चेहरे को गौर से देखा। क्या उसे इस सब की पृष्ठभूमि पता है या नहीं? सभी सेवक तो जानते ही हैं। यह व्यक्ति भी अक्सर मंदिर आता रहता है। कलिंग ने सोचा, “शायद उसे भी पता हो।” फिर उसने कहा, “देखो, साइकिल लो और होन्ना को अभी ले आओ।”

होन्ना रात सात बजे पहुंचा। कलिंगा ने पूछा, 'तुमने इसे यहाँ क्यों फेंका?' होन्ना ने कहा, 'मैं इसे और कहाँ रखूँ, मेरे दोस्त?'

‘क्या आप जोइस से नहीं पूछ सकते थे?’

‘कई दिन बीत चुके हैं जब उसने ज़मीन की तरफ देखा भी नहीं है। मैंने उससे पूछा भी था। उसने कहा, “कर्ज़ चुकाने के बाद मैं उस तरफ क्यों देखूँ?” दरअसल, नारियल के बाग में नारियल मैंने खुद तोड़े हैं। अब तक डेढ़ हज़ार नारियल तोड़े जा चुके हैं।’

कलिंगा को इस उत्तर की उम्मीद तो थी ही। फिर भी, उसने किसी अज्ञात इच्छा से प्रेरित होकर होन्ना को बुलवाया था। होन्ना ने कहा, 'मैं घास लाकर तुम्हारे आँगन में डाल दूँगा,' और चला गया।

मल्लेशी द्वारा रात में लाया गया भोजन खाने के बाद जैक और कलिंग सो गए। हिल्डा अब ठीक हो रही थी। राहत की सांस लेते हुए कलिंग आज घर आ गया था। लेकिन होन्ना द्वारा यहाँ फेंके गए राशन के बोरों ने उसकी नींद खराब कर दी। चाहे वह कितनी भी करवटें बदलता, उसे नींद नहीं आ रही थी। वह खुद से सवाल कर रहा था कि क्या उसने वेंकटरमण के स्वभाव को सही समझा था। जब वह बचपन में मुझे पढ़ाता था, तब वह एक शांत लड़का था। जब वह मैसूर में पढ़ रहा था, तब वह पढ़ाई में इतना मग्न रहता था कि कभी कोई शरारत नहीं करता था। कई बार कलिंग को यह भी लगता था कि उसमें पर्याप्त दृढ़ संकल्प नहीं है। पहले कलिंग यह भी सोचता था कि जब तक कोई विदेश यात्रा नहीं करता, विज्ञान की पढ़ाई नहीं करता, तब तक उसमें दृढ़ संकल्प विकसित नहीं होता। लेकिन अब उसके पास वेंकटरमण जैसी शक्ति नहीं है, कलिंग ने सोचा, और इस तरह उसकी चिंता की आग में और घी डाला।

यह सिर्फ वेंकटरमण की बात नहीं थी। उन्हें अपनी माताजी की याद भी आ गई। वेंकटरमण ने कम से कम संस्कृत तो पढ़ी थी। उन्होंने अंग्रेजी भी सीखी थी। लेकिन उनकी माताजी को कुछ नहीं आता था। वे गूंगी थीं। लेकिन उनमें असाधारण इच्छाशक्ति थी! अंत में उन्होंने मेरा कितना विरोध किया था, गांव वालों के साथ मिलकर! जिस दिन उन्होंने वेंकटरमण को सारी गायें दान में दीं, उस दिन उन्होंने मुझे देखा भी नहीं था। और उनकी मृत्यु के बाद भी, मेरे प्रति उनका वही तिरस्कार जारी है। गांव वाले भी मेरे प्रति वैसा ही तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करते हैं। मेरे खेत और मंदिर के बीच बनी अगेव की बाड़ ही इसका पर्याप्त सबूत है। फिर उनके मन में यह विचार आया कि माताजी की मृत्यु के इतने दिन बीत जाने के बाद भी उन्होंने उनका अंतिम संस्कार नहीं किया था। ऐसा लगता था कि गांव वालों ने उनसे अंतिम संस्कार न करवाने का फैसला कर लिया था। और अगर उन्होंने गलती से भी कह दिया होता कि वे अंतिम संस्कार करना चाहते हैं, तो कोई भी नहीं आता।

फिर वह आत्ममंथन करने लगा कि आधी रात बीत जाने के बाद भी उसे नींद क्यों नहीं आ रही थी। अगर हिल्डा यहाँ होती तो वह अपनी इन चिंताओं को संभाल सकता था। घर में उसकी मौजूदगी ही उसके मानसिक स्वास्थ्य पर असर डालती थी। अब वह यहाँ नहीं है और शायद उसके बिना उसकी इच्छाशक्ति भी टिक नहीं पाएगी! उसने बच्चे के जन्म के दिन ही उसे छोड़ने का फैसला कर लिया था। अगर वह सचमुच चली जाती तो उसकी क्या हालत होती?

भोर होते-होते वह थोड़ी देर के लिए सो गया। लेकिन मल्लेशी के कुएँ का पानी पंप चालू करते ही वह जाग गया। ट्रैक्टर का काम न होने के कारण मल्लेशी मशीन से दूध निकालने के लिए गौशाला जा रहा था। जब कलिंगा उठा और बाहर आया, तो होन्ना द्वारा फेंके गए बोरे अभी भी वहीं पड़े थे। उनका क्या किया जाए, यह सवाल अनसुलझा ही रह गया।

जब मल्लेशी सुबह आठ बजकर पंद्रह मिनट पर लौटा, तो कलिंग ने पूछा: 'देखो, क्या तुम अब भी उस मंदिर में जाते हो?'

'नहीं।'

'झूठ मत बोलो। अगर तुम आओगे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।'

मैं अवश्य जाता हूँ।

‘आरोवरर जोइस क्या करते हैं?’

क्या मैं पूरी सच्चाई बता दूं?

'कहना।

'अपनी जमीन त्यागने के बाद, वह मंदिर में अधिक समय तक रहता है। वह वहीं बैठकर विभिन्न लोगों की कुंडली और जन्मपत्री लिखता है। अब, बहुत से लोग वहां पूजा करने और पवित्र मन्नतें लेने आते हैं।'

क्या वह आज भी देवता के लिए प्रसाद उसी तरह तैयार करता है जैसे पहले करता था?

हम्म। वह इसे हर दिन तैयार करता है। जब वह पूजा के लिए आता है, तो वह अपने घर की सभी गायों को यहाँ ऊपर ले आता है। वह उन्हें पहाड़ी की चोटी पर चराता है, शाम तक वहीं रहता है और वापस लौट जाता है। पूजा समाप्त करने और भक्तों को प्रसाद देने के बाद, वह बचे हुए प्रसाद में से थोड़ा सा खा लेता है। वह गायों के पीछे-पीछे चलते हुए जोर-जोर से मंत्रों का जाप करता है। अन्यथा, वह गायों को खुला छोड़ देता है और कुंडली और जन्मपत्री लिखने में लग जाता है।

क्या आपको पता है कि वह अपनी आजीविका के लिए क्या करता है?

ऐसा लगता है कि वह राशिफल लिखने के लिए पैसे लेता है। लगता है कि गांव वालों ने तय कर लिया है कि अब से वे उगादी त्योहार के समय हर घर से बारह किलो दालें उसे देंगे, क्योंकि वह अगले साल की बारिश, फसल और लोगों के स्वास्थ्य के बारे में भविष्यवाणी करेगा। लगता है कि दूसरे गांवों के लोगों ने भी देने की पेशकश की है। इस साल, कलेनाहल्ली के लोगों ने उसकी गायों के लिए घास की दो-दो गांठें दीं। होन्ना गांव में खेत जोतने वाले ने जोई समुदाय के प्रति अपनी भक्ति के प्रतीक के रूप में पच्चीस किलो रागी और घास की पांच गांठें दीं।

यह सुनकर कलिंग अवाक रह गए। आगे क्या कहें, यह न जानते हुए मल्लेशी चुपचाप खड़े रहे। कलिंग ने पूछा, “देखिए, उनकी सारी गायें दूध देती हैं। क्या आप जानते हैं कि वे उस सारे दूध का क्या करते हैं?”

‘सभी गायें दूध नहीं देतीं। वे गायों का पूरा दूध नहीं दुहते। वे केवल उतना ही दूध दुहते हैं जितना बछड़ा पेट भरकर पीने के बाद बचता है। उससे ही एक बड़ा बर्तन भर जाता है। उसमें से कुछ दूध वे पूजा के लिए मंदिर ले जाते हैं। बाकी बचा हुआ दूध घर में सब लोग दिन में दो बार पीते हैं। अगर कुछ दूध बच जाता है, तो वे छाछ बनाते हैं और फिर उससे मक्खन निकालते हैं।’

क्या वे दूध नहीं बेचते?

नहीं। “गोल्ला गायें दूध बेच सकती हैं, लेकिन मुझे नहीं बेचना चाहिए,” वह कहता है। अगर मादा बछड़ा भी पैदा हो जाए, तो वे उसे नहीं बेचते। बछड़े के बड़े हो जाने के बाद ही वे उसे देते हैं। पिछले महीने उन्होंने दो बड़े बछड़े बेचे। उन्हें चार सौ रुपये मिले।

कलिंग ने आगे कुछ नहीं पूछा। मल्लेशी को खाना पकाने के लिए चूल्हा जलाना था, इसलिए वह अपनी झोपड़ी में चला गया। लेकिन आधे घंटे बाद, कलिंग स्वयं अपनी झोपड़ी में गया और बोला: 'देखो, तुम्हें कुछ करना होगा।'

'क्या?'

‘मैं तुम्हें आज पैसे दूंगा। तुम साइकिल पर जाओ और पूजा के लिए ढेर सारे फूल, फल, चावल, चीनी, किशमिश, बादाम, अगरबत्ती वगैरह खरीदकर पूज्य जोई के घर पर उन्हें दे दो। कल जब वे मंदिर में पूजा कर लेंगे, तो तुम मुझे प्रसाद लाकर देना।’

मल्लेशी ने कुछ नहीं कहा। 'तुम चुप क्यों हो?' कलिंग ने पूछा।

पांच मिनट तक संदेह करने के बाद, मल्लेशी ने क्षमा मांगने के लहजे में पूछा: 'महोदय, अगर मैं आपको सच बताऊं तो क्या आप नाराज होंगे?'

'नहीं मुझे बताओ।'

‘अगर मैं तुम्हारा नाम भी ले लूं, तो वह उन वस्तुओं को स्वीकार नहीं करेगा। न ही वह तुम्हारे नाम पर पूजा करेगा और न ही प्रसाद देगा—मैं सब कुछ जानता हूं।’

कलिंग को ऐसा लगा जैसे इन शब्दों ने उसे थप्पड़ मार दिया हो। लेकिन उसने खुद को संभाला और कहा: 'मेरा मतलब ऐसा नहीं था। आप इसे अपनी सेवा, अपनी भेंट के रूप में करें। कहें कि आप इसे अपने पिता या माता के नाम पर कर रहे हैं। कहें कि आप घर पर थोड़ा खा लेंगे और प्रसाद लेकर आएंगे।'

मल्लेशी इस सुझाव से सहमत हो गया। लेकिन क्या होगा अगर एक दिन पूज्य जोइस को उसके किए के बारे में पता चल जाए! अगर ऐसा हुआ तो जोइस उससे फिर कभी बात नहीं करेंगे। लेकिन फिर भी उसे अपने गुरु की बात मानने से इनकार करना मुश्किल लगा। वह यह सब अभी क्यों करवा रहा है? क्या उसने अपनी पत्नी के बीमार होने के कारण कोई मन्नत मानी है? या फिर, क्या यह इसलिए है कि उसने अपनी माता के अंतिम संस्कार नहीं किए थे, जिसके कारण उसकी पत्नी इस तरह बीमार पड़ गई? शायद यह उसी का प्रायश्चित था। मल्लेशी ने अपने मन में कुछ

अनुमान लगाए। उसे यह सोचकर रोमांच हो रहा था कि वह इस स्थिति में अपनी भूमिका निभा रहा है।

जब वह शाम को सभी सामान खरीदने के बाद साइकिल से वेंकटरमण जोइस के घर पहुंचा, तो वह घर पर ही था। जब जोइस ने पूछा, 'कल क्या खास है?'

'कुछ नहीं। मैंने अपनी मां के नाम पर पूजा करने का सपना देखा था। उनका नाम बसम्मा है,' उन्होंने कहा।

अगले दिन मल्लेशी उठे, स्नान किया और मंदिर चले गए। पूजा समाप्त होने के बाद, जोई परिवार ने प्रसाद को सुपारी के पत्तों में बांधा। प्रसाद इतना अधिक था कि उन्हें दोपहर और रात दोनों समय भोजन पकाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उस दिन पूजा के समय आए दस-बारह लोगों को मल्लेशी की सेवा से भरपूर प्रसाद मिला।

कलिंग ने भी उपवास रखा था और स्नान किया था। जब मल्लेशी घर आया, तो उसने पुजारी का वेश धारण किया और कलिंग और जैक को प्रसाद दिया। प्रसाद खाते समय कलिंग के मन में यह विचार आया कि अगर हिल्डा घर पर होती तो क्या होता? उसे यह भी संदेह हुआ कि अगर हिल्डा यहाँ होती, तो क्या वह पूजा इसी तरह करवाता? ऐसा क्यों है? जब यह प्रश्न उसके मन में उठा, तो वह गंभीरता से इस पर विचार करने लगा।

3

बीस दिन अस्पताल में रहने के बाद हिल्डा बच्चे के साथ घर लौट आई। उसकी बीमारी ठीक हो गई थी। लेकिन इलाज के दौरान डॉक्टरों को स्तन का दूध रोकना पड़ा। दूध रोके बिना घाव भरना संभव नहीं था। डॉक्टरों ने कहा था, 'हो सकता है कि अगली डिलीवरी के बाद जब दूध बने तब आपको ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़े। अभी हम कुछ नहीं कह सकते।'

बच्चे की समस्या बनी रही। जो नर्स उसे दूध पिला रही थी, वह अपनी नौकरी छोड़कर हिल्डा के घर नहीं आ सकी। कोई भी नर्स अपने बच्चे के लिए रखा दूध इस शिशु को पैसे लेकर भी पिलाने को तैयार नहीं थी। केवल कलिंगा ही नहीं, बल्कि डॉक्टर भी इस शिशु के स्वभाव को समझ नहीं पा रहे थे। यहाँ तक कि अगर सबसे नरम निप्पल को भी बगल में रखी दूध की बोतल में लगाकर दूध पिलाने की कोशिश की जाती, तो शिशु उसे मुँह से छूने से ही इनकार कर देता। उसे सीधा स्तन से दूध

चाहिए था। नर्सों ने निष्कर्ष निकाल लिया था कि इसी हठ के कारण शिशु की मृत्यु हो जाएगी।

जब तक वे घर पहुँचे, उसका शोर असहनीय हो चुका था। फलों का रस, चीनी का पानी... उसने सब कुछ लेने से मना कर दिया। हिल्डा ने कहा: 'प्रिय, यह बच्चा हमें परेशान करने के लिए ही पैदा हुआ है। इसकी ज़िद देखकर मुझे घृणा होती है। लेकिन जब मैं इस हठ के कारण पैदा हुई बेबसी देखती हूँ, तो मेरी घृणा पिघलकर दया में बदल जाती है। और वह दया प्रेम को जन्म देती है।'

'यह सही है। माता-पिता बनने की खुशी में इतना दर्द भी होता है, है ना?'

जब वे अपने अनुभव का विश्लेषण कर रहे थे, तभी बच्चे की चीखें और तेज़ हो गईं। कलिंगा ने जब उसे गोद में उठाया और झूले की तरह कंधों पर झुलाया, तब भी चीखना एक पल के लिए भी नहीं रुका। जब मल्लेशी अपनी झोपड़ी से बाहर निकले और यह सब देखा, तो उन्होंने कहा: 'इसका मुंह किसी गाय के थन से लगा दो। यह दूध पीते-पीते चुप हो जाएगा। मैंने ऐसा होते देखा है।'

कलिंग को अचानक लगा जैसे उसे कोई नई रोशनी मिल गई हो। उसे बचपन में गाय का दूध पीने की यादें ताजा हो गईं। लेकिन यह उपाय अब तक उसके दिमाग में क्यों नहीं आया? मल्लेशी के दिमाग में पल भर में जो योजना आई थी, वह उसके दिमाग से क्यों गायब हो गई? 'हाँ, बिल्कुल!' उसने जोर से कहा।

लेकिन हिल्डा ने कहा: 'आप जो कह रही हैं वह सही है कि दूध सेहत के लिए अच्छा नहीं है। कौन जाने थन के बाहर कितने कीटाणु होते हैं! कौन जाने दूध में किस तरह के जीवाणु पनपते हैं! दूध को उबालना, ठंडा करना, उसका वसा अलग करना और फिर उसे शिशुओं को पिलाना चाहिए।'

'मैंने इसे ऐसे ही पी लिया था। मुझे कुछ नहीं हुआ। अगर यह बच्चा बच जाए तो ही काफी है', कलिंगा ने कहा और बच्चे को गोद में उठाकर खलिहान की ओर चल पड़ा। हिल्डा ने मल्लेशी को जैक और घर की देखभाल करने का निर्देश दिया और अपने पति के पीछे चल पड़ी।

दोनों गौशाला पहुँचे। हिल्डा ने एक स्वस्थ गाय चुनी। उसके थन को अच्छी तरह धोने के बाद, हिल्डा ने खुद बच्चे का मुँह उसके थन से लगाया। चौंककर गाय ने लात मारी और उछली। बच्चे को कुछ नहीं हुआ। हिल्डा, जो बच्चे को गोद में लिए जानवर के बगल में बैठी थी, उसके घुटने पर गाय के खुर से चोट लगी और वह सूज गया।

कलिंगा ने गाय को बाँधा और दूसरी गाय ले आई। उन्होंने उसके थन को भी धोया। लेकिन उसका व्यवहार भी पिछली गाय जैसा ही था। लेकिन इस बार सावधानी बरतने के कारण बच्चे को कुछ नहीं हुआ और न ही हिल्डा को कोई चोट आई। चार और गायों से कोशिश करने के बावजूद, किसी ने भी बच्चे को दूध नहीं पिलाया। फिर, एक दूसरी गाय से, उन्होंने उसके बछड़े को दूध पिलाने के लिए भेजा। लेकिन जैसे ही बछड़े ने एक बार थन पर पैर मारा, गाय ने उसे लात मार दी। हिल्डा ने कहा: 'यह बच्चा बिल्कुल बछड़े जैसा ही है। उसकी तरह, यह भी मेरे स्तन पर दर्दनाक तरीके से पैर मारता था और दूध पीता था।'

गहरी सोच में डूबे कलिंग ने पूछा: 'क्या तुम्हें सिर्फ दर्द हुआ? जब उसने इस तरह से प्रहार किया तो क्या तुम्हें खुशी नहीं हुई?'

प्रिय, अब मनोविज्ञान के सवाल मत पूछो। बेशक मैं खुश हूँ। अब, कोई गाय खुद को दूध नहीं पिलाती, है ना? मुझे बताओ क्यों? तुमने जो कहा कि गायें इंसानी बच्चों को दूध पिलाती हैं, वह गलत है।

'बात वो नहीं है। ये गायें अब उस मशीन की रबर की नलियों से दूध दुहवाने की आदी हो चुकी हैं। जिस गाय को अपने बछड़े को दूध पिलाने का भी अनुभव नहीं है... वो इंसानी शिशुओं को अपने पास कैसे आने देगी?'

'शायद यह भी सच है। अब हम क्या करें?'

कलिंगा ने एक मिनट सोचा और कहा: 'आस-पास के गांवों में कई गायें हैं जो इंसानी बच्चों को दूध पिलाती हैं। लेकिन कोई हमें उन्हें नहीं देता। एक और बात: सभी गायें इतनी शांत नहीं होतीं। इसके लिए एक खास नस्ल की गाय चाहिए। याद है हमारे पास पुण्यकोटी नाम की एक नस्ल थी? उस नस्ल की कोई भी गाय चल जाएगी। वह इस तरह से दूध पिलाने देती है।'

'वह कौन सा है?'

'वही जिसे तुमने जमाल को ज़बह करने का हुक्म दिया था।' ये शब्द कहते हुए भी कलिंगा का इरादा हिल्डा का मज़ाक उड़ाने या उसे भड़काने का नहीं था। फिर भी, हिल्डा तुरंत गुस्से में बोली, 'तुम्हें भी इस मौके पर मेरी निंदा करने का मौका मिल गया? क्या तुमने भी उसका मांस नहीं खाया था?'

नहीं, आपका अपमान करने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैंने तो बस एक तथ्य बताया। क्या मेरी माँ ने उस नस्ल की सारी गायें नहीं ले ली थीं? उन्होंने मरने से पहले

वेंकटारमणा को सारी गायें दान कर दी थीं, है ना? जहाँ तक मुझे पता है, उनके अलावा किसी और के पास उस नस्ल की गाय नहीं है।

हिल्डा के पास कोई जवाब नहीं था। बच्चा चीख-चीख कर रो रहा था। लगातार रोने के कारण उसकी गर्दन की नसें तो सूजी ही थीं, साथ ही उसकी दोनों आंखें भी लाल और सूजी हुई थीं। उसे शांत करने की कोशिश करते हुए हिल्डा ने कहा: 'ऐसे समय में तो वेंकटरमण का भी दिल पिघल जाए। जाकर उनसे पूछो।'

'वह ऐसा नहीं करेगा। सिर्फ इतना ही नहीं। हिल्डा, मैं उस स्तर तक नहीं गिर सकता और अपने पूरे जीवन में सबसे घोर अपमान का सामना नहीं कर सकता। चाहे मैं मर भी जाऊं, कोई फर्क नहीं पड़ता।'

हिल्डा एक पल के लिए स्तब्ध रह गई। लेकिन तभी बच्चा फिर से चीख उठा, उसकी सांसें अटक गईं। उसने तुरंत कहा: 'प्यारे, यह तुम्हारी मृत्यु का सवाल नहीं है; यह इस बच्चे की मृत्यु या जीवन का सवाल है। यदि कोई पिता अपने आत्मसम्मान को अपने बच्चे के जीवन से अधिक महत्व देता है, तो यह घोर अहंकार है।'

'तो फिर आप खुद ही जाइए।'

'मैं जाऊंगी। लेकिन तुम मुझे अपने शब्दों में स्पष्ट-स्पष्ट बताओ। क्या इस बच्चे और तुम्हारे बीच कोई रिश्ता नहीं है? तुम मुझे बार-बार याद दिलाती हो, कहती हो कि इसका चेहरा तुम्हारी मां के चेहरे से मिलता-जुलता है!'

कलिंग को कोई उत्तर नहीं सूझा। अपमान, आत्म-घृणा और विडंबना का अहसास, उनका मन निराशा से भरी अनेक भावनाओं से भर गया था। अपने सभी प्रयासों की व्यर्थता के बावजूद, हिल्डा बच्चे को शांत करने का प्रयास करती रही। पाँच मिनट तक स्तब्ध खड़े रहने के बाद कलिंग ने कहा: "अब साढ़े तीन बज गए हैं। वेंकटरमण गायों के साथ पहाड़ी पर होंगे। तुम बच्चे को लेकर घर जाओ। मैं पहाड़ी पर जाता हूँ।"

4

वेंकटारमण कल्याणी के नीचे उपवन में गायों को खुला छोड़कर बैठे थे। उन्होंने पूजा करते समय पहने जाने वाले पवित्र वस्त्र धारण किए हुए थे। उनके हाथ में एक पुस्तक थी। कलिंग अचानक पीछे से आए और उनके सामने खड़े होकर बोले: "देखो, अब तुम मुझे कुछ भी बता सकते हो। मेरी पत्नी की छाती में फोड़ा हो गया है, इसलिए अब

उसे दूध नहीं आ रहा है। चार महीने का बच्चा माँ के दूध के अलावा कुछ नहीं पी रहा है। लगातार रोने के बाद वह लगभग मर रहा है। मुझे अपनी एक गाय दे दो। मैं कोशिश करूँगा कि वह उसे दूध पिला सकूँ।"

वेंकटारमणा को कलिंग की पत्नी की बीमारी और शिशु की समस्या के बारे में जानकारी थी। फिर भी वह वहाँ चुपचाप बैठा रहा, मानो उसे कुछ पता ही न हो।

'अब तुम्हें बच्चे को बचाना होगा,' कलिंग ने फिर पूछा।

'अरे, क्या तुम्हारे बाड़े में कोई गाय नहीं है?'

'हैं तो सही। लेकिन वे बच्चे के मुंह को उन्हें छूने नहीं देते।'

'क्यों?'

कलिंगा अत्यधिक चिंता में था। अपनी पूरी ताकत जुटाकर यहाँ खड़े होकर उसने बिना सोचे समझे कहा: 'मशीन से दूध दुहने की आदत होने के कारण, ऐसा लगता है जैसे अगर कोई बच्चा अपना मुँह उसमें डाल दे तो उन्हें यह अजीब लगता है।'

'ऐसी स्थिति में, मशीन की पाइप को बच्चे के मुंह में डाल दें।'

अब अपने शब्दों में छिपे व्यंग्य को समझते हुए उन्होंने कहा: 'वेंकटरमण, अब आप मेरा जैसे चाहें वैसे उपहास कर सकते हैं। मैं यहाँ आपके सामने एक मरते हुए शिशु के पिता के रूप में खड़ा हूँ। इस स्थिति में, यदि आपमें जरा सी भी मानवता है, तो तुच्छ शब्दों का प्रयोग किए बिना मुझे बस एक गाय दे दीजिए।'

"सचमुच! मानवता, दिव्यता, सब कुछ माता-पिता के मन में तब जागृत होता है जब उनका अपना सगा बच्चा मृत्यु के कगार पर होता है। परन्तु जब उनके अपने माता-पिता संकट में होते हैं, तो उन्हें कोई उच्च आदर्श सूझता नहीं। सही कहा ना? कलिंग, तुम मुझसे छोटे हो; तुम एक बालक हो जिसने मेरी देखरेख में अक्षर ज्ञान सीखा है। मुझे धर्म का उपदेश मत दो। जाओ, तुम्हारे बच्चे की मृत्यु से इस संसार को कोई हानि नहीं होगी।"

कलिंग के पास वेंकटरमण को देने के लिए कोई जवाब नहीं था। एक-दो मिनट तक कांपते होंठों के साथ कलिंग ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला। लेकिन वेंकटरमण ने कहा: 'तेरी संतान, तेरी पत्नी के गर्भ में पली-बढ़ी संतान, जितनी अधिक मरेगी, धर्म के लिए उतना ही अच्छा होगा। मान लो, आज मैं अपनी गाय को बचाने के लिए दे देता हूँ। भविष्य में, तेरी वही संतान, उससे पैदा हुए बच्चे, उसके पोते-पोतियाँ, उसके परपोते-परपोतियाँ हजारों गायों को मारकर खा जाएँगे। मैं अभी इतना मूर्ख

नहीं हूँ कि परोक्ष रूप से ही सही, इस तरह के गाय वध के लिए जिम्मेदार बनूँ। बस चले जाओ।'

कलिंग वास्तव में वहाँ से जाना चाहता था। लेकिन उसके पास अपने पैर उठाने और वापस लौटने की शक्ति नहीं थी। वह तीन घंटे से अधिक समय से उसी तरह खड़ा रहा, मानो उसे कैद कर लिया गया हो, गोदाना करने के बाद अपनी माता की मृत्यु के दिन के अपमान में डूबा हुआ हो। वेंकटरमण ने फिर कहा: 'हर दिन पूजा के दौरान, मैं बड़े कलिंग के वंश की निरंतरता और समृद्धि के लिए प्रार्थना करता था। जानते हो अब मैं क्या प्रार्थना करता हूँ? इस वंश का अंत हो जाए। जब अच्छे लोगों के गर्भ में बुरी संतान पलने लगती है, तो उस वंश का अस्तित्व नहीं रहना चाहिए। बड़े गौड़ा, तैयव्वा, दोनों ने मुक्ति, आध्यात्मिक मोक्ष प्राप्त कर लिया है। और अब, केवल इस कारण से कि तुम और तुम्हारी संतान उनके रक्त से पैदा हुए हो, तुम्हारे और तुम्हारी संतान के जीवित रहने और फलने-फूलने की कोई आवश्यकता नहीं है। भगवान ने तुम्हें अच्छे के लिए इस स्थिति में डाला है। चले जाओ। तुम्हें अपनी माता के शव को दफनाने का सौभाग्य नहीं मिला। ऐसा लगता है कि वही माता इस बच्चे के रूप में जन्मी है।' लगता है उसका चेहरा बिल्कुल उस बच्चे जैसा हो गया है। मैंने सब कुछ सुन लिया है। घर के नौकर सब कुछ बताते हैं। बच्चे के मरने के बाद उसे ठीक से दफना देना। कम से कम तुम अपनी माँ का कर्ज तो चुका दोगे।

कलिंग ने कभी सोचा भी नहीं था कि वेंकटरमण इतनी क्रूरता से बोल सकता है। हर वाक्य से वह सीधे उसके दिल पर वार कर रहा था। कलिंग की आँखों में आँसू भर आए। उसने कहा, 'मैं तुमसे आखिरी बार पूछ रहा हूँ। बस मुझे बता दो। तुम मानोगे या नहीं मानोगे, बस इतना ही बता दो। क्या तुम सिर्फ मुझ पर अपना गुस्सा निकालने के स्तर तक ही सीमित रहोगे या इससे भी बढ़कर व्यवहार करोगे? आखिरी बार, बस इतना ही बता दो।'

वेंकटरमण को इन शब्दों पर शर्मिंदगी महसूस हुई। दो मिनट तक मन ही मन सोचते हुए उन्होंने कहा: 'देखिए, मैं आपको एक गाय दूंगा। लेकिन यह बात अच्छी तरह समझ लीजिए: यह मेरी है क्योंकि यह मुझे दान में मिली है। मैं इसे केवल चार दिनों के लिए आपके पास रखूंगा, बच्चे के प्रति दया भाव से। बस इतना ही। मैं न तो आप पर और न ही आपकी पत्नी पर भरोसा करके इसे आपके नियंत्रण में रखूंगा।

आपके सेवक मल्लेशी को बुलाइए। मैं इसे उसकी देखरेख में रखूंगा। मुझे उस पर पूरा भरोसा है।'

कलिंग कल्याणी के पास गए। लेकिन अगेव की बाड़ अपनी गहरी जड़ों के साथ वहीं खड़ी थी, जो इस क्षेत्र को उनके खेत से अलग कर रही थी। इसे उखाड़ना, इसमें से रास्ता बनाना और अंदर घुसना आसान काम नहीं था। इसके अलावा, अगर वेंकटरमण को पता चलता कि उनके खेत को मंदिर से अलग करने के लिए बनाई गई बाड़ में रास्ता बनाया गया है, तो क्या वह चुप रहते? कलिंग डर गए। उन्होंने दूर खड़ी हिल्डा को देखा, जो अभी भी बच्चे को शांत करने की कोशिश कर रही थी। उन्होंने उसे पास आने का इशारा किया। फिर उन्होंने जोर से चिल्लाकर उससे मल्लेशी को भेजने के लिए कहा।

वहाँ पहुँचकर अपनी झोपड़ी से दौड़ते हुए आए मल्लेशी से उसने कहा, 'इस बाड़ के अंदर घुसने की कोई जगह नहीं है। इसके चारों ओर से आओ।'

'नहीं महोदय, यहाँ जगह है,' मल्लेशी ने कहा और दो अगेव के पेड़ों के बीच रखे बांस के कांटों को हटाकर, उनके बीच से निकलकर दूसरी तरफ चले गए।

“यह जगह किसने बनाई? आपको कैसे पता चला?”

शर्मिंदा होकर उसने कहा: 'यह सब नौकरों ने खुद किया है, महोदय। हम पूजा के समय यहाँ से जैसे-तैसे निकल जाते हैं और हम सब तीर्थ भोगते हैं, प्रसाद खाते हैं और वापस आ जाते हैं।'

वेंकटरमण ने अपने सामने खड़े मल्लेशी से कहा, “देखो, मेरे घर चलो। तुम्हें यह सफेद गाय दिख रही है ना? इसका एक छोटा बछड़ा है। इसके माथे पर गोपीचंदन का निशान है, पीले रंग का गेरू। इसे यहाँ ले आओ। रुको, मेरे घरवाले इसे सिर्फ मांगने से नहीं देंगे। पहचान के तौर पर यह किताब और यह बर्तन दे दो और उन्हें बता देना कि मैंने तुम्हें बताया है।”

मल्लेशी दौड़कर अग्रहारा पहुँच गया। लौटने तक उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे—हालाँकि कलिंग घर जाने का सोच रहा था—पर वहाँ से जाना उसके लिए नामुमकिन था। तभी वेंकटरमण स्वयं एक गाय के पीछे-पीछे चल रहा था जो थोड़ा भटक गई थी। वेंकटरमण ने अपनी सभी गायों के गले में छोटी-छोटी घंटियाँ बाँध रखी थीं। पहाड़ी के शांत वातावरण में, उनकी मधुर ध्वनि ने कलिंग के मन को एक अलौकिक अनुभूति से भर दिया। कलिंग के लिए यह दृश्य कोई नई बात नहीं थी।

जब वह छोटा लड़का था, तब उसने अपने दादाजी को भी गायों को इसी तरह सजाते देखा था। 'जब वे चरने आती हैं, तो उनके गले से पूजा की ध्वनि निकलनी चाहिए। इसीलिए घंटियाँ बाँधी जाती हैं,' उसके दादाजी कहा करते थे। रात को गौशाला लौटने पर वे घंटियाँ उतार देते थे।

एक घंटे में वेंकटरमण की गायें धीरे-धीरे चरते हुए गाँव की ओर चली गईं। तब तक मल्लेशी बछड़े को लेकर वहाँ पहुँच गया। मल्लेशी को अपने साथ बछड़े की माँ के पास ले जाकर वेंकटरमण ने कहा: "देखो, तुम्हें इसकी पूंछ पकड़कर एक वचन लेना होगा। अगर वे इसे मारकर खा लेंगे, तो तुम सबसे भयानक पाप करोगे और नरक जाओगे। कल पूजा के समय तक तुम्हें गाय और बछड़े दोनों को यहाँ लाकर वापस करना होगा। तुम्हें उन्हें अपने बाड़े में बाँधना होगा।"

मल्लेशी जब अपनी शपथ के शब्द बोल रहे थे, तभी कलिंग वहाँ पहुँच गए। उनके हाथ में गाय की पूंछ थी। वेंकटरमण ने उनसे कुछ नहीं कहा। वे बाकी गायों को लेकर चले गए। पीछे रह गई गाय अपनी बहनों के पास जाने के लिए रस्सी खींचने लगी। मल्लेशी ने उसके चेहरे पर हाथ फेरा, उसकी गर्दन को गले लगाया और उसे दिलासा दिया। इसके बाद वह गाय उनके पीछे चलने लगी। कलिंग ने पूछा, "यह क्या है, तुम उस तरफ जा रही हो? क्या कोई गाय उस बाड़ के बीच से निकल सकती है?"

'जी हां, हम इसे शामिल कर सकते हैं, आइए महोदय।'

मल्लेशी ने पहले बाँस के कांटे हटाए और आगे बढ़ गए। गाय उनके ठीक पीछे-पीछे चल रही थी। बाड़ अचानक खुल गई। कलिंग बछड़े के साथ उनके पीछे आया, लेकिन मल्लेशी ने खुली बाड़ बंद नहीं की—हिल्डा बाड़ के पास खड़ी थी। लगातार रंभाने और अब पूरी तरह थक जाने के कारण, बछड़ा शांत हो गया था। हिल्डा को देखकर गाय थोड़ी काँपी। मल्लेशी ने खुद बछड़े को गोद में उठा लिया। हिल्डा थोड़ी दूरी पर खड़ी रही। कलिंग ने बछड़े को छोड़ दिया। वह झपट पड़ा और एक तरफ के थन से अपना मुँह चिपका लिया। दूसरी तरफ बैठकर मल्लेशी ने बछड़े का मुँह एक थन से लगाया। संदेह होने पर, बछड़े ने दूध नहीं पिया। मल्लेशी द्वारा थन दबाने पर दूध उसके मुँह में टपक गया। ऐसा लगा जैसे बछड़े ने दूध निगल लिया हो। मल्लेशी ने धीरे से फिर से थन दबाया। तब बछड़ा दूध पीने लगा।

दूर से देखते हुए हिल्डा न केवल आश्चर्यचकित थी, बल्कि उत्सुक भी थी। यह बच्चा इस जानवर के थन से दूध पीने के बाद चुप हो जाता है। यह बोतल के निप्पल से

दूध क्यों नहीं पी सकता? यह किस तरह का अनोखा बच्चा है? उसने खुद से ये सवाल पूछे, लेकिन उसे कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

5

रात को दोबारा दूध पीने के बाद शिशु बिना शोर-शराबा किए सो गया। लेकिन कलिंगा को नींद नहीं आ रही थी।

उन्हें अपने बचपन की यादें ताजा हो गईं। उन्होंने पुण्यकोटी नाम की एक गाय के थन से दूध पिया था—रिश्तेदारी से वह गाय शायद उस गाय की दादी या परदादी रही होगी जिसका दूध उनके बच्चे ने पिया था। पुण्यकोटी के थन से दूध पीने की यह बचपन की याद बार-बार उनके मन में लौट आती थी। साथ ही, उनकी मां की याद भी उनके मन में आ जाती थी। उन्हें याद आया कि उनकी दादी उनके सामने किसी दूसरी महिला से बात कर रही थीं। ऐसा लगता है कि उनके जन्म के एक साल बाद ही उनकी मां के स्तनों में दूध सूख गया था। एक नन्हा शिशु होने के कारण, ऐसा लगता है कि वह केवल मां का दूध ही मांगता था। गाय के थन से दूध पीने की आदत पड़ जाने के कारण, वह उसके बाद अनगिनत दिनों तक उससे दूध पीता रहा। और, अपने बचपन के दिनों की यादों के साथ-साथ, उन्हें अपने दादा-दादी की भी याद आ गई। उनकी मां की यादें उमड़ पड़ीं। आज, उन्हें इस आम तथ्य में एक नया अर्थ दिखाई दिया कि उन्होंने एक साल तक उनकी मां का दूध पिया था।

नींद न आने के कारण उसने पास रखी टॉर्च से अपनी घड़ी देखी। रात के ढाई बज रहे थे। हिल्डा की करवटों से उसे पता चल गया कि उसे भी नींद नहीं आ रही है। उसने पूछा: 'तुमने कहा था कि तुमने बूढ़े मवेशियों को बीस दिन पहले बेच दिया था, है ना? उस आदमी का नाम क्या है?'

याद करते हुए हिल्डा ने कहा, 'लगता है वो तालुक से है। उसका नाम शुकोर साहब है। क्यों?'

'कुछ नहीं।'

भोर होते-होते उसे नींद आने लगी। सुबह सात बजे जब वह जागा, तो उठा और अपना चेहरा धोया। तब तक मल्लेशी गाय को घर के सामने ले आया था और उसके बच्चे को दूध पिला रहा था। कमीज और पैंट पहने हुए कलिंग ने अपनी जेबें पैसों से भर लीं।

हिल्डा ने पूछा: 'तुम अचानक कहाँ जा रहे हो?'

उन्होंने बस इतना ही कहा, 'मुझे तालुक जाना है।'

सुबह मोटरगाड़ी से यात्रा करते हुए, जब उन्होंने आखिरकार शुकोर साहब को ढूंढ निकाला और उनसे पूछा, तो उन्होंने कहा: 'सर, इन्हें खरीदे हुए बाईस दिन हो गए हैं। मैंने इन्हें उसी दिन जिले के बड़े ठेकेदार को बेच दिया था।'

'तो फिर तुम भी मेरे साथ चलो। वो जितनी रकम मांगेगा, मैं उसे दे दूंगा। मुझे अपने सारे मवेशियों की जरूरत है।'

मैं आऊंगा। लेकिन जानवर भी उसके साथ नहीं होंगे। जैसे ही उनकी संख्या पचास या सौ तक पहुंचेगी, वह उन्हें सीधे रेलगाड़ी के डिब्बे में लादकर मुंबई भेज देगा।

तो, इन सभी को मुंबई में मारकर बेचा जाता है?

'वे इसे अन्य जगहों पर भी करते हैं। लेकिन, हमारा बड़ा ठेकेदार इसे केवल मुंबई भेजता है। वहां से जो मुनाफा होता है, वह हमें कहीं और नहीं मिलता।'

कलिंगा, शुकोर साहब के साथ मोटर में सवार होकर जिले की ओर रवाना हुए। ठेकेदार ने कहा, 'मैंने ये माल मुंबई भेजे हुए दस दिन हो चुके हैं। मैं यह नहीं कह सकता कि आपको ये मिलेंगे या नहीं।'

'क्यों?'

'अगर वे अब तक मुंबई पहुंच गए होते, तो उन्हें काटकर पैक कर दिया गया होता। अगर किसी खरीदे-बेचे जानवर को एक दिन भी बेवजह रखा जाए, तो यह बहुत बड़ा नुकसान है—वह सारी घास, पानी और सब कुछ।'

'चाहे कुछ भी हो जाए, मैं खोजूंगा। मुझे बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए।'

मैं एक पर्ची लिखूंगा। मुंबई में एक बड़ा ठेकेदार है। इस क्षेत्र का सारा मवेशी व्यापार उसी के हाथ में है। उसके लोग यहाँ आकर जानवरों को खुद लाते-ले जाते हैं। अगर आपको अपने जानवर मिल भी जाएं, तो भी वे आपसे परिवहन खर्च, मजदूरी, इन दिनों के लिए घास और पानी का खर्च और साथ ही अपना मुनाफा भी लेंगे। आपको ये सब चुकाना होगा।

कलिंगा ने कभी सोचा भी नहीं था कि इस काम के लिए उन्हें मुंबई जाना पड़ेगा। उनके पास पैसे तो थे, लेकिन कपड़े नहीं थे। इसके अलावा, उन्होंने घर को सूचना भी

नहीं दी थी। ठेकेदार से नोट लेकर उन्होंने तुरंत उपलब्ध मोटरबाइक ली और शुकोर साहब के साथ तालुक आ गए। वहां से मोटरबाइक में बैठकर वे सीधे घर चले गए।

शाम के चार बज रहे थे। छह बजे एक मोटरबाइक मिल जाएगी जो पिछले तालुक तक जाएगी। उसने उसी मोटरबाइक से जाने और फिर तालुक से ट्रेन पकड़ने का फैसला किया। लेकिन, जब वह घर लौटा तो हिल्डा वहाँ नहीं थी। तब तक मल्लेशी वहाँ पहुँच चुका था, जिसने उसे बताया कि वह गौशाला गई है। कलिंग ने अपने छोटे चमड़े के सूटकेस में चार जोड़ी कपड़े भरे, कुछ और पैसे लिए और तैयार हो गया। फिर वह रसोई में गया, जो भी खाना उपलब्ध था, उसे परोसा, खाया और फिर ब्रीफकेस लेकर सड़क की ओर चल पड़ा। जब वह सड़क पर पहुँचा, तो उसे दूसरी तरफ हिल्डा मिली। उसकी गोद में बच्चा था। जैक उसके पीछे-पीछे खेल रहा था। 'प्यारी, कहाँ जा रही हो? तुम मुझे कभी कुछ नहीं बताती?' वह आगे चलते हुए बोला, 'चलो, मैं तुम्हें सड़क किनारे बताता हूँ।' और, जैसे ही वह उसके पीछे आई, उसने कहा: 'तुमने बीस दिन पहले उन बूढ़े मवेशियों को कसाई को बेच दिया था? मैं उन्हें वापस लेने गया था। लगता है उसने उन सबको मुंबई भेज दिया है।' अब मैं उन्हें वापस लाने के लिए मुंबई जा रहा हूँ, अगर उनका वध नहीं हुआ है। अगर वे अभी भी जीवित हैं।'

'तुम्हें क्या हो गया है?' उसने अचंभित होकर पूछा।

'हिल्डा, क्या तुम अब भी इसे समझ नहीं सकती?'

तुम मुझे बताओ कि यह क्या है।

"उस गाय ने हमारे उस बच्चे की जान बचाई जो मौत के कगार पर था, उसे अपने थनों से दूध पिलाकर। क्या हमें ऐसी गायों की वृद्धावस्था में उसी तरह देखभाल नहीं करनी चाहिए जैसे हम अपनी माँ की करते हैं? जिन गायों और बैलों को आपने बेचा है, वे सभी ऐसे ही माता-पिता हैं।"

उसके मुंह से ये शब्द सुनकर हिल्डा स्तब्ध रह गई। दो मिनट चुप रहने के बाद हिल्डा बोली, 'उस पुजारी की वजह से तुम बदल गए हो, मेरे प्यारे। तुम्हारा मन शायद भावनात्मक उथल-पुथल में है। थोड़ा शांत होकर सोचो,' और फिर उसने उसके हाथ से सूटकेस छीन लिया।

लेकिन उसे कसकर पकड़े हुए कलिंगा ने कहा, "दरअसल, मैं उसके कारण नहीं बदला हूँ। वास्तव में, बदलने जैसा कुछ है ही नहीं। यह दृढ़ विश्वास मेरे भीतर बचपन

से था। बस, बीच में कुछ वर्षों के लिए मैं इसे भूल गया था। इस बच्चे ने इसे और पुख्ता कर दिया है। बस इतना ही।" वह झुका और अत्यंत भावुक होकर उसकी गोद में मौजूद शिशु के गाल को चूमा।

तब तक वे सड़क पर पहुँच चुके थे। सड़क के किनारे, वह एक छोटे से बरगद के पौधे के पास बैठ गया जो अभी-अभी बढ़ा था। पास बैठी हिल्डा बोली: 'प्रिय, तुम अभी भी भावुक होकर बोल रहे हो। सोचो अगर तुम ऐसा करोगे तो पशुपालन के आर्थिक संतुलन पर क्या असर पड़ेगा। कल से जो कुछ भी तुम देख रहे हो, वह कोई चमत्कार नहीं है। एक शिशु ने केवल स्तन से दूध पीने की जिद की। और एक गाय—सभी गायें आमतौर पर शांत होती हैं—चुप रही और उसने लात भी नहीं मारी, यहाँ तक कि जब शिशु ने अपना मुँह उसके थन पर लगाया। कई शांत प्राणी इसी तरह चुप रहते हैं। पहाड़ी वन क्षेत्रों में लोग बकरी का दूध पीते हैं। शिशु बकरी के थनों से दूध पीते हैं। लेकिन क्या वे कभी उस बकरी को मारकर नहीं खाते? किसी जानवर के थन से दूध निकालकर बर्तन में भरकर पीने और सीधे थन से पीने में कोई खास अंतर नहीं है। तुम्हें इस बात पर इतना परेशान नहीं होना चाहिए।'

कलिंगा वहाँ चुपचाप बैठे रहे। जवाब की प्रतीक्षा करते हुए, जब उन्होंने कुछ नहीं कहा तो हिल्डा ने स्वयं कहा: 'आपने जो भी विज्ञान सीखा है, अमेरिका में जो भी शिक्षा प्राप्त की है, क्या आप उसे अपनी भावनात्मक उन्माद की बवंडर में झोंक देंगे?'

नहीं, मुझे इस सारी बिजली की, इस वैज्ञानिक खाद की—इन सबकी ज़रूरत है। मुझे पशु रोगों का इलाज करने वाले चिकित्सा विज्ञान की भी ज़रूरत है। लेकिन हमें इस धारणा को पूरी तरह से त्याग देना होगा कि पशु केवल मानव उपयोग के लिए ही मौजूद हैं।

हिल्डा चुपचाप बैठी थी। एक मिनट सोचने के बाद कलिंगा ने कहा: 'जब मेरे दादाजी जीवित थे, तब वे मुझसे कहा करते थे। वेंकटरमण भी यही बात कहते हैं। यदि दृढ़ विश्वास भीतर से उत्पन्न होना चाहिए, तो उसके लिए आध्यात्मिक शुद्धि भी आवश्यक है। ऐसा लगता है कि यह शुद्धि मुझे जन्म से ही प्राप्त थी। जब मैं मैसूर के कॉलेज में पढ़ रही थी, तब एक बार अनजाने में मैंने एक यूरोपीय प्रधानाचार्य के घर में गोमांस का भोजन कर लिया था। जब मुझे इसकी पुष्टि हुई, तब तक मेरा मन शांत नहीं हुआ जब तक मैंने पंचगव्य पीकर प्रायश्चित नहीं कर लिया। लेकिन जब मैं

अमेरिका गई, तो मेरा दृढ़ विश्वास बदल गया। अब, मेरा पहले वाला दृढ़ विश्वास फिर से मजबूत हो गया है।'

हिल्डा चुप रही। उसके चेहरे से स्पष्ट था कि वह किसी गंभीर विचार में डूबी हुई थी। कलिंगा ने कहा: 'मैं जानता हूँ कि तुम्हारा विश्वास मुझसे अलग है। इसीलिए तुमने वह विश्वास नहीं विकसित किया जो मैंने किया। हम दोनों कल से एक ही चीज़ का अनुभव कर रहे हैं। लेकिन तुम इस पर विश्वास क्यों नहीं कर पा रही हो?'

हिल्डा की आँखों में आँसू भर आए। खुद को रोक न पाने के कारण वह चीखते हुए रो पड़ी: 'निर्दयी, कालिंग, तुम निर्दयी हो, तुम कसाई हो। तुम मुझे मार रही हो।'

'प्रिय, खुद को दिलासा दो।'

'मैं खुद को दिलासा दूं? किस तरह का दिलासा? आप मुझे इतने दूर देश से यहां लाए। आपने मुझे गर्व से ऊंचे स्थान पर बिठाया और कहा, "आप मेरी बुद्धि के निर्देशक हैं।" अब आप मेरे सामने ही कह रहे हैं कि मैं अलग हूं, मेरी सोच आपकी सोच से अलग है? क्या आपको वैवाहिक प्रतिबद्धता नहीं निभानी चाहिए?'

मैंने तुम्हें कब जाने को कहा था? क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ? प्रिय, कृपया मेरी बात समझो।

नहीं, नहीं। आपकी बात मुझे बौद्धिक रूप से आहत करती है। मैं इसके साथ तालमेल बिठाकर खुशी से नहीं रह सकता। मुझे खुद यहां से चले जाना चाहिए।

मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगी। वैसे भी, तुम इस बच्चे का क्या करोगी?

हिल्डा एक बार फिर रोते हुए बोली, "मैंने तुम पर भरोसा किया और तुमसे शादी की। मैं तुम्हारे बच्चे की माँ भी बनी। तुमने मुझे कई बंधनों में बाँध लिया। अब तुमने अपनी मर्ज़ी का रास्ता चुन लिया है। और मैं उस रास्ते पर अकेले नहीं चल सकती। मुझे उस अनजान रास्ते पर चलना ही होगा, अपने शरीर को चोट पहुँचाते हुए, तुम्हारे धक्के खाते हुए। वरना मुझे उल्टी दिशा में मुड़कर अपना अलग रास्ता चुनना होगा। मैं जो भी रास्ता चुनूँ, दर्द तो होगा ही। मेरे लिए यह बहुत दर्दनाक है, कालिंग। इसे अपनी पत्नी से प्यार करना नहीं कहते।"

तभी उन्हें बस की आवाज़ सुनाई दी। दूर खेल रहा जैक चिल्लाया, 'मोटर!' कलिंगा उठ खड़ा हुआ। उसका हाथ पकड़कर हिल्डा ने कहा, 'तुम्हें अभी नहीं जाना चाहिए। अगर तुम जाना ही चाहते हो, तो पहले मुझे मना लो और तभी जाना।'

बस पास ही रुक रही थी। 'जब तक मैं तुम्हें मना लूँगा, बूढ़ी गायें ज़िंदा नहीं रहेंगी। वैसे भी, मैं चाहे जितनी भी बहस कर लूँ, तुम कभी नहीं मानोगी। मैं इसी बस से चला जाऊँगा,' उसने बस में चढ़ते हुए कहा। हिल्डा ने उसके हाथ में रखा सूटकेस कसकर पकड़ लिया। क्योंकि वह सबके सामने झगड़ा नहीं करना चाहता था, इसलिए कलिंगा ने सूटकेस उसके हाथ में ही छोड़ दिया, खुद बस में बैठा और चिल्लाया, 'ठीक है!' बस जो पूरी तरह से नहीं रुकी थी, आगे बढ़ गई। 'क्रूर, कसाई, मूर्ख!' हिल्डा एक बार फिर चिल्लाई। बस के पीछे लगे शीशे से वह उसे रोते हुए देख सकता था।

6

कलिंगा को उस रात जिस ट्रेन में वह चढ़ा, उसमें सोने की जगह मिल गई। हालाँकि पिछली रात उसे बिल्कुल नींद नहीं आई थी, फिर भी उसे नींद नहीं आ रही थी। वह खुद को एक नए इंसान की तरह महसूस कर रहा था। अब उसे यह एहसास हो रहा था कि वह अपने दादा, दादी और माता की तरह ही दृढ़ विश्वास रखता है। लेकिन हिल्डा के उसके विश्वास का इतना विरोध करने का कारण उसे समझ नहीं आ रहा था। क्या फर्क पड़ता है अगर वह उसके जैसा दृढ़ विश्वास न रख पाए? अगर मैं पुराने मवेशियों को वापस लाकर उनकी रक्षा करूँ तो उसका क्या नुकसान होगा? उसे इस बात से दुख क्यों होना चाहिए? उसने सोचा। क्या हिल्डा सिर्फ इसी एक कारण से मुझे छोड़कर चली जाएगी? यह सवाल उसके दिमाग में घूम रहा था। क्या उसे खुश करने के लिए अगले स्टेशन पर उतरकर वापस लौट आना चाहिए? हालाँकि यह विचार कभी-कभी उसके मन में आता था, फिर भी वह लेटा रहा और उठ नहीं पा रहा था। आधी रात के कुछ देर बाद उसे नींद आ गई।

अगली सुबह जब वह जागा, तो ट्रेन एक बड़े स्टेशन पर थी। जिस प्लेटफार्म पर उसकी ट्रेन रुकी थी, उसके ठीक बगल में एक मालगाड़ी खड़ी थी। हर एक डिब्बा बूढ़ी गायों और बूढ़े बैलों से भरा हुआ था, जिन्हें एक साथ बांधा गया था। जब दूसरे यात्री अपना चेहरा धोने और नाश्ता करने के लिए उतरे, तो कलिंगा दौड़कर मालगाड़ी की ओर गया, उसमें चढ़ा और सभी डिब्बों का निरीक्षण किया। उसे अपने मवेशी कहीं नहीं दिखे। उसने सोचा, शायद इतने दिनों में वे मुंबई पहुँच गए हों, फिर वह दौड़कर वापस आया और अपनी ट्रेन में बैठ गया। लेकिन जैसे ही ट्रेन चलने लगी, उसे कुछ याद आया: उसने हिल्डा द्वारा बेचे गए मवेशियों को ठीक से देखा भी नहीं

था। अगर वह अब भी उन्हें देख लेता, तो भी इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि वह उन्हें सही-सही पहचान पाएगा। तंबाकू के बागान के काम में व्यस्त रहने के दौरान वह कभी गौशाला नहीं गया था। उसी समय नौकर उसके गाँव से बैलों को घर लाए थे और उन्हें बांध दिया था। उसने इन बैलों को पहले कभी ठीक से नहीं देखा था। वह अपने गौशाला में मौजूद चार बूढ़ी गायों से ही परिचित था। अब वह ट्रेन में बैठा खिड़की से बाहर देख रहा था और उसे पूरा भरोसा था कि वह अपने मवेशियों को पहचान लेगा, क्योंकि उसके पास ये सबूत थे: गायों से उसकी जान-पहचान और उस ज़िला पशु ठेकेदार से उसकी जान-पहचान, जिसने इन गायों के साथ बैल भेजे थे।

उसकी ट्रेन सभी स्टेशनों पर नहीं रुकी। बीच में पड़ने वाले एक स्टेशन पर मवेशियों से भरी एक मालगाड़ी खड़ी थी। जैसे ही उसके मन में यह ख्याल आया कि शायद उसके मवेशी भी उसी ट्रेन में हों, उसकी अपनी ट्रेन तेज़ी से उसके पास से गुज़र गई। अगले चालीस मील तक वह कहीं नहीं रुकी।

पुणे में उतरकर, वह बिना रुके मुंबई के लिए ट्रेन में सवार हो गया, यहाँ तक कि खाना खाने के लिए भी नहीं रुका। शाम को मुंबई पहुँचकर उसने अपने पास मौजूद कागज़ पर लिखे पते की जाँच की और चल पड़ा। रात आठ बजे तक उसे बड़े ठेकेदार का घर मिल गया। एक विशाल इमारत की दूसरी मंज़िल पर रहने वाला ठेकेदार बेहद धनी प्रतीत होता था। कलिंग ने जब बाहर लगे बोर्ड, अंदर फैले विशाल दीवानखाने, टेलीफ़ोन और अन्य सामानों को देखा, तो उसने अनुमान लगाया कि इस बड़े व्यापारी की संपत्ति करोड़ों में होगी। विशाल दीवानखाना। दीवारों पर लक्ष्मी, सरस्वती, बद्रीनाथ, केदारनाथ के पोस्टर लगे थे। फर्श पर मुलायम कालीन और सोफ़े थे। ठेकेदार घर पर था और कलिंग को बेपरवाही से देख रहा था। दो दिन की ट्रेन यात्रा के बाद, उसकी दाढ़ी नहीं बनी थी और कपड़े भी नहीं बदले थे। कलिंग द्वारा दिए गए पत्र को पढ़ने के बाद उसने कहा: 'हमें नहीं पता कि वे कहाँ हैं।'

निमंत्रण न मिलने के बावजूद, कलिंगा सोफे पर बैठ गया और अमेरिकी लहजे में अंग्रेजी बोलने लगा: 'मैं इतनी दूर से आया हूँ। आप उन्हें जहाँ भी हों, ज़रूर ढूँढ़ें। ज़िला आपूर्ति ठेकेदार ने आप पर भरोसा करते हुए मुझे यहाँ भेजा है।'

सेठ को यह अंग्रेज़ी समझ नहीं आई। फिर भी, उन्होंने अपनी हिंदुस्तानी अंग्रेज़ी में कहा: 'तुम्हें इनकी ज़रूरत क्यों है?'

‘हम गायों को वध के लिए नहीं बेचते। घर के नौकरों ने हमारी जानकारी के बिना उन्हें बेच दिया है।’

‘कल सुबह आठ बजे यहाँ आना। मैं एक नौकर को भेजूँगा। उसके साथ जाओ और तलाशी लो। हमें इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि कौन से मवेशी तुम्हारे हैं, या वे आए भी हैं या नहीं। हमारा देखरेख करने वाला यह सारा काम करता है। हम तो बस निगरानी करते हैं। बस इतना ही।’

कलिंगा घर से बाहर निकले, एक होटल में ठहरे, स्नान किया, भोजन किया, अपने ऊपरी वस्त्र स्वयं धोए और सो गए। सुबह उठकर उन्होंने साफ कपड़े पहने, नाई की दुकान में दाढ़ी बनवाई, बालों में तेल लगाकर कंघी की और होटल के कमरे से बाहर निकल गए। ठेकेदार के घर पहुँचकर उस व्यापारी ने कहा: ‘मेरे नौकर के साथ जाओ। हम मवेशियों को ज़्यादा दिनों तक अलग नहीं रखते। गौशाला में अभी कोई मवेशी नहीं है। बूचड़खाने के सामने हमारी ज़मीन है। वहाँ मवेशी देखो। अगर वहाँ मिल गए तो तुम्हारी किस्मत अच्छी होगी। वरना हमें कुछ पता नहीं।’

कलिंग अपने नौकर के साथ बांद्रा के कसाईखाने गए। कसाईखाने के चबूतरे के सामने विशाल मैदान में हज़ारों गाय, भेड़ और बकरियाँ बाँधी हुई थीं। बाँस के बाड़े भी बने हुए थे। नौकर कलिंग को एक बाड़े की ओर ले जाते हुए इशारा करते हुए बोला, 'यह हमारा है।' वहाँ तीन सौ से ज़्यादा बैल और गायें थीं। कलिंग ने हर एक जानवर को ध्यान से देखा। लेकिन वे अपने पशुओं को पहचान नहीं पाए। कई गायें उनकी अपनी बूढ़ी गायों जैसी दिख रही थीं, लेकिन उनमें से एक को भी पहचानना और यह कहना उनके लिए नामुमकिन था कि वह उनकी है। जब वे किसी गाय के पास गए, तो किसी ने भी प्यार से साँस नहीं छोड़ी और न ही उनके शरीर को चाटा। उन्होंने सोचा, 'अगर मैं इन्हें पहचान नहीं पा रहा हूँ, तो कोई बात नहीं; क्या ये कम से कम मुझे तो पहचान सकती हैं?' लेकिन तभी उन्हें अचानक याद आया: उन्होंने अपने गौशाला में गायों की गर्दन कभी नहीं छुई थी, न ही उन्हें गले लगाया था, न उनके चेहरे को चूमा था और न ही अपने हाथों से उनके मुँह में भूसा डाला था। हाँ, कई दिनों तक उन्होंने खुद उस मशीन से उनका दूध निकाला था। लेकिन क्या इतना काफी था कि गायें उसे याद रखें और पहचान लें? उसने सोचा, मेरी अपनी गायों की हालत इतनी खराब हो गई है कि वे मुझे पहचान भी नहीं पातीं।

उन्हें अचानक याद आया: मशीन से दुहे गए थनों और हाथ से दुहे गए थनों में फर्क होता है। क्या मैं कम से कम इस मापदंड से उन्हें पहचान सकता हूँ? यह सोचते हुए वे नीचे झुके और सभी बूढ़ी गायों के थनों की जाँच की। हाथ से दुहे गए थन लटके हुए होते हैं। मशीन से दुहे गए थन पतले होते हैं। लेकिन बुढ़ापे के कारण, सभी थन कमोबेश एक जैसे दिखते थे।

जब कलिंग गायों का निरीक्षण कर रहे थे, तभी उन्हें यहाँ लाने वाले सेवक ने कहा: 'देर हो रही है। क्या मैं चलूँ?'

'दस दिन पहले मेरे जिले से जो मवेशी गाड़ी में लादे गए थे... वे यहां कब पहुंचेंगे?'

'सेठजी ने मुझे आपके मामले के बारे में बताया। हम कुछ नहीं कह सकते। कभी-कभी वे सिर्फ चार दिनों में आ जाते हैं। उनके आते ही हम पशु चिकित्सक से प्रमाण पत्र लेते हैं और उन्हें तुरंत वध के लिए भेज देते हैं। अगर हम उन्हें एक दिन भी ज़्यादा रखते हैं, तो लागत बढ़ जाती है।'

कलिंग के पास उससे पूछने के लिए और कोई सवाल नहीं बचा था। उसने एक बार सिर उठाकर देखा। पचास-सौ के झुंड में मवेशी खेत में आ रहे थे। लोग मवेशियों को हांक रहे थे, जो खेत की ओर खुलने वाली तीनों बड़ी गलियों में भरे हुए थे। कलिंग ने नौकर से पूछा: 'इतने सारे मवेशी, ये तुम्हें कहाँ से मिलते हैं?'

खेतों में काम करते-करते बूढ़े हो जाने वाले बैलों का क्या फायदा? दूध देना बंद कर देने वाली गायों का क्या फायदा? किसान उन्हें हमारे एजेंटों को बेच देते हैं।

कलिंग अपने पूछे गए प्रश्न और मिले उत्तर से भलीभांति परिचित थे। फिर भी, वे स्वयं यह नहीं समझ पा रहे थे कि उन्होंने यह प्रश्न क्यों पूछा।

नौकर चला गया। कुछ न कर पाने के कारण कलिंगा वहीं खड़ा रहा। वध के लिए लाई जा रही गायें धीरे-धीरे उसके चारों ओर जमा होने लगीं। वह बार-बार झुककर उनके बूढ़े थनों को देखता। उसने कमजोर बैलों के कंधों का निरीक्षण किया। अचानक उसे अपने बच्चे की याद आई, फिर अपनी माँ की। माँ को नहीं मरना चाहिए था, उसने सोचा। फिर उसने मन ही मन कहा, गाँव वालों ने जो कहा था, वह सच था। मैंने ही उसे मारा था। माँ चली गई। क्या हिल्डा अपने देश लौट जाएगी या मेरे विश्वास का सम्मान करते हुए मेरे साथ ही रहेगी? उसकी सोच, उसके बौद्धिक विचार, उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देखते हुए, वह ज़रूर जाएगी। लेकिन बच्चा? वह तो उसी के

गर्भ से जन्मा था। शायद वह इसी कारण से रुक जाए। आशा जगी। लेकिन, जिस धागे पर वह आशा टिकी थी, वह बहुत कमजोर था।

अगर वो घृणा से 'अय्यो' भी कहती, तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। माँ को जीवित होना चाहिए था। तब मैं हिल्डा की इच्छाओं के अनुसार ढल सकता था। लेकिन वो मर गई और उसने मुझे जीत लिया। अब हिल्डा को बस मेरे अनुसार ढलना होगा। लेकिन मैं उसे अपने अनुसार कैसे ढालूँ? इसी विचार के साथ उसने अपना सिर उठाया और ऊपर देखा। मवेशियों के इस विशाल झुंड के बीच, वे आगे वाले मवेशियों को वधशाला की ओर ले जा रहे थे। यह सोचकर कि उनमें से कोई उसका होगा, वह पास गया और उन्हें देखा। हर गाय और बैल का चेहरा उसके अपने मवेशियों जैसा लग रहा था। शायद उन्हें अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। वे अड़े रहे, अंदर जाने से इनकार कर दिया। कलिंग ने एक गाय के चेहरे को देखा। उसकी स्मृति में, उसके चेहरे का भाव उसकी माँ के चेहरे के भाव से मिलता-जुलता था, जब वह अपनी मृत्यु के दिन गोदाना करते समय कंबल पर लेटी थी। यह एक अंधे व्यक्ति की दृष्टि के समान था कि वह उनमें से अपने मवेशी को पहचान सके। उसके मन में यह बात घर कर गई कि यहाँ जमा हुए ये हज़ारों मवेशी, जो कसाईखाने में जाने के लिए अभिशप्त थे, सब उसी के थे। उसका हाथ उसकी पतलून की जेब में चला गया। फिर, यह महसूस करते हुए कि उसके पास इन सभी बूढ़ी गायों और बैलों की देखभाल करने की ताकत या क्षमता नहीं है, उसने अपना हाथ बाहर निकाल लिया। जिस दिन उसकी माँ की मृत्यु हुई थी, उस दिन उसे जो लाचारी महसूस हुई थी, वह अब उसके हाथों और पैरों में दौड़ रही थी।

चक्कर आने पर वह दस मिनट तक उकड़ू बैठा रहा। फिर उठकर वह पीछे मुड़े बिना बांद्रा रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा। टैक्सी लेकर वह दादर स्टेशन पहुँचा और पुणे जाने वाली ट्रेन का इंतज़ार करने लगा। उसे हिल्डा की याद आ रही थी। क्या वह यहीं रहेगी या चली जाएगी? यह सवाल फिर से उसके मन में उठा। दस मिनट तक वह भावनाओं के भंवर में फंसा रहा। फिर हिल्डा के बारे में अपने विचारों को दरकिनार करते हुए उसके मन में एक सवाल आया: मैं ट्रैक्टर से खेत जोत रहा हूँ। मैं रासायनिक खाद का इस्तेमाल कर रहा हूँ। गाय का क्या फायदा? अगर मैं उसे सिर्फ दूध के लिए पालता हूँ, तो पैदा होने वाले बछड़ों का क्या करूँ? कब तक मैं उसे बेवजह घास खिलाता रहूँ, उसकी देखभाल करता रहूँ? शायद यह समस्या हल हो

जाए अगर गायों के आनुवंशिकी विज्ञान में इतनी प्रगति हो जाए कि ज़्यादा से ज़्यादा सिर्फ मादा ही पैदा हों। जो गायें दूध देती रहें और फिर बूढ़ी हो जाएँ, उन्हें प्राकृतिक कारणों से मरने तक घास और पानी दिया जा सकता है। कुछ ऐसा इंतज़ाम किया जा सकता है। उनका मानना था कि यदि कृषि के लिए बैल बसवा पर निर्भरता से मुक्त होने वाला मनुष्य धीरे-धीरे गाय का दूध पीने की आदत छोड़ दे, तो कोई समस्या नहीं होगी।

अब मैं क्या करूँ? क्या मुझे ट्रैक्टर बेचकर अपने दादाजी के ज़माने के बैल और जुए का काम फिर से शुरू कर देना चाहिए? लेकिन उन्हें इसमें कोई मतलब नहीं दिखता था। अमेरिकियों के साथ तो यह सवाल उठता ही नहीं। वे साफ़ कहते और मानते हैं कि दूसरे जानवर सिर्फ़ इंसान के फ़ायदे के लिए ही हैं। लेकिन हमें ट्रैक्टर और गोपूजा दोनों की ज़रूरत है। उन्हें वेंकटरमण की याद आ गई और उन पर तरस आया। उनकी श्रद्धा, उनका विश्वास और दृढ़ निश्चय बहुत बड़ा था। लेकिन वे इस अहम सवाल का जवाब नहीं दे सकते। वे बस इतना कहेंगे, 'ट्रैक्टर को तोड़-फोड़ दो। गाय की अम्बा की आवाज़, ओम मंत्र की आवाज़, घंटी की गण-गण-गण की आवाज़ —आध्यात्मिक मुक्ति तो बस इसी से मिलती है।'

कोई जवाब न मिलने पर कलिंगा का दिमाग सुन्न पड़ गया था। कुछ देर बाद ट्रेन आ गई। वह दौड़ा, ट्रेन में चढ़ा, अपने लिए जगह ढूंढी और बैठ गया। एक घंटे बाद ट्रेन कल्याण स्टेशन पर रुकी। जब ट्रेन फिर से चलने लगी, तो उसने दाईं ओर एक पहाड़ देखा। उसे अपने खेत के पास स्थित अरुणाद्री पहाड़ी की याद आ गई। अचानक उसे अपनी माँ की याद आ गई। उसे लगा कि उसकी माँ को नहीं मरना चाहिए था। अगर उसने उनके प्रति अलग तरह से व्यवहार किया होता, तो उन्हें मानसिक परेशानी न होती। उसने सोचा कि यह उसकी गलती थी। लेकिन जल्द ही एक और सवाल मन में आया और यह सवाल पीछे छूट गया। यह सवाल सिर्फ अपने बाहरी व्यवहार से उन्हें खुश करने का नहीं था। अगर उसने कोशिश भी की होती, तो किस हद तक वह उन्हें खुश कर पाता? उनसे बात सिर्फ वही लोग कर सकते थे जो उनकी मान्यताओं को मानते थे। सांसारिक मामलों में, वह सचमुच जन्म से ही मूक थीं। मेरे ट्रैक्टर लाने के बाद, शायद उससे थोड़ा पहले या थोड़ा बाद में, यह तय था कि उनकी मृत्यु होगी और मैं अनाथ हो जाऊँगा। इस विचार में कलिंग को अंतर्दृष्टि की

एक विशाल लहर का प्रसार दिखाई दिया। लेकिन उस क्षण में इसके पूर्ण अर्थ को समझने में असमर्थ, वे वहीं आधे खुले मुँह से बैठे रहे।

***** **समाप्त** *****

sjeet